पवित्र वेद

और

पवित्र बाइबिल

तुलनात्मक अध्ययन

गुरु विरजानन्द दण्डी
5277

कन्हैयालाल तलरेजा

राष्ट्रीय चेतना संगठन
नई दिल्ली-११० ००१

इस पुस्तक में प्रकाशित विचारों के लिए एक मात्र लेखक उत्तरदायी है। ये विचार किसी शासकीय अथवा अशासकीय संगठन के, जिन के साथ वे सम्बद्ध हैं, विचारों को किसी भी प्रकार से परिलक्षित नहीं करते।

इस पुस्तक का मूल अंग्रेज़ी संस्करण भी उपलब्ध है।

हिन्दी अनुवाद : श्री सोम दत्त मोहन

© कन्हैयालाल तलरेजा

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी अंश, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, प्रस्तुत या संप्रेषित नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक :

राष्ट्रीय चेतना संगठन

पो. बाक्स नं. १६७

नई दिल्ली-११० ००१

दूरभाष : २४९ १०८३, २४९ ११८३

मूल्य : रु. १५०

प्रथम संस्करण : ११ श्रावण शु. २०५७
युगाब्द ५१०२
१० अगस्त, २०००

ISBN : 81 - 87714 - 01 - 8

मुद्रक :
सुनील प्रिन्टर्स
नई दिल्ली-११० ०२८
दूरभाष : ५६९ ८०६५

समर्पण

स्वामी दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज के प्रवर्त्तक
राष्ट्र के आध्यात्मिक गुरु
एवं
अद्वितीय वैदिक विद्वान

तथा

स्वातंत्र्य वीर सावरकर

पराक्रमी हिन्दुत्व के संस्थापक
हिन्दू हृदय सम्राट्
एवं
अद्वितीय राजनीतिक भविष्यद्रष्टा

तथा

डा. केशव बलिराम हेडगेवार

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक
अद्वितीय युग-प्रवर्तक
एवं
हिन्दू राष्ट्रीय पुनर्जागरण के प्रणेता

को

सादर समर्पित

— कन्हैयालाल मंघनदास तलरेजा

विषय-सूची

प्राक्कथन – श्री कुप्. सी. सुदर्शन

प्रस्तावना १९

१. वैदिक एकेश्वरवाद और बाइबिल का त्रिमूर्ति सिद्धांत ५१

१. वैदिक एकेश्वरवाद ५१

२. बाइबिल में त्रिमूर्ति का सिद्धांत ५७

(एक) (क) "एक में तीन" और "एक के समान तीन" का सिद्धांत ५७

(ख) तीन सत्ताएं एक हैं ५७

(ग) तीनों सत्ताओं के नाम पर सभी राष्ट्रों का ईसाईकरण करो और उन्हें अपने मत की दीक्षा दो ५९

(घ) पवित्र आत्मा की निन्दा करने वाला अनन्त काल तक नर्क का भागी रहेगा ६०

(ड) ईश्वर ने अपने इकलौते पुत्र को भेजा ६१

(च) ईसा मसीह में ईश्वर, ईश्वर में ईसा मसीह ६१

(छ) ईश्वर और ईसा मसीह एक हैं ६१

(ज) ईश्वर ने ईसा मसीह को सब अधिकार दिए ६१

(झ) ईसा मसीह ईश्वर के समान था ६२

(ञ) बाइबिल के ईश्वर की मूर्खता ! ६२

(दो) लेलियस सोसिनस ने त्रिमूर्ति के सिद्धांत को अस्वीकार किया ६२

(तीन) एकेश्वरवादियों को जीवित जला दिया गया ६३

(चार) श्री विलियम ऐडम ने वैदिक धर्म अंगीकार किया ६३
(पांच) वैदिक धर्म की उत्कृष्टता ६४

२. कुंवारी मैरी सम्बंधी मत और वेद द्वारा व्यक्त सार्वभौमिक विधान ६५

१. कुंवारी मैरी सम्बंधी मत ६५
(एक) पवित्र आत्मा ने कुंवारी मैरी को गर्भवती बनाया ६५
(दो) क्या मैरी ने अन्य बच्चों को जन्म दिया ? ६८
(तीन) क्या ईसा मसीह ने मैरी को अपनी मां के रूप में स्वीकार किया ? ६८
(चार) क्या ईसा मसीह चाहते हैं कि उनके शिष्य अपने माता पिता से घृणा करें ? ६९

२. वैदिक सार्वभौमिक विधान ७१

३. बाइबिल का ईश्वर संघर्ष उत्पन्न करता है, वैदिक ईश्वर शांति का उपदेश देता है ७३

१. बाइबिल का ईश्वर संघर्ष उत्पन्न करता है ७४
(एक) बाइबिल का ईश्वर : मैं शांति के लिए नहीं आया, तलवार उठाने आया हूँ ७४
(दो) बाइबिल के ईश्वर का लक्ष्य : परिवार में विवाद उत्पन्न करना ७४

२. वैदिक ईश्वर शांति का उपदेश देता है ७४

४. बाइबिल का ईश्वर क्रोधी है, वैदिक ईश्वर दयालु मित्र ७८

१. बाइबिल का ईश्वर क्रोधी है ७८
(एक) रक्त रिसने लगा और घोड़े की लगाम तक बहता गया ७८

२. वैदिक ईश्वर दयालु मित्र है ७९

५. वैदिक ईश्वर द्वारा दया और बाइबिल के ईश्वर द्वारा नरसंहार ८०

१. वैदिक ईश्वर द्वारा दया ८०

२. बाइबिल के ईश्वर द्वारा नरसंहार ८२

(एक) बाइबिल के ईश्वर ने सभी नव जात बच्चों का संहार कर दिया ८२

(दो) बाइबिल के ईश्वर ने विषैले सांप भेज कर यहूदियों की हत्या की ८३

(तीन) बाइबिल के ईश्वर ने इस्राईलियों को पृथ्वी द्वारा जीवित निगलवा दिया ८३

(चार) बाइबिल के ईश्वर ने २५० इस्राईलियों को जीवित जला दिया ८४

(पांच) बाइबिल का ईश्वर इस्राईलियों के बच्चों को जंगली जानवरों के द्वारा मरवाने की धमकी देता है ८४

(छः) बाइबिल के ईश्वर ने सत्तर हज़ार इस्राईलियों को महामारी के द्वारा मार डाला ८४

(सात) बाइबिल के ईश्वर ने पचास हज़ार सत्तर लोगों को इस लिए मार डाला कि उन्होंने ईश्वर की मंजूषा में झांका था ८५

६. बाइबिल मृत्यु दण्ड निर्धारित करता है, वेद संस्कारित करने का उपदेश देता है ८६

१. बाइबिल द्वारा मृत्यु दण्ड ८६

(एक) ईश्वर निंदा के लिए पत्थर मार कर मृत्यु दण्ड देना ८६

(दो) तम्बू के पास भूल से चले जाने ८७

पर मृत्यु दण्ड

(तीन) विश्राम दिवस (सॅबथ) न मनाने पर मृत्यु दण्ड ८७

(चार) माता पिता की आज्ञा न मानने पर मृत्यु दण्ड ८८

(पांच) माता पिता को अभिशाप देने वाले को मृत्यु दण्ड ८९

(छः) समलैंगिक सम्बंधों के लिए मृत्यु दण्ड ८९

(सात) किसी महिला के मासिक धर्म के समय उसके साथ संभोग करने वाले को मृत्यु दण्ड ९०

(आठ) कौमार्य (कुमारीपन) भंग होने के कारण मृत्यु दण्ड ९०

(नौ) व्यभिचार के लिए मृत्यु दण्ड ९०

(दस) चर्च के नेताओं की आज्ञा की अवहेलना करने पर मृत्यु दण्ड ९१

२. वेद मानव को संस्कारित करने का उपदेश देते हैं ९२

७. बाइबिल स्त्री की अवमानना करता है वेद उनका उन्नयन करता है ९४

१. बाइबिल द्वारा स्त्री की अवमानना ९४

(एक) बाइबिल के ईश्वर ने स्त्रियों को अभिशाप दिया ९४

(दो) स्त्री का पुरुष के लिए निर्माण किया गया, न कि पुरुष का स्त्री के लिए ९७

(तीन) ईसा मसीह पुरुष का शीर्ष है, स्त्री का नहीं ९७

(चार) स्त्रियों को पुरुषों के अधीन रहना चाहिए ९८

(पांच) स्त्रियों का अपने पतियों के अधीन होना ९९

(छः) गिरजा घरों में स्त्री को बोलने की अनुमति नहीं १०१

(सात) प्रार्थना के समय स्त्री को, पुरुष को नहीं, अपना सिर ढक कर रखना चाहिए १०२

(आठ) कडुवा जल पिला कर विश्वासघाती पत्नी की परीक्षा १०३

(नौ) क्या स्त्री में आत्मा है ? १०४

(दस) बाइबिल का विवाह विच्छेद (तलाक) का विधान स्त्री का अपमान करता है १०५

(ग्यारह) क्या ईसाई पति अपनी पत्नी की हत्या करके विवाह बंधन से अपने आप को मुक्त कर सकता है ? १०६

२. वेदों में नारी की गौरवान्विति १०८

८. बाइबिल में नग्नता की घटनाएं ११२
वेदों में नैतिक आचरण के नियम

१. बाइबिल में नग्नता की घटनाएं ११२

(एक) नूह ने मदिरा पान किया और नंगा रहा ११२

(दो) रूबेन द्वारा अपने पिता की उपपत्नी के साथ सम्भोग प्रसंग ११३

(तीन) ओनान द्वारा अपने भाई की पत्नी के साथ सम्भोग प्रसंग ११४

(चार) अपनी विधवा पुत्रवधू के साथ यूदा का सम्भोग प्रसंग ११५

(पांच) बाइबिल के ईश्वर ने अपने पैग़म्बर इसायाह को तीन वर्ष तक सर्वथा नंगे घूमने का आदेश दिया ११७

(छः) ईसा मसीह द्वारा नपुंसकत्व का प्रस्ताव ११८

(सात) बेटियों का अपने पिता के साथ संसर्ग ११९

(आठ) लोट द्वारा अपनी दो बेटियों को समलैंगिकों (गुदा मैथुन करने वालों) की उपद्रवी भीड़ को सौंपना १२२

(नौ) पैग़म्बर अब्राम का अपनी दासी के साथ अवैध सम्बंध १२३

(दस) पैग़म्बर अब्राम अपनी बहन से विवाह करता है १२४

(ग्यारह) अब्राम,पैग़म्बर, अपनी पत्नी के सम्मान का सौदा करता है १२५

(बारह) महिलाओं का परित्याग–ईश्वर के साथ का परिणाम १२७

(तेरह) डैविड (दाऊद) ने दस उपपत्नियों को बंदी बनाया १२८

(चौदह) मूसा : अपने उपभोग के लिए कुंवारियों को जीवित रखो और जो कुंवारी नहीं उन्हें मार डालो १२८

(पंद्रह) कामवासना की पूर्ति के लिए बेटियों को बेचना १३१

(सोलह) शत्रु पुरुषों की हत्या और उनकी स्त्रियों से विवाह १३२

२. वेदों में नैतिक आचरण संहिता १३५

९. बाइबिल : ईसाई मत में विश्वास न करने वालों को यातना पहुंचाओ, वेद : सब से प्रेम करो १४०

१. बाइबिल : ईसाई मत को स्वीकार न करने वालों को यातना पहुंचाओ १४०

(एक) ईसाई मत को स्वीकार न करने वालों को यातना दो, परन्तु पेड़ों को हानि न पहुंचाओ १४०

(दो) ईसाई मत पर विश्वास न करने वालों को मारो नहीं, परन्तु उन्हें यातना पहुंचाओ १४१

२. वेद : सब से प्रेम कीजिए १४४

१०. बाइबिल अत्याचार पूर्ण असहिष्णुता का प्रचार करता है, वेद भ्रातृभाव का प्रचार करता है १४६

१. बाइबिल अत्याचार-पूर्ण असहिष्णुता का प्रचार करता है १४६

(एक) अपने भाई और पुत्र का वध कर दो, यदि वे तुम्हें दूसरे देवताओं की पूजा के लिए बहकाते हैं १४६

(दो) अपने नगर के सब नास्तिकों को मार डालो १४९

(तीन) दुधमुहें शिशुओं का वध और गर्भवती स्त्रियों का पेट चीर डालना १५१

(चार) दुधमुहें शिशुओं को पत्थरों पर पटक कर मार डालना १५१

(पांच) लइश के शांतिपूर्ण नागरिकों का नरसंहार १५१

(छः) हर किसी को जो सांस लेता है मार डालो १५२

२. वेदों में भ्रातृभाव का प्रचार किया गया है १५२

११. बाइबिल का ईश्वर पशुओं की बलि मांगता है, वेद का ईश्वर गूंगे पशुओं की रक्षा करता है १५७

१. बाइबिल का ईश्वर पशू बलि मांगता है १५७

(एक) बाइबिल का ईश्वर मूसा के द्वारा इस्राईल के बच्चों से पशुओं की बलि मांगता है १५७

(दो) बैल का रक्त वेदी पर छिड़काना १५८

२. वेद का ईश्वर गूंगे पशुओं की रक्षा करता है १५८

१२. वेदों में शाकाहार सिद्धांत, बाइबिल में मांसाहार १६०

१. वेदों में शाकाहार सिद्धांत १६०
२. बाइबिल में मांसाहार १६२
१३. बाइबिल में मनुष्य की बलि, वेदों में अहिंसा १६४
१. बाइबिल में मनुष्य की बलि १६४
(एक) एक बार बलि हेतु भेंट किए गए मनुष्यों आदि का निश्चय ही वध किया जाएगा १६४
(दो) सभी पहलौठे शिशुओं की अग्नि में आहुति देना १६६
(तीन) बछड़ों और मनुष्य के पहलौठों की बलि १६७
(चार) यिफ़्तह ने अपनी इकलौती बेटी को जला कर ईश्वर को भेंट चढ़ा दिया १६७
(पांच) दाऊद ने अकाल को रोकने के लिए साऊल के सात बेटों को बलि चढ़ा दिया १६८
(छः) बाइबिल के ईश्वर ने इब्राहीम को आदेश दिया कि वह अपने इकलौते बेटे को बलि चढ़ा दे १७०
२. वेदों में अहिंसा १७१
१४. बाइबिल में नरमांस-भक्षण की प्रवृत्ति वेद में पवित्रता १७३
१. बाइबिल में नरमांस-भक्षण १७३
2. वेद में पवित्रता १७५
१५. बाइबिल में अशोभनीय भाषा, वेद में मधुर भाषा १७७
१. बाइबिल में अशोभनीय भाषा १७७
(एक) नास्तिक के लिए 'हरामी' (bastard) शब्द का प्रयोग १७७
(दो) मनुष्यों के लिए 'कुत्ते' शब्द का प्रयोग १७८

२. वेदों में जिह्वा की मधुरता १७९

१६. बाइबिल की अवैज्ञानिक शिक्षा वेदों में वैज्ञानिक सत्य १८१

१. बाइबिल की अवैज्ञानिक शिक्षा १८१

(एक) आकाश में फाटक लगे हैं १८१

(दो) पृथ्वी की नींव, खम्भे और चार कोने हैं १८१

(तीन) पृथ्वी नहीं, सूर्य परिक्रमा करता है १८२

(चार) क्या रोग शैतान (अशुद्ध आत्मा) के द्वारा उत्पन्न किया जाता है ? १८७

(पांच) रोगी का उपचार डाक्टर कर सकता है या पादरी ? १८८

२. वेद में वैज्ञानिक सत्य १८९

(एक) पृथ्वी, सूर्य नहीं, परिक्रमा करती है १८९

(दो) रोग का उपचार औषधियों के द्वारा होता है न कि पादरी द्वारा १९०

(तीन) प्राकृतिक चिकित्सा १९१

(चार) आयुर्वेदिक औषधियां १९२

१७. बाइबिल असत्य का उपदेश देता है वेद सत्य का उपदेश देते हैं १९४

१. बाइबिल असत्य का उपदेश देता है १९४

२. वेद सत्य का उपदेश देते हैं १९७

१८. बाइबिल ज्ञान, बुद्धिमत्ता और दर्शन की निंदा करता है वेद उनका संवर्धन करते हैं १९९

१. बाइबिल ज्ञान, बुद्धिमत्ता और दर्शन की निंदा करता है १९९

(एक) बाइबिल ज्ञान की निंदा करता है १९९

(दो) बाइबिल बुद्धिमत्ता की निंदा करता है १९९

(तीन) बाइबिल दर्शन की निंदा करता है २००

२. वेद ज्ञान का संवर्धन करते हैं २०२

१९. बाइबिल का नरक दण्ड का सिद्धांत वेदों का मुक्ति का सिद्धांत २०५

१. बाइबिल का ग़ैर-ईसाइयों के लिए नरक दण्ड का सिद्धांत २०५

(एक) नास्तिक (ग़ैर-ईसाई) आग में जला देने के योग्य हैं २०५

(दो) नास्तिकों (ग़ैर-ईसाई) के लिए ईसा मसीह का नरक दण्ड का सिद्धांत २०६

(तीन) मोक्ष केवल ईसा मसीह के माध्यम से संभव है २०८

(चार) धनी लोगों के लिए मुक्ति नहीं २१०

२. सब पुण्यात्मा लोगों के लिए, वेदों में मुक्ति का सिद्धांत २११

२०. वेदों और बाइबिल दोनों में "भले बनो, भला करो" का सिद्धांत २१३

१. वेदों में "भले बनो, भला करो" का सिद्धांत २१३

२. बाइबिल में "भले बनो, भला करो" का सिद्धांत २१५

(एक) दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो, जैसा तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारे साथ करें २१५

२१. वेदों और बाइबिल दोनों में क्षमा दान और अहिंसा के उपदेश २१९

१. वेदों में क्षमा दान और अहिंसा २१९

२. बाइबिल में क्षमा दान और अहिंसा २२२

(एक) यदि कोई आपके दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तो बाहिना गाल भी उसकी ओर कर दो २२२

(दो) जो आपका उत्पीड़न करें, तुम उनके लिए प्रार्थना करो २२६

(तीन) यदि तुम ईश्वर से क्षमा दान की अपेक्षा करते हो तो अपने साथियों को क्षमा कर दो २२८

(चार) एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के विरुद्ध तलवार नहीं उठाएगा २२९

२२. बाइबिल में जादू टोना, वेदों में दैवी मार्ग २३१

१. बाइबिल में जादू टोना २३१

(एक) यूरोप में तीन लाख लोगों को जादू टोना करने का अपराधी ठहराया गया और उन्हें मार डाला गया २३१

(दो) आधुनिक यूरोप में जादू टोना के आधार पर उत्पीड़न २३९

(तीन) ईसाई सभा द्वारा दो भारतीय लड़कियों को जादूगरनी कह कर जला दिया जाना २४१

(चार) अन्य किसी सम्प्रदाय की तुलना में ईसाई मत ने अधिक रक्त बहाया है २४२

२. वेदों का दैवी मार्ग २४२

२३. बाइबिल दासता की स्थापना करता है, वेद समानता और स्वतंत्रता का उपदेश देते हैं २४५

१. बाइबिल दासता की स्थापना करता है २४५

(एक) दास स्थायी सम्पत्ति हैं जो भावी सन्तान को उत्तराधिकार के रूप में मिलते हैं २४५

(दो) दासों के सम्बंध में बाइबिल द्वारा दिए गए निर्णय २४७

(तीन) दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) भी दासता की अनुमति देता है २४८

२. वेद समानता और स्वतंत्रता का उपदेश देते हैं २५२

(एक) सब मनुष्य समान हैं २५२

(दो) जिओ और जीने दो २५२

(तीन) दासता पीड़ा है और स्वतंत्रता प्रसन्नता २५३

(चार) जो हमें दास बनाए उसे कुचल दो २५४

२४. बाइबिल जातिवाद का उपदेश देता है वेद समान अधिकारों का उपदेश देते हैं २५६

१. बाइबिल जातिवाद का उपदेश देता है २५६

२. वेद समान अधिकारों का उपदेश देते हैं २५७

२५. बाइबिल का ईश्वर मूर्तियों को तोड़ता और जलाता है, वैदिक ईश्वर परमानंद प्रदान करता है २५८

१. बाइबिल का ईश्वर मूर्तियों को तोड़ता और जलाता है २५८

२. वैदिक ईश्वर परमानंद प्रदान करता है २५९

२६. बाइबिल का ईश्वर ईर्ष्यालु और प्रतिशोधी है, वेदों का ईश्वर दयालु पिता है २६१

१. बाइबिल का ईश्वर ईर्ष्यालु और प्रतिशोधी है २६१

(एक) बाइबिल का ईश्वर ईर्ष्यालु है २६१

(दो) बाइबिल का ईश्वर प्रतिशोधी है २६२

२. वैदिक ईश्वर दयावान पिता है २६२

२७. बाइबिल के ईश्वर की अत्याचार पूर्ण वाणी, वेद के ईश्वर की परम सुखदायी प्रवृत्ति २६४

१. बाइबिल के ईश्वर की अत्याचार पूर्ण वाणी २६४

(एक) क्या बाइबिल का ईश्वर प्रेम का ईश्वर है ? २६४
(दो) बाहर के लिए तलवार और अन्दर के लिए आतंक २६५
(तीन) जानवरों के दांतों और सर्पों के विष के द्वारा वध २६६
(चार) पिताओं के तथा कथित कुकर्मों के कारण शिशुओं का नरसंहार २६७
२. वैदिक ईश्वर की परम सुखदायी प्रवृत्ति २६७
२८. बाइबिल के ईश्वर के लोगों द्वारा हत्याएं, वैदिक ऋषियों द्वारा दयाशीलता २६९
१. बाइबिल के ईश्वर के लोगों द्वारा हत्याएं २६९
(एक) दाऊद द्वारा नरसंहार २६९
(क) दाऊद ने लोगों को आरों के नीचे रख दिया २६९
(ख) दाऊद ने २०० लोगों का वध कर दिया २७२
(दो) येहू, राजा और पैग़म्बर, द्वारा हत्याकाण्ड २७२
(क) येहू, राजा और पैग़म्बर, ने सब को मार डाला और किसी को जीवित नहीं रहने दिया २७२
(तीन) योशुआ द्वारा हत्या काण्ड २७२
(क) मूसा के उत्तराधिकारी योशुआ ने उन सभी को मार डाला जो सांस लेते थे २७२
(चार) एलियाह पैग़म्बर द्वारा हत्याएं २७३
(क) एलियाह पैग़म्बर ने ४५० पुजारियों को मार डाला, किसी को नहीं छोड़ा २७४
(पांच) समूएल पैग़म्बर द्वारा हत्याएं २७४

(क) पैग़म्बर समूएल ने अगाग के टुकड़े कर दिए २७४
(छः) मूसा द्वारा हत्याएं २७४
(क) मूसा ने निर्दोष शिशुओं की भी हत्याएं कर दी २७४
(सात) पैग़म्बर एलीशा द्वारा हत्याएं २७४
(क) पैग़म्बर एलीशा ने ४२ छोटे बच्चों की हत्या कर दी २७५
२. वैदिक ऋषियों द्वारा दयाशीलता २७६
२९. ग्रन्थ सूची २७८
३०. अनुक्रमणिका २८२

"यदि तुम आओ तो तुम्हारे साथ, यदि नहीं तो तुम्हारे बिना, यदि तुम विरोध करो तो उसकी अवहेलना करते हुए, मैं अपना कार्य निरंतर करता रहूंगा।"

– वीर सावरकर

"जब कोई मनुष्य हिन्दू धर्म की परिधि से निकल जाता है, तो न केवल एक हिन्दू कम हो जाता है अपितु एक शत्रु अधिक हो जाता है।"

– स्वामी विवेकानन्द

"ओ३म् यह ईश्वर का सर्वोत्कृष्ट नाम है क्योंकि इसमें सब गुणों का समावेश है।"

"मैंने परीक्षा करके निश्चय किया है कि जो धर्मयुक्त व्यवहार में ठीक-ठीक वर्तता है उसको सर्वत्र सुख, लाभ और जो विपरीत वर्तता है वह सदा दुःखी होकर अपनी हानि कर लेता है।"

– स्वामी दयानन्द सरस्वती

प्राक्कथन

ओ३म्

प्रिय श्री कन्हैयालाल जी,

मैंने, आपकी पुस्तक 'पवित्र वेद और पवित्र बाइबिल - एक तुलनात्मक अध्ययन' के कुछ प्रमुख अंश पढ़े।

मेरी पहली प्रतिक्रिया यह है कि आपकी अन्य विषयों की कृति के समान ही यह कृति भी अत्यन्त सारगर्भित एवं विद्वतापूर्ण है। वैसे दो अतुलनीय विषयों की तुलना करना बड़ा कठिन होता है क्योंकि एक ओर हैं वेद, जिनकी प्रमाणिकता असंदिग्ध है और दूसरी ओर है बाइबिल जिसके बारे में यह सर्वमान्य है कि उसका वर्तमान स्वरूप अनेक संशोधनों का परिणाम है। आपका यह कार्य अत्यन्त श्रमसाध्य है। इससे एक दृष्टि में ही यह बात सामने आ जाती है कि अनेक ऐहिक और पारलौकिक विषयों के संबंध में वेद एवं बाइबिल क्या कहते हैं।

यहाँ भी आपके सामने अनेक कठिनाइयाँ आई होंगी। वेदों में निरूपित अंतिम सत्य की उपनिषदों तथा महामनीषियों द्वारा समय-समय पर लिखे गये भाष्यों में व्याख्या की गई है। यह सरलीकरण की उस प्रक्रिया की ओर इंगित करती है जिसे गूढ़ एवं जटिल आध्यात्मिक तत्वों को मानव मन के विभिन्न स्तरों के लिए बोधगम्य बनाने हेतु अपनाया गया था। पर बाइबिल ने अपनी आस्था को समझाने के लिए ऐसी किसी प्रक्रिया को नहीं अपनाया। इसके परिणामस्वरूप वह आस्था एक निष्प्रश्न आस्था बन गई है जिस पर कोई प्रश्न ही नहीं उठ सकता। इसी कारण ईसाई मतवाद कट्टर मान्यताओं का ढाँचा मात्र बनकर रह गया है। इसका एक उदाहरण तब आया जब मदर टेरेसा से एक पत्रकार ने प्रश्न किया कि, "आज के विज्ञान ने जब यह सिद्ध कर दिया है कि पृथ्वी

सूर्य के चारों ओर घूमती है तब भी क्या आप बाइबिल के उसी प्रतिपादन को मानेंगी कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाता है?'' तो मदर टेरेसा ने उत्तर दिया कि ''मैं तो बाइबिल के कथन को ही सत्य मानूँगी।'' यही कारण है कि ईसाई मतवाद कट्टर मान्यताओं का ढाँचा मात्र बनकर रह गया है। इसके विपरीत वैदिक दर्शन आस्था की एक ऐसी संरचना प्रस्तुत करता है जिसे उच्चतर तर्क और अनुभूति के प्रकाश में समझाने का प्रयास किया गया है। इस कारण उसमें कोई कट्टरता नहीं आ पाई है।

ईसाई आस्था का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है उसकी यह मान्यता कि बाइबिल का पाठ पूर्णतः त्रुटिरहित है अर्थात् उसमें कोई ग़लती है ही नहीं। पर हम लोगों के लिए लिखित शब्द तो आत्मानुभूति के माध्यम से चरम सत्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा जगाने का माध्यम मात्र है। अंतिम सत्य वर्णनातीत होने के कारण हमने उसे कभी निश्चयात्मक रूप से प्रस्तुत करने का विचार ही नहीं किया। यही कारण है कि वेदों में अंतिम सत्य को 'इति' न कहकर 'नेति' कहकर वर्णित किया गया है अर्थात् 'ऐसा ही है' कहने के स्थान पर 'ऐसा ही नहीं है' कहा गया है।

इस संबंध में आपका ध्यान दोनों अब्राहमी मतों - याने इस्लाम और ईसाईयत तथा हिंदु मतों के संबंध में 'एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' में दिये गये वर्णन की ओर आकर्षित करना चाहूँगा।

इस विश्व-कोश में कहा गया है कि ईसाईयत प्रारम्भ से ही एक असहिष्णु आस्था रही है। वास्तव में उसकी असहिष्णुता के कारण ही रोमन साम्राज्य भी ईसाईयत के विरुद्ध असहिष्णु बन गया। उसका यह भी कथन है कि रोम के देशज मत (जिन्हें पेगन कहा जाता है) उसके सामने धराशायी होते चले गये क्योंकि उनमें असहिष्णु ईसाई मत से निपटने तथा अपने आप की उससे रक्षा करने का सामर्थ्य ही नहीं था। अर्थात् मूलतः ईसाईयत एक संघर्षशील और संघर्षसर्जक आस्था है।

इसके विपरीत हिन्दु आस्था का वर्णन करते हुए वहाँ कहा गया है वह एक सर्वसमावेशक संघर्षरहित आस्था है। सच पूछा जाय तो वह एक जीवनपद्धति है और हिन्दु उपासना इस बात पर निर्भर नहीं है कि ईश्वर है या नहीं अथवा उसका एक रूप है या अनेक। इसे एक विडम्बना ही कहना होगा कि यह सिद्ध करने के लिए कि हिन्दुत्व एक सर्वसमावेशक व्यवस्था है तथा यह हमारे संविधान के पंथनिरपेक्षता के सिद्धान्त के विपरीत नहीं है, हमारे न्यायालयों को एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका की शरण लेनी पड़ती है।

वेद और बाइबिल की तुलना करने वाली आपकी कृति हिन्दुओं के पक्ष में किया गया और एक विद्वत्तापूर्ण प्रयास है जो ईसाईयों के साथ संवाद व समझ निर्माण करने का ऐसा माध्यम बन सकता है जिससे ईसाई हिन्दु उपासना पद्धतियों के प्रति अपनी असहिष्णुता एवं एकान्तिकता को छोड़ सकें। मेरी इच्छा है कि आपकी यह कृति प्रमुख ईसाई विद्वानों के पास पहुँचे जिससे दोनों ओर के विद्वानों के बीच वास्तविकता के आधार पर संवाद हो सके। आशा है आप इस दिशा में विचार करेंगे।

सविनय आपका ही,

(कुप्. सी. सुदर्शन)
सरसंघचालक,
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

श्रावण शुक्ल ०७
कलियुगाब्द ५१०२
ईस्वी दि. ६ अगस्त २०००

प्रस्तावना

मैं ने यह पुस्तक क्यों लिखी ?

१. ईसाई मतांतरकार प्रचारकों के दुर्भावना पूर्ण वक्तव्य

(एक) **जे.पी. लियोनार्ड**, मदुराई के एस जे आर्चबिशप ने बहुत स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा की :

> *"यदि हम बिना किसी दुराव और छुपाव के अपने मंतव्य स्पष्ट कर देंगे तो हमारा विश्वास है कि इस भूमि से हिन्दू पुराण और हिन्दू धर्म सर्वथा अदृश्य हो जाना चाहिये और यह जितना शीघ्र अदृश्य हो, उतना ही श्रेयस्कर है।"*[१]
>
> **– जे.पी. लियोनार्ड**

(दो) **रिचर्ड टैम्पल** ने १८८३ में इंग्लैंड में ईसाई सभा को सम्बोधित करते हुए अपनी उत्कट आशा व्यक्त की थी कि हिन्दू धर्म समाप्त हो जाएगा। उसने कहा :

---

१. **ब्रह्मचारी विश्वनाथ :** *'आंध्र प्रदेश में ईसाई धर्म प्रचारकों की गतिविधियों का सर्वेक्षण'*, पृष्ठ १

"भारत एक सुदृढ़ दुर्ग के समान है, जिस पर भारी गोलाबारी की जा रही है। हमने एक के बाद एक आघात किये हैं, एक के बाद एक प्रहार किये हैं, प्रारम्भ में तो कोई महत्त्वपूर्ण सफलता नहीं मिली, परन्तु अन्ततोगत्वा इस दुर्ग का सुदृढ़ ढाँचा धराशायी हो जाएगा, और हमें आशा है कि एक दिन उसी प्रकार भारत के असभ्य मूर्तिपूजक मत मतांतर नष्ट हो जाएंगे।"[२]

– **रिचर्ड टैम्पल**

(तीन) **फ्रैंसिस ज़ेवियर** ने एक बार घोषणा की थी :

"मैं आदेश देता हूँ कि सब जगह मंदिर नष्ट कर दिए जाएं और सब मूर्तियाँ तोड़ दी जाएं। मैं नहीं जानता कि मंदिरों के गिराए जाने और मूर्तियों के तोड़े जाने का दृश्य प्रत्यक्ष देख कर जो प्रसन्नता मुझे होती है, उसका शब्दों में कैसे वर्णन किया जा सकता है।"[३]

– **फ्रैंसिस ज़ेवियर**

(चार) जनवरी १९९३ में न्यूज़ीलैंड वासी अंग्रेज़ी ईसाई प्रचारकों का एक दल **श्री पाल सौंडर्स** के नेतृत्व में भारत आया इसलिए कि यहाँ ईसाई मत का प्रचार कर सके। उन्होंने आश्चर्य के साथ यह दुःख व्यक्त किया :

"भारत के ९० प्रति शत लोग हिन्दू हैं और उनमें ईसाई सम्प्रदाय के सम्बन्ध में ज्ञान का जितना अभाव है उस पर विश्वास करना कठिन है। जबकि ईसाई मत एक लम्बे काल से भारत में है, और

---

२. **रिचर्ड टैम्पल :** *'ओरिएंटल एक्सपीरियंस' (पूरब का अनुभव)*, लंदन, १८८३, पृष्ठ १४२

३. **मसूर आश्रम पत्रिका,** *'अंग्रेज़ी मासिक मुम्बई, ब्रह्मचारी विश्वनाथ जी द्वारा सम्पादित,* सितम्बर १९८५, पृष्ठ २

ईसाई मात्र तीन प्रति शत हैं।"

– **पाल सौंडर्स**

(पाँच) दूर दर्शन ने **डे स्प्रिंग इन्टरनेशनल (अन्तर्राष्ट्रीय बसंत दिवस)** के कार्यक्रम में **सुश्री टेरेसा** के इस कथन का उल्लेख किया :

"भारत की समस्या का समाधान सिवाय ईसा मसीह के उपदेश के कोई नहीं।"[४]

– **सुश्री टेरेसा**

(छ:) **डे स्प्रिंग इंटरनेशनल** द्वारा दु:ख की अभिव्यक्ति :

"यद्यपि ईसाई मत भारत में प्राय: २००० वर्ष से है, परन्तु हमारी जन संख्या ३ प्रति शत से कम है। शेष ९७ प्रतिशत तक अभी-हमें पहुँचना है।"

उपरोक्त दुर्भावना पूर्ण मंतव्यों और वक्तव्यों से यह स्पष्ट प्रकट हो जाता है कि ईसाई मत प्रचारकों ने हमारे देश की सुरक्षा और अखण्डता के लिए गंभीर ख़तरा पैदा कर दिया है। इस ख़तरे का प्रभावी रीति से सामना करने के लिए, मैं ने यह पुस्तक लिखने का कष्ट उठाया है, इसलिए कि समस्त विश्व को पता लग जाए कि सत्य क्या है।

२. पोप जॉन पाल की 'एशिया में ईसाई प्रचारक सभा' (एक्लेज़िया इन एशिया) नामक रचना का अन्तर्विश्लेषण

(एक) पोप की, तीसरी सहस्राब्दि में समस्त एशिया को ईसाई बनाने की योजना

जब पोप जॉन पाल द्वितीय नवम्बर १९९९ में भारत आए, तो

---

४. **एच.वी. शेषाद्रि** : *'क्रिस्चियन मिशनस इन भारत – सम क्वैस्चनस टु पोप'* (भारत में ईसाई मत प्रचारक संस्थाएँ – पोप से कुछ प्रश्न), पृष्ठ १२

उन्होंने ६ नवम्बर १९९९ को 'एशिया में ईसाई प्रचार सभा' (एकलेज़िया इन एशिया) नामक रचना, अर्थात् पोप के प्रबोधन प्रलेख, एशिया के ३०० से अधिक बिशपों के समक्ष नई दिल्ली के सैक्रेड हार्ट कैथड्रल में, हस्ताक्षर करने के उपरांत प्रस्तुत किया। 'एशिया में ईसाई प्रचारक सभा' नामक रचना, पादरियों की सभा (Synod) के उपरांत एशिया के बिशपों और पादरियों के समक्ष पोप द्वारा दिया गया प्रबोधन प्रलेख है। 'एशिया में ईसाई प्रचारक सभा' (Ecclesia in Asia एक्लेज़िया इन एशिया) की प्रस्तावना (जिसका शीर्षक है 'एशिया में ईश्वर की योजना का चमत्कार) में पोप ने एशिया के बिशपों और पादरियों से अनुरोध किया है :

> *"जिस प्रकार प्रथम सहस्राब्दि में, क्रास (ईसाई मत का चिह्न) की स्थापना यूरोप की धरती पर की गई थी, और दूसरी सहस्राब्दि में अमरीका और अफ़्रीका की धरती पर, उसी प्रकार हम प्रार्थना करते हैं कि तीसरी ईसाई सहस्राब्दि में इस विशाल एवं महत्त्वपूर्ण महाद्वीप में हम बड़े विस्तृत स्तर पर लोगों को अपने मत में परिवर्तित कर लेंगे।"*[५]
>
> **– पोप जॉन पाल द्वितीय**

पाठक इस बात पर ध्यान दें कि पोप ने उपरोक्त योजना को 'एशिया में ईश्वर की योजना का चमत्कार' कहा है। पोप के उपरोक्त शब्दों ने मुझे यह सोचने के लिए उत्प्रेरित किया कि यूरोप और अमरीका के महाद्वीपों ने क्यों ईसाई मत को अंगीकार किया। बाइबिल में ऐसी कौन सी विशिष्टताएँ हैं जिन के कारण पश्चिम के लोग ईसा मसीह और उसके उपदेश की ओर आकृष्ट हुए ? यही सोच कर मैं ने गम्भीरता के साथ पवित्र वेद के साथ तुलना करते हुए पवित्र बाइबिल का पुनः अध्ययन करने का विचार किया। यह पुस्तक मेरे द्वारा दोनों पवित्र

---

५. **पोप जॉन पाल द्वितीय :** *'एशियाई बिशप संघ सम्मेलन की छटी सदस्य सभा में, १५ जनवरी १९९५ को मनीला में भाषण। इनसेगनेमेंटी १८, १(१९९५), १५९*

पुस्तकों के गम्भीर एवं विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन का परिणाम है।

(दो) पोप : विश्व में ईसा मसीह के अतिरिक्त अन्य कोई मुक्ति दाता नहीं है

शिष्टाचार के नियमों के नाते पोप से यह अपेक्षा अवश्य थी कि वे कम से कम भारत की भूमि पर हिन्दू धर्म के आध्यात्मिक नेताओं को श्रद्धांजलि अर्पित करते। वे न केवल ऐसा करने में विफल हुए अपितु उन्होंने यह घोषणा और प्रतिपादना कर दी, और वह भी भारत की भूमि पर, कि विश्व का मुक्ति दाता केवल ईसा मसीह है और अन्य किसी धर्म का संस्थापक (हिन्दू धर्म सहित) नहीं है। उन्होंने पादरियों की सभा में एशिया के बिशपों और पादरियों को निर्देश किया कि वे स्पष्ट शब्दों में यह बात एशिया के लोगों को बता दें। 'एशिया में ईसाई प्रचारक सभा' (एक्लेज़िया इन एशिया) की प्रस्तावना के द्वितीय पैरा में वे कहते हैं :

> *"मैं यह आशा करता हूँ कि पादरी सभा ने इस सत्य को अधिक पूरी तरह प्रत्यक्ष और स्पष्ट कर दिया होगा कि मनुष्य और ईश्वर के बीच ईसा मसीह ही मध्यस्थ हैं और वे ही संसार के लोगों को मुक्ति दिलाते हैं और वे अन्य महान धर्मों के संस्थापकों की तुलना में सर्वथा विशिष्ट व्यक्तित्व रखते हैं।"*[६]
>
> **– पोप जॉन पाल द्वितीय**

पोप आगे कहते हैं :

> *"वे (एशिया के धर्म) जिन धार्मिक मूल्यों की शिक्षा देते हैं, उनकी पूर्ति अन्ततोगत्वा ईसा मसीह*

---

६. **पोप जॉन पाल द्वितीय** : धर्मोपदेश सम्बन्धी पत्र टेरीटो मिलेनियो एडवेनीएंट (१० नवम्बर १९९४) ३८ : ए ए एस ८७ (१९९५), ३०

द्वारा होती है।"[७]

– पोप जॉन पाल द्वितीय

पोप के उपरोक्त शब्दों ने मुझे प्रेरित किया कि मैं न केवल एशिया के लोगों के समक्ष अपितु समस्त विश्व के लोगों के सामने पवित्र ग्रंथ बाइबिल और पवित्र वेद का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करूँ ताकि वे स्वयं निर्णय कर सकें कि क्या केवल ईसा मसीह ही संसार के मुक्ति दाता हैं।

(तीन) पोप द्वारा एशियाइयों के धर्म परिवर्तन के लिए घोषणा

पोप जॉन पाल 'एक्लेज़िया इन एशिया' की प्रस्तावना के पैरा ४ में इस प्रकार कहते हैं :

> *"कैथोलिक समुदाय की विनीत स्थिति और उसके सदस्यों की दुर्बलता को स्मरण करते हुए, पादरियों की यह सभा धर्म परिवर्तन के लिए आह्वान है, ताकि एशिया का चर्च उन कृपाओं का पात्र बन सके, जिन्हें ईश्वर निरन्तर प्रदान करता रहता है।... १९९५ में मैं ने मनीला में एकत्रित हुए बिशपों से अनुरोध किया था कि* ***वे एशिया के द्वार ईसा मसीह के लिए खोल दें।"***[८]

– पोप जॉन पाल द्वितीय

(चार) पोप : समस्त चर्च (ईसाई मत संस्था) का कर्त्तव्य है कि वह लोगों को ईसाई मत में परिवर्तित करे।

पोप अपने 'एक्लेज़िया इन एशिया' नामक प्रलेख में स्वीकार करते

---

७. **पोप जॉन पाल द्वितीय** : 'एक्लेज़िया इन एशिया' (एशिया में ईसाई प्रचारक सभा), नवम्बर ६, १९९९, अध्याय १, पैरा ६

८. **पोप जॉन पाल द्वितीय** : 'एक्लेज़िया इन एशिया' (एशिया में ईसाई प्रचारक सभा) नवम्बर ६, १९९९, प्रस्तावना, पैरा ४

गुरु विरजानन्द दण्डसभा
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 5277
दयानन्द महिला

हैं कि समस्त चर्च प्रचारक हैं और धर्म परिवर्तन करना उनका कर्त्तव्य है:

> *"द्वितीय वैटीकन परिषद् ने स्पष्टतया यह शिक्षा दी है कि समस्त चर्च ईसाई प्रचारक हैं और धर्म परिवर्तन करना उनका और ईश्वर के सभी लोगों (अर्थात् ईसाईयों) का कर्त्तव्य है।"*[९]
>
> **– पोप जॉन पाल द्वितीय**

(पाँच) पोप : एशिया के लोगों को ईसा मसीह और उसके उपदेश की आवश्यकता है

पोप जॉन पाल द्वितीय एशिया में ईसा मसीह के अनुयाइयों से अनुरोध करते हैं कि वे इस आधार पर कि एशिया के लोगों को ईसा मसीह और उसके उपदेश की आवश्यकता है, अपने तथा कथित ईश्वरीय कार्य अर्थात् उनका धर्म परिवर्तन करने का कार्य सम्पन्न करने के लिए अनवरत प्रयत्न में लग जाएं। वे कहते हैं :

> *"एशिया के लोगों को ईसा मसीह और उसके उपदेश की आवश्यकता है। एशिया उस संजीवन जल के लिए प्यासा है जो केवल ईसा मसीह दे सकते हैं। (देखिये सन्त योहन ४:१०-१५) इस लिए एशिया में ईसा मसीह के अनुयाइयों को उस धर्म कार्य को पूरा करने के लिए अनथक प्रयत्न करना चाहिए, जो ईश्वर ने उन्हें सौंपा है और उन्हें वचन भी दिया है कि वे संसार के अन्त तक सदा उनके साथ रहेंगे। (देखिए सन्त मत्ती, २८-२०)"*[१०]
>
> **– पोप जॉन पाल द्वितीय**

---

९. **पोप जॉन पाल द्वितीय :** 'एक्लेज़िया इन एशिया' (एशिया में ईसाई प्रचारक सभा) नवम्बर ६, १९९९, अध्याय ७, पैरा ४२

१०. **पोप जॉन पाल द्वितीय :** 'एक्लेज़िया इन एशिया' (एशिया में ईसाई प्रचारक सभा) नवम्बर ६, १९९९, अध्याय ७, निष्कर्ष, पैरा ५०

यह सर्वथा असत्य कथन है कि एशिया के लोगों को ईसा मसीह और उसके उपदेश की आवश्यकता है। हम जानते हैं कि ईसाई प्रचारक किस प्रकार दरिद्र जनजातियों की दरिद्रता, अज्ञानता और निरक्षरता का अनुचित लाभ उठा कर शक्ति प्रयोग, धोखे और लालच के द्वारा उनका धर्म परिवर्तन करते हैं। निरक्षर और अर्द्ध शिक्षित लोग नहीं जानते कि पवित्र बाइबिल में कितनी भयानक बातें लिखी हैं। इस लिए मैं ने यह आवश्यक समझा कि यह पुस्तक लिख कर लोगों को चित्र का दूसरा पक्ष (अंधकारमय पक्ष) दिखाऊँ।

मेरी यह पुस्तक पोप के धर्म परिवर्तन के आह्वान का उपयुक्त उत्तर है। यदि कोई मतांतरण अपनी अन्तरात्मा की स्वतंत्रता के आधार पर होता है, तो मुझे इस बात का कहीं अधिक विश्वास है कि मेरी यह पुस्तक पोप के अनुयाइयों को वैदिक धर्म अपनाने के लिए प्रेरित करेगी। **इस पुस्तक को लिखने का मुख्य उद्देश्य यही है कि विश्व के लोगों के समक्ष सत्य को प्रस्तुत किया जा सके।**

(छः) एशियाइयों को ईसाई मत में मतान्तरित करने के लिए कैथोलिक स्कूलों का दुरूपयोग

पोप जॉन पाल द्वितीय ने बिशपों और पादरियों से अनुरोध किया कि वे मतांतरण करने के लिए कैथोलिक स्कूलों और विश्वविद्यालयों का प्रयोग (अपितु दुरूपयोग) करें। वे कहते हैं :

> *"कैथोलिक स्कूल ऐसे स्थान के रूप में बने रहने चाहिएं जहाँ स्वतंत्र रीति से ईसाई मत का प्रचार हो और उसे अंगीकार करना (अर्थात् मतांतरण) होता रहे। इसी रीति से कैथोलिक विश्वविद्यालयों को शिक्षा के क्षेत्र में अत्युत्तम स्तर बनाए रखते हुए, जिसके लिए वे पहले ही विख्यात हैं, अपना ईसाई स्वरूप बनाए रखना चाहिए इस लिए कि एशियाई समुदायों में वे ईसाई प्रभाव का प्रसार करने वाली*

संस्थाएँ बनी रहे।"[११]

– पोप जॉन पाल द्वितीय

स्कूलों और कालिजों में शिक्षा प्राप्त करने वाले भोले भाले नवयुवकों के प्रति अन्याय ही नहीं अपितु धोखा है यदि उन्हें धर्म के सम्बन्ध में ग़लत या दुर्भावना पूर्ण जानकारी दी जाती है। हर छात्र का यह मूल अधिकार है कि वह किसी भी साधन अथवा स्रोत से किसी विषय के बारे में ज्ञान प्राप्त करे। इस आधार पर मैं एशिया के ईसाई प्रचारकों और सत्ता रूढ़ राजनीतिज्ञों से प्रार्थना करता हूँ कि यह पुस्तक एशिया के सभी स्कूलों और कालिजों के छात्रों को दी जाए इस लिए कि वे जान सकें कि सत्य कहां विद्यमान है। तुलनात्मक अध्ययन किए बिना, सत्य और असत्य में विभेद नहीं किया जा सकता। **यह पुस्तक लिखने का मेरा उद्देश्य यही है कि पाठक इसे पढ़ कर सत्य और असत्य में विभेद कर सकें और उसके अन्तर को समझ सकें।**

(सात) चर्च तब तक विश्राम से नहीं बैठेगा जब तक समस्त एशिया को ईसाई नहीं बना लिया जाता

पोप जॉन पाल द्वितीय के 'एक्लेज़िया इन एशिया' में पादरियों के संघ के दृढ़ निश्चय का उल्लेख किया गया है, कि समस्त एशिया को ईसाई बना दिया जाएगा :

"निश्चय ही पादरी संघ ने यह विश्वास प्रकट किया कि एशिया में चर्च तब तक विश्राम से नहीं बैठेगा जब तक समस्त एशिया ईसा मसीह, उदित भगवान, के शांति स्थल में विश्राम प्राप्त नहीं कर लेता।"[१२]

– पोप जॉन पाल द्वितीय

---

११. **पोप जॉन पाल द्वितीय :** 'एक्लेज़िया इन एशिया' (एशिया में ईसाई प्रचारक सभा) नवम्बर ६, १९९९, अध्याय ६, पैरा ३७

१२. **पोप जॉन पाल द्वितीय :** 'एक्लेज़िया इन एशिया' (एशिया में ईसाई प्रचारक सभा) नवम्बर ६, १९९९, अध्याय २, पैरा १०

वैदिक धर्म के अनुयाइयों अर्थात् हिन्दुओं के लिए चर्च की ओर से यह भयानक चुनौती है, और मैं हिन्दुओं से यह आशा करता हूँ कि वे तब तक विश्राम से न बैठें जब तक वे इस पुस्तक में दिए गए हिन्दू धर्म और ईसाई मत के तुलनात्मक ज्ञान के द्वारा चर्च के अनुयाइयों को ज्ञान का प्रकाश प्रदान नहीं कर देते, इस लिए कि वे निष्पक्ष भाव से यह निर्णय कर सकें कि कौन सा धर्म अधिक श्रेष्ठ है और सत्य कहां विद्यमान है।

(आठ) पोप : ईसा मसीह पश्चिम वासी नहीं है अपितु एशियाई है

पोप और उसके साथ ही पादरी परिषद को इस बात पर अत्यंत दुख और आश्चर्य होता है कि अधिकांश एशियाई, ईसा मसीह को पश्चिम वासी मानते हैं, न कि एशियाई। उनका अभिप्राय यह है कि एशियाइयों को इस आधार पर ईसा मसीह को अपना मुक्तिदाता स्वीकार कर लेना चाहिए कि उसका जन्म एशिया की भूमि पर हुआ था। वे कहते हैं:

> *"पादरी परिषद की राय में यह परस्पर विरोधी बात है कि अधिकांश एशियाई ईसा मसीह को–जिसका जन्म एशिया में हुआ था–एशिया वासी मानने की बजाय पश्चिम वासी मानते हैं।"*[१३]
>
> **– पोप जॉन पाल**

पोप के उपरोक्त शब्दों को पढ़ कर मुझे इस बात पर विचार करना पड़ा कि जब ईसा मसीह का जन्म एशिया की धरती पर हुआ था तो उसने एशिया के अत्यंत प्राचीन धर्म अर्थात् वैदिक धर्म की परम्परा को ग्रहण किया होगा, स्वीकार किया होगा और अंगीकार किया होगा। यहाँ प्रश्न उत्पन्न होता है कि ईसा प्राचीनतम और सत्यतम धर्म से विमुख क्यों हो गया, क्या उसे इस धर्म में त्रुटियां दिखाई दीं या उसे इस महान दर्शन

---

१३. **पोप जॉन पाल द्वितीय :** 'एक्लेज़िया इन एशिया' (एशिया में ईसाई प्रचारक सभा) नवम्बर ६, १९९९, अध्याय ४, पैरा २०

की शिक्षा प्राप्त नहीं हुई। यदि उन्हें पवित्र वेद की महान और उदात शिक्षा प्राप्त हुई होती तो वे नये सम्प्रदाय की स्थापना नहीं करते। इन्हीं विचारों ने मेरी लेखनी को अनुप्राणित कर दिया, इस लिए कि मैं विश्व के लोगों के समक्ष ईसा मसीह द्वारा स्थापित मत और विश्व के प्राचीनतम धर्म अर्थात् वैदिक धर्म का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करूं। सत्य की खोज करने वाले जो अन्तरात्मा की आवाज़ को सुनते हैं, दोनों दर्शनों के तुलनात्मक अध्ययन को पढ़ कर अनुभव करेंगे कि उन्हें सत्य ज्ञान की उपलब्धि हुई है।

(नौ) पोप द्वारा, सामाजिक संचार सम्पर्क के माध्यम से धर्म परिवर्तन करने पर बल

पोप कहते हैं :

> *"'**रेडियो वरीतास एशिया**' की प्रशंसा में पादरी परिषद ने जो कुछ कहा है, मैं उसे दोहराता हूँ कि यह एशिया में चर्च का एक ही महाद्वीप व्यापी रेडियो है, जिसने प्राय: तीस वर्ष प्रसार माध्यम से ईसाई मत के लिए मतांतरण का कार्य किया है।... मैं पादरी परिषद के मत के इन शब्दों पर बल देता हूँ कि सामाजिक संचार सम्पर्क के माध्यम से धर्म परिवर्तन हो।"*[१४]
>
> **– पोप जॉन पाल द्वितीय**

भारत के हिन्दू राजनीतिज्ञों को उपरोक्त लेख से पाठ सीखना चाहिए और दूर दर्शन तथा आकाशवाणी के सभी संचार स्रोतों से, सभी समय वैदिक धर्म के उदात एवं अधिक श्रेष्ठ दर्शन का न केवल भारत के लोगों के लिए अपितु समस्त विश्व की मानवता के लिए प्रचार और प्रसार करना चाहिए।

---

१४. **पोप जॉन पाल द्वितीय** : 'एक्लेज़िया इन एशिया' (एशिया में ईसाई प्रचारक सभा) नवम्बर ६, १९९९, अध्याय ७, पैरा ४८

(दस) एशिया के सभी लोगों का धर्म परिवर्तन करने के लिए सहायता हेतु पोप का संत मैरी को आह्वान

पोप जॉन पाल द्वितीय ईसा मसीह की कुंवारी माँ पवित्रात्मा मैरी का इन शब्दों के द्वारा आह्वान करते हैं :

> *"ऐ पवित्रात्मा मैरी, ईश्वर महान की बेटी, और मुक्ति दाता की कुंवारी माँ तथा हम सब की माता, इस चर्च पर अपनी कृपा दृष्टि रखो जिसे आपके बेटे ने एशिया की धरती पर स्थापित किया है।... इस चर्च को उन सब शक्तियों से बचाओ जो इसके लिए ख़तरा पैदा कर रही हैं। इसकी सहायता करो इस लिए कि यह अत्यंत पवित्र त्रिमूर्ति का सत्य स्वरूप बन जाए। आप प्रार्थना करें कि चर्च के प्रेम और सेवा भाव के द्वारा एशिया के सभी लोग आपके पुत्र को जो विश्व का एक मात्र मुक्तिदाता है, जान जाएं और इस प्रकार जीवन का पूर्ण आनंद प्राप्त करें।"*[१५]
>
> **– पोप जॉन पाल द्वितीय**

इस प्रकार 'एक्लेज़िया इन एशिया' नामक प्रलेख में पोप ने सर्वत्र इस बात पर बल दिया है कि एशिया के लोगों को ईसाई मत में मतांतरित किया जाए। इससे एशिया के सभी नागरिकों और विशेषतया **आर्यव्रत** के हिन्दुओं के लिए गंभीर चुनौति उपस्थित हो गई है। इस चुनौति का प्रभावी ढंग से सामना करने के लिए मैं ने यह पुस्तक लिखी है और यह निश्चय ही सब की आंखें खोलने का काम करेगी।

३. ईसाई प्रचारकों के प्रति तुष्टीकरण की नीति

हिन्दुस्थान के कृत्रिम पंथनिरपेक्ष शासक राजनीतिज्ञों ने यदि ईसाई

---

१५. **पोप जॉन पाल द्वितीय** : 'एक्लेज़िया इन एशिया' (एशिया में ईसाई प्रचारक सभा) नवम्बर ६, १९९९, अध्याय ७, पैरा ५१

प्रचारकों के प्रति तुष्टीकरण की कुटिल एवं आत्मघाती नीति न अपनाई होती तो ईसाई धर्मान्तरणकर्ता लाखों भोले भाले निरक्षर एवं दरिद्र हिन्दुओं को ईसाई मत में परिवर्तित न कर पाते और पूर्वोत्तर के तीन राज्यों अर्थात् नागालैंड, मिज़ोरम और मेघालय में ईसाई सत्ता स्थापित करने में सफल न होते। हिन्दुस्थान के शासक राजनीतिज्ञों ने न केवल हिन्दुओं को ईसाई और मुसलिम सम्प्रदायों में परिवर्तित करने पर प्रतिबंध लगाने की बात को साफ़ अस्वीकार कर दिया, अपितु अप्लसंख्यकों को संवैधानिक आश्वासन दे दिया कि वे अपने मत का प्रचार कर सकते हैं।

ईसाई प्रचारकों को मिश्र, अफ़ग़ानिस्तान और मध्य-पूर्व के अरब देशों में प्रवेश की अनुमति नहीं है। अफ़्रीका के अनेक देशों में न केवल ईसाई प्रचारकों के प्रवेश पर प्रतिबंध है, अपितु गिरजाघर नष्ट कर दिए जाते हैं और धर्मान्तरित ईसाइयों को वापस अपना मूल धर्म अपनाने के लिए बल पूर्वक अनुरोध किया जाता है। क्या कृत्रिम पंथ निरपेक्ष हिन्दू राजनीतिज्ञ तभी अपनी निद्रा से चेतेंगे जब हिन्दुस्थान के सभी प्रांत नागालैंड, मिज़ोरम और मेघालय के राज्यों का अनुसरण करते हुए ईसाई हो जाएंगे और हिन्दू अल्प संख्यक बन जाएंगे ?

१९५४ में मध्य प्रदेश सरकार ने अपने संकल्प संख्या ३१८-७१६-वी-कान दिनांक १४ अप्रैल १९५४ के अन्तर्गत एक जांच आयोग की नियुक्ति की। मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग के भूतपूर्व सभापति और नागपुर के न्यायिक प्रशासन उच्च न्यायालय के सेवा निवृत मुख्य न्यायाधिपति **डा. भवानी शंकर नियोगी** को आयोग के सभापति पद पर नियुक्त किया और आयोग को राज्य में ईसाई प्रचारकों की गतिविधियों की जांच करने का काम सौंपा। १९५६ में डा. नियोगी ने अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और बहुत सख़्त सिफ़ारशें की। उन्होंने कहा कि कठोर उपाय किये जाएं यहां तक कि संविधान में संशोधन भी किए जाएं, इसलिए कि पंथनिरपेक्ष कार्य प्रणाली की कमियों को दूर किया जा सके, धर्म परिवर्तन पर प्रतिबंध लगाया जाए, देश में विदेशी धन के आने पर रोक लगा दी जाए और हिन्दुस्थान की पवित्र भूमि से सभी राष्ट्र विरोधी ईसाई प्रचारकों को निष्कासित कर दिया जाए। परन्तु दुख की बात है कि

संघ सरकार ने डा. एम.बी. नियोगी की मूल्यवान सिफ़ारिशों पर कोई ध्यान नहीं दिया और अल्प संख्यकों के प्रति अपनी विकराल एवं आत्म घाती नीति अर्थात् तुष्टिकरण की नीति को बनाए रखा। परिणाम यह है कि आज नागालैंड, मिज़ोरम और मेघालय ईसाई बहु-संख्यक राज्य हैं और चर्च नए बने ईसाइयों को जो पहले हिन्दू ही थे, भड़का रहा है, यहां तक कि विघटनकारी गतिविधियों के कारण हिन्दुस्थान की अखण्डता और सुरक्षा को गंभीर ख़तरा पैदा हो गया है।

श्री ओम प्रकाश त्यागी ने संसद में **'धर्म की स्वतंत्रता'** नामक विधेयक प्रस्तुत किया था। इसमें यह सिफ़ारिश की गई थी कि एक धर्म से दूसरे धर्म में कोई धर्मांतरण न किया जाय। इस विधेयक में कुछ भी आपत्ति जनक नहीं था। सभी धर्मों के प्रति समान भाव रखा गया था। किसी भी धर्म के प्रति अन्याय नहीं किया गया। परन्तु अत्यंत दुःख की बात है कि हमारी कृत्रिम पंथ निरपेक्ष सरकार ईसाई प्रचारकों और मुसलिम कट्टरपंथियों के सामने झुक गई और अत्यंत आवश्यक विधेयक को विफल कर दिया गया।

यह पुस्तक, जो गहन एवं विस्तृत शोध का परिणाम है, निश्चय ही हिन्दुस्थान की सोई हुई हिन्दू जाति को जगाएगी, इसलिए कि वह ईसाई प्रचारकों के राष्ट्र विरोधी आंदोलन के विरुद्ध आवाज़ उठाए और सत्ता रूढ़ हिन्दू राजनीतिज्ञों को विवश करे कि वे ईसाई प्रचारकों की धर्मांतरण की गतिविधियों पर रोक लगाएं।

४. भारतीय संविधान द्वारा दिया गया धर्म प्रचार का अधिकार

देशी और विदेशी सभी ईसाई प्रचारकों ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग नहीं लिया था, अतः उनके दिल में चोर था। उनमें से प्रायः सभी ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत छोड़ देने और इंग्लैंड चले जाने की तैयारी कर ली थी। परन्तु १९५० में जब हमारे संविधान निर्माताओं ने, नये संविधान में यह मूल अधिकार सम्मिलित करने की घोषणा की कि हर

किसी को किसी भी धर्म को मानने, आचरण करने और प्रचार करने की स्वतंत्रता का अधिकार होगा, तो ईसाई प्रचारकों ने संविधान का स्वागत किया और इंग्लैंड लौटने का विचार छोड़ दिया। वे हमारे संविधान निर्माताओं को इसके लिए प्रभावित करने में सफल हो गए कि उन्हें अपने मत का प्रचार करने की पूर्ण स्वतंत्रता का मूल अधिकार दिया जाए, जिसकी ब्रिटिश शासन में भी अनुमति नहीं थी। **कुमारी एम.ई. गिब्स** 'हिस्ट्री आफ़ दी एंगलीकन चर्च इन इंडिया' नामक अपनी पुस्तक में यह स्वीकार करती हैं :

> *"धर्म को मानने, आचरण करने और प्रचार करने की स्वतंत्रता के अधिकार को नये संविधान के मूल अधिकारों में सम्मिलित करवाने में ईसाई प्रभाव सफल हो गया। यह बहुत महत्त्वपूर्ण सुविधा थी।"*[१६]
>
> **– एम.ई. गिब्स**

ईसाई प्रचारकों ने हमारे संविधान द्वारा दी गई धार्मिक स्वतंत्रता का दुरूपयोग किया। उन्होंने निरक्षर दरिद्र हिन्दुओं को बड़े स्तर पर ईसाई मत में परिवर्तित करने की गति को अधिक तीव्र कर दिया। उन्होंने संविधान के 'धर्म प्रचार की स्वतंत्रता' शब्दों का यही अर्थ निकाला कि उन्हें हिन्दुओं को ईसाई बनाने की निर्बाध स्वतंत्रता है। उन्होंने यह दृढ़ता पूर्वक कहना आरम्भ कर दिया कि भारत के संविधान के द्वारा उन्हें यह मूल अधिकार दिया गया है कि वे निर्बाध रीति से हिन्दू जन जातियों में अपने मत का प्रचार कर सकते हैं और उन्हें ईसाई बना सकते हैं। उन्होंने यह धमकी दे दी कि यदि कोई उनके मूल अधिकार में बाधा पहुंचाएगा, तो भारत के संविधान का उल्लंघन कर रहा होगा। इस प्रकार भारत के संविधान ने उन्हें जो धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की थी, उन्होंने उसका खुल कर दुरूपयोग करना आरम्भ कर दिया। **न्यायाधिपति डा. एम.बी. नियोगी**

---

१६. **ब्रह्मचारी विश्वनाथ जी** : *'ए सर्वे आफ़ क्रिस्चयन मिशनरी एक्टीविटीज़ इन आंध्र प्रदेश', (आंध्र प्रदेश में ईसाई प्रचारकों की गतिविधियों का एक संर्वेक्षण)*, पृष्ठ २३

ने अपने प्रतिवेदन में इस बात का वर्णन किया है :

> *"ऐसे अनेक उपाय जिनका हम ने पहले उल्लेख किया है, भारत के संविधान द्वारा दी गई धार्मिक स्वतंत्रता का दुरूपयोग मात्र हैं।"*[१७]
>
> **– डॉ. एम.बी. नियोगी**

डा. नियोगी कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे। वे मध्य प्रदेश के लोक सेवा आयोग के सभापति रह चुके थे और नागपुर न्यायिक प्रशासन उच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधिपति भी थे। उन्होंने उपरोक्त प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसमें बहुत पहले अर्थात् १९५६ में ही जब कि अभी पंडित जवाहर लाल नेहरू का शासन था, संविधान में संशोधन कर देने की कठोर संस्तुति कर दी थी। परन्तु न तो नेहरू ने ही और न ही उसके पश्चात् आने वाले प्रधान मंत्रियों ने इन संस्तुतियों को लागू करने का प्रयत्न किया है। आज ४४ वर्ष बीत चुके हैं, परन्तु अभी तक डा. नियोगी की संस्तुति के अनुसार संविधान में संशोधन नहीं किया गया। इस से पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है कि शासक राजनीतिज्ञों की दृष्टि हिन्दू विरोधी रही है।

ईसाई प्रचारकों ने न केवल बलपूर्वक कहा कि संविधान ने जो अपने मत का प्रचार करने का अधिकार दिया है, उसका अभिप्राय धर्म परिवर्तन करने का अधिकार है, उन्होंने उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय के दरवाज़े भी इस प्रयोजन से खटखटाए कि उनके धर्म परिवर्तन के अधिकार को हर मूल्य पर मान्यता मिल जाए। जब मध्य प्रेदश और उड़ीसा सरकारों ने धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम पारित किए इसलिए कि निरक्षर एवं ग़रीब हिन्दुओं को ईसाइयों द्वारा धर्म परिवर्तन करने पर नियंत्रण किया जा सके, तो ईसाई प्रचारकों ने उच्च न्यायालयों में इसे चुनौती दी। यह अभियोग हार जाने पर उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय में अपील की। सर्वोच्च न्यायालय ने भी दोनों अधिनियमों को संविधान

---

१७. **डा. एम.बी. नियोगी** : *'ईसाई प्रचारकों की गतिविधियों पर मध्य प्रदेश की जांच समिति का प्रतिवेदन,* १९५६, खण्ड १, पृष्ठ १५२

के अन्तर्गत वैध माना और ईसाई प्रचारकों के इन तर्कों को अस्वीकार कर दिया कि संविधान द्वारा दिए गए धर्म प्रचार के अधिकार का अर्थ धर्म परिवर्तन करने का अधिकार भी है।

मध्य प्रदेश और उड़ीसा के अतिरिक्त अरूणाचल प्रदेश की सरकार ने भी धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम १९७८ में पारित किया। ये सब प्रयत्न करने पर भी और सर्वोच्च न्यायालय द्वारा यह निर्णय देने पर भी कि संविधान के अन्तर्गत धर्म परिवर्तन का अधिकार मूल अधिकार नहीं है, ग़रीब भोले भाले हिन्दुओं का ईसाई और इस्लाम मत में परिवर्तन नहीं रुका है, क्योंकि धर्म परिवर्तन करवाने वालों को शासक राजनीतिज्ञ प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रीति से सहायता करते रहते हैं, इसलिए कि वे अल्प संख्यकों के मत विस्तृत स्तर पर प्राप्त कर सत्ता को हथिया सकें।

मुझे आशा ही नहीं, पूरा विश्वास है कि मेरी इस पुस्तक से न केवल ईसाई प्रचारकों के इन अधिकार कथनों की, कि उनका सम्प्रदाय सर्वश्रेष्ठ है, वास्तविकता खुल जाएगी, अपितु उन कृत्रिम पंथ निरपेक्ष राजनीतिज्ञों की भी कलई खुल जाएगी जो धर्म प्रचार के नाम पर धर्मांतरण के द्वारा देश का विघटन करने वालों का तुष्टीकरण करते हैं और उन्हें प्रोत्साहित कर रहे हैं। **इस पुस्तक का उद्देश्य यही सिद्ध करना है कि वैदिक धर्म उन प्रचारकों के मत से कहीं अधिक श्रेष्ठ है।**

५. हिन्दुओं और हिन्दू धर्म के विरुद्ध घृणा और तरिस्कार पूर्ण प्रचार

ईसाई प्रचारक और मुसलिम कट्टरवादी हिन्दुओं को काफ़िर, धर्महीन, पाखंडी, सभ्यताहीन, मूर्ति पूजक, नास्तिक, अधर्मी और नर्क के भागी कह कर तरिस्कार करते हैं।

ईसाई प्रचारक ग़ैर-ईसाईयों को मनुष्य नहीं मानते। उनका दृढ़ मत है कि केवल वे जो ईसाई हैं मनुष्य कहलाने का अधिकार रखते हैं, जबकि अन्य सभी पशु हैं। वे अपने कथन के समर्थन में दो शब्द कोशों का उद्धरण देते हैं: 'वर्ल्ड बुक डिक्शनरी' में ईसाई का अर्थ दिया गया

है, 'मनुष्य, पशु नहीं'। 'दी वेब्स्टर्स थर्ड न्यू इन्टरनेशनल डिक्शनरी' में ईसाई शब्द का एक अर्थ दिया गया है, 'निम्न कोटि के पशुओं से भिन्न मानव'।

ईसाई प्रचारक, हिन्दुओं, हिन्दू संस्कृति, हिन्दू भावानुभूति और हिन्दू धर्म ग्रंथों पर प्रहार करते हैं। ईसाई प्रचारक हिन्दुओं को प्रतिष्ठा हीन करने, हिन्दू देवताओं को कलंकित करने और हिन्दू धर्म ग्रन्थों को अपमानित करने के कुकृत्य करते हैं, जिससे हिन्दुओं का खून खौल जाता है। ईसाई संस्थाएं (Church)हमें 'शैतान की औलाद' कहती हैं। वे कहते हैं कि हमारी पूजा पद्धति 'असभ्य पूजा पद्धति' है। वे प्राय: प्रचार करते हैं कि हिन्दू धर्म-विहीन हैं और वे नरक में जाएंगे। दक्षिण के ईसाई धर्मांतरणकर्ताओं ने सभी हिन्दुओं को ईसाई बनाने का निर्णय कर लिया है। वे हिन्दुओं के सम्बंध में कहते हैं कि वे "अंधकार और नर्क में रहने वाले लोग हैं"। उनका दृढ़ मत है कि "हिन्दुओं को जो अंधकार में भटक रहे हैं, केवल ईसा मसीह ही प्रकाश प्रदान कर सकते हैं"।

इस प्रकार ईसाई प्रचारक हिन्दुओं की मातृभूमि में ही हिन्दू भावानुभूति और हिन्दू संस्कृति को न केवल विनष्ट कर रहे हैं अपितु हिन्दुओं और हिन्दू धर्म को संचार माध्यमों और शिक्षा संस्थाओं में कलंकित कर रहे हैं।

उपरोक्त कुत्सित प्रचार और दुर्वचन एवं दुर्नाम जो हिन्दुओं के लिए प्रयोग किए गए और ईसाई प्रचारकों के इस मिथ्या कथन ने कि केवल ईसा मसीह ही अंधेरे में भटकते हिन्दुओं को प्रकाश प्रदान कर सकते हैं, मुझे यह पुस्तक लिखने के लिए प्रेरणा प्रदान की है ताकि मैं विश्व को बता सकूं कि प्रकाश कहां है। मुझे आशा ही नहीं अपितु परम विश्वास है कि निष्पक्ष भाव से सत्य का अन्वेषण करने वाले वेद और बाइबिल का तुलनात्मक अध्ययन करने से यह निर्णय कर सकेंगे कि प्रकाश कहां है और अंधकार कहां बसा हुआ है।

जब **स्वामी विवेकानंद** ने ईसाई प्रचारकों को हिन्दू धर्म के विरुद्ध दुर्वचन कहते और इसकी निंदा करते हुए देखा तो उनका खून खौल उठा

था। उन्होंने ईसाई धर्मांतरणकर्ताओं की दुर्भावपूर्ण चतुराई का ज़ोरदार शब्दों में भण्डा फोड़ कर दिया था और निंदा पूर्ण कुप्रचार का घोर विरोध किया था। डेट्रायट में ईसाइयों की एक सभा में भाषण देते हुए उन्होंने कहा था :

> *"आप लोगों को प्रशिक्षण देते हैं, शिक्षा देते हैं, पहनने के लिए वस्त्र देते हैं, और पैसा देते हैं, यह सब किस उद्देश्य से ? इसलिए कि आप मेरे देश में आएं, मेरे पूर्वजों, मेरे धर्म को कोसें, गाली दें इत्यादि।... वे मंदिर के निकट जा कर कहते हैं : 'अरे मूर्ति-पूजको, तुम नर्क में जाओगे।' परन्तु वे भारत के मुसलमानों के साथ ऐसा करने का साहस नहीं कर सकते, वहाँ तो तलवार बाहर निकल आएगी.....और जब कभी आपके पादरी हमारी आलोचना करें, उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि:* ***यदि सारा भारत खड़ा हो जाए और हिन्द महा सागर की तह में जितना कीचड़ है, उसे निकाल कर पश्चिमी देशों पर फैंक दे तो वह उस सब का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंश भी नहीं होगा जो आप हमारे विरुद्ध कर रहे हैं।"***[१८]
>
> **– स्वामी विवेकानंद**

यह अत्यंत दुःख, पीड़ा और आश्चर्य का विषय है कि असत्य सत्य का दमन कर रहा है। मेरी इस पुस्तक का यह उद्देश्य है कि निर्बोध को सत्य का बोध कराया जाए इसलिए कि वे न केवल असत्य का त्याग कर दें अपितु असत्य का प्रचार और उपदेश करने वालों का भण्डा फोड़ कर दें।

६. धर्म परिवर्तन करने के धोखा धड़ी के उपाय

---

१८. **स्वामी विवेकानंद** की सम्पूर्ण रचनाएं, खण्ड ३, पृष्ठ २११-२१२

ईसाई प्रचारक धर्मांतरण के लिए सभी प्रकार के उपायों का प्रयोग करते रहे हैं, जैसे बल प्रयोग, धोखा, भयभीत करना, अनुरोध करना, लालच देना, कलंकित करना, गाली गलोच करना, यातनाएं, यंत्रणाएं और क्रूरता पूर्ण पीड़ा पहुँचाना आदि। गोआ में पुर्तगाल के रोमन कैथोलिक धर्मांतरणकर्ताओं ने आतंक, उत्पीड़न, बल प्रयोग, यातना, यंत्रणा और अत्याचार जैसे साधनों का ही मुक्ति सेना की सहायता से प्रयोग किया था।

डा. पी. थामस लिखते हैं :

> *"हुगली के पुर्तगालियों ने इस बात पर बहुत गर्व करते हुए कहा था कि पूर्व में सभी प्रचारकों ने दस वर्ष में जितने लोगों को ईसाई बनाया होगा, इससे कहीं अधिक लोगों को उन्होंने बल प्रयोग द्वारा ईसाई बनाया था।"*[१९]
>
> **– डा. पी. थामस**

गांधी जी को भली प्रकार पता था कि अकाल ग्रस्त क्षेत्रों में ईसाई प्रचारक किस प्रकार के धोखा धड़ी के उपाय अपनाते हैं। उन्होंने बहुत स्पष्ट शब्दों में अपनी **हरिजन** पत्रिका में एक अनुभव का वर्णन किया है :

> *"एक दिन की घटना है कि एक ईसाई प्रचारक अपनी जेब में पैसा भर कर अकाल ग्रस्त क्षेत्र में पहुंच गया। उसने अकाल पीड़ितों में पैसा बांट दिया और उन्हें ईसाई बना लिया। उनका मंदिर अपने अधिकार में ले लिया और उसे नष्ट कर दिया। यह कृत्य बहुत अत्याचार पूर्ण है। जो हिन्दू*

---

१९. **डा. पी. थामस :** *'क्रिसचनस एंड क्रिसचैनिटी इन इंडिया एंड पाकिस्तान'*, (भारत और पाकिस्तान के ईसाई और ईसाइयत), लंदन १९५४, पृष्ठ ११४

ईसाई बन चुके थे उनका मंदिर पर कोई अधिकार नहीं हो सकता था। न ही इस ईसाई प्रचारक का उस पर अधिकार हो सकता था। परन्तु इस महानुभाव ने उन्हीं लोगों के द्वारा जो कुछ समय पहले तक यह विश्वास करते थे कि उस मंदिर में भगवान का वास है, मंदिर को नष्ट करवा दिया।"[२०]

– एम.के. गांधी

न्यायाधिपति डा. नियोगी के प्रतिवेदन के अनुसार, मध्य प्रदेश में ईसाई प्रचारक दरिद्र हिन्दू जनजाति के लोगों को छोटी धनराशियां ब्याज पर देते थे। वे जानते थे कि वे जिन लोगों को अपना शिकार बना रहे हैं, वे अपना ऋण नहीं लौटा सकेंगे। इस लिए वे उनकी दुर्दशा का लाभ उठा कर उनके सामने यह प्रस्ताव रखते थे कि यदि वे ईसाई मत अपना लें तो वे उन से ऋण वापिस नहीं लेंगे। जो लोग न ऋण लौटाते थे और न ही ईसाई मत को अपनाते थे उन्हें उत्पीड़ित किया जाता था। इसके परिणाम स्वरूप दरिद्र भोले भाले जनजाति के लोगों के पास विवश हो कर ईसाई मत को अपना लेने के सिवाय और कोई उपाय नहीं बचता था। **न्यायाधिपति डा. नियोगी** अपने प्रतिवेदन में आगे लिखते हैं :

"कृषक श्री छिद्दी (मण्डल संख्या ७) को दो बोतल मिट्टी का तेल और १३ रुपये प्रति मास इस काम के लिए मिलते थे कि वह ईसाई मत के सिद्धांतों को सीखे और दूसरों को सीखने के लिए प्रेरित करे। उससे कहा गया था कि वह दूसरों का अभिवादन 'राम राम' कह कर न करे अपितु 'जय यशू' कह कर करे। १४ जून १९४४ के 'हिन्दुस्थान टाईम्स' (दैनिक पत्र) में प्रकाशित डा. एलविन के पत्र में इस बात का उल्लेख है कि जो लोग ईसाई

---

२०. **'हरिजन'** अंग्रेज़ी साप्ताहिक (संस्थापक एम.के. गांधी), पूना, मई ११, १९३५

प्रचारकों के प्रभाव में आ गए वे 'राम राम' के स्थान पर 'जय यशू' कह कर अभिवादन करने लगे।"[२१]

– डा. एम.बी. नियोगी

ईसाई प्रचारकों का स्कूल और अस्पताल चलाने का मूल उद्देश्य धर्मांतरण करना या फिर इसके लिए उपयुक्त वातावरण उत्पन्न करना है। यह निस्वार्थ सेवा भाव नहीं। उनका अन्तिम लक्ष्य हिन्दुस्थान को हिन्दू विहीन करना और हिन्दुस्थान का विघटन करना है।

मुक्ति सेना के **जनरल बूथ** ने अपने पुत्र को जो लिखा था उसका उद्धरण गांधी जी प्राय: दिया करते थे :

"सामाजिक कार्य तो केवल फंसाने के लिए प्रलोभन है परन्तु मुक्ति का आश्वासन मछली पकड़ने के कांटे के समान है।"

– जनरल बूथ

७. धर्मांतरण का दुष्परिणाम – राष्ट्रीयता विहीन करना और राष्ट्र का विनाश करना

स्वातंत्र्य वीर सावरकर, अखण्ड भारत के राजनैतिक देवदूत, स्पष्ट शबदों में कहते हैं :

"धर्मांतरण राष्ट्र परिवर्तन है।"

– वीर सावरकर

किसी हिन्दू का ईसाई मत अपनाना केवल पूजा पद्धति का परिवर्तन नहीं है। यह उसका अपने राष्ट्र के प्रति निष्ठा में परिवर्तन है। यह उसका अपने पूर्वजों और अपने राष्ट्रीय महा पुरुषों के प्रति मानसिकता और प्रवृत्ति में परिवर्तन है। ईसाई मत के प्रति निष्ठा उसका

---

२१. **डा. एम.बी. नियोगी :** *मध्य प्रदेश में ईसाई प्रचारकों की गतिविधियों सम्बंधी जांच समिति का प्रतिवेदन*, १९५६, खण्ड १, पृष्ठ १२५

प्रथम और अत्यंत महत्वपूर्ण कर्तव्य बन जाता है। राष्ट्र के प्रति उसकी निष्ठा, ईसाई मत के प्रति निष्ठा की तुलना में गौण और अधीन हो जाती है। उसके समस्त व्यक्तित्व में अत्याधिक परिवर्तन आ जाता है। उसके धर्म परिवर्तन के साथ ही उसके नाम, वेशभूषा, भाषा, लिपि, रीति, रिवाज, रस्मों, खान पान, भोज, त्योहारों पर्वों, संस्कृति और सभ्यता में भी परिवर्तन आ जाता है। वह राष्ट्र की मुख्य धारा से अलग हो जाता है। इसके बाद वह अपने देश और देशवासियों के सुख दुःख में भागीदार नहीं रहता। धर्म परिवर्तन के साथ ही उसकी अपने इतिहास की भावना बदल जाती है। वह अपने राष्ट्र के महा पुरुषों से घृणा करने लगता है और अपने नए सम्प्रदाय से सम्बंधित विदेशी आक्रांतों की प्रशंसा और पूजा करने लगता है।

भारतीय ईसाईयों को सम्बोधित करते हुए **गांधी जी** ने स्पष्ट शब्दों में कहा :

> *"सारे भारत में यत्र तत्र भ्रमण करते हुए, मैं कई ईसाई भारतीयों को देखता हूँ जो अपने जन्म पर, निश्चित रूप से अपने पूर्वजों के धर्म पर, और अपने पूर्वजों की वेश भूषा पर लज्जित अनुभव करते हैं। एंगलो इंडियन (इंग्लिस्तानी माता या पिता की संतान) द्वारा यूरोप वासियों का अनुकरण करना तो बुरा है ही, परन्तु जो भारतीय धर्मांतरित ईसाई उनका अनुकरण करते हैं तो वे अपने देश पर आघात करते हैं, और मैं तो यहां तक कहूंगा कि वे अपने नए सम्प्रदाय के प्रति भी अत्याचार करते हैं। क्या यह वस्तुतः खेदजनक नहीं है कि बहुत से भारतीय ईसाई, अपनी मातृ भाषा को त्याग कर अपने बच्चों को केवल अंग्रेज़ी बोलना सिखाते हैं ? क्या इस प्रकार वे अपने उस राष्ट्र से सर्वथा अलग*

थलग नहीं हो जाते, जिसके बीच उन्हें अपना जीवन बिताना है ?"[२२]

– एम.के. गांधी

ईसाई प्रचारक, धर्मांतरण के द्वारा हमारे देश का विघटन करने के लिए देशवासियों को राष्ट्रीयता विहीन कर रहे हैं। वे धर्मांतरित ईसाइयों के मन में पश्चिमी देशों, पश्चिमी लोगों और पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति के साथ सान्निध्य और घनिष्टता पैदा करते हैं। वे उन्हें देश की मुख्य धारा से अलग कर देते हैं, और उनमें देश से अलग होने की भावना पैदा कर देते हैं। परिणामस्वरूप धर्मान्तरित ईसाई, धर्मांतरणकर्ताओं के साथ एक जुट हो कर देश के विघटन में लग जाते हैं। नागा पहाड़ियों में खुले विद्रोह की आग भड़काने वाले ईसाई प्रचारक थे। **डा. नियोगी** अपने प्रतिवेदन में कहते हैं :

"चूंकि धर्मांनतरित ईसाइयों में धर्मांतरण के परिणाम स्वरूप अपने समाज के साथ एकता और घनिष्टता की भावना विलुप्त हो जाती है, अतः यह संकट उत्पन्न हो जाता है कि देश और राज्य के प्रति उनकी निष्ठा का ह्रास हो जायेगा।"[२३]

– डा. एम.बी. नियोगी

चार्ल्स डिकेन्स, एक विख्यात साहित्यकार, की राय है :

"ईसाई प्रचारक सर्वथा कुत्सित प्राणी हैं, और जहां भी जाते हैं उस स्थान को निकृष्ट बना देते हैं।"[२४]

– चार्ल्स डिकेन्स

---

२२. **'यंग इंडिया'**, अंग्रेज़ी साप्ताहिक (एम.के. गांधी द्वारा सम्पादित), अहमदाबाद, २० अगस्त, १९२६

२३. **डॉ. एम.बी. नियोगी :** *मध्य प्रदेश में ईसाई प्रचारकों की गतिविधियों सम्बंधी जांच समिति का प्रतिवेदन*, १९५६, खण्ड १, पृष्ठ १३१

२४. **सीता राम गोयल :** *'हिस्ट्री आफ़ हिन्दू क्रिस्चिन एनकौंटर्स' (हिन्दुओं और ईसाइयों के संघर्ष का इतिहास) वाइस आफ़ इंडिया*, नई दिल्ली, १९९६, पृष्ठ १३

नागालैंड के लोगों को पहले हिन्दुस्थान के हिन्दू कहा जाता था, उनके धर्मान्तरित ईसाई बन जाने पर उन्हें राष्ट्र विरोधी ईसाई प्रचारकों ने एक विदेशी राज्य की 'ईसाई जनजातियां' नाम दे दिया। उन्हें यह सिखाया गया कि वे हिन्दुस्थान को विदेश कहें। आज भी जब कोई ईसाई नागा शिलांग आता है तो वह कहता है कि "मैं भारत आया हूँ", जैसे उसके लिए भारत विदेश है और वह अभारतीय है। वह अपने आपको स्वतंत्र प्रभुसत्ता सम्पन्न नागालैंड राज्य का विदेशी नागरिक मानता है। क्या यह जान बूझ कर किया गया ऐसा प्रयत्न नहीं है, कि जिसके द्वारा पूर्वोत्तर क्षेत्र की निरक्षर, निर्बोध और दरिद्रता पीड़ित हिन्दू जन जातियों को राष्ट्रीयता की भावना से विहीन और राष्ट्रानुभूति से अलग किया जा रहा है ? क्या यह एक साम्प्रदायिक मत और ईश्वर के नाम पर राष्ट्र द्रोह पैदा करने का योजनाबद्ध प्रयत्न नहीं है ? मेघालय और मिज़ोरम में भी यही स्थिति है। मेघालय, मिज़ोरम और नागालैंड वास्तव में सभी व्यावहारिक प्रयोजनों से ईसाई बहु-संख्यक राज्य हैं। इन राज्यों में हिन्दू उपेक्षणीय अल्प संख्या में रह गए हैं। १९९१ की जन गणना के अनुसार हिन्दुओं की जन संख्या, नागालैंड में १०.१२ प्रति शत, मेघालय में १४.६७ प्रति शत और मिज़ोरम में ५.०५ प्रति शत है। अल्प संख्यक होने के कारण हिन्दुओं के प्रति भेद भाव पूर्ण व्यवहार किया जाता है। यह राष्ट्र विरोधी ईसाई प्रचारकों द्वारा धर्मान्तरण का कुत्सित और भयानक परिणाम है। हमारे प्रिय देश भारत, जो पहले ही खण्डित हो चुका हैं, की एकता और अखण्डता के लिए ईसाई प्रचारकों की अलगाववादी गतिविधियों के कारण ख़तरा पैदा हो चुका है और अलग ईसाई राज्य बनने का ख़तरा मंडरा रहा है।

डा. एम.बी. नियोगी का कथन है :

> *"भारत में धर्मान्तरण ईसाइयों की विश्वव्यापी एक रूप नीति है, जिसके द्वारा वे सर्वत्र ईसाई राज्य का निर्माण करके पश्चिम के प्रभुत्व को पुनः स्थापित करना चाहते हैं और वे यह सब आध्यात्मिकता से प्रेरित होकर नहीं कर रहे हैं। उनका स्पष्ट उद्देश्य*

ईसाई बहु-संख्यक क्षेत्र स्थापित करना है इसलिए कि ग़ैर-ईसाई जन समुदायों की एकता को भंग कर दें और इस दुर्भाव पूर्ण उद्देश्य से आदिवासियों के एक बहुत बड़े वर्ग का विस्तृत क्षेत्र में धर्मांतरण राज्य की सुरक्षा के लिए ख़तरे का सूचक है।" [२५]

– डा. एम.बी. नियोगी

अब भी बहुत देर नहीं हुई, स्थिति में सुधार किया जा सकता है। यदि हिन्दुस्थान के हम हिन्दू जाग कर, सक्रिय हो कर समय पर कार्य नहीं करते, तो हमें भी वही कहना होगा जो कभी अफ़्रीका के एक राष्ट्रवादी ने कहा था :

"जब ईसाई प्रचारक आए तो हमारे पास भूमि थी और उनके पास बाइबिल था, और आज हमारे पास बाइबिल है और उनके पास हमारी भूमि है।"

– एक अफ़्रीकी राष्ट्रवादी

गांधी जी भी इसी स्पष्ट निष्कर्ष पर पहुँचे थे :

"यदि मेरे पास राजनैतिक शक्ति होती और मैं कानून बना सकता, तो मैं निश्चय ही धर्मांतरण सर्वथा बंद कर देता। हिन्दू परिवारों के लिए ईसाई प्रचारक का आगमन, वेशभूषा, आचरण, भाषा, खान पान में परिवर्तन और उसके परिणाम स्वरूप परिवार के विघटन का सूचक है।" [२६]

– एम.के. गांधी

स्वामी विवेकानंद ने कहा :

"जब कोई हिन्दू धर्म की परिधि से निकल जाता

---

२५. **डा. एम.बी. नियोगी :** *मध्य प्रदेश में ईसाई प्रचारकों की गतिविधियों सम्बंधी जांच समिति का प्रतिवेदन*, १९५६, खण्ड १, पृष्ठ १३२

२६. **'हरिजन'**, अंग्रेज़ी साप्ताहिक, (संस्थापक एम.के. गांधी), पूना, मई ११, १९३५

है, तो न केवल एक हिन्दू कम हो जाता है अपितु एक शत्रु अधिक हो जाता है।" [२७]

– स्वामी विवेकानंद

गुरुजी मा.स. गोलवलकर ने स्पष्ट शब्दों में कहा :

"हिन्दुओं का दूसरे समप्रदायों में धर्मांतरण, राष्ट्र और देश की सुरक्षा के लिए गम्भीर संकट है। इस लिए इस पर रोक लगाना आवश्यक है। ईसाई इन लोगों की दरिद्रता निरक्षरता और अज्ञानता का अनुचित लाभ उठा कर उन्हें प्रलोभन दे कर धोखे भरे तरीकों से उनका धर्म परिवर्तन करते हैं। एक मात्र यही ठीक उपाय है कि इस अन्यायपूर्ण गतिविधि पर प्रतिबंध लगाया जाए। अपने अज्ञान और दरिद्रता ग्रस्त भाइयों की रक्षा के लिए हमें इस कर्तव्य का पालन करना है।" [२८]

– गुरु जी मा.स. गोलवलकर

यह पुस्तक लिखने का मेरा उद्देश्य यही है कि मैं हिन्दुस्थान के हिन्दुओं को सचेत और सक्रिय कर दूं, ताकि वे शासक राजनीतिज्ञों को बाध्य कर दें कि वे विधान द्वारा धर्मान्तरण की गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दें।

८. गोआ में धर्म के नाम पर पादरीय न्यायाधिकरण द्वारा दमन (इन्क्वीज़ीशन)

गोआ में धर्माधिकरण द्वारा दमन जो "होली इनक्वीज़ीशन आफ़ गोआ" के नाम से कुख्यात है, के अन्तर्गत **एलीक्सो डायस फ़ाल्कओ**

---

२७. **स्वामी विवेकानंद** की सम्पूर्ण रचनाएं, खण्ड ५, पृष्ठ २३३

२८. **गुरुजी मा.स. गोलवलकर :** 'विचार नवनीत', पृष्ठ १६८-६९

ने गोआ, दीव, दमन और वसई आदि में हिन्दुओं पर घोर अत्याचार किए। हज़ारों निर्दोष हिन्दुओं की हत्या की गई और उन्हें जला दिया गया। हज़ारों हिन्दू महिलाओं के साथ बलात्कार करने के पश्चात् उन्हें खूंटों से लटका कर जलाया गया। तीन दिन के भीतर तीन हज़ार कुंवारी लड़कियों के साथ बलात्कार करने के पश्चात् उन्हें जला दिया गया। यह सब धर्म के नाम पर किया गया।

चार्ल्स डयूरी स्मिथ लिखते हैं :

> *"ईसाइयों ने इतिहास के अत्यंत अहिंसावादी उपदेशों को हिंसा और शक्ति प्रयोग से फैलाना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार ऐसे धर्म युद्ध हुए, जिनमें अभूतपूर्व हिंसा का प्रयोग किया गया, इतिहास परिवर्तक रक्त-पात हुए और धर्म के नाम पर क्रूरता पूर्ण दमन किया गया और यह सब नज़रथ के बढ़ई (ईसा मसीह) के नाम से किया गया।"*[२९]
>
> **– चार्ल्स डयूरी स्मिथ**

जे.सी. बारेटो मिरंडा, गोआ के इतिहासकार, ने पोप द्वारा भेजे गये धार्मिक दमन-कर्ताओं के बारे में लिखा :

> *"इनका हर शब्द मृत्यु दंड का सूचक था और उनके केवल सिर हिला देने से दमनकारी एशिया में सर्वत्र फैले हुए विशाल जन समुदायों में आतंक पैदा कर देते थे, जिनका जीवन दमनकारियों के हाथों में होता था और ये दमनकारी किसी भी साधारण बहाने पर उन्हें सदा के लिए किसी अंधेरी काल कोठरी में डाल देते थे, या गला घोंट कर मार*

---

२९. **चार्ल्स डयूरी स्मिथ :** *'दी हंडरेड परसेंट चैलेंज' (शत प्रति शत चुनौती)* वाशिंगटन, १९८५, पृष्ठ १३७

देते थे या चिता पर डाल कर अग्नि को अर्पित कर देते थे।" [३०]

– **जे.सी. बारेटो मिरन्डा**

जिस सम्प्रदाय ने ऐसे अत्याचार किए हैं, जिनके उदाहरण इतिहास में अन्यत्र नहीं मिलते, क्या यह पर्याप्त कारण नहीं कि मैं उसका इस पुस्तक द्वारा अन्तर्विश्लेषण करूं ?

९. मानव राज्य में मानवता ही राष्ट्रीयता

हिन्दू सार्वभौम भ्रातृभाव में विश्वास रखते हैं। वे न केवल सारी धरती के मानवों अपितु पशू पक्षियों के भी कल्याण में विश्वास रखते हैं, जैसा निम्न पद में दर्शाया गया है :

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत् ।।

"सभी सुखी हों
सभी निरोगी हों
सब का कल्याण हो,
किसी को भी दुःख या पीड़ा न हो ।"

वैदिक दर्शन के अनुसार धरती पर रहने वाले सब मानव एक ही परिवार के सदस्य हैं :

वसुधैव कुटुम्बकम्

"सारा विश्व एक परिवार है।"

यजुर्वेद में भी यही उपदेश दिया गया है :

यत्र विश्वं भवत्येक नीडम्।

– यजुर्वेद ३२/८

---

३०. **एन.एस. राजाराम :** *'क्रिस्चैनिटीज़ स्क्रैम्बल फ़ार इंडिया एंड दी फ़ेल्यूअर आफ़ दी सिकुलेरिस्ट इलिट' (ईसाइयों द्वारा भारत के लिए संघर्ष और सम्भ्रांत पंथनिरपेक्ष वर्ग की असफलता)*, १९९९, पृष्ठ ३२

सारा विश्व एक परिवार है।

– यजुर्वेद ३२/८

विश्व परिवार का मुखिया ब्रह्माण्ड का रचयिता है। वह विश्व के सारे मनुष्यों का दयावान पिता है और मनुष्य एक दूसरे के भाई हैं। मनुष्य के भ्रातृभाव और ईश्वर के पितृ भाव का स्वर्णिम सिद्धांत वेद की शिक्षा का सार तत्व है।

श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः।

सभी मनुष्य परम पिता परमात्मा के प्रिय पुत्र हैं।

अतः मानव ने जाति और पंथ के आधार पर कृत्रिम रीति से विश्व को जो विविध राज्यों में बांट दिया है, हमें उससे ऊपर उठ कर अपना उन्नयन करना चाहिए। **सारी पृथ्वी मानव राज्य है। यह पृथ्वी सभी मानवों की वास्तविक मातृ भूमि है, और मानवता सभी मनुष्यों की राष्ट्रीयता है, चाहे वे भूरे हैं या काले, हिन्दू हैं या मुस्लिम, ईसाई हैं या यहूदी। अतः विश्व के सारे कष्टों और क्लेशों का अचूक निदान यही है कि एक मानव सरकार हो जिसके कानून सार्वभौमिक हों और समानता, भ्रातृत्व और स्वतंत्रता पर आधारित हों।**

१०. आप एक हाथ से ताली नहीं बजा सकते

मानव राज्य, जिसमें मानवता ही राष्ट्रीयता हो, का स्वर्णिम लक्ष्य तभी प्राप्त किया जा सकता है जब लोगों के सभी वर्ग चाहे वे किसी जाति, रंग, मत, समुदाय और देश के हों अपनी स्वेच्छा से अपने आप का उन्नयन करें और जाति अथवा सम्प्रदाय पर आधारित मनुष्य द्वारा विश्व के कृत्रिम विभाजन से ऊपर उठ जाएं। आप एक हाथ से ताली नहीं बजा सकते।

११. मैं अपने वैदिक धर्म पर गर्व करता हूँ

मैं अपने वैदिक धर्म पर गर्व करता हूँ, जिसने मुझे सिखाया है कि मैं विश्व के सब मानवों को अपने प्यारे भाई और बहन समझूं। उनका

सुख मेरा सुख है। उनका दुःख मेरा दुःख है। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि मेरे देश **आर्यव्रत** में, जिसे **भारत वर्ष, भारत** और **हिन्दुस्थान** कहा जाता है, सभी नागरिक चाहे वे वेद के अनुयायी हैं या कुरान के, बाइबिल के या गुरु ग्रन्थ साहब के, भारतीय समाज के अभिन्न अंग हैं और वे समान अधिकारों और समान अवसरों के अधिकारी हैं। **पंडित दीन दयाल उपाध्याय** के शब्दों में, **"वे मेरे मांस के मांस और मेरे रक्त के रक्त हैं।"** उनकी प्रगति मेरी प्रगति है, और उनकी अवनति मेरी अवनति है। परन्तु इसके साथ ही मैं यह सत्य निष्ठा से आशा करता हूं कि कोई भी मेरी संस्कृति, मेरे संस्कार और मेरी सभ्यता पर आघात नहीं करेगा और राजनैतिक उद्देश्य से मेरे देश का विघटन करने हेतु मेरे भाई बहनों का धर्मांतरण नहीं करेगा। जो ऐसा करेगा वह मेरा शत्रु है और मेरे देश का शत्रु है।

१२. मानव का पुनरुत्थान और समाज का पुनर्जीवन

इस पुस्तक द्वारा मैं अपने इस स्वर्णिम संदेश का प्रसार करना चाहता हूँ कि मानवता में नवजीवन और समाज में नव यौवन का संचार हो, जो कट्टरवाद, अलगाववाद, पूर्वाग्रह और दुराग्रह तथा रक्तपात की कुत्सित भावनाओं से मुक्त हो, जिससे समाज में सत्य, न्याय, समानता, स्वतंत्रता, भ्रातृभाव, समवेदना, सहानुभूति और परस्पर सहायता की भावना प्रधान हो, जहां कोई राजनीतिज्ञ किसी वर्ग को हानि पहुंचाते हुए अन्य वर्ग का तुष्टिकरण न करे, जहां कोई धर्मांतरणकर्ता राजनैतिक उद्देश्यों से दरिद्र और भोले-भाले लोगों का बल प्रयोग, धोखा या प्रलोभन दे कर धर्मांतरण न करे, जहां कोई धर्मांध अपने अनुयाइयों को अपने ही बंधुओं का केवल अलग पूजा पद्धति का बहाना प्रस्तुत कर गला काट देने के लिए न भड़काए।

१३. मेरा मंतव्य हृदय दुखाना नहीं, ज्ञान का प्रकाश देना है

यह पुस्तक लिखने का मेरा मंतव्य किसी व्यक्ति या समुदाय की

भावनाओं को आघात पहुँचाना नहीं वरन् सत्य का अन्वेषण करने वालों को सत्य का बोध कराना है। फिर भी यदि किसी की भावना को ठेस पहुंचती है तो मैं प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे क्षमा कर दें क्योंकि मैं ने अपनी ओर से एक भी वाक्य ईसा मसीह, ईसाई मत और पवित्र बाइबिल के विरुद्ध नहीं लिखा है। मैं ने तो केवल उसको दोहराया है जो पहले से पवित्र बाइबिल में लिखा हुआ है। इसके अतिरिक्त मैं ने ईसा मसीह और ईसाई मत के विरुद्ध किसी हिन्दू लेखक का अरुचिकर मत इस पुस्तक में सम्मिलित नहीं किया है। मैं ने कुछ विख्यात पश्चिमी विद्वानों के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के मत अक्षरशः उद्धृत किए हैं और नीचे टिप्पणी में मूल पुस्तकों और पृष्ठ संख्या का उल्लेख किया है। कुछ के सम्बन्ध में उनकी पुस्तकों के विश्वसनीय भारतीय प्रकाशकों द्वारा अक्षरशः पुनर्मुद्रित रचनाओं की पृष्ठ संख्याएं दी हैं। उनके कुछ उद्धरण मैं ने भारतीय लेखकों की रचनाओं में से भी प्राप्त किए हैं। क्योंकि अभी तक किसी ने भी उन उद्धरणों की सतयता को चुनौती नहीं दी, इसलिए मैं उन्हें सत्य मानता हूँ।

– कन्हैयालाल मंघनदास तलरेजा

नई दिल्ली
११ श्रावण शु. २०५७
१० अगस्त २०००

"हिन्दू धर्म सत्य पर आधारित धर्म है। सत्य ही ईश्वर है। ईश्वर को अस्वीकार करना हम ने सुना है, सत्य को अस्वीकार करना हमने कभी नहीं सुना।"

– मोहन दास कर्मचंद गांधी

अध्याय १

वैदिक एकेश्वरवाद और बाइबिल का त्रिमूर्ति सिद्धांत

१. वैदिक एकेश्वरवाद

वैदिक दर्शन "ईश्वर एक है" के सिद्धांत पर केन्द्रित है। वेद में बहु देववाद का कहीं उल्लेख नहीं है। वैदिक धर्म शुद्ध एवं विशुद्ध रूप से एकेश्वरवाद है। पवित्र वेद के अनुसार ईश्वर एक है, अनेक नहीं :

स एष एक एकवृदेक एव।

– अथर्ववेद १३/४/२०

वह निश्चित रूप से एक है,
एक मात्र अविभाज्य, सर्वोच्च सत्य है।

– अथर्ववेद १३/४/२०

'एक ईश्वर' का सिद्धांत वह आधारभूत तत्व है, जिस पर वैदिक दर्शन आधारित है। सिवाय ईश्वर के अन्य कोई नहीं जो समस्त विश्व पर शासन करता है। वास्तविक शासन का सूत्र ब्रह्माण्ड के रचयिता के हाथ

में है। वही समस्त विश्व का सर्वोच्च प्रभुसत्ता समपन्न शासक है :

एको विश्वस्य भुवनस्य राजा।

– ऋग्वेद ६/३६/४

वह समस्त विश्व का
एकमेव सर्वप्रभुता सम्पन्न शासक है।

– ऋग्वेद ६/३६/४

अन्य कोई उसके समान नहीं। वह एक है, कोई उसकी समानता नहीं कर सकता :

य एको अस्ति दंसना महाँ उग्रो अभि व्रतैः।

– ऋग्वेद ८/१/२७

वह एक है, अद्वितीय है,
अपनी आश्चर्यचकित करने वाली शक्ति
और कठोर कानून और कृत्यों के माध्यम से।

– ऋग्वेद ८/१/२७

वैदिक दर्शन बहुदेववाद की अनुमति नहीं देता। एक ईश्वर के अतिरिक्त कोई देव नहीं है। वह ईश्वर देवों का देव है। वही पूजा और अर्चना के योग्य है :

एक एव नमस्योऽविक्ष्वीड्यः।

– अथर्ववेद २/२/१

एक ही ईश्वर है,
जिसकी पूजा लोगों को करनी चाहिए।

– अथर्ववेद २/२/१

पवित्र वेद यह घोषणा करते हैं कि ईश्वर एक है, जो सारी सृष्टि का स्वामी है और जिसे कोई चुनौति नहीं दे सकता। उसी की स्तुति, पूजा, अर्चना और प्रार्थना करना उचित है। वैदिक धर्म में मनुष्य द्वारा मनुष्य की पूजा करने की अनुमति नहीं। इस लिए मनुष्य के लिए ब्रह्माण्ड के महान ईश्वर की उपासना करना ही उपयुक्त है :

मा चिदन्यद्वि शंसत सखायो मा रिषण्यत।

इन्द्रमित्स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत ।।

– साम वेद २४२

ओ मित्रो !
ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य की पूजा न करो
जो परमानंद का महान दाता है
और इस लिए तुम्हें कभी दु:ख का सामना नहीं करना पड़ेगा
सभाओं में उसी की सामूहिक स्तुति करो
और निरंतर उसी के यश के गीत गाओ।

– साम वेद २४२

ईश्वर एक है, परन्तु उसके नाम अनेक हैं। पवित्र वेद में सभी विशेषणों का प्रयोग उसी एक ईश्वर से सम्बंधित हैं, वही ब्रह्माण्ड का रचयिता है। **शिव, शंकर, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, यम** आदि, ये सभी विशेषण उस परम परमेश्वर से सम्बंधित हैं जो निराकार, अरूप, अजन्मा और अशरीरी है। वह शाश्वत, अमर, अनश्वर है। उसके कोई मध्यस्थ, प्रतिनिधि, अवतार और साझीदार नहीं हैं। उसका न पिता है, न माता। उसकी न पत्नी है, न पुत्र न पुत्री। उसका किसी के प्रति मोह नहीं, परन्तु वह सभी बच्चों का दयावान पिता है, और अपने सभी प्राणियों को निष्पक्ष और समान भाव से प्रेम प्रदान करता है। वह सभी के प्रति दयालु है और किसी के प्रति भी क्रूर नहीं। उसका प्रथम नाम **ओ३म्** है। वेद में लिखे अन्य कई नामों से उसका आह्वान और उसकी पूजा की जाती है :

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान् ।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्नि यमं मातरिश्वानमाहुः ।।

– ऋग्वेद १/१६४/४६

वह एक **ब्रह्म** है
ब्रह्माण्ड का रचयिता
जो सर्वत्र विद्यमान है और रक्षा करता है
सब प्राणियों को ज्ञान का प्रकाश देता है
वह एक सर्वोच्च **सत्य** है

जिसे ऋषि कई नामों से पुकारते हैं
जैसे दिव्य **इन्द्र**
दयालु **मित्र**
महानतम एवं सर्वश्रेष्ठ **वरुण**
तेजोमय एवं प्रकाशमय **अग्नि**
न्याय प्रदाता **यम**
सर्वशक्तिमान **मातरिश्वा**

– ऋग्वेद १/१६४/४६

वह सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक और सर्वज्ञाता है। वह सर्वत्र शक्तियों का स्वामी, सर्वत्र विद्यमान है। वह सब वस्तुओं में एवं सभी हृदयों में प्रवेश करता है और प्रसार करता है :

सऽओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु ।

– यजुर्वेद ३२/८

वह सर्व व्यापक है
सभी प्राणियों में व्याप्त है
अन्दर भी और बाहर भी।

– यजुर्वेद ३२/८

वह सारे विश्व पर भव्य रूप से और कृपा भाव से शासन करता है। वह अपने द्वारा निर्मित सृष्टि का एक मात्र अद्वितीय एवं अपूर्व सम्राट है। वह समस्त चराचर सृष्टि का एक मात्र सर्वशक्तिमान शासक है। वह समस्त ब्रह्माण्ड का स्वामी है, जिसकी सत्ता को कोई चुनौती नहीं दे सकता।

देवो देवानामसि ।

– ऋग्वेद १/९४/१३

आप देवों के देव हैं

– ऋग्वेद १/९४/१३

ईश्वर का चेहरा, रूप, आकृति, लक्षण और प्रतीक नहीं है। वह अजन्मा और अनश्वर है। वह जन्म नहीं लेता, अतः शरीर धारण नहीं करता। वह अदृश्य है, उसे स्पर्श द्वारा अनुभव नहीं किया जा सकता। उसे

केवल अपनी आन्तरिक अनुभूति द्वारा ग्रहण किया जा सकता है। इस लिए उसका चित्र, रेखांकन, मूर्ति अथवा प्रतिमा नहीं बना सकते।

न तस्य प्रतिमाऽअस्ति ।

– यजुर्वेद ३२/३

ईश्वर की कोई प्रतिमा नहीं है।

– यजुर्वेद ३२/३

पश्चिम के जिन विद्वानों ने वेद की अमृत धारा का पान किया है वे वेदोक्त ईश्वर की अनन्यता की अपने अन्तर की गहराई से प्रशंसा और श्लाघा करने में किसी से पीछे नहीं रहे। नार्वे के राष्ट्रीय कवि **काऊंट ब्योन्स्ट्र्येर्न** जिन्हें १९०३ में नोबल पुरुस्कार दिया गया था, लिखते हैं :

> *"वास्तव में ये उदात विचार हमें यह निश्चय कराने में विफल नहीं हो सकते कि ईश्वर एक है, जो सर्वशक्तिमान, असीम, शाश्वत, स्वयंभू एवं विश्व का स्वामी है।"*
>
> **– काऊंट ब्योन्स्ट्र्येर्न**

कोल ब्रूक, ब्रिटिश विद्वान, कहते हैं :

> *"हिन्दू धर्म ग्रन्थों अर्थात् वेद में जो प्राचीन हिन्दू धर्म प्रतिपादित किया गया है, उसमें एक ही ईश्वर स्वीकार किया गया है।"*
>
> **– कोल ब्रूक**

चार्ल्स कोलमैन, अपनी पुस्तक, 'थियोफ़नी आफ़ दी हिन्दूज़' (हिन्दुओं द्वारा ईश्वर दर्शन) में स्वीकार किया है कि पवित्र वेद में ईश्वर की अनन्यता इन शब्दों में प्रकट की गई है :

> *"वह सर्वशक्तिमान, असीम, शाश्वत, अज्ञेय, स्वयं भू है। वह जो सब कुछ देखता है और स्वयं दिखाई नहीं देता, एक अज्ञात ब्रह्म है। वह सत्य तत्व, सृष्टि*

का रचयिता, पालनकर्ता और विनाशकर्ता है। वेद में ऐसी और अन्य अनेक परिभाषाओं द्वारा ईश्वर को स्वीकार किया गया है।"

– चार्ल्स कोलमैन

लिवी, अरब का विख्यात कवि, हिन्दुस्थान की भव्य भूमि और पवित्र वेद का इन शब्दों में सम्मान और प्रशंसा करता है :

"हिन्द (हिन्दुस्थान) की भव्य एवं धन्य भूमि, तुम सम्मान की पात्र हो, क्योंकि तुम्हारे यहां ईश्वर ने अपने सम्बन्ध में सत्य ज्ञान को प्रकट किया है। ईश्वर द्वारा प्रकट की गई इन चार पुस्तकों में हमारे मन के लिए कितना निर्मल प्रकाश प्रदान किया गया है, यह ऊषा की शांत, शीतल और आकर्षक आभा के समान है। इन चार पुस्तकों (वेद) को ईश्वर ने हिन्दुस्थान के ऋषियों के हृदयों में प्रकाशित किया है। ये ज्ञान के कोष ***यजुर्वेद*** *और* ***सामवेद*** *हैं जिनका उपदेश ईश्वर ने दिया है। ओ मेरे भाइयो, इनका सम्मान करो, ये हमें मोक्ष प्राप्ति के शुभ समाचार देते हैं। इन चार में से अन्य दो* ***ऋग्वेद*** *और* ***अथर्ववेद*** *हैं, जो हमें विश्व बंधुत्व का पाठ सिखाते हैं। ये दो वेद ऐसे प्रकाश स्तम्भ हैं जो हमें विश्व बंधुत्व के लक्ष्य की ओर बढ़ने का संदेश देते हैं।"*

– लिवी

दारा शिकोह, बादशाह शाहजहां का बेटा और औरंगज़ेब का बड़ा भाई, अपना निष्कर्ष फ़ारसी भाषा में इस प्रकार लिखता है :

"निरंतर शोध के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि कुरान, ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट आदि सभी ईश्वरी पुस्तकों से बहुत पहले, ईश्वर ने

प्राचीन ऋषियों के माध्यम से, जिनमें से ब्रह्मा प्रमुख थे, अपनी ज्ञान की चार पुस्तकें हिन्दुओं के लिए प्रकट की थीं। वे थीं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।"

– दारा शिकोह

२. बाइबिल में त्रिमूर्ति का सिद्धांत

(एक) (क) "एक में तीन" और "एक के समान तीन" का सिद्धांत

वैदिक धर्म, जो विशुद्ध रूप से एक ईश्वर निष्ठ है, से भिन्न पवित्र बाइबिल में त्रिमूर्ति के सिद्धांत का उपदेश दिया गया है, अर्थात् तीन ईश्वरों, जैसे पिता ईश्वर, बेटा ईश्वर (ईसा मसीह) और पवित्र आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। ईसाई यह मानते हैं कि तीनों ईश्वरों की शक्ति और भव्यता समान है, और वे तीन एक हैं। इस प्रकार ईसाई मत 'एक में तीन' और 'एक के समान तीन' के सिद्धांत के चहुं ओर घूमता है। और वे फिर भी इसे एकेश्वरवाद कहते हैं। वे दृढ़ता पूर्वक यह मत व्यक्त करते हैं कि त्रिमूर्ति अथवा त्रिमूर्तिवाद, एकेश्वरवाद का ही पर्यायवाची है।

(ख) तीन सत्ताएं एक हैं

न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) में कहा गया है :

१. **"७. क्योंकि वे तीन हैं जो स्वर्ग में अभिलेख रखते हैं, अर्थात् पिता, बेटा और पवित्र आत्मा और वे तीन एक हैं ?"**

– सन्त योहन का पहला पत्र, ५/७

उपरोक्त पद गिडियनस इन्टरनेश्नल द्वारा अमरीका में १९७९ में मुद्रित पवित्र बाइबिल (किंग जेम्स) के प्राधिकृत संस्करण के पृष्ठ १२७९ पर लिखा गया है। परन्तु बाद में इसे बाइबिल से निकाल दिया

गया है। इस सम्बन्ध में **डब्ल्यू.पी. बाल** और **जी.डब्ल्यू. फ़ूट** अपनी 'दी बाइबिल हैंडबुक' (बाइबिल हस्तपुस्तिका) नामक पुस्तक में लिखते हैं:

> *"इस पद को कूट रचना के रूप में दर्शाया गया है, इस लिए संशोधित अंक में इसे निकाल दिया गया है। यही एक मात्र पद है जिस में त्रिमूर्ति के सिद्धांत पर बल दिया गया है, जो वास्तव में ईसाई मत का अन्वेषण है अथवा बाइबिल के बाद किसी समय इसे विकसित किया गया है।"*[३१]
>
> **–डब्ल्यू.पी. बाल और जी. डब्ल्यू. फ़ूट**

थामस जैफ़रसन, अमरीका के तीसरे राष्ट्रपति, जिन्होंने पश्चिम की आधुनिक सरकारों में पंथनिरपेक्षता का प्रतिपादन किया था, ऊंचे स्वर में कहा :

> *"त्रिमूर्तिवाद के गणित की न समझ में आने वाली शब्दावली है कि तीन एक हैं और एक तीन हैं!"*[३२]
>
> **– थामस जैफ़रसन**

जेम्स ए. हाट कहते हैं :

> *"ईसा के ३८५ वर्ष पश्चात् जर्मनी में ट्रियर के स्थान पर, बिशपों ने त्रिमूर्ति और पुनर्जीवन के सिद्धांतों पर संदेह करने के लिए **प्रिसिलियन** और*

---

३१. **डब्ल्यू. पी. बाल, जी. डब्ल्यू. फ़ूट, जान बोडन, रिचर्ड एम स्मिथ :** *'दी बाइबिल हैंड बुक'* (बाइबिल हस्त पुस्तिका) संशोधित संस्करण १९८६, अमरीका, पृष्ठ ९६

३२. **चार्ल्स स्मिथ :** *'बाइबिल इन दी बैलंस'* (तुला में बाइबिल) पश्चिम में प्रकाशित, हिन्दू लेखक मंच नई दिल्ली द्वारा पुनः मुद्रित, पृष्ठ ४

३३. **जेम्स ए हाट :** *'होली हारर्स'* (पवित्र यातनाएं), प्रामीथियस बुक्स द्वारा प्रकाशित, न्यू यार्क, १९९०, पृष्ठ ५३

उसके अनुयाइयों को मौत के घाट उतार दिया।"[३३]
– जेम्स ए. हाट

लियो टाल्सटाय, रूस के विख्यात लेखक और चिंतक, अपना मत व्यक्त करते हैं :

"कोई ऐसे शब्द कह सकता है जिनका कोई अर्थ न हो, परन्तु कोई ऐसे शब्दों पर विश्वास नहीं कर सकता जिनका कोई अर्थ न हो – कोई इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता कि ईश्वर एक भी है और तीनों भी।..."[३४]
– लियो टाल्सटाय

(ग) तीनों सत्ताओं के नाम पर सभी राष्ट्रों का ईसाईकरण करो और उन्हें अपने मत की दीक्षा दो

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) पोप और सभी ईसाई मत प्रचारकों को शिक्षा देता है कि विश्व के सभी राष्ट्रों को ईसाई मत की दीक्षा दे कर, पिता, बेटा और पवित्र आत्मा के नाम पर उनका ईसाईकरण करो। पाठ इस प्रकार है :

२. **"१९. इसलिए तुम लोग जा कर सब राष्ट्रों को शिष्य बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दो।"**
– सन्त मत्ती, २८/१९

उपरोक्त लेख के आधार पर ही ईसाई प्रचारक यह स्वीकार करने

---

३४. **(१)लियो टाल्सटाय :** *'एस्सेज़ ऐंड लेटर्स'* (निबंध और पत्र) एलमर माड द्वारा अनूदित, आक्सफ़ोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, लंदन, १९११

(२) **एन.एस. राजाराम :** *'क्रिसचैनिटीज़ कोलैप्सिंग एम्पायर ऐंड इट्स डीज़ाइन्ज़ इन इंडिया'* (ईसाई मत का ढहता साम्राज्य और भारत में इसकी दुर्भावनाएं), नई दिल्ली, १९९९, पृष्ठ १५

के लिए तैयार नहीं कि वे हिन्दुओं का ईसाईकरण करना बंद कर दें। वे दृढ़ता पूर्वक कहते हैं कि ईसाईकरण करने के लिए तो ईश्वर का उन्हें आदेश है कि वे अवश्य ईसाईकरण करें और विश्व के सभी राष्ट्रों के लोगों को बपतिस्मा दें। जब **श्री ओम प्रकाश त्यागी** ने 'धर्म स्वतंत्रता विधेयक' संसद में प्रस्तुत किया, जिसमें यह प्रस्ताव किया गया था कि किसी भी धर्म से दूसरे में धर्मांतरण नहीं होना चाहिए, तो उस पर मुम्बई, कलकत्ता, चेन्नई और दिल्ली में तीन लाख ईसाईयों ने इस विधेयक के विरुद्ध प्रदर्शन किया था। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद २५(१) के अन्तर्गत उन्हें यह मूल अधिकार प्राप्त है कि वे ग़ैर - ईसाइयों का ईसाई मत में मतांतरण कर सकते हैं। उन्होंने अपने इस मतान्तरीकरण के अधिकार की न्यायिक मान्यता प्राप्त करने के लिए उच्च न्यायालय और यहां तक सर्वोच्च न्यायालय के भी द्वार खटखटाए थे। मुख्य न्यायाधिपति **श्री ए. एन. रे** ने अपने निर्णय में ईसाइयों के इस अधिकार को अस्वीकार कर दिया था। यद्यपि उच्च न्यायालयों और सर्वोच्च न्यायालय ने भी ईसाइयों के मतांतरण करने के अधिकार सम्बन्धी मत के विरुद्ध निर्णय दिए थे, परन्तु फिर भी वे कृत्रिम पंथनिरपेक्ष हिन्दू राजनीतिज्ञों के प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष प्रोत्साहन के कारण, हिन्दू जनजातियों के दरिद्र, निरक्षर और भोले भाले लोगों का राजनैतिक उद्देश्य से धर्मांतरण करने में लगे रहे और यह तर्क देते रहे कि उन्हें ईश्वर ने आदेश दिया है कि विश्व के सभी राष्ट्रों के लोगों का धर्मांतरण करें और उन्हें बपतिस्मा दें।

(घ) पवित्र आत्मा की निन्दा करने वाला अनन्त काल तक नर्क का भागी रहेगा

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) यह घोषणा करता है कि जो व्यक्ति पवित्र आत्मा की निन्दा करता है, वह अनन्त काल तक नर्क का भागी रहेगा :

३. **"२९. परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा करने वाले को कभी भी क्षमा नहीं मिलेगी। वह**

अनन्त पाप का भागी है।"

– सन्त मारकुस, ३/२९

(ड) ईश्वर ने अपने इकलौते पुत्र को भेजा

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) में कहा गया है कि ईश्वर ने अपने इकलौते पुत्र को संसार में भेज कर लोगों के प्रति अपना प्यार व्यक्त किया :

४. **"९. ईश्वर हम को प्यार करता है। यह इस से प्रकट हुआ है कि ईश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को संसार में भेजा, जिससे हम उसके द्वारा जीवन प्राप्त करें।"**

– सन्त योहन का पहला पत्र, ४/९

(च) ईसा मसीह में ईश्वर, ईश्वर में ईसा मसीह

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) घोषणा करता है कि यशू मसीह ईश्वर में है और ईश्वर यशू मसीह में है :

५. **"११. मेरी इस बात पर विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है।"**

– सन्त योहन, १४/११

(छ) ईश्वर और ईसा मसीह एक हैं

पवित्र बाइबिल (दी न्यू टेस्टामेंट) इस पद में इस बात को स्वीकार करता है कि ईश्वर और ईसा मसीह एक हैं :

६. **"३०. मैं और पिता एक हैं।"**

– सन्त योहन, १०/३०

(ज) ईश्वर ने ईसा मसीह को सब अधिकार दिए

पवित्र बाइबिल (दी न्यू टेस्टामेंट) कहता है कि ईश्वर ने सब अधिकार न केवल पृथ्वी अपितु स्वर्ग पर भी ईसा मसीह को दिए थे :

७. **"१८. तब ईसा ने उनके पास आ कर कहा, मुझे स्वर्ग में और पृथ्वी पर पूरा**

अधिकार मिला है।"

– सन्त मत्ती, २८/१८

८. "३५. पिता पुत्र को प्यार करता है और उसने उसके हाथ सब कुछ दे दिया है।"

– सन्त योहन, ३/३५

(झ) ईसा मसीह ईश्वर के समान था

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) में कथन है कि ईसा मसीह ईश्वर के रूप में प्रकट हुए और इसलिए उन्हें ईश्वर के समान होने का पूरा अधिकार था :

९. "६. वह (ईसा मसीह) वास्तव में ईश्वर थे और उनको पूरा अधिकार था कि वइ ईश्वर की बराबरी करें,"

– फिलिप्पियों के नाम, २/६

(ञ) बाइबिल के ईश्वर की मूर्खता !

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) सर्वशक्तिमान ईश्वर को मूर्ख और दुर्बल बताता है, यद्यपि उसकी मूर्खता मनुष्य के विवेक से अधिक प्रखर है। बाइबिल का पद इस प्रकार है :

१०. "२५. क्योंकि ईश्वर की 'मूर्खता' मनुष्यों से अधिक विवेकपूर्ण और ईश्वर की 'दुर्बलता' मनुष्यों से अधिक शक्तिशाली है।"

– कुरिन्थियों के नाम पहला पत्र, १/२५

सर्वशक्तिमान और सर्वोच्च स्वामी ईश्वर को मूर्ख और दुर्बल कहना तो ईश्वर की निन्दा करना है।

(दो) लेलियस सोसिनस ने त्रिमूर्ति के सिद्धांत को अस्वीकार किया

इटली के विद्वान लेलियस सोसिनस (जन्म १५२५ - मृत्यु १५८२) ने यह कहते हुए कि त्रिमूर्तिवाद का सिद्धांत अविवेकपूर्ण और तर्क हीन

है, इसको ज़ोरदार शब्दों में अस्वीकार कर दिया। उसे 'तीन ईश्वरों में एक ईश्वर' का सिद्धांत मान्य नहीं था। उसने एकदेववाद अर्थात् एक ईश्वर के सिद्धांत का प्रचार करना आरम्भ कर दिया। इसके परिणामस्वरूप चर्च ने उसे अनीश्वरवादी कह कर ईसाई प्रचारक संस्था से बहिष्कृत कर दिया। जो कोई भी एकेश्वरवाद का प्रचार करता था वह चर्च की दृष्टि में अनीश्वरवादी माना जाता था और उसे सच्चा ईसाई नहीं स्वीकार किया जाता था। वर्ष १५४६ में लेलियस सोसिनस एक गुप्त सभा में सम्मिलित हो गए, जो यह प्रचार करती थी कि 'एक ईश्वर में तीन ईश्वर' (त्रिमूर्तिवाद अथवा त्रिदेववाद) का सिद्धांत स्वीकार नहीं किया जा सकता और रोमन कैथोलिक चर्च के अनेक सिद्धांत हैं जो विवेकशील व्यक्ति के लिए घृणास्पद हैं। परिणामस्वरूप उस गुप्त सभा पर प्रतिबंध लगा दिया गया और उसके कई सदस्यों की हत्या कर दी गई, क्योंकि उनका केवल यह अपराध था कि वे त्रिदेववाद को नहीं मानते थे। लेलियस सोसिनस को अपनी रक्षा के लिए कहीं विदेश में चले जाना पड़ा। विदेश में ही जूरिक में उसका निधन हो गया। आज भी जब चर्च किसी व्यक्ति की यह निन्दा करता है कि वह पंथ निरपेक्ष है तो वह उसे **सोसिनियन** का नाम दे देता है।

(तीन) एकेश्वरवादियों को जीवित जला दिया गया।

१६६२ में लगभग दो हज़ार पादरियों को एकरूपता के नियम के अधीन चर्च ने बहिष्कृत कर दिया, क्योंकि उन्होंने त्रिमूर्ति के सिद्धांत को स्वीकार नहीं किया और एकदेववाद का समर्थन किया, जिसे वे एकेश्वरवाद कहते थे। **वे ईसा मसीह को सामान्य नश्वर मानव मानते थे और एक ईश्वर में विश्वास रखते थे।** इसके परिणामस्वरूप हज़ारों एकेश्वरवादियों को खूंटों पर लटका कर जला दिया गया न केवल इंग्लैंड में अपितु अन्य देशों में भी। अन्ततोगत्वा १८१३ में जनता के अत्यधिक प्रभाव डालने पर चर्च ने, अनेक वादों में से, जिनमें ईसाई मत विभाजित और पुनर्विभाजित हुआ है, एक वाद के रूप में एकेश्वरवाद को स्वीकार कर लिया।

(चार) श्री विलियम ऐडम ने वैदिक धर्म अंगीकार किया

श्री विलियम ऐडम को यह काम सौंपा गया कि वह **राजा राम मोहन राय** को ईसाई बनाए। राजा राम मोहन राय एकनिष्ठ एकेश्वरवादी था। इसलिए राजा राम मोहन राय ने स्वयं ईसाई मत को न अपनाते हुए विलियम ऐडम को प्रेरित और प्रभावित किया कि वह तीन ईसाई

देवताओं में विश्वास छोड़ दे और वैदिक धर्म के एकेश्वरवाद को अपना ले। इस प्राकर **श्री विलियम ऐडम** जो ईसाई प्रचारक थे और **राजा राम मोहन राय** को ईसाई बनाने और तीन ईसाई देवों को अंगीकार करवाने के लिए आए थे, अन्ततोगत्वा स्वयं वेदांती बन गए।[३५] अतः उसे चर्च से बहिष्कृत कर दिया गया और मूर्तिपूजक एवं सोसिनियन घोषित कर दिया गया। उसके धर्म परिवर्तन का उल्लेख 'ईसाई मत प्रचारक सभा के वार्षिक लंदन प्रतिवेदन' में इस प्रकार किया गया :

> *"हमें यह बताते हुए अत्यंत खेद होता है कि श्री ऐडम ने हमारे मुक्तिदाता ईसा मसीह के उपयुक्त देवत्व को अस्वीकार करते हुए उन धारणाओं को अपना लिया है, जो मुक्तिदाता के प्रति अपमान सूचक हैं। इसके परिणाम स्वरूप ईसाई सभा और उसके बीच सम्बंध समाप्त कर दिया गया है।"*[३६]

(पांच) वैदिक धर्म की उत्कृष्टता।

श्री डब्ल्यू डी. ब्राऊन, ब्रिटिन के दार्शनिक, 'वैदिक धर्म की उत्कृष्टता' नामक अपनी पुस्तक में इस उत्कृष्टता को स्वीकार करते हैं:

> *"वैदिक धर्म एक ही ईश्वर में विश्वास रखता है। यह सर्वथा वैज्ञानिक धर्म है। इसमें धर्म और विज्ञान का अपूर्व सामजस्य है। यहां धर्म शास्त्र, विज्ञान और दर्शन पर आधारित है।"* **– डब्ल्यू. डी. ब्राऊन**

श्री काऊंट ब्योर्न्स्ट्येर्न, नार्वे का राष्ट्रीय कवि, जिन्हें १९०३ में साहित्य के लिए नोबल पुरुस्कार दिया गया, कहते हैं :

> *"ये सत्यतः उदात भाव निश्चित रूप से हमें विश्वस्त करते हैं कि वेद केवल एक ईश्वर में विश्वास रखता है।"*
> **– काऊंट ब्योर्न्स्ट्येर्न**

"धर्म में जीवन का शाश्वत विधान प्रतिष्ठित है।"
– गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर

---

३५. ऐंगलो इंडिया, खण्ड ३, पृष्ठ २३८

३६. ईसाई प्रचारक सभा का वार्षिक लंदन प्रतिवेदन, दिनांक जून २०, १८२२

अध्याय २

कुंवारी मैरी सम्बंधी मत, और वेद द्वारा व्यक्त सार्वभौमिक विधान

१. कुंवारी मैरी सम्बंधी मत

(एक) पवित्र आत्मा ने कुंवारी मैरी को गर्भवती बनाया

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) कहता है कि ईसा मसीह की मां **मैरी (मरियम)** कुंवारी थी। उसकी सगाई **यूसुफ़** के साथ हुई थी। परन्तु उसके यूसुफ़ के पास रहने से पहले उसे पवित्र आत्मा ने गर्भवती बना दिया था। उसका होने वाला पति यूसुफ़ गुप्त रीति से उसे त्याग देने की बात सोच रहा था। परन्तु एक रात ईश्वर का दूत उसे स्वप्न में दिखाई दिया और उसने कहा, "ओ यूसुफ़, डैविड (दाऊद) के पुत्र, अपनी पत्नी को अपनाने और अपने घर लाने में दुविधा में न रहो, क्योंकि उसे पवित्र आत्मा ने गर्भवती बनाया है।"

११. "१८. ईसा मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ। उनकी माता मरियम की मँगनी

यूसुफ़ से हुई थी, परन्तु ऐसा हुआ कि उनके एक साथ रहने से पहले ही मरियम पवित्र आत्मा से गर्भवती हो गयी।"

– सन्त मत्ती, १/१८

१२. "२०. ....उसे स्वप्न में प्रभु का दूत यह कहते दिखाई दिया, 'यूसुफ़ ! दाऊद की सन्तान ! अपनी पत्नी मरियम को अपने यहाँ लाने में नहीं डरें, क्योंकि उनका जो गर्भ है, वह पवित्र आत्मा से है,' "

– सन्त मत्ती, १/२०

जिन लोगों की पवित्र पुस्तक में आन्तरिक निष्ठा है, वे निस्संदेह इस बात पर विश्वास करते हैं, परन्तु जिन लोगों की तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टि है वे इस बात पर विश्वास नहीं करेंगे कि पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ धारण कर एक कुंवारी ने बच्चे को जन्म दिया।

चार्ल्स स्मिथ, 'दी ट्रुथ सीकर' (सत्य अन्वेक्षक) पत्रिका का सम्पादक, कुंवारी मैरी द्वारा बच्चे को जन्म देने के सिद्धांत के बारे में यह विचार प्रस्तुत करते हैं :

"एक कुंवारी द्वारा बालक को जन्म देने का सिद्धांत तो सभी प्राकृतिक माताओं पर अपवित्रता का कलंक लगा देता है।"

– चार्ल्स स्मिथ

थामस पेन, महान चिंतक और अमरीका के संस्थापकों में से एक, अपनी राय व्यक्त करते हैं :

"इस कहानी को इसी रूप में ले लिया जाए तो यह निन्दा पूर्ण और अश्लील है। यह ऐसी नवयुवती की कहानी है, जिसकी सगाई हो चुकी है और विवाह होने वाला है, और इसी कालावधि में यदि स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो, पवित्र आत्मा ने इस अधर्म

पूर्ण बहाने से उससे व्यभिचार किया (सन्त लूकस अध्याय १/३५) कि पवित्र आत्मा तुम से संसर्ग करेगी और सर्वोच्च प्रभु की छाया तुम पर छा जाएगी। इस घटना के होने पर भी यूसुफ़ बाद में उससे विवाह करता है, उससे अपनी पत्नी के रूप में समागम करता है और इस प्रकार पवित्र आत्मा का प्रतिद्वंद्वी बन जाता है।"[३७]

– थामस पेन

काऊंट टाल्सटाय, विख्यात रूसी लेखक और चिंतक, स्पष्ट शब्दों में अपना विचार व्यक्त करते हैं :

"इससे अधिक हास्यास्पद क्या हो सकता है कि ईश्वर की मां, मां भी थी और कुंवारी भी ?"[३८]

– काऊंट टाल्सटाय

थामस जैफ़रसन, अमरीका के तीसरे राष्ट्रपति, ने बाइबिल के उपरोक्त लेख के बारे में इस प्रकार भविष्यवाणी की है :

"एक दिन आएगा जब ईसा मसीह, जिसके पिता ईश्वर हैं, का कुंवारी मां के गर्भ से उत्पन्न होने की घटना, ज्यूपीटर के मस्तिष्क से मिनेर्वा के उत्पन्न होने की कल्पित गाथा के वर्ग में सम्मिलित हो जाएगी।"[३९]

– थामस जैफ़रसन

---

३७. **थामस पेन** : *'दी एज आफ़ रीज़न' (तर्क का युग)*, वाटस ऐंड कं. द्वारा प्रकाशित, लंदन, १७९६, पृष्ठ ६८-६९

३८. (एक) **काऊंट टाल्सटाय** : *'व्हाट इज़ रिलीजन ?' (धर्म क्या है ?)*

(दो) **ब्रह्म दत्त भारती** : *'मैक्समूलर – ए लाइफ़ लांग मस्करेड'* (जीवन भर का स्वांग), १९९२, पृष्ठ २१८

३९. (एक) **टी.जे. रेंडाल्फ़** : *'मैमायर, कोर. ऐंड मिस'.*, खण्ड ४, पृष्ठ ३६५

(दो) **चार्ल्स स्मिथ** : *'दी बाइबिल इन दी बैलंस' (तुला में बाइबिल)*, हिन्दू लेखक संघ नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, पृष्ठ ५

चार्ल्स स्मिथ, 'दी ट्रुथ-सीकर' (सत्य अन्वेषक) पत्रिका का सम्पादक, थामस जैफ़रसन की उपरोक्त भविष्यवानी का उल्लेख करते हुए कहते हैं :

"वह दिन आ गया है।"[४०]

– चार्ल्स स्मिथ

(दो) क्या मैरी ने अन्य बच्चों को जन्म दिया ?

दी न्यू टेस्टामेंट (सन्त मत्ती १/४७) में लिखा गया है कि मैरी ने अन्य बच्चों को जन्म दिया था। अतः वे कुंवारी नहीं थीं। वे यूसुफ़ की पत्नी थीं। अब प्रश्न उत्पन्न होता है : क्या ईसा मसीह यूसुफ़ और मैरी का पुत्र था ? ईसाई कहते हैं कि वह ईश्वर का पुत्र था और ईश्वर के आक्रोश को शांत करने के लिए उसकी मृत्यु हुई। **थामस पेन** इस सम्बन्ध में यह विचार प्रस्तुत करते हैं :

> *"बाइबिल और न्यू टेस्टामेंट विश्व पर अधिरोपण हैं। मानव का पतन, ईसा मसीह की कहानी कि वह ईश्वर का पुत्र था, उसकी मृत्यु ईश्वर के आक्रोश को शांत करने के लिए हुई और उसकी मुक्ति प्रदान करने की विचित्र पद्धति – ये सब अतिरंजित अन्वेषण हैं और बुद्धिमत्ता तथा सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए अपमान जनक हैं।"*[४१]
>
> **– थामस पेन**

(तीन) क्या ईसा मसीह ने मैरी को अपनी मां के रूप में स्वीकार किया ?

---

४०. (एक) **टी.जे. रेंडाल्फ़ :** *'मैमायर, कोर ऐंड मिस.'*, खण्ड ४, पृष्ठ ३६५
(दो) **चार्ल्स स्मिथ :** *'दी बाइबिल इन दी बैलंस' (तुला में बाइबिल)* हिन्दू लेखक संघ नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, पृष्ठ ५

४१. **थामस पेन :** *'दी एज आफ़ रीज़न' (तर्क का युग)*, वाटस ऐंड कं. द्वारा प्रकाशित, लंदन, १७९६, पृष्ठ ७६

दी न्यू टेस्टामेंट में कहा गया है कि जब मेरी अपने अन्य बेटों के साथ ईसा मसीह से मिलने आई तो ईसा मसीह ने उसका स्वागत नहीं किया। उसने अपने शिष्यों को सम्बोधित करते हुए कहा, "कौन है मेरी मां ?, कौन हैं मेरे भाई ?" मूल पाठ इस प्रकार है :

१३. "४७. तब एक शिष्य ने उनसे (ईसा मसीह) कहा, 'देखिए आप के माता और भाई बाहर खड़े हैं, वे आपसे बात करना चाहते हैं।' "

– सन्त मत्ति, १/४७

१४. "४८. परन्तु उन्होंने (ईसा मसीह) उत्तर दिया और उसे कहा, 'कौन है मेरी मां और कौन हैं मेरे भाई ?' "

– सन्त मत्ति, १/४८

यहां कुछ प्रश्न उत्पन्न होते हैं : जब मैरी ईसा मसीह की मां थीं, तो बाहर क्यों खड़ी रहीं ? उन्होंने क्यों तब तक प्रतीक्षा की जब तक शिष्यों में से एक ने ईसा मसीह को बताया कि उनकी मां और उनके भाई बाहर खड़े हैं और वे उनसे बात करना चाहते हैं ? वे अपने बेटे से मिलने के लिए अन्दर क्यों नहीं गई ? ईसा मसीह अपनी मां और भाइयों का स्वागत करने के लिए बाहर क्यों नहीं आए ? उन्होंने अपने शिष्यों से यह क्यों कहा, "कौन है मेरी मां ?" उन्हें तत्काल बाहर आ कर अपनी मां के चरण छूने चाहिए थे। उन्होंने ऐसा क्यों नहीं किया ? इस सब से पता लगता है कि वे अपनी मां और भाइयों को नहीं पहचानते थे। ईसाई प्रचारक इसका उत्तर दें कि क्यों ईसा मसीह ने अपनी पवित्र मां और प्यारे भाईयों को स्वीकार नहीं किया।

(चार) क्या ईसा मसीह चाहते हैं कि उनके शिष्य अपने माता पिता से घृणा करें ?

सन्त लूकस १४/२६ (दी न्यू टेस्टामेंट, अर्थात् नया विधान) में ईसा मसीह चाहते हैं कि उनके शिष्य अपने पिता, माता, भाई, बहनों और

पत्नी तथा बच्चों से घृणा करें। वे कहते हैं :

> १५. **"२६. यदि कोई मेरे पास आता है और अपने माता-पिता, पत्नी, सन्तान, भाई-बहनों और यहाँ तक कि अपने जीवन से बैर नहीं करता, तो वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता।"**
>
> *– सन्त लूकस, १४/२६*

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) में एक सकारात्मक पद भी है, जिसमें ईसा मसीह ने अपने शिष्यों को परामर्श दिया, "अपने पिता और माता का आदर करो" (सन्त मत्ति १९/१९)। ईसा मसीह द्वारा दिया गया यह उपदेश स्वयं ईसा मसीह पर लागू किया जा सकता है। एक सामान्य बुद्धि का व्यक्ति निश्चय ही यह प्रश्न पूछेगा कि ईसा मसीह ने अपनी मां का आदर सहित स्वागत क्यों नहीं किया और उन्होंने यह क्यों कहा, "कौन है मेरी मां ?" क्या उन्हें मैरी को अपनी मां कहते हुए लज्जा अनुभव हुई थी, क्योंकि मां का गर्भाधान उनके वैध पति यूसुफ़ के द्वारा नहीं अपितु पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ था ? ईसाई यह कहते हुए गर्व अनुभव करते हैं कि ईसा मसीह की मां कुंवारी मैरी थी, और उनका गर्भाधान पवित्र आत्मा ने किया था, परन्तु **थामस पेन** इसे व्यभिचारिता कहते हैं। उनका मत है :

> *"टेस्टामेंट हमें क्या शिक्षा देता है ? यह विश्वास करने की शिक्षा कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने एक ऐसी महिला के साथ व्यभिचार किया जिसकी किसी के साथ सगाई हो चुकी थी और विवाह होने वाला था, और इस व्यभिचारिता में विश्वास करने को धर्म कहा जाता है।"*[४२]
>
> **– थामस पेन**

---

४२. **थामस पेन** : *'दी एज आफ़ रीज़न' (तर्क का युग)*, वाटस ऐंड कं. द्वारा प्रकाशित, लंदन, १७९६, पृष्ठ ८५-८६

२. वैदिक सार्वभौमिक विधान

पवित्र वेद में कहीं भी पवित्र आत्मा द्वारा किसी कुंवारी को गर्भवती करने का उल्लेख नहीं है। वेद पवित्र या अपवित्र आत्माओं के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता। वैदिक धर्म के अनुसार यह प्रकृति के मूल विधान, जिसे सार्वभौमिक विधान कहा जाता है, के विरुद्ध है। प्रकृति के विधान के अनुसार एक महिला तभी गर्भ धारण करती है, जब पुरुष का वीर्य स्त्री के रज के साथ डिबवाही नली में परस्पर मिल कर, गर्भाशय में विकसित होता है।

कुछ लोग जो अनायास भुलावे में आ जाते हैं और तर्क वितर्क की शक्ति नहीं रखते यह तर्क देते हैं कि यह अपवाद स्वरूप एक दैवी घटना है, जिस पर प्राकृतिक विधान लागू नहीं हुआ। पवित्र वेद ऐसे अंधविश्वासी लोगों की भर्त्सना करते हुए कहते हैं कि प्रकृति का विधान सब के प्रति समान तथा निष्पक्ष रूप से व्यवहार करता है। प्राकृतिक विधान अटल और अपरिवर्तनीय है। विश्व का प्रशासन लाखों वर्षों से निरन्तर बिना किसी त्रुटि के कुछ ऐसे मूल भूत सिद्धांतों और विधान के अनुसार चल रहा है, जिन्हें प्राकृतिक विधान, सार्वभौमिक विधान या शाश्वत विधान कहा जाता है। प्राकृतिक विधान इतना पूर्ण है कि उसे न रद्द किया जा सकता है, न ही निरसित किया जा सकता है। वह जाति, रंग और साम्प्रदायिक मत में कोई भेद भाव किए बिना सब पर समान रूप से और निष्पक्ष रीति से लागू होता है। जो सब पुरुषों, महिलाओं अथवा समस्त प्रकृति के लिए सत्य है, वह एक व्यक्ति के लिए भी सत्य है, वह चाहे उच्च हो या निम्न, दैवी हो या सांसारिक। इस धरती पर कोई भी व्यक्ति चाहे वह कितनी ही महान शक्ति का स्वामी हो उस सार्वभौमिक विधान का उल्लंघन नहीं कर सकता, जो अटल है।

न मे दासो नार्यो महित्वा व्रतं मीमाय यदहं धरिष्ये ।

– अथर्ववेद ५/११/३

कोई भी व्यक्ति, आर्य हो या अनार्य
अपनी शक्ति के द्वारा

मेरे शक्तिशाली शाश्वत विधान का
उल्लंघन नहीं कर सकता।

– अथर्ववेद, ५/११/३

ऋग्वेद का निम्न मंत्र स्पष्ट शब्दों में इसका उल्लेख करता है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर का शाश्वत विधान (सार्वभौमिक विधान) अटल और कठोर है :

नि षसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्या३स्वा ।
साम्राज्याय सुक्रतुः।।

– ऋग्वेद १/२५/१०

वह, जो अपने कार्यों में दृढ़ है
जिसका विधान अटल है
जिसके कार्य त्रुटिहीन हैं
हर किसी के हृदय में विद्यमान और रमा हुआ है
इसलिए कि वह अपना शासन
सब पर बनाए रखे।

– ऋग्वेद १/२५/१०

"हिन्दू संस्कृति हिन्दुस्थान की जीवन प्रेरणा है। इस लिए यह स्पष्ट हो जाता है, कि यदि हिन्दुस्थान की रक्षा करनी है, तो हमें पहले हिन्दू संस्कृति को पोषित करना होगा। यदि हिन्दुस्थान में ही हिन्दू संस्कृति समाप्त हो जाती है और यदि हिन्दू समाज का अस्तित्व समाप्त हो जाता है, तो शेष बचे मात्र भौगोलिक अस्तित्व को हिन्दुस्थान कहना उचित नहीं होगा। केवल भौगोलिक पिंडों के संग्रह से राष्ट्र नहीं बन जाता।"

– डा. केशवराव बलीराम हेडगेवार

अध्याय ३

बाइबिल का ईश्वर संघर्ष उत्पन्न करता है, वैदिक ईश्वर शांति का उपदेश देता है

यह एक स्वीकृत तथ्य है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर, जो ब्रह्माण्ड का रचयिता है, एक है, दो नहीं। वह विश्व के सभी मनुष्यों का ईश्वर है, वे चाहे किसी भी जाति, रंग, मत, समुदाय और देश के हों। यदि ऐसा है तो हम उसे बाइबिल का ईश्वर या वैदिक ईश्वर आदि नाम कैसे दे सकते हैं ? वास्तव में ईश्वर न तो बाइबिल का है, न वैदिक और न ही कुरान का। ईश्वर तो केवल ईश्वर ही है। वह विशेषणों की सीमाओं से ऊपर और अज्ञेय है। हां, उसे अलग अलग धर्म अथवा सम्प्रदायों के शास्त्रों में अलग अलग नाम दिए गए हैं। होना तो यह चाहिए कि उसकी मुख्य विशेषताएं सभी पवित्र पुस्तकों में बिना परिवर्तन के एक समान विद्यमान होती। जब ईश्वर की मुख्य विशेषताओं को विभिन्न दर्शन शास्त्रों में इस प्रकार व्यक्त किया जाए कि वे परस्पर विरोधी हों, तो

विद्वानों का कर्तव्य हो जाता है कि वे बताएं कि सत्य कहां है। यहां बाइबिल के ईश्वर का अर्थ यह समझा जाये कि वह ईश्वर जिसका वर्णन बाइबिल में हुआ है, और वैदिक ईश्वर का अर्थ यह समझा जाए कि वह ईश्वर जिसका वर्णन वेद में हुआ है।

१. बाइबिल का ईश्वर संघर्ष उत्पन्न करता है

(एक) बाइबिल का ईश्वर : मैं शांति के लिए नहीं आया, तलवार उठाने आया हूँ

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) में बाइबिल का ईश्वर घोषणा करता है कि वह पृथ्वी पर शांति के लिए नहीं आया वरन् तलवार उठाने के लिए आया है :

> **१६. "३४. यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर शान्ति ले कर आया हूँ। मैं शान्ति नहीं, बल्कि तलवार ले कर आया हूँ।"**
>
> *– सन्त मत्ती, १०/३४*

(दो) बाइबिल के ईश्वर का लक्ष्य : परिवार में विवाद उत्पन्न करना

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) में बाइबिल का ईश्वर अपने लक्ष्य का स्पष्ट शब्दों में इस प्रकार वर्णन करता है :

> **१७. "३५. मैं पुत्र और पिता में, पुत्री और माता में, बहू और सास में फूट डालने आया हूँ।"**
>
> *– सन्त मत्ती, १०/३५*

२. वैदिक ईश्वर शांति का उपदेश देता है

वैदिक ईश्वर परिवार के सभी सदस्यों को शांति और सामंजस्य की भावना प्रदान करता है। वेद प्रेम और प्रकाश, शांति और समृद्धि, मधुरता

और स्वच्छता प्रदान करता है। मनुष्य का पहला शिक्षा केन्द्र परिवार है। यदि हर परिवार में शांति और प्रेम, आदर और सम्मान, प्रतिष्ठा और शालीनता बनी रहे तो देश के नागरिक शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण करेंगे। इसी लिए ईश्वर ने अथर्ववेद में हर परिवार में प्रेम, मधुरता, सामंजस्य और एकता का उपदेश दिया है :

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ।।

– अथर्ववेद ३/३०/३

कोई भ्राता अपने भाई से घृणा न करे,
कोई बहन अपनी बहन से घृणा न करे,
आप सामंजस्य पूर्ण एवं मधुर बोलें
और मधुर व्यवहार करें,
आप में सर्वसम्मति
और मतैक्य उत्पन्न हो।

अथर्ववेद ३/३०/३

अथर्ववेद के निम्न मंत्र में, परिवार के मतैक्य का कितना सुंदर आदर्श प्रस्तुत किया गया है !

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम् ।।२।।

– अथर्ववेद ३/३०/२

पुत्र,
पिता के पदचिह्नों पर चले,
वह अपनी मां की भावनाओं के साथ
एकता उत्पन्न करे,
पत्नी पति के साथ,
मधु सरीखी मधुर वाणी में बात चीत करे।

– अथर्ववेद ३/३०/२

बाइबिल का ईश्वर स्वयं घोषणा करता है कि वह परिवार में विवाद उत्पन्न करने के लिए आया है, इस से भिन्न, वेद का ईश्वर अथर्ववेद में घोषणा करता है कि उसने सब को एक सामूहिक सम्बन्ध में बांध दिया है, इस लिए कि सभी इकट्ठे बैठें, मिल कर भोजन करें, मिल कर जल पियें और मिल कर प्रार्थना करें।

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः॥

– अथर्ववेद ३/३०/६

आपका जल पान का स्थान सामूहिक हो,
आप मिल बांट कर भोजन करें,
मैं आपको सामूहिक सम्बन्ध में,
बांध देता हूँ,
ठीक उसी प्रकार, जैसे पहिये के आरे,
विभिन्न दिशाओं से आते हुए
नाभि के साथ जुड़ कर एक हो जाते हैं,
इस प्रकार आप में एकता बनी रहे,
आप मिल कर भव्य भगवान की प्रार्थना करें।

– अथर्ववेद ३/३०/६

वैदिक धर्म लोगों को अनुदेश देता है कि उनका मन समान हो, उद्देश्य और लक्ष्य समान हो, गंतव्य समान हो :

सङ्गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते॥

– ऋग्वेद १०/१९१/२

साथ मिल कर चलो,
एक साथ बात चीत करो,
आपके मन विचार में एकता हो,
जिस प्रकार प्राचीन काल में
ऋषियों के मन में एकता थी,
जो भाग्य में लिखा है उसे स्वीकार करो।

– ऋग्वेद १०/१९१/२

बाइबिल के ईश्वर से भिन्न रीति से, वैदिक ईश्वर लोगों से

अनुरोध करता है कि वे एक मंच पर एकत्र हों, इस लिए कि एक साथ मिल कर सोचें और एक उद्देश्य, एक ध्येय, एक प्रयोजन, एक मन, एक संकल्प, एक दृढ़ निश्चय, एक रीति, एक लक्ष्य और एक मंतव्य के लिये कार्य करें।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।।

– ऋग्वेद १०/१९१/३

तुम्हारी सम्मति समान हो,
तुम में एक भ्रातृभाव हो,
तुम्हारे मन,
मतैक्य की ओर बढ़ें,
तुम्हारे मन सामंजस्य की भावना के साथ,
एक लक्ष्य के लिए कार्यशील हों,
तुम एक सामूहिक आदर्श से,
अनुप्रेरित हो,
तुम एक आहुति के साथ,
अपनी पूजा समर्पित करो ।

– ऋग्वेद १०/१९१/३

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

– ऋग्वेद १०/१९१/४

तुम एक मत के साथ,
संकल्प करो,
तुम्हारे हृदयों में एकता हो,
तुम्हारे विचारों में सामंजस्य हो,
इस लिए कि तुम प्रसन्नता और उल्लास के साथ
मिल कर रह सको ।

– ऋग्वेद १०/१९१/४

"धर्म परिवर्तन का अर्थ है राष्ट्रीयता का परिवर्तन।"

– वीर सावरकर

अध्याय ४

बाइबिल का ईश्वर क्रोधी है, वैदिक ईश्वर दयालु मित्र

१. बाइबिल का ईश्वर क्रोधी है

(एक) रक्त रिसने लगा और घोड़े की लगाम तक बहता गया

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) कहता है कि बाइबिल के ईश्वर के देवदूत ने ज़ोर के साथ अपनी हंसिया धरती में धंसा दी, धरती की अंगूरों की बेलों को एकत्र कर, ईश्वर के क्रोध के कुण्ड में फैंक दिया। इसके परिणाम स्वरूप अंगूरों के कुण्ड में से रक्त बाहर रिसने लगा और एक हज़ार छः सौ फ़रलांग की दूरी तक बड़े क्षेत्र में घोड़ों की बागडोर की ऊँचाई तक पहुंच गया। पाठ इस प्रकार है :

> १८. "१९. इस पर स्वर्ग-दूत ने अपनी हँसिया चलायी और पृथ्वी की दाखबारी की फ़सल

बटोर कर उसे ईश्वर के कोप-रूपी विशाल कुण्ड में डाल दिया।"

– प्रकाशना ग्रन्थ, १४/१९

१९. "२०. नगर के बाहर कुण्ड रौंद दिया गया और उस में से जो रक्त निकला, वह सोलह सौ फ़रलांग की दूरी तक, घोड़ों की बागडोर की ऊँचाई तक, पहुँच गया।"

– प्रकाशना ग्रन्थ, १४/२०

२. वैदिक ईश्वर दयालु मित्र है

पवित्र वेद में कहा गया है कि ईश्वर सब के प्रति दयालु है और किसी के प्रति क्रूर नहीं है। वह सब को समान रूप से शुभाशीश प्रदान करता है, चाहे वे उच्च हों या निम्न अथवा पापी या पुण्यात्मा हों। वह सब के प्रति अत्यंत उदार, अत्यंत कृपालु और अत्यंत दयालु है।

स न इन्द्रः शिवः सखा।

– ऋग्वेद ८/९३/३

वह दिव्य ईश्वर,
हमारा कृपालु और दयावान सखा है।

– ऋग्वेद ८/९३/३

"हमारे स्वतंत्र और समृद्ध राष्ट्रीय जीवन का एक मात्र आधार, अपराजेय राष्ट्रीय शक्ति है, ऐसी शक्ति जो आक्रामक देशों के हृदयों को आतंकित कर दे, और दूसरे राष्ट्रों को हमारी मित्रता प्राप्त करने के लिए इच्छुक बना दे। शक्ति राष्ट्रीय जीवन के लिए अमृत है।"

– गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर

अध्याय ५

वैदिक ईश्वर द्वारा दया और बाइबिल के ईश्वर द्वारा नरसंहार

१. वैदिक ईश्वर द्वारा दया

प्रोफ़ेसर एफ़ मैक्स मूलर दृढ़ विश्वास के साथ कहते हैं :

> *"मैं पूरे विश्वास के साथ अनुभव करता हूँ कि आगे आने वाली अनेक शताब्दियों तक विद्वान वेद का अध्ययन और शोध करते रहेंगे, और हम सदा इस बात को मानते हैं और स्वीकार करते हैं कि मनुष्य जाति के पुस्तकालय में वेद सब से प्राचीन पुस्तक है।"*
>
> **– प्रोफ़ेसर एफ़ मैक्स मूलर**

पवित्र वेद कहते हैं कि परमात्मा सब का परम दयालु पिता है। विश्व के सब लोग चाहे वे किसी भी जाति, रंग और मत के हों, ईश्वर की अगाध उदारता और दयालुता की शुभाशीश का आनंद प्राप्त करते

रहते हैं। वे तो पापी को भी उदार भाव से अपनी दया और शुभाशीश प्रदान करते हैं।

यो मृळयाति चक्रुषे चिदागो वयं स्याम वरुणे अनागाः।
अनु व्रतान्यदितेर्ऋधन्तो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

– ऋग्वेद ७/८७/७

ईश्वर अत्यधिक उदार भाव से
अत्यंत घृणित पाप करने वालों को भी
दया प्रदान करता है
हमें दयालु ईश्वर के समक्ष
पाप हीन होना चाहिए
और शाश्वत एवं सर्वशक्तिमान ईश्वर
के सार्वभौमिक विधान का अनुसरण करते हुए
ऊंचा उठने का प्रयत्न करना चाहिए।

– ऋग्वेद ७/८७/७

पवित्र वेद के अनुसार ब्रह्माण्ड का रचयिता सभी प्राणियों का दयालु पिता है। पिता अपने बच्चों को कभी न तो शारीरिक कष्ट देता है, न ही हानि पहुंचाता है। वह अपने बच्चों की भर्त्सना कर सकता है, परन्तु उन्हें कभी नष्ट नहीं करता। सर्वशक्तिमान ईश्वर अपने सब बच्चों के लिए कल्याणकारी है, इसलिए उन्हें शारीरिक या अन्यथा कभी हानि नहीं पहुंचाता। वह दया का सागर है। वह सब पर समान रूप से और निष्पक्ष भाव से अपनी दया की वर्षा करता है। वह बड़े उदार भाव से सबको अपना अनुग्रह और शुभाशीश प्रदान करता है। यह उसकी उदारता, महानता, भव्यता और दिव्यता है।

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः॥

– ऋग्वेद १/१/६

ऐ प्रेममय परमेश्वर
यह आपकी दैवी उदारता और दिव्यता है

भव्यता और सत्यनिष्ठा है
कि आप अपने भक्तों को
अपनी शुभाशीश और वरदान प्रदान करते हो।

– ऋग्वेद १/१/६

२. बाइबिल के ईश्वर द्वारा नरसंहार

(एक) बाइबिल के ईश्वर ने सभी नव जात बच्चों का संहार कर दिया

आधी रात को बाइबिल के ईश्वर ने मिस्र के प्रदेश में, मनुष्यों और पशुओं दोनों के सब नव जात बच्चों का संहार कर दिया।

२०. "२९. प्रभु ने आधी रात को मिस्र देश के सब पहलौठों - सिंहासन पर विराजमान फ़िराउन के पहलौठे से ले कर बन्दीगृह में पड़े हुए कैदी के पहलौठे और पशुओं के पहलौठे बच्चों तक - को मार डाला।"

– *निर्गमन ग्रन्थ, १२/२९*

कोलिन मेन, वेल्स के विख्यात लेखक, (अब आस्ट्रेलिया के निवासी) निर्भीकता से लिखते हैं :

"यदि हम ओल्ड और न्यू टेस्टामेंट (नया और पुराना विधान) दोनों का अध्ययन करें तो हमें पता लगता है कि बाइबिल का ईश्वर प्रेममय ईश्वर नहीं है, वह तो एक परपीड़क दैत्य है। यदि वह धरती पर मानव के रूप में उपस्थित होता तो बहुत संभव है उसे भयानक मानसरोगी के रूप में पागलख़ाने में बन्दी बना दिया जाता।"[४३]

– **कोलिन मेन**

---

४३. **कोलिन मेन** : "दी बाइबिल, व्हाट इट सेज़" (बाइबिल क्या कहता है ?) वाइस आफ़ इंडिया द्वारा प्रकाशित, १९८५, पृष्ठ ६

जेम्स ऐन्थनी फ़ाउड की सम्मति है :

"मैं न तो विश्वास करता हूँ, न करूंगा कि वह सर्व न्यायशील, सर्व दयावान, सर्वश्रेष्ठ (ईसाई) ईश्वर ऐसी सत्ता हो सकता है जैसी मैं बाइबिल में वर्णित पाता हूँ।"[४४]

– जेम्स ऐन्थनी फ़ाउड

(दो) बाइबिल के ईश्वर ने विषैले सांप भेज कर यहूदियों की हत्या की

२१. "६. प्रभु ने लोगों के बीच विषैले साँप भेजे और उनके दंश से बहुत-से इस्राएली मर गये।"

– गणना ग्रन्थ, २१/६

उनका अपराध क्या था ? वे प्रभु और मूसा के विरुद्ध बोले थे।

(तीन) बाइबिल के ईश्वर ने इस्राईलियों को पृथ्वी द्वारा जीवित निगलवा दिया

२२. "३१-३२. मूसा जैसे ही यह कह चुका, उन लोगों के नीचे की भूमि फटी और पृथ्वी अपना मुँह खोल कर उन्हें (यहूदी) उनके परिवारों-सहित निगल गयी - यही नहीं, उनके सारे सामान के साथ कोरह के दल वालों को भी।"

– गणना ग्रन्थ, १६/३१-३२

२३. "३३. वे (यहूदी) अपने परिवारों के साथ

---

४४. **एन. एस. राजाराम :** "क्रिस्चैनिटीज़ कोलैप्सिंग एम्पायर ऐंड इटस डीज़ाइन्स इन इंडिया (ईसाइयों का धराशायी होता साम्राज्य और भारत में उनकी दुर्भाव पूर्ण योजनाएं), नई दिल्ली, १९९९, पृष्ठ १५

जीवित ही अधो-लोक में उतरे। उन को निगल जाने के बाद पृथ्वी का मुँह फिर बन्द हो गया। इस तरह समाज से उनका विलोप हो गया।

– गणना ग्रन्थ, १६/३३

उनका क्या अपराध था ? इस लिए कि वे एक जगह एकत्र हो गए थे और वे **मूसा** और **एरन** के विरुद्ध बोले थे।

(चार) बाइबिल के ईश्वर ने २५० इस्राईलियों को जीवित जला दिया

बाइबिल के ईश्वर ने २५० इस्राईलियों को केवल इस अपराध के लिए जला दिया कि उन्होंने धूप भेंट की थी।

२४. "३५. प्रभु की ओर से अग्नि आयी और उसने उन ढाई सौ लोगों (यहूदी) को भस्म कर दिया, जो धूप चढ़ाने आये थे।"

– गणना ग्रन्थ, १६/३५

(पांच) बाइबिल का ईश्वर इस्राईलियों के बच्चों को जंगली जानवरों के द्वारा मरवाने की धमकी देता है

२५. "२२. मैं तुम्हारे पास हिंसक जानवर भेजूँगा, जो तुम्हारे बाल-बच्चों को छीन लेंगे, तुम्हारे पशुओं को फाड़ेंगे और तुम्हारी जनसंख्या इतनी कम करेंगे कि तुम्हारी सड़कें सूनी हो जायेंगी।"

– लेवी ग्रन्थ, २६/२२

(छः) बाइबिल के ईश्वर ने सत्तर हज़ार इस्राईलियों को महामारी के द्वारा मार डाला।

२६. "१४. इसलिए प्रभु ने इस्राएल में महामारी

भेजी। इस्राएल के सत्तर हज़ार लोग मर गये।"

– पहला इतिहास-ग्रन्थ, २१/१४

(सात) बाइबिल के ईश्वर ने पचास हज़ार सत्तर लोगों को इस लिए मार डाला कि उन्होंने ईश्वर की मंजूषा में झांका था

२७. "१९. बेत-शेमेश के कुछ निवासियों ने प्रभु की मंजूषा खोल कर उसके अन्दर झाँका, इसलिए प्रभु ने लोगों में पचास हज़ार सत्तर मनुष्यों को मार डाला। लोगों ने शोक मनाया, क्योंकि प्रभु ने उन्हें कठोर दण्ड दिया था।"

– समूएल का पहला ग्रन्थ, ६/१९

"सेवा कार्य में व्यक्ति-व्यक्ति में कोई भेद नहीं करना चाहिए-वह चाहे ईसाई हो या मुसलमान अथवा किसी अन्य सम्प्रदाय का अनुयायी। दैविक आपदा, कष्ट अथवा दुर्भाग्य कोई भेदभाव नहीं करते और इनसे सभी समान रूप से प्रभावित होते हैं। मानवता के कष्ट-निवारण के कार्य में सेवा करते समय कृपा अथवा दया भाव से नहीं, बल्कि सभी के हृदयों में विद्यमान परमात्मा के प्रति समर्पित भक्तिमय अर्चना-भाव से कार्य करना चाहिए।"

– गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर

अध्याय ६

बाइबिल मृत्यु दण्ड निर्धारित करता है, वेद संस्कारित करने का उपदेश देता है

१. बाइबिल द्वारा मृत्यु दण्ड

पवित्र बाइबिल अनेक अपराधों के लिए, कभी कभी तो अत्यंत साधारण अपराधों के लिए भी पत्थर मार कर मृत्यु दण्ड देना निर्धारित करता है। दण्डित पर तब तक शिलाएं फैंकी जाती थीं, जब तक उस नारी या पुरुष का कचूमर नहीं निकल जाता था और वह मांस का लोथड़ा हिलने जुलने के अयोग्य नहीं रह जाता था। प्राणदण्ड देने की यह भयानक पद्धति पिछले कई वर्षों तक यूरोप में अपनाई जाती रही।

(एक) ईश्वर निंदा के लिए पत्थर मार कर मृत्यु दण्ड देना

२८. **"१६. जो व्यक्ति प्रभु के नाम को कोसता है, वह मार डाला जाये। सारा समुदाय उसे पत्थरों से मार डाले;...."**

– लेवी ग्रन्थ, २४/१६

(दो) तम्बू के पास भूल से चले जाने पर मृत्यु दण्ड

२९. "५१. जब-जब तम्बू को आगे ले जाना होगा, तो लेवी उसे उखाड़ेंगे और जब-जब तम्बू को खड़ा करना होगा, तो लेवी ही यह काम करेंगे। यदि कोई दूसरा उसके पास जायेगा, तो उसे मृत्युदण्ड दिया जायेगा।"

– गणना ग्रन्थ, १/५१

(तीन) विश्राम दिवस (सॅबथ) न मनाने पर मृत्यु दण्ड

'सॅबथ' का अर्थ है, सप्ताह का एक दिन साम्प्रदायिक पूजा के लिए और काम से विश्राम के लिए निश्चित किया गया है। यहूदियों में वह दिन प्रायः शनिवार है और ईसाइयों में रविवार है। पवित्र बाइबिल ईसाइयों को आदेश देता है कि वे विश्राम दिवस (होली डे) ईश्वर की पूजा के लिए मनाएं। जो इसे नहीं मनाएगा उसे मृत्यु दण्ड दिया जाएगा।

३०. "१४. विश्राम-दिवस मनाओ, क्योंकि वह तुम्हारे लिए पवित्र है। जो उसे अपवित्र करेगा, उसे मृत्युदण्ड दिया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, जो उस दिन काम करे, अपनी जाति से बहिष्कृत कर दिया जाये।"

– निर्गमन ग्रन्थ, ३१/१४

३१. "२. छः दिन तक काम किया जाये और सातवें दिन तुम विश्राम-दिवस मनाओ। वह प्रभु का पवित्र दिन होगा। जो उस दिन काम करेगा, उसे प्राणदण्ड दिया जायेगा।"

– निर्गमन ग्रन्थ, ३५/२

पवित्र बाइबिल के 'निर्गमन' अध्याय में सातवां दिवस विश्राम दिवस मनाने का कारण यह बताया गया है कि ईश्वर ने छः दिन में पृथ्वी और स्वर्ग बनाए और सातवें दिन विश्राम किया था।

ईश्वर नहीं, मनुष्य छः दिन निरन्तर काम करने से थक जाता है, और उसे सातवें दिन विश्राम की आवश्यकता होती है। ईश्वर तो सर्वशक्तिमान, सर्व समर्थ है। यह कहना कि वह थक गया था और अधिक काम के लिए असमर्थ हो गया था, ईश्वर निन्दा होगी। अतः 'निर्गमन' ग्रंथ का उपरोक्त पद ईश्वर को उसके पद से गिरा कर उसे दुर्बल मानव की स्थिति में पहुँचा देता है।

(चार) माता पिता की आज्ञा न मानने पर मृत्यु दण्ड

पवित्र बाइबिल का यह विधान, जो माता पिता को यह अधिकार देता है कि वे अपने पुत्र को उसकी अवज्ञा और हठीपन के सामान्य अपराध के लिए नगर के नेताओं के सामने लाएं और उसे पत्थरों से मार कर मृत्यु दण्ड दिलवाएं, अत्यंत अमानवीय और क्रूर है। निम्न चार पदों को पढ़िये :

३२. **"१८. यदि किसी का पुत्र हठी और उद्दण्ड हो, जो न अपने पिता और न अपनी माता की बात सुनता हो और न उनके समझाने पर उनकी मानता हो,"**

– विधि-विवरण ग्रन्थ, २१/१८

३३. **"१९. तो उसके माता-पिता उसे नगर के नेताओं के पास अपने नगर के फाटक पर ले जा कर,"**

– विधि-विवरण ग्रन्थ, २१/१९

३४. **"२०. अपने नगर के नेताओं से कहें, 'हमारा यह पुत्र हठी और उद्दण्ड है। यह हमारी बात नहीं सुनता। यह चरित्रहीन और पियक्कड़ हो गया है।'"**

– विधि-विवरण ग्रन्थ, २१/२०

३५. **"२१. तब नगर के सब लोग उसे पत्थरों से मार डालें। इस प्रकार तुम अपने बीच**

से यह बुराई दूर कर दोगे। सब इस्राएली यह सुन कर भयभीत होंगे।"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, २१/२१

कोई भी सभ्य राज्य बाइबिल के उपरोक्त विधान को न तो स्वीकार करेगा और न ही उस पर आधारित कानून बनाएगा। वास्तव में चर्च (ईसाई मत प्रचार संस्था) सभ्यता की शत्रु थी, आज भी है और सदा रहेगी। चर्च और सभ्यता परस्पर विरोधी हैं। सुश्री **मतिल्दा जोसलिन गेज** निम्न शब्दों मे उक्त मत का समर्थन करती है :

"चर्च और सभ्यता परस्पर विरोधी हैं। एक का अर्थ अंकुश है और दूसरे का स्वतंत्रता। एक का अर्थ पुरातनपंथी हे, दूसरे का प्रगतिवादी, एक का अर्थ पादरियों द्वारा की गई व्याख्या के अनुसार ईश्वर के अधिकार हैं और दूसरे का अर्थ मानव जाति द्वारा की गई व्याख्या के अनुसार समस्त मनुष्यों के अधिकार हैं। सभ्यता, विचार स्वातंत्र्य, वाणी स्वातंत्र्य, और मानव स्वातंत्र्य के द्वारा प्रगति करती है।"[४५]

– मतिल्दा जोसलिन गेज

(पांच) माता पिता को अभिशाप देने वाले को मृत्यु दण्ड

३६. "१७. जो अपने पिता या अपनी माता को अभिशाप दे, उसे प्राणदण्ड दिया जाये।"

– निर्गमन ग्रन्थ, २१/१७

(छः) समलैंगिक सम्बंधों के लिए मृत्यु दण्ड

३७. "१३. यदि कोई स्त्री की तरह किसी पुरुष के साथ प्रसंग करे, तो दोनों घृणित

---

४५. **मतिल्दा जोसलिन गेज :** 'चर्च, वुमन ऐंड स्टेट' (ईसाई संस्था, स्त्री और राज्य) न्यू यार्क १८९३, वाईस आफ़ इंडिया, नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, १९९७, पृष्ठ ५४०

पाप करते हैं। उन को प्राणदण्ड दिया जायेगा–उनका रक्त उनके सिर पड़ेगा।"

– लेवी ग्रन्थ, २०/१३

(सात) किसी महिला के मासिक धर्म के समय उसके साथ संभोग करने वाले को मृत्यु दण्ड

३८. "१८. यदि कोई पुरुष किसी स्त्री के मासिक धर्म के समय उसकी अनुमति से उसके साथ प्रसंग करे, तो दोनों को मारा जायेगा; क्योंकि उन्होंने उसके रक्त का बहता स्रोत उघारा।"

– लेवी ग्रन्थ, २०/१८

(आठ) कौमार्य (कुमारीपन) भंग होने के कारण मृत्यु दण्ड

पवित्र बाइबिल निम्न दो पदों में कौमार्य (कुमारीपन) भंग के लिए पत्थर मार कर मृत्यु दण्ड देने का विधान करता है :

३९. "२०. परन्तु यदि यह बात सत्य हो और उस लड़की के कौमार्य का प्रमाण नहीं मिले,"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, २२/२०

४०. "२१. तो उस लड़की को उसके पिता के घर के द्वार पर ले जाया जाये और उस नगर के पुरुष उसे पत्थरों से मार डालें; क्योंकि उसने इस्राएल में घृणित काम किया है, उसने अपने पिता के घर में रहते ही व्यभिचार किया है। तुम अपने बीच से यह बुराई दूर करोगे।"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, २२/२१

(नौ) व्यभिचार के लिए मृत्यु दण्ड

४१. "१०. यदि कोई पुरुष किसी की पत्नी–अपने पड़ोसी की पत्नी – से व्यभिचार करे, तो व्यभिचारी और व्यभिचारिणी को प्राणदण्ड दिया जायेगा।"
– लेवी ग्रन्थ, २०/१०

ईसा मसीह पवित्र बाइबिल के 'सन्त मत्ती अध्याय ५/१७' में मृत्यु दण्ड की उपरोक्त सात विधियों की पुष्टि निम्न शब्दों में करता है, जिनका निर्धारण **मूसा** ने किया था :

४२. "१७. यह न समझो कि मैं मूसा–संहिता अथवा नबियों के लेखों को रद्द करने आया हूँ। उन्हें रद्द करने नहीं, बल्कि पूरा करने आया हूँ।"
– सन्त मत्ती, ५/१७

यदि आधुनिक यूरोप में बाइबिल के मृत्यु दण्ड के उपरोक्त विधान को कठोरता के साथ लागू किया जाए, तो पश्चिमी विश्व की जन संख्या के बहुत बड़े भाग को मौत के घाट उतार दिया जायेगा। आज के भोगवादी समाज में, कुंवारी लड़कियां बहुत नहीं हैं। पश्चिम के देशों में ऐसे लाखों लोग हैं, जो गिरजाघर जाने के लिए विश्राम दिवस नहीं मनाते। आज कल यूरोप में गिरजाघर बेचे जा रहे हैं। आधुनिक वैज्ञानिक युग में यूरोप और अमरीका के हज़ारों शिक्षित बुद्धिवादी लोग पवित्र बाइबिल के अवैज्ञानिक और अलोकतंत्रात्मक उपदेशों पर आपत्ति करने लगे हैं। यदि ऐसे तर्कवादियों पर मृत्यु दण्ड के उपरोक्त विधान को गंभीरता से लागू करने लगें तो पश्चिमी विश्व की जन संख्या में बड़ी मात्रा में कमी हो जाएगी।

(दस) चर्च के नेताओं की आज्ञा की अवहेलना करने पर मृत्यु दण्ड

९०–१०० सी.ई. में रोम के बिशप **श्री क्लेमेंट** ने यह तर्क प्रस्तुत किया था कि केवल ईश्वर ही सब पर शासन करता है। वही विधान

बनाता है, जिसके द्वारा वह विद्रोहियों को दण्ड देता है और आज्ञाकारी को पुरुस्कार। उसके अधिकार चर्च के नेताओं के हाथों में सौंप दिए गए हैं। **क्लेमेंट** ने आगे यह भी कहा कि जो कोई भी ईश्वर के आदेश द्वारा नियुक्त प्राधिकारियों की अवहेलना करता है, वह स्वयं ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करता है, और उसे मृत्यु दण्ड मिलना चाहिए।[४६]

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही **पोप लियो तेरहवें** ने यह तर्क प्रस्तुत किया था कि लक्ष्य उपायों को न्यायसंगत ठहराता है :

> *"जब विद्रोही चर्च के विरुद्ध कार्य करते हैं तो चर्च के लिए अपने लक्ष्य की पूर्ति हेतु मृत्यु दण्ड देना आवश्यक और प्रभावी उपाय बन जाता है।"*[४७]
>
> **– पोप लियो तेरहवां**

२. वेद मानव को संस्कारित करने का उपदेश देते हैं

वेद, बाइबिल की तरह, हर अपराध के लिए कठोर विधान की व्यवस्था नहीं करते। यह कार्य देश के विधान मण्डल के लिए छोड़ दिया गया है। यदि पंथसम्प्रदायों की पुस्तकें कानून बनाना आरम्भ कर दें, और उन कानूनों को लागू करना आरम्भ कर दिया जाए तो विधान मण्डल का अस्तित्व शून्य हो जाएगा, और विधान मण्डल के सदस्यों का निर्वाचन करने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाएगी। वेदों ने यह नहीं कहा कि

---

४६. (एक) **पेजल्स :** *'दी नास्टिक गॉस्पेल्स'* (ईसा मसीह का ज्ञानात्मक उपदेश), पृष्ठ ३४

(दो) **हेलिन एलबी :** *'दी डार्क साइड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष) अमरीका, अगस्त १९९८, पृष्ठ १३

४७. (एक) **ज्योफ्री ऐश :** *'दी वर्जिन मैरीज़ कल्ट ऐंड दी रीएमरजंस आफ़ दी गाडेस'* (कुमारी मैरी का पंथ और देवी का पुर्नोदय), लंदन, अरकाना, १९७६, १९८८, पृष्ठ २०६

(दो) **हेलिन एलबी :** *'दी डार्क साइड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष) अमरीका, अगस्त १९९८, पृष्ठ ३८

अपराधियों को दण्ड न दिया जाए, परन्तु एक सामान्य बुद्धि वाले व्यक्ति को यह प्रतीत होता है कि विश्राम दिवस न मनाने जैसे साधारण अपराध के लिए मृत्यु दण्ड देना बहुत बड़ा दण्ड है। किन्तु अपराध और पाप करने वालों के प्रति वेद की दृष्टि सुधारात्मक और रचनात्मक है। पवित्र वेद हमें सावधान करते हैं कि जिन लोगों ने अपने जीवन को पाप और अपराध के द्वारा भ्रष्ट और कलंकित कर लिया है, उनके प्रति घृणा मत करो। निस्संदेह वे हतभागी आत्माएं हैं। परन्तु उनके प्रति घृणा नहीं करनी चाहिए, उन्हें निरोत्साहित नहीं करना चाहिए, उनकी भर्त्सना नहीं करनी चाहिए। उनसे घृणा नहीं अपितु उन पर दया करनी चाहिए। वे दया और सहानुभूति के पात्र हैं। उन्हें संस्कारित करना चाहिए, उन्नत करना चाहिए और भविष्य में पाप से विमुख हो कर नैतिक जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। वैदिक धर्म की घोषणा है, "गिरे हुए और निस्सहाय को ऊपर उठाओ"। वैदिक दर्शन संस्कारात्मक और रचनात्मक उपायों पर बल देता है।

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः।
उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः॥

– ऋग्वेद १०/१३७/१

ऐ प्रबुद्ध लोगो,
गिरे हुए और निस्सहाय लोगों को,
निम्न और निराधार लोगों को
एक बार फिर से उठाओ,
ऐ प्रख्यात लोगो,
उसे उन्नत करो जिसने पाप किया है,
और अपने आपको गिरा लिया है
उसमें पुनः जीवन भर दो।

– ऋग्वेद १०/१३७/१

"विश्व की समस्याओं का समाधान हिन्दुत्व में है, समाजवाद में नहीं।"
– पंडित दीन दयाल उपाध्याय

अध्याय ७

बाइबिल स्त्री की अवमानना करता है वेद उनका उन्नयन करता है

१. बाइबिल द्वारा स्त्री की अवमानना

(एक) बाइबिल के ईश्वर ने स्त्रियों को अभिशाप दिया

पवित्र बाइबिल के निम्नलिखित पद में स्त्री जाति को तुच्छ, निन्दनीय, अपमानित ठहराया गया है। बाइबिल के ईश्वर ने स्त्रियों को अभिशाप दिया है कि क्योंकि उनकी पहली दादी मां हेवा (ईव) ने स्वर्ग में वर्जित फल खाया था, इस कारण ईश्वर उनके दुख में वृद्धि करेगा, और वे, कोई अपराध न होने पर भी, प्रसव पीड़ा सहेंगी। उनके पति उन पर शासन करेंगे। कोई भी शिक्षित स्त्री क्या कभी बाइबिल के ईश्वर द्वारा की गई इस घोषणा पर विश्वास करेगी और उसका अनुमोदन करेगी कि उसका पति उस पर शासन करेगा ? बाइबिल का उपरोक्त पद इस प्रकार है :

४३. "१६. उसने (ईश्वर ने) स्त्री से यह कहा, 'मैं तुम्हारी गर्भावस्था का कष्ट

बढ़ाऊँगा और तुम पीड़ा में सन्तान को जन्म दोगी। तुम वासना के कारण पति में आसक्त होगी और वह तुम पर शासन करेगा।' "

– उत्पत्ति ग्रन्थ, ३/१६

यही कारण था कि उन्नीसवीं शताब्दी में ईसाई पादरियों ने सन्तानोत्पत्ति के समय स्त्री को संज्ञाहीन करने की औषधि देने का इस आधार पर विरोध किया था कि ऐसा करना उस ईश्वरी इच्छा का उल्लंघन होगा, जिसके अनुसार स्त्री को प्रसव पीड़ा अवश्य सहनी चाहिए। ऐसी स्थिति में संज्ञाहीन करने की औषधि के प्रयोग की सबके लिए अनुमति तभी दी गई, जब **महारानी विक्टोरिया** के बच्चे के जन्म के समय उसे यह औषधि दी जा चुकी थी। इस सम्बंध में **बर्ट्रेण्ड रसेल,** जो विख्यात दार्शनिक थे और जिन्हें १९५० में साहित्य के लिए नोबल पुरुस्कार दिया गया था, कहते हैं :

*"मानव की पीड़ा को कम करने के लिए, उसे संज्ञाहीन करने की औषधि का एक ऐसा अवसर था जब उस पर रोक लगाने के लिए तर्क सम्मत कारण उपस्थित हुआ था। जब १८४७ में **सिम्पसन** ने बच्चे के जन्म के अवसर पर प्रसूता को संज्ञाहीन करने की औषधि देने का प्रस्ताव किया था तब पादरी ने उसे तत्काल यह स्मरण कराया था कि ईश्वर ने हेवा से कहा था, (बाइबिल उत्पत्ति ग्रंथ ३/१६) "तुम पीड़ा (प्रसव पीड़ा) में सन्तान को जन्म दोगी।"*

– बर्ट्रेण्ड रसेल

ईसाई पादरी सन्तान नियंत्रण की निंदा करते हैं। उनका विचार है कि स्त्रियां अधिकाधिक बच्चे पैदा करने की मशीनें हैं, ताकि उनके सह धर्मानुयाइयों की संख्या बढ़ जाए। **बर्ट्रेण्ड रसेल** कहते हैं :

"अधिकांश पादरी सन्तान नियंत्रण की निंदा करते

हैं। कोई भी पति के पत्नी पर इस अत्याचार की निंदा नहीं करता कि वह उसे बार बार गर्भवती कर के उसे मृत्यु के निकट ले जाता है। मैं एक आधुनिक पादरी को जानता था जिसकी पत्नी ने नौ वर्ष में नौ बच्चों को जन्म दिया था। डॉक्टरों ने उसे चेतावनी दे दी थी कि यदि उसकी पत्नी का और बच्चा हुआ तो उसकी मृत्यु हो जाएगी। अगले ही वर्ष उसका और बच्चा हुआ और वह मर गई। किसी ने उसकी निंदा नहीं की, उसका पादरी का पद सुरक्षित रहा और उसने फिर विवाह कर लिया।"[४८]

– बर्ट्रेण्ड रसेल

दूसरी शताब्दी में अलेग्ज़ेंड्रिया के **सन्त क्लेमेंट** ने लिखा :

"हर स्त्री को इस कारण लज्जा अनुभव करनी चाहिए कि वह स्त्री है।"[४९]

– सन्त क्लेमेंट

विटनबर्ग में लूथर के अनुयाइयों ने इस बात पर वाद-विवाद किया कि क्या स्त्री वास्तव में मानव है अथवा नहीं।[५०]

---

४८. **बर्ट्रेण्ड रसेल :** *'व्हाइ आई ऐम नाट ऐ क्रिस्चैन ऐंड अदर एस्सेज़ आन रिलीजन'* (मैं ईसाई क्यों नहीं और धर्म सम्बंधी अन्य निबंध) सातवां संस्करण, १९९६, लंदन, पृष्ठ ५६

४९. (एक) **टामा स्टार :** *'दी नेचरल इनफ़ीरियारिटी आफ़ वीमेन'* (स्त्रियों की प्राकृतिक हीनता) पोज़ीडन प्रैस, न्यू यार्क, १९९१, पृष्ठ ४५

(दो) **हेलिन एलर्बी :** *'दी डार्क साइड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष) अमरीका, अगस्त १९९८, पृष्ठ ११४

५०. (एक) **आर्मस्ट्रांग :** *'दी गॉसपेल अकार्डिंग टु वोमन'* (स्त्री के अनुसार ईसा का उपदेश), पृष्ठ ६९

(दो) **हेलिन एलर्बी :** *'दी डार्क साइड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष) अमरीका, अगस्त १९९८, पृष्ठ ११५

(दो) स्त्री का पुरुष के लिए निर्माण किया गया, न कि पुरुष का स्त्री के लिए

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) में कहा गया है कि मूलतः पुरुष स्त्री से उत्पन्न नहीं हुआ वरन् स्त्री पुरुष में से उत्पन्न हुई थी और स्त्री का सृजन, स्त्री के लिए नहीं वरन् पुरुष के निमित्त हुआ था।

४४. "८. पुरुष स्त्री से नहीं बना, बल्कि स्त्री पुरुष से बनी,"

– कुरिन्थियों के नाम पहला पत्र, ११/८

४५. "९. और पुरुष की सृष्टि स्त्री के लिए नहीं हुई, बल्कि पुरुष के लिए स्त्री की सृष्टि हुई।"

– कुरिन्थियों के नाम पहला पत्र, ११/९

१९७७ में **पोप पाल छटा** ने इन शब्दों में इसे स्पष्ट किया था :

"स्त्रियों के पादरी बनने पर रोक लगा दी गई थी, क्योंकि ईसा मसीह पुरुष थे।"[५१]

– पोप पाल छटा

(तीन) ईसा मसीह पुरुष का शीर्ष है, स्त्री का नहीं

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) में कहा गया है कि प्रत्येक पुरुष का शीर्ष ईसा मसीह है, परन्तु वह स्त्री का शीर्ष नहीं। स्त्री का शीर्ष पुरुष है, ईसा मसीह नहीं। इसका यह अभिप्राय है कि पवित्र बाइबिल के अनुसार स्त्री की सामाजिक स्थिति पुरुष के समान नहीं। इससे सम्बंधित पाठ इस प्रकार है :

४६. "३. फिर भी मैं आप को यह बताना

---

५१. (एक) **रिएन आइसलर :** *'दी चालिस ऐंड दी ब्लेड'*, (प्याला और तलवार की धार), हार्पर ऐंड रो, सैन फ्रैनसिस्को, १९८७, पृष्ठ १३१-१३२

(दो) **हेलिन एलर्बी :** *'दी डार्क साइड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष) अमरीका, अगस्त १९९८, पृष्ठ ८

चाहता हूँ कि मसीह प्रत्येक पुरुष के शीर्ष हैं, पुरुष स्त्री का शीर्ष है और ईश्वर मसीह का शीर्ष।"

– कुरिन्थियों के नाम पहला पत्र, ११/३

(चार) स्त्रियों को पुरुषों के अधीन रहना चाहिए

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) में स्त्रियों को आदेश दिया गया है कि वे पुरुषों के अधीन रहें। न तो उन्हें शिक्षा देनी चाहिए, और न ही पुरुषों पर प्रभुत्व जमाना चाहिए, वरन् चुपचाप उनके अधीन रहना चाहिए। इस सम्बंध में निम्न पांच पद पढ़िए :

४७. "११. धर्मशिक्षा के समय स्त्रियाँ अधीनता स्वीकार करते हुए मौन रहें।"

– तिमथी के नाम पहला पत्र, २/११

४८. "१२. मैं नहीं चाहता कि वे शिक्षा दें या पुरुषों पर अधिकार जतायें। वे मौन ही रहें;"

– तिमथी के नाम पहला पत्र, २/१२

४९. "१३. क्योंकि आदम पहले बना, हेवा बाद में,"

– तिमथी के नाम पहला पत्र, २/१३

५०. "१४. और आदम बहकावे में नहीं पड़ा, बल्कि हेवा ने बहकावे में पड़ कर अपराध किया।"

– तिमथी के नाम पहला पत्र, २/१४

५१. "२४. जिस तरह कलीसिया मसीह के अधीन रहती है, उसी तरह पत्नी को भी सब बातों में अपने पति के अधीन रहना चाहिए।"

– एफेसियों के नाम, ५/२४

जब ईसाई पादरियों ने चौथी शताब्दी में महान विदूषि **हिपातिया** को शंख मार मार कर उसका वध कर दिया था तो **संत साइरिल** ने स्पष्टीकरण दिया था कि ऐसा इस लिए किया गया कि वह दुष्ट और दुराचारी स्त्री थी, जिसने ईश्वर के आदेश के विरुद्ध यह मान लिया था कि वह पुरुषों को शिक्षा दे सकती है।[५२]

एलिज़बेथ कैडी स्टेंटन कहती हैं :

"मैं बाइबिल के अतिरिक्त अन्य किसी पुस्तक को नहीं जानती जो इस प्रकार बल दे कर उपदेश देती हो कि स्त्रियों की स्थिति दीन और हीन है।"

– एलिज़बेथ कैडी स्टेंटन

(पांच) स्त्रियों का अपने पतियों के अधीन होना

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) में यह घोषणा की गई है कि ईश्वर इस बात को उचित और उपयुक्त मानता है कि पत्नियों को अपने पतियों के अधीन रहना चाहिए। पाठ इस प्रकार है :

५२. "१८. जैसा कि प्रभु-भक्तों के लिए उचित है, पत्नियाँ अपने पतियों के अधीन रहें।"

– कलोसियों के नाम, ३/१८

यह वेदना और आश्चर्य की बात है कि पत्नियों को पतियों के अधीन करने में राज्य ने चर्च (ईसाई संस्था) के कार्यकर्ता (agent) और दास होने की भूमिका निभाई है। इस सम्बंध में **सुश्री मतिल्दा जोसलिन गेज** नामक अमरीकी लेखिका कहती हैं :

"चर्च के कार्यकर्ता (agent) और दास के रूप में

---

५२. (एक) **रिएन आइसलर :** *'दी चालिस ऐंड दी ब्लेड'*, (प्याला और तलवार की धार), हार्पर ऐंड रो, सैन फ्रैनसिस्को, १९८७, पृष्ठ १३२-१३३

(दो) **हेलिन एलर्बी :** *'दी डार्क साइड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष) अमरीका, अगस्त १९९८, पृष्ठ ८

राज्य ने चर्च (ईसाई संस्था) के साथ मिल कर अब तक स्त्री की प्रतिभा का दमन किया है। उसने केवल पुरुष की शक्ति का प्रचार किया है। उसने स्त्री के दमन के लिए अन्तर्निहित प्रवृत्ति और स्वत: स्फूर्त दृष्टि उत्पन्न करने का काम किया है।"[५३]

– मतिल्दा जोसलिन गेज

दांते (१२६५-१३२१) ने, जो इटली के महानतम कवि थे, चर्च (ईसाई संस्था) द्वारा किए जा रहे राजनैतिक प्रहारों के विरुद्ध निरन्तर संघर्ष किया था। इस सम्बंध में अमरीका का पत्रकार **जान बांड** लिखता है :

*"**दांते** महान कवि और निष्ठावान कैथोलिक मतानुयायी थे। वे पोप तन्त्र के राजनैतिक प्रहारों और निरर्थक अधिकार कथनों के विरुद्ध निरन्तर संघर्ष करते रहे। इसके परिणाम स्वरूप उन्हें जीवन भर के लिए देश से निर्वासित होने के लिए विवश किया गया और यह दण्ड घोषित किया गया कि यदि वह पकड़ा जाए तो उसे जीवित जला कर मार डाला जाए। उनकी उस विख्यात पुस्तक के बारे में आदेश दिया गया कि उसे सार्वजनिक वधिक (जल्लाद) के द्वारा जला दिया जाए, जिसमें दांते ने पोप के मिथ्याचार का तर्क और इतिहास के आधार पर भण्डा फोड़ किया था। रोम के मुख्य गिरजाघर के प्रधान पादरी ने आदेश दिया था कि दांते के शव को उसकी कब्र से निकाल कर और खंभे से बांध कर उसी तरह जला दिया जाए जैसे काफ़िर*

---

५३. **मतिल्दा जोसलिन गेज :** *'चर्च, वीमन ऐंड स्टेट'* (ईसाई संस्था, स्त्री और राज्य) न्यू यार्क १८९३ वाईस आफ़ इंडिया, नई दिल्ली द्वारा पुर्नमुद्रित, १९९७, पृष्ठ ५४३

(नास्तिक) को जलाया जाता है। इस आदेश का कभी पालन नहीं हुआ, क्योंकि उस महान कवि के मित्रों ने इसमें हस्तक्षेप किया।"[५४]

– जान बांड

(छः) गिरजा घरों में स्त्री को बोलने की अनुमति नहीं

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) में दिए गए विधान के अनुसार स्त्रियों को गिरजा घरों में बोलने की अनुमति नहीं है। यदि वे कुछ सीखना चाहती हैं तो वे घर में अपने पतियों से पूछें, क्योंकि स्त्रियों का गिरजाघर में बोलना लज्जा जनक है। इस सम्बंध में बाइबिल का कथन इस प्रकार है :

५३. **"३४. आपकी धर्मसभाओं में भी स्त्रियाँ मौन रहें। उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है। वे अपनी अधीनता स्वीकार करें, जैसा कि संहिता कहती है।"**

– कुरिन्थियों के नाम पहला पत्र, १४/३४

५४. **"३५. यदि वे किसी बात की जानकारी प्राप्त करना चाहती हैं, तो वे घर में अपने पतियों से पूछें। धर्मसभा में बोलना स्त्री के लिए लज्जा की बात है।"**

– कुरिन्थियों के नाम पहला पत्र, १४/३५

क्या शिक्षित स्त्रियां उपरोक्त कथन में विश्वास करेंगी और इसका अनुमोदन करेंगी ? यदि नहीं, तो उन्हें ज़ोरदार आवाज़ उठानी चाहिए।

एक लम्बे काल तक इंग्लैंड में स्त्रियों को पवित्र बाइबिल पढ़ने की अनुमति नहीं थी। इस सम्बंध में **सुश्री मतिल्दा जोसलिन गेज** लिखती हैं :

---

५४. **जान बांड :** *'इन दी पिलोरी–दी टेल आफ़ बोर्जिया पोप)* (दण्डकारी यंत्र में–बोर्जिया पोप की कहानी), फ़ैलोशिप फ़ोरम, रोम, दिसम्बर, १९२६, पृष्ठ १२

"रोमन चर्च में सुधार आंदोलन (reformation) के बाद लम्बे काल तक इंग्लैंड की स्त्रियों को बाइबिल पढ़ने की अनुमति नहीं थी। आठवें हैनरी ने एक विधान बनाया था जिसके अन्तर्गत स्त्रियों और निम्न जाति वालों के लिए बाइबिल का अध्ययन वर्जित कर दिया गया था।"[५५]

(सात) प्रार्थना के समय स्त्री को, पुरुष को नहीं, अपना सिर ढक कर रखना चाहिए

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) पुरुषों को सावधान करता है कि वे प्रार्थना के समय सिर को न ढकें और स्त्रियों को इसके विपरीत करने की चेतावनी देता है। उन्हें प्रार्थना के समय अपना सिर ढक कर रखना चाहिए। पवित्र बाइबिल यह भी आदेश देता है कि यदि एक स्त्री प्रार्थना के समय अपना सिर नहीं ढकती तो वह अपने सिर का अपमान करती है, और वह ऐसी प्रतीत होती है जैसे उसका सिर मुंडा हुआ है। स्त्री के लिए बाइबिल का अगला आदेश और भी अधिक कठोर है। इसमें कहा गया है कि यदि स्त्री प्रार्थना के समय अपना सिर नहीं ढकती तो उसका सिर मूंड देना चाहिए। परन्तु यदि वह सिर मुंडाने अथवा बाल विहीन होने लज्जा अनुभव करती है, तो उसे अपना सिर ढकना चाहिए। इस विषय में आइये निम्न लिखित तीन पद पढ़ें :

५५. **"४. जो पुरुष सिर ढक कर प्रार्थना या भविष्यवाणी करता है, वह अपने सिर का अपमान करता है,"**

– कुरिन्थियों के नाम पहला पत्र, ११/४

५६. **"५. और जो स्त्री बिना सिर ढके प्रार्थना या भविष्यवाणी करती है, वह अपने सिर**

---

५५. **मतिल्दा जोसलिन गेज :** *'वोमन, चर्च, ऐंड स्टेट'* (स्त्री, ईसाई संस्था, और राज्य), न्यू यार्क, १८९३, वाईस आफ़ इंडिया, नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, १९९७, पृष्ठ ३५५

का अपमान करती है; क्योंकि वह उस स्त्री-जैसी है, जिसका सिर मूँडा हुआ है।"

– कुरिन्थियों के नाम पहला पत्र, ११/५

५७. "६. यदि कोई स्त्री अपना सिर नहीं ढकती, तो सिर मुँडवा ले। यदि कटे हुए केश या मूँडा हुआ सिर स्त्री के लिए लज्जा की बात है, तो वह अपना सिर ढक ले।"

– कुरिन्थियों के नाम पहला पत्र, ११/६

(आठ)कड़ुवा जल पिला कर विश्वासघाती पत्नी की परीक्षा

पवित्र बाइबिल में विश्वासघाती पत्नी की परीक्षा के लिए निम्नलिखित उपाय बताया गया है : "यदि पति को संदेह होता है कि पत्नी विश्वासघात करती है, तो उसे पादरी के सामने लाया जायेगा। पादरी उसे अभिशापमय पानी पिला कर उसकी परीक्षा करेगा। यदि वह स्त्री अपवित्र हो चुकी है और उसने पर पुरुष के साथ सम्भोग किया है, तो उस जल से उसका पेट फूल जायेगा और उसकी जंघा क्षीण हो जायगी। पाठ इस प्रकार है :

५८. "२०. परन्तु यदि तुम पति के रहते हुए पथभ्रष्ट और अपवित्र हो गयी हो, क्योंकि परपुरुष का तुम्हारे साथ प्रसंग हुआ है,"

– गणना ग्रन्थ, ५/२०

५९. "२१. अब याजक यह कहते हुए स्त्री को अभिशाप की शपथ खिलाये – 'तो प्रभु तुम्हारा नाम अपने लोगों में घृणास्पद और अभिशप्त बना दे : वह तुम्हारी जाँघें घुलाये और तुम्हारा पेट फुला दे।' "

– गणना ग्रन्थ, ५/२१

६०. "२२. यह शाप लाने वाला जल तुम्हारे अन्दर जा कर तुम्हारा पेट फुलाये और

तुम्हारी जाँघें घुला दे। इस पर स्त्री कहे, 'ऐसा ही हो।' "

– गणना ग्रन्थ, ५/२२

६१. "२७. यदि उसने अपराध किया और अपने पति के साथ विश्वासघात किया, तो वह शाप लाने वाला जल, जो याजक उसे पिलाता है, उस में असह्य पीड़ा उत्पन्न करेगा। स्त्री का पेट फूल जायेगा, उसकी जाँघें घुल जायेंगी और उसका नाम उसके लोगों में अभिशप्त हो जायेगा।"

– गणना ग्रन्थ, ५/२७

बाइबिल के ईश्वर ने ऐसा ही परीक्षण पुरुष के लिए क्यों निर्धारित नहीं किया ? उपरोक्त चार पदों से बाइबिल के ईश्वर का पक्षपात और स्त्री के साथ अन्याय प्रकट होता है। वह दिन कब आएगा जब स्त्री अपनी गहरी नींद त्याग कर धर्म के नाम पर अपनी अवहेलना और अवमानना का घोर विरोध करेगी ?

(नौ) क्या स्त्री में आत्मा है ?

चर्च ने ही नहीं वरन् राज्य ने भी स्त्री में आत्मा का होना अस्वीकार किया है। **मतिल्दा जोसलिन गेज** कहती हैं :

*"बहुत पहले छटी शताब्दी में (५८५) **मेकन** में एक परिषद की बैठक हुई थी, जिसमें ५९ बिशपों ने भाग लिया था। उस परिषद में इस बात पर विचार किया गया कि, "क्या स्त्री में आत्मा है ?" **पीटर दी ग्रेट** के काल तक ईसाई मत के विशाल साम्राज्य के बड़े भाग यूनान के गिरजा घर में जो जन गणना ली गई उसमें केवल पुरुषों अर्थात् आत्माओं की गणना की गई, किसी स्त्री की गणना नहीं की गई। उस शताब्दी के भीतर हमारे देश में*

भी ऐसे पुराने विश्वास के उदाहरणों की गिनती कोई कम नहीं पाई गई। १८५४ में फ़िलाडेल्फ़िया में जब महिला अधिकार सम्मेलन हुआ तो वहां दर्शकों में से एक ने विरोध करते हुए ऊँचे स्वर में कहा, "पहले स्त्रियां यह प्रमाणित करें कि उनमें आत्माएं हैं, चर्च और राज्य दोनों उनकी आत्मा के अस्तित्व को अस्वीकार करते हैं।"[५६]

– मतिल्दा जोसलिन गेज

(दस) बाइबिल का विवाह विच्छेद (तलाक) का विधान स्त्री का अपमान करता है

पवित्र बाइबिल का विवाह विच्छेद का विधान स्त्री के प्रति सर्वथा अन्याय और अत्याचार करता है। पवित्र बाइबिल के अनुसार यदि पति पत्नी से अप्रसन्न हो जाता है तो वह तत्काल विवाह विच्छेद (तलाक) का पत्र उसके हाथ में दे कर उससे विवाह विच्छेद कर सकता है और उसे अपने घर से निकाल सकता है। परन्तु पवित्र बाइबिल पत्नी को अपने पति को तलाक देने का अधिकार नहीं देता। पवित्र बाइबिल इस विधान के द्वारा स्त्री पर एक और अन्याय करता है, कि यदि परित्यक्ता (divorced) पत्नी दूसरे व्यक्ति की पत्नी बन जाती है, और यदि वह भी उससे घृणा करता है और उसी प्रकार उसको तलाक देता है तो वह स्त्री अपने पहले पति के पास नहीं जा सकती, क्योंकि वह **अपवित्र** हो गई है। पवित्र बाइबिल में इस बारे में बल पूर्वक कहा गया है कि जिस पत्नी का दो बार विवाह विच्छेद हुआ हो, उसका अपने पहले पति के साथ पुनर्विवाह **ईश्वर के समक्ष घृणास्पद है**, और जिस भूमि पर यह पुनर्विवाह होता है, वह भूमि पाप कर्म करती है। इस सम्बंध में निम्न चार पद पढ़िए :

---

५६. **मतिल्दा जोसलिन गेज :** *'वोमन, चर्च, ऐंड स्टेट'* (स्त्री, ईसाई संस्था, और राज्य), न्यू यार्क, १८९३, वाईस आफ़ इंडिया, नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, १९९७, पृष्ठ ५६-५७

६२. "१. यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री से विवाह करे, किन्तु बाद में वह उसे इसलिए नापसन्द करे कि वह उसमें कोई लज्जाजनक बात पाता हो और उसे त्याग-पत्र दे कर घर से निकाल दे,"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, २४/१

६३. "२. वह स्त्री उसका घर छोड़ कर किसी दूसरे पुरुष से विवाह कर ले;"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, २४/२

६४. "३. अब यदि दूसरा पुरुष भी उसे नापसन्द करे और उसे त्यागपत्र दे कर घर से निकाल दे या वह दूसरा पुरुष, जिसने उससे विवाह किया था, मर जाये,"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, २४/३

६५. "४. तब वह पहला पुरुष, जिसने उसका परित्याग कर दिया था, उसके साथ दुबारा विवाह नहीं कर सकता; क्योंकि वह उसके लिए अशुद्ध हो गयी है। वह प्रभु की दृष्टि में घृणित है। ऐसा करने पर तुम उस देश को दूषित करोगे, जिसे प्रभु, तुम्हारा ईश्वर तुम्हें दायभाग के रूप में देने वाला है।"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, २४/४

(ग्यारह) क्या ईसाई पति अपनी पत्नी की हत्या करके विवाह बंधन से अपने आप को मुक्त कर सकता है ?

सुश्री मतिल्दा जोसलिन गेज, अमरीका की विख्यात शोधकर्ता, अधिकार पूर्वक उपरोक्त प्रश्न का उत्तर देती है :

"इतिहास के परीक्षण से यह प्रमाणित हो जाता है कि ईसाई मतानुयायी देशों जैसे रूस में और उसी तरह इंग्लैंड में पति अपनी पत्नी की हत्या करके अपने आप को विवाह बंधन से मुक्त कर सकता था, क्योंकि ईसाई विधि के अनुसार उसे अपनी पत्नी के जीवन और मृत्यु पर अधिकार प्राप्त था। पत्नी के बच्चे आज ईसाई इंग्लैंड और अमरीका में उसके नियंत्रण में नहीं हैं। उसे बच्चों को जन्म देना होता है परन्तु वह उन्हें शिक्षा नहीं दे सकती, क्योंकि कैथोलिक और प्रोटेस्टन्ट ईसाई मतों में स्त्रियों को निम्न स्तर की प्राणी और अपवित्र माना जाता है।"[५७]

– मतिल्दा जोसलिन गेज

जार्ज डब्ल्यू. फ़ूट यह विचार व्यक्त करते हैं :

"स्त्री इस बात पर अवश्य गर्व व्यक्त करेगी कि उसने बाइबिल में कभी कोई योगदान नहीं किया।"[५८]

– जार्ज डब्ल्यू. फ़ूट

हेलिन गार्डनर कहती हैं :

"स्त्रियां अपने निराशा जनक पतन से अपने उद्धार के लिए न तो अपने सम्प्रदाय की ओर न ही ***जेहोवा*** *की ऋणी हैं, वरन् वे उन पुरुषों की न्याय एवं सम्मान की भावना की ऋणी हैं, जिन्होंने उसके (****जेहोवा*** *के) आदेश का उल्लंघन किया था। आज स्त्री उस स्थान पर एक दासी की तरह झुकती*

---

५७. **मतिल्दा जोसलिन गेज :** *'वोमन, चर्च, ऐंड स्टेट'* (स्त्री, ईसाई संस्था, और राज्य), न्यू यार्क, १८९३, वाईस आफ़ इंडिया, नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, १९९७, पृष्ठ ३८०-३८१

५८. **चार्ल्स स्मिथ :** *'दी बाइबिल इन दी बैलंस'* (तुला में बाइबिल), हिन्दू लेखक मंच द्वारा पुनर्मुद्रित, नई दिल्ली, पृष्ठ १९

नहीं जहां सन्त पाल ने उसे बांधने का प्रयत्न किया था। वह उन पुरुषों के प्रति ऋणी है, जो महान थे और इतने वीर थे कि उन्होंने सन्त पाल के आदेश की अवहेलना कर दी और उनके ईश्वर से अधिक महान बन गए।"[५९]

– हेलिन गार्डनर

२. वेदों में नारी की गौरवान्विति

यद्यपि वेद अत्यंत प्राचीन ग्रंथ हैं, परन्तु वे अत्यंत आधुनिक और अत्यंत प्रगतिशील विचार प्रस्तुत करते हैं। वेदों के अनुसार नारी को घर और समाज दोनों क्षेत्रों में ऊँचा स्थान प्राप्त है। पुरुष और महिला दोनों को समान अधिकार प्राप्त हैं। वेदों में पति और पत्नी के लिए एक शब्द अर्थात् **दम्पति** का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है एक घर के दो स्वामी। केवल पति ही नहीं वरन् उसकी पत्नी भी समान रूप से गृहस्वामिनी है। दोनों को समान प्रतिष्ठा, पद और अधिकार प्राप्त है। कोई भी दूसरे के अधीन नहीं है। यह कहना कि पत्नी पति की दासी या सेविका है, वेद में स्वीकार नहीं किया गया है। यज्ञ सम्पन्न तभी होता है, जब पति और पत्नी दोनों वहां एक साथ बैठें। वेद के उदात दर्शन के अध्ययन और प्रचार का दोनों को समान अधिकार है।

वैदिक धर्म के अनुसार विवाह दो आत्माओं का मिलन है, जो निरंतर गृहस्थ की शांति और समृद्धि का उपभोग करती हैं। इसके द्वारा नारी को स्थायी रूप से गृहस्थ में कुशलता, सुरक्षा, शांति और प्रभुता प्राप्त होती है। विवाह अस्थायी सामाजिक संविदा नहीं है, जिसे कोई भी पक्ष अपने मन की मौज या सनक के कारण वश जब चाहे भंग कर

---

५९. (एक) **हेलिन गार्डनर :** *'मेन, वीमेन ऐंड गाड्स'* (पुरुष, स्त्रियां और देवता), पृष्ठ ३०

(दो) **चार्ल्स स्मिथ :** *'दी बाइबिल इन दी बैलंस'* (तुला में बाइबिल), हिन्दू लेखक मंच द्वारा पुनर्मुद्रित, नई दिल्ली; पृष्ठ १९

सके। वैदिक धर्म के अनुसार विवाह यह सुनिश्चित कर देता है कि नारी अपने पूरे जीवन के लिए अर्थात् १०० वर्ष के लिए पत्नी बनी रहेगी और गृहस्वामिनी रहेगी। जब आर्य पति अपनी नव विवाहिता पत्नी को अपने घर लाता है तो उसके अपने घर में प्रथम प्रवेश के समय, वह पत्नी को इस प्रकार सम्बोधित करता है :

प्रबुध्यस्व सुबुधा बुध्यमाना दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ।
गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथासो दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु ।।

– अथर्ववेद १४/२/७५

प्रबुद्ध और सचेत नारी की तरह
जाग्रित रहो
पूरे सौ वर्ष तक अपने जीवन का आनन्द प्राप्त करो
आदर्श गृहस्वामिनी के रूप में अपने घर में प्रवेश करो
सृष्टिकर्ता तुम्हें
दीर्घ आयु प्रदान करे !

– अथर्ववेद १४/२/७५

वैदिक धर्म के अनुसार जो विवाह संस्कार किया जाता है, उसमें पति और पत्नी को प्रेम और स्वतंत्रता, समानता और एक निष्ठा तथा पवित्रता एवं धर्मपरायणता के आध्यात्मिक बंधन में बांध दिया जाता है। वे दो शरीरों में जीवन यापन करने वाली एक आत्मा बन जाते हैं। वैदिक रीति के द्वारा जो वैवाहिक सम्बंध निर्धारित किए जाते हैं, वे भौतिकवाद नहीं वरन् अध्यात्मवाद पर और वासना नहीं वरन् प्रेम पर आधारित होते हैं। निम्नलिखित मंत्र, जिसके द्वारा पति अपनी पत्नी को विवाह के समय सम्बोधित करता है, स्पष्टतया दर्शाता है कि पति पत्नी के बीच यह सम्बंध अभेद्य है :

अमोऽहमस्मि सा त्वं सामाहमस्म्यृक् त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम् ।
ताविह सं भवाव प्रजामा जनयावहै ।।

– अथर्ववेद १४/२/७१

मैं वही हूँ, जो तुम हो
तुम वही हो जो मैं हूँ
मैं स्तोत्र हूँ
तुम छंद हो
मैं आकाश हूँ
तुम धरती हो
आओ हम संतानोत्पत्ति के लिए
इकट्ठे रहें।

– अथर्ववेद १४/२/७१

जो हाथ पालने को झुलाता है, वह समस्त राष्ट्र को झुला सकता है। इतिहास साक्षी है कि महान साम्राज्यों का पतन बहुत सीमा तक नारी समाज के पतन के कारण हुआ है। मनुष्य की प्रथम प्रेरणादायी शिक्षक माता होती है, जो उसके भविष्य और भाग्य का निर्माण करती है। राष्ट्र व्यक्तियों से निर्मित होता है, जो अपनी माताओं की शिक्षा के द्वारा समुन्नत होते हैं। इस लिए राष्ट्र की प्रगति महिलाओं के विकास पर निर्भर करती है। वे सर्वाधिक विश्वसनीय राष्ट्र निर्माता हैं। इस कारण एक आर्य माता **ऋग्वेद** के निम्न मंत्र में गर्व एवं अधिकार के साथ यह घोषणा करती है, कि वह अपने राष्ट्र का गौरव, अपने समाज का आधार स्तम्भ और अपने समुदाय की आधारशिला है।

अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी ।
ममेदनु ऋतुं पतिः सेहानाया उपाचरेत् ।।

– ऋग्वेद १०/१५९/२

मैं पताका हूँ
मैं शीर्ष हूँ
मुझ में उत्कृष्ट ओजस्विता है
मेरा पति मुझे सहयोग देता है
और मेरी इच्छा का अनुसरण करता है।

– ऋग्वेद १०/१५९/२

यही कारण है कि विश्व में समता, स्वतंत्रता और भ्रातृभाव के देवदूत **मनु** ने नारी को अत्यधिक सम्मान दिया है। उसके अनुसार नारी को पुरुष की तुलना में अधिक ऊँचा स्थान प्राप्त है। नारी ही राष्ट्र को समुन्नत और प्रतिष्ठित बनाती है। मनु नारी के समादरित और प्रतिष्ठित पद के सम्बन्ध में कहते हैं :

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

– मनु

जहां नारियों का सम्मान होता है
वहां प्रबुद्ध आत्माएं जीवन में
परमानंद की उपलब्धि करती हैं।

– मनु

"ईसावाद अपने देश में ही भौतिकतावाद का ज्वार रोकने में असफल रहा है। यद्यपि हमारे देश में ईसाई प्रचारक पर्याप्त संख्या में धर्मान्तरण में संलग्न हैं, परन्तु स्वयं ईसाई देश इससे अधिकाधिक दूर होते जा रहे हैं। आज कल वहाँ बहुत कम लोग चर्च में जाते हैं। वे भुतहा हो गये लगते हैं। वास्तव में कुछ चर्च तो बिक रहे हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि वहाँ किसी अन्य विचारधारा की आवश्यकता अनुभव हो रही है, जो आधुनिक मन को सन्तुष्टि दे सके और आज की गंभीर चुनौतियों का सामना करने और उनके जीवन को आध्यात्मिक पुट देने में सक्षम हो। इन देशों की वर्तमान प्रवृत्ति हिन्दुत्व को भावी आश्रय के रूप में स्वीकारने को उत्सुक दिखायी देती है।"

– गुरु जी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर

अध्याय ८

बाइबिल में नग्नता की घटनाएं वेदों में नैतिक आचरण के नियम

१. बाइबिल में नग्नता की घटनाएं

(एक) नूह ने मदिरा पान किया और नंगा रहा

पवित्र बाइबिल में कहा गया है कि **नूह** ने, जो अपनी साधुता के लिए प्रशंसित व्यक्ति था, मदिरा पान किया और नशे में इतना उन्मत्त हो गया कि अपने तम्बू में नग्न हो कर पड़ा रहा। नूह के पुत्र **हाम** ने अपने पिता को नंगा देखा और अपने दो भाइयों अर्थात् **सेम** और **याफेत** को बताया, जिन्होंने एक वस्त्र ले कर अपने पिता की नग्नता को ढक दिया। बाइबिल का पाठ इस प्रकार है :

६६. **"२०. नूह पहला किसान था। इसने दाखबारी लगायी।"**

– उत्पत्ति ग्रन्थ, ९/२०

६७. "२१. उसकी अंगूरी पीने के बाद वह नशे में आ कर अपने तम्बू में नग्न हो कर पड़ा रहा।"

– उत्पत्ति ग्रन्थ, ९/२१

६८. "२२. जब कनान के पिता, हाम ने अपने पिता को नंगा देखा, तो उसने बाहर आ कर अपने दो भाइयों को यह बात बतायी।"

– उत्पत्ति ग्रन्थ, ९/२२

६९. "२३. इस पर सेम और याफेत ने एक वस्त्र ले कर अपने कन्धों पर रखा और वे पीठ की ओर से चल कर भीतर गये। फिर वस्त्र डाल कर उन्होंने अपने पिता के नग्न शरीर को ढक दिया। उन्होंने अपने मुँह फेर लिये, जिससे वे अपने पिता को नंगा न देख पायें।"

– उत्पत्ति ग्रन्थ, ९/२३

७०. "२४. नशा दूर होने पर जब नूह होश में आया और उसे अपने छोटे पुत्र की यह बात मालूम हुई,"

– उत्पत्ति ग्रन्थ, ९/२४

७१. "२५. तो उसने कहा, "कनान को अभिशाप! वह अपने भाइयों का दास बने।"

– उत्पत्ति ग्रन्थ, ९/२५

(दो) रूबेन द्वारा अपने पिता की उपपत्नी के साथ सम्भोग प्रसंग

७२. "२२. जब इस्राएल उस प्रदेश में रह रहा था, रूबेन का अपने पिता की उपपत्नी

बिल्हा से संसर्ग हुआ और यह बात इस्राएल को मालूम हो गयी।"

– उत्पत्ति ग्रन्थ, ३५/२२

(तीन) ओनान द्वारा अपने भाई की पत्नी के साथ सम्भोग प्रसंग

पवित्र बाइबिल में यह उल्लेख मिलता है कि **यूदा** ने अपने बेटे **ओनान** से कहा कि वह अपने बड़े भाई की विधवा **तामार से विवाह करे (संभोग करे)** और अपने भाई के नाम से (अपने नाम से नहीं) सन्तान उत्पन्न करे। ओनान को यह पसंद नहीं था कि उसके वीर्य से उत्पन्न हुए बच्चे उसके भाई की सन्तान कहलाएं, इसलिए वह अपने भाई की विधवा **तामार** के साथ सोया और उसके साथ संभोग किया, परन्तु अपना वीर्य पृथ्वी पर गिरा दिया, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि उसके वीर्य से उसके भाई के लिए बच्चे उत्पन्न हों। ओनान के इस कार्य पर बाइबिल का ईश्वर क्रुद्ध हो गया और उसे मार डाला। पाठ इस प्रकार है :

७३. **"८. इस पर यूदा ने ओनान से कहा, 'तुम अपने भाई की पत्नी के साथ रह कर नियोग विधि के अनुसार अपने भाई के लिए सन्तति पैदा करो।' "**

– उत्पत्ति ग्रन्थ, ३८/८

७४. **"९. ओनान यह जानता था कि इस प्रकार से उत्पन्न सन्तति उसकी न होगी, इसलिए जब उसका अपने भाई की पत्नी के साथ संसर्ग हुआ, तब उसने वीर्य पृथ्वी पर गिरा दिया, जिससे वह अपने भाई को सन्तति ने दे।"**

– उत्पत्ति ग्रन्थ, ३८/९

७५. **"१०. उसका यह कार्य प्रभु को अच्छा**

नहीं लगा, इसलिए उसने उसे भी मार डाला।"

– उत्पत्ति ग्रन्थ, ३८/१०

कर्नल राबर्ट जी इंगरसोल, अमरीका के विख्यात वक्ता और राजनीतिज्ञ, जिन्होंने मानववादी दर्शन और वैज्ञानिक बुद्धिवाद के आधार पर बाइबिल की आलोचना को लोकप्रिय बना दिया, यह कहते हैं :

"बाइबिल पर विश्वास करने वाले, विश्व के जिस साहित्य को अनैतिक की संज्ञा देना पसंद करते है, उसकी ऊँचे स्वर में घोर निंदा करते हैं, परन्तु फिर भी ईश्वर प्रेरित वाणी पर आधारित इस पुस्तक (बाइबिल) से अधिक अनैतिक गंदगी से युक्त अन्य कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई।"[६०]

– कर्नल राबर्ट जी इंगरसोल

(चार) अपनी विधवा पुत्रवधू के साथ यूदा का सम्भोग प्रसंग

पवित्र बाइबिल में कहा गया है कि जब यूदा की विधवा पुत्र वधू को यह पता लगा कि उसका ससुर अपनी भेड़ों की ऊन काटने के लिए **तिमना** जा रहा है, तो उसने अपने विधवा के वस्त्र उतार दिए और अपने आप को बुर्क़े में ढक लिया और **तिमना** के रास्ते में बैठ गई। जब यूदा ने उसे देखा तो यह न जानते हुए कि वह उसकी विधवा पुत्र वधू है, उससे कहा कि वह उसे उससे संभोग की अनुमति दे। पुत्र वधू ने उसे कहा, "तुम्हारे साथ संभोग करने के लिए तुम मुझे क्या दोगे ?" यूदा ने उत्तर दिया, "मैं अपनी बकरियों के झुण्ड में से एक बकरी का बच्चा तुम्हें भेज दूंगा।" वह बोली, "जब तक तुम मुझे बकरी का बच्चा भेजोगे तब तक के लिए निशानी के रूप में अपनी मुहर, हस्त-सूत्र और अपने

---

६०. **ब्रह्म दत्त भारती :** *'दी वेदाज़ ऐंड दी बाइबिल'* (वेद एवं बाइबिल), नई दिल्ली १९६७, पृष्ठ ३८

हाथ का डण्डा मुझे दे दो।" यूदा ने ये वस्तुएं उसे दे दीं और उसके साथ संभोग किया और उससे वह गर्भवती हो गई। बाइबिल का पाठ इस प्रकार है :

७६. "१३. तामार को यह खबर मिली कि 'तुम्हारा ससुर भेड़ों का ऊन काटने तिमना जाने वाला है।' " *– उत्पत्ति ग्रन्थ, ३८/१३*

७७. "१४. यह सुन कर उसने अपने विधवा के वस्त्र उतार दिये, अपना मुँह ढक लिया और तिमना जाने वाले रास्ते पर स्थित एनईम के पर्वत-मार्ग पर बैठ गयी।" *– उत्पत्ति ग्रन्थ, ३८/१४*

७८. "१५. यूदा ने जब उसे देखा, तो उसे देवदासी समझा, क्योंकि उसने अपना मुँह ढक लिया था।" *– उत्पत्ति ग्रन्थ, ३८/१५*

७९. "१६. रास्ते के किनारे उसके पास जा कर उसने उससे कहा, 'चलो, मुझे अपने साथ संसर्ग करने दो;' क्योंकि वह नहीं जानता था वह उसी की पुत्रवधू है। वह बोली, 'आप मुझ से संसर्ग करने का मुझे क्या देंगे ?' " *– उत्पत्ति ग्रन्थ, ३८/१६*

८०. "१७. उसने उत्तर दिया, 'झुण्ड में से मैं तुम को एक बकरी का बच्चा भेज दूँगा।' वह बोली, 'जब तक आप उसे न भेजेंगे, तब तक के लिए बन्धक में क्या रख रहे हैं ?' " *– उत्पत्ति ग्रन्थ, ३८/१७*

८१. "१८. उसने पूछा, 'बन्धक में मैं तुम्हारे पास क्या रखूँ?' उसने कहा, 'अपनी मुहर, उसकी डोरी और अपने हाथ का डण्डा।' उसने उसे ये चीज़ें दे दीं। तब उसका उसके साथ संसर्ग हुआ और वह उसके द्वारा गर्भवती हुई।"

– उत्पत्ति ग्रन्थ, ३८/१८

(पांच) बाइबिल के ईश्वर ने अपने पैग़म्बर इसायाह को तीन वर्ष तक सर्वथा नंगे घूमने का आदेश दिया

पवित्र बाइबिल में उल्लेख मिलता है कि ईश्वर ने अपने पैग़म्बर इसायाह को तीन वर्ष तक नंगे घुमाया। प्रभु ने कहा कि यह मिस्र और इथियोपिया (कूश) के लोगों के लिए चिह्न (संकेत) होगा, और अस्सूर का राजा मिस्र के लोगों को इसी प्रकार की लज्जा से पीड़ित करेगा, अर्थात् मिस्र और इथियोपिया के बंदियों को, बूढ़े, युवा सब को, नंगे शरीर, नंगे पैर और नंगे चूतड़, प्रदर्शित करेगा। तीन पद पढ़िए :

८२. "२. उस समय प्रभु ने आमोस के पुत्र इसायाह को यह आदेश दिया : 'अपनी कमर से टाट और अपने पैरों से जूते उतारो।' उसने ऐसा किया और वह नंगे बदन और नंगे पैर चलने लगा।"

– इसायाह का ग्रन्थ, २०/२

८३. "३. प्रभु ने कहा, 'मेरा सेवक इसायाह तीन वर्ष नंगे बदन और नंगे पैर चलता रहा। यह एक चिह्न है कि मिस्र और कूश के निवासियों पर क्या बीतेगी।' "

– इसायाह का ग्रन्थ, २०/३

८४. "४. अस्सूर का राजा उन सबों को बन्दी बना कर, युवकों और वृद्धों को नंगे बदन,

नंगे पैर और नंगे चूतड़ ले जायेगा। यह मिस्र के लिए लज्जा की बात होगी।"

– इसायाह का ग्रन्थ, २०/४

काऊंट टाल्सटाय, रूस के विख्यात लेखक और चिंतक, स्पष्ट शब्दों में यह विचार व्यक्त करते हैं :

"इस मत (ईसाई मत) के आधारभूत सिद्धांत ही, जो नीसिया नगर में ईसाई धर्म सूत्रों के रूप में स्वीकार किए गए और निर्धारित किए गए ऐसे अनर्थक और अनैतिक हैं और उचित भावना और सामान्य ज्ञान के इतने प्रतिकूल हैं कि मनुष्य उन पर विश्वास नहीं कर सकते।"[६१]

– काऊंट टाल्सटाय

२२ फ़रवरी १९०१ के दिन **काऊंट टाल्सटाय** को चर्च (ईसाई संस्था) का शत्रू घोषित किया गया और उसे बहिष्कृत कर दिया गया[६२], क्योंकि उन्होंने ईसाई मत के सम्बंध में स्पष्टवादी वक्तव्य दिए थे। टाल्सटाय ने लिखा था :

"मेरे लिए तो जीवन धर्म का निर्माण करता है, न कि धर्म जीवन का निर्माण करता है।"[६३]

– काऊंट टाल्सटाय

(छः) ईसा मसीह द्वारा नपुंसकत्व का प्रस्ताव

८५. "१२. क्योंकि कुछ लोग माता के गर्भ से नपुंसक उत्पन्न हुए हैं, कुछ लोगों को

---

६१. (एक) **काऊंट टाल्सटाय** : *'व्हाट इज़ रिलीजन ?'* (धर्म क्या है ?)
(दो) **ब्रह्म दत्त भारती :** *'दी वेदाज़ ऐंड दी बाइबिल'* (वेद एवं बाइबिल) नई दिल्ली, १९६७, पृष्ठ ४१

६२. **विक्टर श्कलोवस्की :** लेव टाल्सटाय–ओल्गा शार्टसे द्वारा अनूदित, रड्गा प्रकाशक, मास्को, १९८८, पृष्ठ ५७२-५७३

६३. पूर्वोक्त

मनुष्यों ने नपुंसक बना दिया है और कुछ लोगों ने स्वर्गराज्य के निमित्त अपने को नपुंसक बना दिया है। जो समझ सकता है, वह समझ ले।"
– सन्त मत्ती, १९/१२

प्राचीन ईसाई निष्ठा भाव से उपरोक्त दैवी आदेश का पालन करते रहे। रूस में एक ईसाई सम्प्रदाय लम्बे काल तक ईसा के आदेश का पालन करते हुए नपुंसक बनने की क्रिया करता रहा।[६४]

ओरीजन (१८५-२५४ ईसवी) प्राचीन यूनानी ईसाई संस्था (चर्च) के अत्यंत प्रभावशाली धर्मशास्त्री ने अपने आप को नपुंसक बना लिया था ताकि वे स्वतंत्रता पूर्वक नई शिक्षार्थी महिलाओं को शिक्षा दे सकें।[६५]

(सात) बेटियों का अपने पिता के साथ संसर्ग

पैग़म्बर अब्राम के भतीजे **लोट** की दो बेटियों ने एक रात अपने पिता को मदिरा पिला दी और उसके साथ सोईं और संसर्ग किया। अतः पिता से गर्भवती हो कर उन्होंने दो पुत्रों को जन्म दिया। बड़ी बेटी ने **मोआब** नामक पुत्र को जन्म दिया। आज भी वह मोआबियों का मूलपुरुष कहलाता है। छोटी पुत्री ने जिस पुत्र को जन्म दिया उसका नाम **बेनामी** रखा गया। आज भी वह अम्मोनियों का मूलपुरुष कहलाता है। यहां सात पदों में पूरा पाठ उद्धृत किया गया है :

८६. "३२. आओ हम अपने पिता को शराब पिला दें और उसी के साथ लेट जायें, जिससे हम अपने पिता के द्वारा ही अपना वंश बनाये रखें।"
– सन्त मत्ती, १९/३२

---

६४. **डब्ल्यू.पी. बाल और जी. डब्ल्यू. फूट :** *'दी बाइबिल हैंड बुक'* (बाइबिल हस्त पुस्तिका), पुनरीक्षित संस्करण, अमरीका, पृष्ठ २४५

६५. एनसाइक्लोपेडिया, ब्रिटनिका, खण्ड, १६, यू.एस.ए., १९६७, पृष्ठ १०९४

८७. "३३. तब उन्होंने उस रात को अपने पिता को शराब पिलायी और बड़ी पुत्री अपने पिता के पास जाकर उसके साथ लेट गयी। उसे यह नहीं मालूम हो पाया कि वह कब उसके साथ लेटी और कब उठ चली गयी।"

– सन्त मत्ती, १९/३३

८८. "३४. दूसरे दिन बड़ी ने छोटी से कहा, 'देखो, पिछली रात मैं अपने पिता के साथ लेट गयी। आज रात को भी हम उसे शराब पिला दें; तब तुम जा कर उसके साथ लेट जाओ, जिससे हम अपने पिता के द्वारा अपना वंश बनाये रखें।' "

– सन्त मत्ती, १९/३४

८९. "३५. इसलिए उन्होंने उस रात को भी अपने पिता को शराब पिलायी। तब छोटी गयी और उसके साथ लेट गयी। उसे यह मालूम नहीं हो पाया कि वह कब उसके साथ लेटी और कब उठ कर चली गयी।"

– सन्त मत्ती, १९/३५

९०. "३६. इस तरह लोट की दोनों पुत्रियाँ अपने पिता से गर्भवती हुईं।"

– सन्त मत्ती, १९/३६

९१. "३७. बड़ी पुत्री को एक पुत्र पैदा हुआ, जिसका नाम उसने मोआब रखा। वह आजकल के मोआबियों का मूलपुरुष है।"

– सन्त मत्ती, १९/३७

९२. "३८. छोटी पुत्री को भी एक पुत्र पैदा हुआ, जिसका नाम उसने बेन-अम्मी रखा।

वह आजकल के अम्मोनियों का मूल पुरुष है।"

– सन्त मत्ती, १९/३८

यदि पाठक पवित्र बाइबिल के 'उत्पत्ति ग्रंथ' के अध्याय १९ का अध्ययन करें तो उन्हें यह पता लग जायगा कि **लोट** उन लोगों में से नहीं था जिन से बाइबिल का ईश्वर घृणा करता था। ईश्वर उनके प्रति दयालु था, इसी कारण उसने नगर के नष्ट हो जाने से पूर्व उसे और उसके परिवार को दो देवदूतों की सहायता से नगर से बाहर निकाल कर बचा लिया था।

इस सम्बंध में कुछ प्रश्न उत्पन्न होते हैं : क्या आधुनिक सभ्य युग के शिक्षित ईसाई उपरोक्त पदों को स्वीकार करते हैं और उन्हें मान्यता देते हैं, जिनमें बेटियों का पिता के साथ संसर्ग बताया गया है ? यदि वे स्वीकार नहीं करते तो वे उपरोक्त अनैतिक एवं कौटुम्बिक व्यभिचार के विरुद्ध आवाज़ क्यों नहीं उठाते और पोप से क्यों नहीं कहते कि वे पवित्र बाइबिल में से उक्त अंश को निकलवा दें ? वे क्यों खुल कर नहीं कहते कि वे उक्त प्रसंग को पसंद नहीं करते ? वे यह क्यों कहते हैं कि बाइबिल का हर पद पवित्र और सत्य है ? वे कैसे अधिकार पूर्वक कहते हैं कि बाइबिल में जीवन की सभी समस्याओं के समाधान हैं ? वे ग़ैर-ईसाइयों को नास्तिक कहते हैं, परन्तु वास्तव में नास्तिक तो वह है, जो उसमें विश्वास करने का बहाना करता है, जिसमें उसका कोई विश्वास नहीं है। **थामस पेन**, विख्यात चिंतक और अन्वेषक, यही विचार प्रस्तुत करते हैं :

"मैं अपनी इस घोषणा के द्वारा, उन लोगों की निंदा नहीं करता जो अन्यथा विश्वास रखते हैं, उन्हें अपना विश्वास रखने का वैसा ही अधिकार है, जैसा मुझे अपना विश्वास रखने का अधिकार है। परन्तु मनुष्य की प्रसन्नता के लिए यह आवश्यक है कि वह हृदय से अपने प्रति निष्ठावान रहे। अनास्था

इस बात में नहीं है कि वह विश्वास रखता है अथवा अविश्वास, वरन् इस बात में है कि वह बल पूर्वक कहे कि वह उस पर विश्वास करता है जिस पर उसे विश्वास नहीं।"[६६]

– थामस पेन

रोनाल्ड रीगन, अमरीका के राष्ट्रपति, जिन्हें उन शस्त्रास्त्रों पर नियंत्रण का अधिकार प्राप्त था जिनके द्वारा धरती पर समस्त जीवन का विनाश किया जा सकता है, पवित्र बाइबिल के सम्बंध में ये शब्द कहते हैं :

"उस एक पुस्तक के पृष्ठों में उन सब समस्याओं के समाधान विद्यमान हैं जो आज हमारे समक्ष उपस्थित हैं।"[६७]

– रोनाल्ड रीगन

प्राय: सभी शिक्षित लोग, जो 'अपने पिता से दो बेटियों के संसर्ग' के सम्बंध में उपरोक्त पदों को पढ़ेंगे, रोनाल्ड रीगन के उक्त कथन का परिहास उड़ाएंगे।

(आठ)लोट द्वारा अपनी दो बेटियों को समलैंगिकों (गुदा मैथुन करने वालों) की उपद्रवी भीड़ को सौंपना

पैग़म्बर **अब्राम** का भतीजा **लोट** दो फ़रिश्तों को बचाने के लिए जो उसके पास आए थे, अपनी दो बेटियां गुदामैथुनकारी उपद्रवी भीड़ को सौंपता है :

९३. "८. मेरी दो कुँवारी बेटियाँ हैं। मैं उन्हें तुम्हारे पास ला देता हूँ और तुम उनके साथ जैसा चाहो, कर लो। किन्तु इन

---

६६. **थामस पेन :** *'दी एज़ आफ़ रीज़न'* (तर्क का युग), व्हाटस ऐंड कं., लंदन द्वारा प्रकाशित, १७९६, पृष्ठ १

६७. आस्ट्रेलियन ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन रेडियो, दिनांक ५ नवम्बर, १९८४

आदमियों के साथ कोई कुकर्म मत करना, क्योंकि ये मेरे यहाँ आये हुए अतिथि हैं।"

– उत्पत्ति ग्रन्थ, १९/८

(नौ) पैग़म्बर अब्राम का अपनी दासी के साथ अवैध सम्बंध

पवित्र बाइबिल का कथन है कि **अब्राम** की पत्नी **सारय** बांझ थी। इस लिए उसने अपनी मिस्री दासी **हागार** अपने पति को पत्नी के रूप में दे दी। जब **हागार** गर्भवती हो गई तो सारय को ऐसा अनुभव हुआ कि उसकी दासी उसे घृणा की दृष्टि से देखती है। अत: सारय ने अब्राम की अनुमति से उसे घर से निकाल दिया। हागार ने **इस्माईल** नामक पुत्र को जन्म दिया। उस समय अब्राम ८६ वर्ष का था। निम्नलिखित पांच पद पठनीय हैं :

९४. **"३. उस प्रकार जब अब्राम को कनान के देश में रहते दस वर्ष हो गये, तो उसकी पत्नी सारय अपनी मिस्री दासी हागार को ले कर आयी और उसने उसे उपपत्नी के रूप में अपने पति अब्राम को दे दिया।"**

– उत्पत्ति ग्रन्थ, १६/३

९५. **"४. अब्राम का हागार से संसर्ग हुआ और वह गर्भवती हो गयी। जब उसे मालूम हुआ कि वह गर्भवती है, तो वह अपनी स्वामिनी का तिरस्कार करने लगी।"**

– उत्पत्ति ग्रन्थ, १६/४

९६. **"५. सारय ने अब्राम से कहा, 'मेरे साथ जो अन्याय हो रहा है, उसके लिए आप उत्तरदायी हैं। मैंने आप को अपनी दासी को समर्पित कर दिया और जब से उसको मालूम हो गया है कि वह गर्भवती है, वह**

मेरा तिरस्कार करने लगी है। प्रभु हम दोनों का न्याय करें।' "
– उत्पत्ति ग्रन्थ, १६/५

९७. "६. अब्राम ने उत्तर दिया, 'अपनी दासी पर तुम्हारा पूरा अधिकार है। जैसी इच्छा हो, उसके साथ वैसा व्यवहार करो।' उस समय से सारय हागार के साथ इतना दुर्व्यवहार करने लगी कि वह घर छोड़ कर भाग गयी।"
– उत्पत्ति ग्रन्थ, १६/६

९८. "१६. जब हागार से इसमाएल उत्पन्न हुआ, उस समय अब्राम की आयु छियासी वर्ष की थी।"
– सन्त मत्ती, १६/१६

क्या यह नैतिकता है कि अब्राम, जो ईश्वर का पैग़म्बर है, एक दासी के साथ व्यभिचार करता है और बाद में उसे उससे पैदा हुए अपने बच्चे सहित आश्रय विहीन कर के घर से निकाल देता है ?

काऊंट टाल्सटाय, रूस के विख्यात लेखक और चिंतक, कहते हैं :

"वास्तव में किसी भी धर्म ने कभी ऐसी बातों का प्रचार नहीं किया जो समसामयिक ज्ञान के इतने विरुद्ध और इतने अनैतिक हों जितने ईसाई संस्था (चर्च) द्वारा प्रचारित सिद्धांत हैं।"[६८]

– काऊंट टाल्सटाय

(दस) पैग़म्बर अब्राम अपनी बहन से विवाह करता है

पवित्र बाइबिल में कहा गया है कि **गेरार** का राजा **अबिमेलेक**

---

६८. (एक) **काऊंट टाल्सटाय :** *'व्हाट इज़ रिलीजन ?'* (धर्म क्या है ?)
(दो) **ब्रह्म दत्त भारती :** 'मैक्स मूलर – *ए लाइफ़ लांग मस्करेड'*, (मैक्स मूलर जीवन भर का स्वांग), १९९२, पृष्ठ २१८

पैग़म्बर **अब्राम** की पत्नी **सारय** को ले गया और उसने उसे अपने महल में रखा। अब्राम ने स्वयं राजा अबीमेलेक के समक्ष स्वीकार किया कि सारय उसकी बहन है, अर्थात् उसके पिता की पुत्री है। निम्न पद पठनीय है :

९९. **"१२. इसके अतिरिक्त वह सचमुच मेरी बहन है। वह मेरे पिता की पुत्री है, पर मेरी माता की नहीं है और वह मेरी पत्नी बन गयी।"**

– उत्पत्ति ग्रन्थ, २०/१२

(ग्यारह) अब्राम, पैग़म्बर, अपनी पत्नी के सम्मान का सौदा करता है

पवित्र बाइबिल इस बात का उल्लेख करता है कि पैग़म्बर **अब्राम** अपनी पत्नी सारय के साथ मिस्र गया। उसने अपनी पत्नी से कहा, "तुम सुंदर दिखाई देती हो। जब मिस्री तुम्हें देखेंगे तो मुझे मार डालेंगे और तुम्हें जीवित रखेंगे, इस लिए तुम कह देना कि तुम मेरी बहन हो। इस प्रकार मैं बच जाऊंगा।" पाठ इस प्रकार है:

१००. **"११. मिस्र में प्रवेश करने के पहले उसने अपनी पत्नी सारय से कहा, 'मैं जानता हूँ कि तुम बड़ी सुन्दर स्त्री हो।"**

– उत्पत्ति ग्रन्थ, १२/११

१०१. **"१२. जब मिस्री तुम्हें देखेंगे, तो वे कहेंगे कि यह उसकी पत्नी है। तब वे मुझे मार डालेंगे, पर तुम्हें जीवित रहने देंगे।"**

– उत्पत्ति ग्रन्थ, १२/१२

१०२. **"१३. इसलिए तुम कहना कि तुम मेरी बहन हो, जिससे वे तुम्हारे कारण मेरे साथ अच्छा व्यवहार करें और मैं तुम्हारे कारण जीवित रह जाऊँ।' "**

– उत्पत्ति ग्रन्थ, १२/१३

जब फ़िराउन के राजकुमारों (अधिकारियों) ने सारय को देखा, वे उसे राजा फ़िराउन के पास ले गए और वह फ़िराउन के महल में भेज दी गई। राजा फ़िराउन ने अब्राम को भेड़, बकरी, गाय, बैल, गधे, ऊंट, दास, दासियां दे कर प्रसन्न कर दिया।

इस प्रकार पैग़म्बर अब्राम ने अपनी सुंदर पत्नी सारय को अपनी बहन कह कर फ़िराउन को दे दिया और उपरोक्त उपहार प्राप्त करके बदले में पत्नी को फ़िराउन के महल में रहने की अनुमति दे दी। इस घटना को पूरी तरह समझने के लिए पाठकों को परामर्श दिया जाता है कि वे बाइबिल के 'उत्पत्ति ग्रंथ' के अध्याय १२ के अंतिम १० पद पढ़ें। किन्तु संक्षेप के प्रयोजन से दो पद यहां दिए जाते हैं :

१०३. "१५. फ़िराउन के पदाधिकारियों ने जब उसे देखा, तो फ़िराउन से उसकी प्रशंसा की और वह फ़िराउन के महल में ले जायी गयी।"

– उत्पत्ति ग्रन्थ, १२/१५

१०४. "१६. सारय के कारण फ़िराउन ने अब्राम के साथ अच्छा व्यवहार किया। उसको भेड़-बकरी, गाय-बैल, गधे, नौकर, नौकरानियाँ, गधियाँ और ऊँट प्राप्त हुए।"

– उत्पत्ति ग्रन्थ, १२/१६

पवित्र बाइबिल में आगे कहा गया है कि जब ईश्वर ने फ़िराउन और उसके घर को महामारी (प्लेग) से पीड़ित कर दिया तो उसने सारय को उसके पति अब्राम के पास भेज दिया। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है अब्राम ने फ़िराउन से जो उपहार प्राप्त किए थे, उसने वापस नहीं लौटाए।

पैग़म्बर अब्राम (इब्राहीम) ने वही चाल **गेरार** के राजा **अबीमेलेक** के साथ खेली और उससे भेड़ें, बैल, दास, दासियां और चांदी के एक हज़ार सिक्के उपहार स्वरूप प्राप्त किए। बाइबिल में लिखा है :

१०५. "१४. इस पर अबीमेलेक ने इब्राहीम को

भेड़ें और बैल, दास और दासियाँ भेंट कीं और उसे उसकी पत्नी सारा को भी लौटा दिया।"

– उत्पत्ति ग्रन्थ, २०/१४

१०६. "१६. उसने सारा से कहा, 'देखो, मैं तुम्हारे भाई को इसलिए एक हज़ार चाँदी के सिक्के देता हूँ...।' "

– उत्पत्ति ग्रन्थ, २०/१६

जोसेफ़ लूइस, अमरीका के स्वतंत्र चिंतकों के प्रधान और 'दी एज आफ़ रीज़न' (तर्क का युग) के सम्पादक, लिखते हैं :

"बाइबिल के लेखकों को नैतिकता के सिद्धांतों का तनिक भी ध्यान नहीं था। उनका अधिक ध्यान बलात्कार, हत्या, लूट पाट, दासता,काम वासना, क्रूरतापूर्ण अज्ञान और अपमान जनक अंधविश्वास की ओर था। यदि ईसाई मत का उपदेश देने वाले पादरी इतने निर्बुद्धि और मूर्ख हैं कि वे बाइबिल के कुत्सित प्रचार से उत्पन्न होने वाली घोर अनैतिकता को नहीं समझ सकते, तो समय आ गया है कि उन्हें सबक सिखाया जाए।"[६९]

– जोसेफ़ लूइस

(बारह)महिलाओं का परित्याग – ईश्वर के साथ प्रतिज्ञा का परिणाम

पवित्र बाइबिल स्त्रियों और उनके बच्चों के परित्याग का उल्लेख करता है और इसे ईश्वर के समक्ष की गई प्रतिज्ञा कहा गया है। विश्व के नारी हितों के समर्थक क्या इसे पसंद करेंगे ? क्या विश्व का नारी

---

६९. **ब्रह्म दत्त भारती :** *'दी वेदाज़ ऐंड दी बाइबिल'* (वेद एवं बाइबिल), नई दिल्ली, १९६७, पृष्ठ ४५

समाज इसका अनुमोदन करेगा ? निम्न पद उल्लेखनीय है :

१०७. "३. हम अपने ईश्वर के सामने यह प्रतिज्ञा करें कि हम आप पर और हमारे ईश्वर की आज्ञा पर श्रद्धा रखने वाले व्यक्तियों के परामर्श के अनुसार इन सब स्त्रियों और इन से उत्पन्न सन्तान को त्याग देंगे, जिससे संहिता का पालन किया जाये।"

– एज़्रा का ग्रन्थ, १०/३

(तेरह) डैविड (दाऊद) ने दस उपपत्नियों को बंदी बनाया

१०८. "३. जब दाऊद ने येरूसालेम में अपने महल में प्रवेश किया, तो उसने उन दस उपपत्नियों को एक सुरक्षित घर में रख दिया, जिन्हें वह महल की देखरेख करने छोड़ गया था। उसने उनके खाने-पहनने का प्रबन्ध कर दिया, परन्तु वह उनके पास नहीं गया। वे अपनी मृत्यु तक विधवा का जीवन बिताते हुए अपने घर में क़ैद रहीं।"

– समूएल का दूसरा ग्रन्थ, २०/३

(चौदह) मूसा : अपने उपभोग के लिए कुंवारियों को जीवित रखो और जो कुंवारी नहीं उन्हें मार डालो

पवित्र बाइबिल में कहा गया है कि बाइबिल के पात्रों में से एक महान पात्र **मूसा** ने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि वे लड़कों और उन सब लड़कियों को मार डालें जो पुरुषों के साथ संसर्ग कर के अपना कौमार्य नष्ट कर चुकी हैं, परन्तु उन लड़कियों को अपने उपभोग के लिए जीवित रखें, जिन्होंने पुरुषों के साथ संसर्ग नहीं किया। निम्नलिखित पांच पद पठनीय हैं :

१०९. "१७. इसलिए सब लड़कों को मार डालो और उन स्त्रियों को भी, जिनका पुरुष से प्रसंग हुआ है।" *– गणना ग्रन्थ, ३१/१७*

११०. "१८. किन्तु तुम उन सब कन्याओं को, जिनका पुरुष से प्रसंग नहीं हुआ है, अपने लिए जीवित रखो।" *– गणना ग्रन्थ, ३१/१८*

१११. "३२. सैनिकों ने जो वस्तुएँ अपने लिए ले ली थीं, उनके अतिरिक्त लूट का विवरण इस प्रकार था : छः लाख पचहत्तर हज़ार भेड़ें," *– गणना ग्रन्थ, ३१/३२*

११२. "३५. ...और कुल मिला कर ऐसी बत्तीस हज़ार कन्याएँ, जिनका किसी पुरुष के साथ प्रसंग नहीं हुआ था।"
– गणना ग्रन्थ, ३१/३५

११३. "४०. सोलह हज़ार कन्याएँ–इन में से प्रभु के लिए चढ़ावा बत्तीस कन्याएँ।"
– गणना ग्रन्थ, ३१/४०

उपरोक्त पदों से पता लगता है कि बत्तीस हज़ार लड़कियों को लूट के माल के रूप में पकड़ा गया और उन्हें वहां एकत्रित सैनिकों और प्रभु के बीच बांट दिया।

मार्क टुवेन, अमरीका का महान हास्य लेखक, उपरोक्त उद्धरण पर इस प्रकार प्रकाश डालता है :

"उनके गुप्तांग नंगे कर के यह जांच की गई कि उनकी योनि मुख की झल्ली सुरक्षित है। इस तरह उन्हें अपमानित करने के पश्चात् उन्हें उनके अपने

घरों और अपने देश से बाहर दूसरे देशों में दासियों के रूप में बेचने के लिए भेज दिया गया। यह अत्यंत निकृष्ट प्रकार की दासता थी, जिसमें उन्हें अपने ख़रीदने वालों, चाहे वे सज्जन हों या असभ्य, गंदे और गुंडे, के शरीरों को कामात्तेजित करना और उनसे संसर्ग करना और उनकी वासना को तुष्ट करना था। (धरती से लिए गए पत्र)"[७०]

– मार्क टुवेन

उपरोक्त पांच पदों की व्याख्या करते हुए अमरीका के महान चिंतक **थामस पेन** कहते हैं :

"विश्व के किसी भी युग में जिन घृणित दुष्टों ने मनुष्य के नाम को अपमानित किया है, उनमें से किसी को मूसा से अधिक दुष्ट पाना कठिन है, यदि उक्त घटनाओं का उल्लेख सत्य है। यहां तो मूसा ने आदेश दे दिया कि लड़कों को मार डाला जाए, माताओं को मौत के घाट उतार दिया जाए और उनकी बेटियों के साथ व्यभिचार किया जाए।"[७१]

– थामस पेन

चार्ल्स स्मिथ, 'दी ट्रूथ सीकर' के सम्पादक, क्रोधावेश में लिखते हैं :

"अधिक निकृष्ट कौन है, पुराना टेस्टामेंट अथवा

---

७०. **कोलिन मेन :** *'दी बाइबिल, व्हाट इट सेज़'* (बाइबिल क्या कहता है ?), वाइस आफ़ इंडिया, नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, पृष्ठ १५

मार्क टुवेन की मृत्यु १९१० में हो गई थी, परन्तु उसकी बेटी क्लारा क्लीमेन्स समोसाऊड ने उसके पत्र इस कारण लम्बे काल तक छिपाए रखे कि उनमें कुछ अप्रासंगिक भावना थी।

७१. **थामस पेन :** *'दी एज आफ़ रीज़न'* (तर्क का युग) व्हाटस ऐंड कं. लंदन द्वारा प्रकाशित, १७९६, पृष्ठ ४२

नया टेस्टामेंट ? यदि बुरी पुस्तकों को जलाया जाय, तो सब से अधिक जलायी जाने वाली पुस्तकें बाइबिल होंगी।"[७२]

– चार्ल्स स्मिथ

(पंद्रह)कामवासना की पूर्ति के लिए बेटियों को बेचना

क्या मानव अधिकार आयोग के सदस्य पवित्र बाइबिल के निम्न पदों में किए गए उल्लेख के अनुसार बेटियों को बेच देने की अनुमति देंगे ?

११४. "७. जब कोई आदमी अपनी लड़की को दासी के रूप में बेचे, तो वह दासों की तरह नहीं छोड़ी जायेगी।"

– निर्गमन ग्रन्थ, २१/७

११५. "८. यदि वह अपने स्वामी को पसन्द न आये, जिसने उसे अपने लिए खरीदा है, तो वह उसे बेच सकता है। उसे किसी विदेशी व्यक्ति को न बेचा जाये, क्योंकि यह उसके साथ विश्वासघात होगा।

– निर्गमन ग्रन्थ, २१/८

ईसाई प्रचारकों से यह पूछना आवश्यक है कि क्या स्त्री मात्र एक खिलौना है। जब तक वह तुम्हारी काम वासना को संतुष्ट करे तब तक तुम अपने पास रखो, परन्तु जब वह तुम्हारी वासना को तृप्त न कर सके तो तुम उसे फैंक सकते हो। क्या यह नैतिकता है ? कोई भी सभ्य राज्य ऐसे कलंक को सहन नहीं करेगा।

अंग्रेज़ प्राय: इस बात पर गर्व करते थे कि वे शताब्दियों से सभ्य

---

७२. **चार्ल्स स्मिथ :** *'दी बाइबिल इन दी बैलंस'* (तुला में बाइबिल), यूरोप में प्रथम प्रकाशन, हिन्दू लेखक मंच नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, पृष्ठ २०

राष्ट्र हैं। क्या वे यह अस्वीकार करने का साहस करेंगे कि ईसाई मत के प्रारम्भ के पश्चात् सात सौ वर्ष तक इंग्लैंड में बेटियों को बेचा जाता था। **सुश्री मतिल्दा जोसलिन गेज**, अमरीका की विख्यात लेखिका, उपरोक्त वक्तव्य का इस प्रकार समर्थन करती हैं :

> *"जबकि इंग्लैंड में ईसाई मत के प्रारम्भ के सात सौ वर्ष पश्चात् तक बेटियों को बेचा जाता रहा, हम देखते हैं कि भारत में प्राचीन विधि के अनुसार कोई पिता अपनी बेटी को विवाह में बेच नहीं सकता था और न ही इस उपलक्ष्य में साधारण से साधारण उपहार भी स्वीकार कर सकता था। मध्य युग में इंग्लैंड में बेटी को पिता की सम्पत्ति का एक भाग माना जाता था, जिसे वह अधिकतम मूल्य देने वाले को बेच सकता था।"*[७३]
>
> **– मतिल्दा जोसलिन गेज**

(सोलह)शत्रु पुरुषों की हत्या और उनकी स्त्रियों से विवाह

पवित्र बाइबिल इसकी अनुमति देता है और इसे न्यायोचित मानता है कि शत्रु पुरुषों की हत्या कर दी जाए और उनकी सुंदर स्त्रियों को बंदी बनाया जाए और बाद में यदि ये बन्दी पत्नियां काम वासना को तृप्त न करें तो उनका परित्याग कर दिया जाय। इस सम्बंध में बाइबिल के निम्नलिखित पांच पद उद्धृत हैं :

> **११६. "१०. यदि तुम अपने शत्रुओं के विरुद्ध लड़ने जाओ और प्रभु, तुम्हारा ईश्वर उन्हें तुम्हारे हाथ दे दे और तुम उन्हें बन्दी बना कर ले जाओ,"**
>
> ***– विधि-विवरण ग्रन्थ, २१/१०***

---

७३. **मतिल्दा जोसलिन गेज :** *'वोमन, चर्च, ऐंड स्टेट'* (ईसाई संस्था, स्त्री और राज्य), न्यू यार्क, १८९३, वाईस आफ़ इंडिया, नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, १९९७, पृष्ठ ३०१

११७. "११. तो यदि तुम उन बन्दियों में किसी सुन्दर स्त्री को देख कर उसे चाहने लगो तथा उस से विवाह करना चाहो,"
– विधि-विवरण ग्रन्थ, २१/११

११८. "१२. तो उसे अपने घर ले जाओ। वह अपना सिर मूँडे, अपने नाखून काट डाले,"
– विधि-विवरण ग्रन्थ, २१/१२

११९. "१३. और उन वस्त्रों को उतार दे, जिन में वह बन्दी बनायी गयी है। फिर वह तुम्हारे घर में रहे और महीने भर अपने माता-पिता का शोक मनाये। इसके बाद तुम उसके पास जा सकते हो और उसके साथ विवाह कर उसे अपनी पत्नी बना सकते हो।"
– विधि-विवरण ग्रन्थ, २१/१३

१२०. "१४. किन्तु यदि तुम बाद में उसे नापसन्द करो, तो वह जहाँ चाहे, तुम उसे वहाँ जाने दोगे।"
– विधि-विवरण ग्रन्थ, २१/१४

क्या इसे विवाह कहा जा सकता है अथवा बलात्कार ? कोई भी सभ्य मनुष्य इस बात का अनुमोदन नहीं करेगा कि बल पूर्वक बन्दी बनाई गई स्त्रियों के साथ विवाह किया जाए और जब वे आपकी काम वासना को तृप्त न कर सकें तो उन्हें बाहर फैंक दिया जाए।

यहाँ पवित्र बाइबिल का एक और परिच्छेद दिया गया है, जिसमें कहा गया है कि पुरुष शत्रुओं को मार डाला जाए और उनकी स्त्रियों को अपनी काम वासना की तृप्ति के लिए रख लिया जाए :

१२१. "१३. यदि प्रभु, तुम्हारा ईश्वर उसे तुम्हारे हवाले करे, तो उसका प्रत्येक पुरुष तलवार

के घाट उतार दिया जाये।"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, २०/१३

१२२. "१४. स्त्रियाँ, बच्चे, पशु और जो कुछ उस नगर में है–वह सब तुम अपने अधिकार में कर लो और अपने शत्रुओं से लूटे हुए माल का उपभोग करो।"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, २०/१४

टिप्पन : युद्ध में 'लूट के माल' का अर्थ है वे सभी वस्तुएं जो युद्ध में शत्रुओं को मारने के पश्चात् लूट ली जाएं, जिनमें स्त्रियां और बच्चे भी सम्मिलित हैं।

उपरोक्त उद्धरणों के होते हुए भी ईसाई प्रचारक बड़े अधिकार पूर्वक कहते हैं कि केवल ईसाई मत और पवित्र बाइबिल पुरुषों और स्त्रियों को नैतिक प्रगति की ओर ले जा सकते हैं। पाठक उपरोक्त उदाहरणों को पढ़ने के उपरांत स्वयं निर्णय कर सकेंगे कि क्या ईसाई मत और पवित्र बाइबिल पुरुषों और स्त्रियों को नैतिक प्रगति की ओर ले जाएंगे या अवनति की ओर। इस सम्बंध में **बर्ट्रेण्ड रसेल**, जो विख्यात दार्शनिक थे, और जिन्हें १९५० में साहित्य के लिए नोबल पुरुस्कार दिया गया था, का कथन उल्लेखनीय है :

"ईसाई मत, जिस रूप में इसे गिरजा घरों में संगठित किया गया है, विश्व में नैतिक प्रगति का प्रमुख शत्रु रहा है और अब भी है।"[७४]

– बर्ट्रेण्ड रसेल

थामस पेन, जो अमरीका के संस्थापकों में से एक हैं, अपना मत इस प्रकार व्यक्त करते हैं :

---

७४. **बर्ट्रेण्ड रसेल :** *'व्हाई आई ऐम नाट ऐ क्रिस्चैन ऐंड अदर एस्सेज आन रिलीजन'* (मैं ईसाई क्यों नहीं और धर्म सम्बंधी अन्य निबंध) अन्तिम सातवां संस्करण, १९९६, लंदन, पृष्ठ २५

"जब कभी हम नग्नता की कहानियां, घोर व्यभिचार, क्रूर एवं अत्याचार पूर्ण हत्याओं, निर्दयता पूर्ण प्रतिहिंसात्मक घटनाओं की गाथाएं पढ़ेंगे, जिनसे बाइबिल आधे से अधिक भरा पड़ा है, तो यह अधिक युक्ति संगत प्रतीत् होगा कि बाइबिल को शैतान की वाणी कहा जाए न कि ईश्वर की वाणी। यह दुराचार का इतिहास है जिसके कारण समस्त मानव जाति क्रूर और भ्रष्ट बनी है। मैं सत्य निष्ठा से कहता हूँ कि मैं इससे घृणा करता हूँ जैसे मैं हर ऐसी बात से घृणा करता हूँ, जो क्रूरता पूर्ण है।"[७५]

– थामस पेन

२. वेदों में नैतिक आचरण संहिता

पवित्र वेदों में विश्व भर के पुरुषों और महिलाओं के लिए सम्पूर्ण नैतिक आचरण संहिता विद्यमान है। यहां सभी उद्धरण प्रस्तुत करना सम्भव नहीं। यदि पाठक वेदों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं तो वे कृपया मेरे द्वारा १९८२ में लिखित पुस्तक **'वेद दर्शन'** का अध्ययन करें।

पवित्र वेद मानवता के लिए व्यावहारिक जीवन हेतु पथ प्रदर्शक हैं। उन में शुद्ध और धार्मिक कार्यों पर आधारित शुद्ध और धार्मिक जीवन जीने पर बल दिया गया है।

शुद्धाः पुता भवत यज्ञियासः।

– ऋग्वेद १०/१८/२

ऐ उपासको
शुद्ध और धर्मात्मा बनो

– ऋग्वेद १०/१८/२

शुद्धता आध्यात्मिक कोष की कुंजी है। यह मनुष्य को समुन्नत

---

७५. **थामस पेन :** *'दी एज आफ़ रीज़न'* (तर्क का युग), व्हाटस ऐंड कं. लंदन द्वारा प्रकाशित, १७९६, पृष्ठ ७-८

और उदात् बनाती है। शुद्धता के बिना प्रार्थना ऐसी ही निरर्थक है, जैसा आत्मा के बिना शरीर निरर्थक है। न केवल शरीर की वरन् मन की शुद्धता अपेक्षित है। जिस व्यक्ति के विचारों, शब्दों और कृत्यों में शुद्धता और धार्मिकता है, वही आध्यात्मिकता के पथ पर आरूढ़ हो सकता है। वही व्यक्ति जो अन्दर और बाहर से शुद्ध हैं, ईश्वर के राज्य में प्रवेश का अधिकार पत्र रखता है। अतः वेद शुद्धता और धर्मपरायणता पर बल देते हैं। इस लिए मनुष्य को अपने निजी अधिकार, पद और प्रतिष्ठा के लिए नहीं, वरन् शुद्धता और धर्मपरायणता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

जातवेदः पुनीहि मा ।

– यजुर्वेद, १९/३९

सर्वज्ञ भगवान,
मुझे शुद्ध और धार्मिक बनाए।

– यजुर्वेद, १९/३९

वेद का संदेश दैवी संदेश है, जो मनुष्य को प्रेरित करता है, उसे समुन्नत और उदात बनाता है और उसका उद्धार करता है, उस में नई शक्ति उत्पन्न करता है, उसे सक्षम बनाता है, उसमें चेतना और साहस भरता है, ताकि वह अनन्त परमानन्द प्राप्त करने के लिए उदात बन सके। वेद का ज्ञान हमें सचेत करता है कि हमें कभी पतन की ओर नहीं जाना चाहिए वरन् उदात विचारों और कृत्यों की ओर बढ़ना चाहिए। पवित्र वेद हमें उपदेश देते हैं कि हम प्रतिष्ठापूर्ण जीवन व्यतीत करें।

उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि ।
आ हि रोहेमममृतं सुखं रथमथजिर्विर्विदथमा वदासि ।।

– अथर्ववेद ८/१/६

ऐ मनुष्य, अपने आप को समुन्नत करो
उन्नति की ओर बढ़ो, अवनति की ओर नहीं
मैं तुम्हें
शक्ति और ज्ञान प्रदान करता हूँ

आओ दैवी रथ में प्रवेश करो
जिसमें अनन्त परमानन्द है
और अपना ज्ञान
लोगों की सभा में प्रदान करो।
– अथर्ववेद ८/१/६

प्रोफ़ेसर एमर्सन, अमरीकी निबंधकार और कवि, लिखते हैं :

"वेद हमारे जीवन को समुन्नत करते हैं। यूरोप के सभी दर्शन और विज्ञान वेद की तुलना में नगण्य हैं। विश्व के सभी लोगों को वेद की ओर उन्मुख होना चाहिए।"

– प्रोफ़ेसर एमर्सन

प्रोफ़ेसर पाल थेमा, पश्चिम के महान चिंतक, पवित्र वेद की निम्न शब्दों में प्रशंसा करते हैं :

"वेद पवित्र प्रलेख हैं। ये प्रलेख न केवल भारत के लिए वरन् समस्त मानवता के लिए जीवन मूल्य प्रदाता और गर्व का आधार हैं। क्योंकि उन में हम मानव को अपने आपको भौतिक धरातल से उठाने का प्रयत्न करते हुए देखते हैं।"

– प्रोफ़ेसर पाल थेमा

पवित्र वेद असंयत कामुकता के रूप में वासनापूर्ण जीवन की आलोचना और निंदा करते हैं। पर पुरुष की पत्नी के साथ संभोग करना मात्र अनैतिकता, घोर असंयम, अधोगति, व्यभिचार, कामुकता और कामासक्ति है। ऋग्वेद के अनुसार कामुक और व्यभिचारी पुरुष तथा स्त्री को यज्ञ में भाग लेने की अनुमति नहीं :

मा शिश्नदेवा अपि गुर्ऋतं नः।

– ऋग्वेद ७/२१/५

व्यभिचारी लोग
यज्ञ में भाग लेने के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

– ऋग्वेद ७/२१/५

जो व्यक्ति व्यभिचार करता है, वह अपनी ऊर्जा, शक्ति, दृष्टि, सामर्थ्य, स्मृति, पुरुषत्व, प्रतिष्ठा और शिष्टता खो बैठता है। उसकी आयु अत्यधिक कम हो जाती है। **श्री मनु** उक्त कथन का इन शब्दों में समर्थन करते हैं :

नहीदृशमनायुष्यं लोके भवति किंचन।
यादृशं पुरुषस्येह परदारोपसेवनम्॥

– मनु ४/१३४

विश्व में
और कोई पाप नहीं
जो आयु को इतनी तीव्रता से कम करता है
जितना कि पर स्त्री से संभोग करना।

– मनु ४/१३४

वेद इस लिए शुद्धता, धार्मिकता, कौमार्य और शरीर और मन की पवित्रता पर बल देता है, ताकि हम स्वस्थ विचारों और स्वस्थ कृत्यों के साथ स्वस्थ जीवन व्यतीत करने के योग्य बन सकें और ईश्वर, अपने पथ प्रदर्शक, पिता, माता, संत, ऋषियों, देश और समाज की सेवा कर सकें। जीवन का आनन्द प्राप्त करने और प्रशंसा तथा अमरत्व प्राप्त करने का यही एक उपाय है।

भद्रं कर्णेभिःशृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥

– ऋग्वेद १/८९/८

ऐ प्रबुद्ध एवं धार्मिक आत्माओं
हम अपने कानों से शुभ सुनें
हम अपनी आंखों से

शुभ देखें
हम अपने जीवन की पूरी कालावधि
का उपभोग करें
हमारे अंग शुद्ध हों, हमारा शरीर शुद्ध हो
और मन में पूर्ण संतोष हो
महा प्रभु की सेवा में जुटे रहें।

– ऋग्वेद १/८९/८

पवित्र वेद सभी प्राणियों के उत्थान और उद्धार पर बल देते हैं। एक व्यक्ति का कल्याण सभी लोगों की सामूहिक प्रगति पर निर्भर करता है। इसी कारण वेद मनुष्य को उपदेश देते हैं कि वह न केवल अपनी शुद्धता वरन् अन्य सब की शुद्धता के लिए प्रयास करे।

वैश्वदेवीं वर्चस आ रभध्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः।
अतिक्रामन्तो दुरिता पदानि शतं हिमाः सर्ववीरा मदेन ।।

– अथर्ववेद १२/२/२८

शुद्ध जीवन जीना आरम्भ करो
ताकि सार्वभौमिक भव्यता प्राप्त कर सको
अपने आप को शुद्ध करो
और दूसरों को शुद्ध करो
अपने सब वीरों के साथ
कष्टदायी पथों को पार कर जाओ
और सहस्र वर्ष के लिए
आनन्द पूर्वक जीवन यापन करो।

– अथर्ववेद १२/२/२८

"विश्व के सभी कष्टों और कलेषों से मुक्ति के लिए, वेदों की ओर लौट जाना ही एक मात्र निदान है।"

– स्वामी दयानंद सरस्वती

अध्याय ९

बाइबिल : ईसाई मत में विश्वास न करने वालों को यातना पहुंचाओ, वेद : सब से प्रेम करो

१. बाइबिल : ईसाई मत को स्वीकार न करने वालों को यातना पहुंचाओ

(एक) ईसाई मत को स्वीकार न करने वालों को यातना दो, परन्तु पेड़ों को हानि न पहुंचाओ

१२३. "४. उन्हें यह आदेश मिला कि वे घास अथवा किसी पौधे या वृक्ष को हानि नहीं पहुँचायें, बल्कि केवल उन मनुष्यों को, जिनके माथे पर ईश्वर की मुहर नहीं लगी हो।"

– प्रकाशना-ग्रन्थ, ९/४

पवित्र बाइबिल के अनुसार मनुष्य के जीवन का मूल्य पेड़ों और घास के मूल्य से कम है !

(दो) ईसाई मत पर विश्वास न करने वालों को मारो नहीं, परन्तु उन्हें यातना पहुंचाओ

१२४. "५. टिड्डियों को इन लोगों का वध करने की नहीं, बल्कि इन्हें पाँच महीनों तक पीड़ित करने की अनुमति दी गयी। उनकी यन्त्रणा बिच्छुओं के डंक-जैसी थी।"

– प्रकाशना-ग्रन्थ, ९/५

थामस जैफ़रसन, अमरीका के तीसरे राष्ट्रपति, सच्चे हृदय से स्वीकार करते हैं :

"मैं ने पचास और साठ वर्षों के बीच प्रकाशना (ईश्वरी ज्ञान) का अध्ययन किया तो तब मैं ने यह समझा कि यह किसी पागल का प्रलाप मात्र है।" [७६]

– थामस जैफ़रसन

जोसेफ़ लूइस, अमरीका के स्वतंत्र चिंतकों (फ़्री थिंकर्स आफ़ अमरीका) के प्रधान और 'एज आफ़ रीज़न' (तर्क का युग) के सम्पादक, कहते हैं :

"बाइबिल ईश्वर के दैवी ज्ञान का प्रकाश नहीं है। यह ईश्वरीय प्रेरणा पर आधारित नहीं वरन् दुष्टता पर आधारित पुस्तक है। आज तक प्रकाशित किसी भी पुस्तक की तुलना में यह कहीं अधिक पीड़ा और यातना के लिए उत्तरदायी है।" [७७]

– जोसेफ़ लूइस

---

७६. **चार्ल्स स्मिथ :** *"दी बाइबिल इन दी बैलंस"* (तुला में बाइबिल), हिन्दू लेखक मंच नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, पृष्ठ २

७७. **ब्रह्म दत्त भारती :** *'दी वेदाज़ एंड दी बाइबिल'* (वेद एवं बाइबिल), नई दिल्ली, १९६७, पृष्ठ ३४

सुश्री मतिल्दा जोसलिन गेज, अमरीकन लेखिका, कहती हैं :

> *"सामान्यत: उबलते तेल में और कभी-कभी उबलते पानी में नास्तिकों और अपराधियों को जीवित उबालने की प्रथा तुलनात्मक दृष्टि से लम्बे काल तक यूरोप में बनी रही।"*[७८]
>
> **– मतिल्दा जोसिलन गेज**

जेम्स ए. हाट के अनुसार पोप निर्दोष चौथे ने १२५२ ईसवीं में नास्तिकता को समाप्त करने के लिए यातना देना प्राधिकृत कर दिया था। नास्तिकता को समाप्त करने के लिए पवित्र दमनकारी न्यायाधिकरण (Holy Inquisition) की स्थापना की गई। वे कहते हैं :

> *"नास्तिकता को समाप्त करने के प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप पवित्र दमनकारी न्यायाधिकरण (Holy Inquisition) की स्थापना हुई, जो मानवता की सर्वाधिक भयानक घटनाओं में से एक थी। बारहवीं ईसवी के प्रारम्भ में स्थानीय बिशपों को अधिकार दे दिए गए थे कि वे नास्तिकों का पता लगाएं, उन पर अभियोग चलाएं और उन्हें दण्डित करें। १२५२ में पोप इन्नोसेंट (निर्दोष) चौथे ने यातना पहुंचाने के अधिकार दे दिए और न्यायाधिकरण कक्ष, संत्रास् के स्थान बन गए। स्विटज़रलैंड के इतिहासकार* ***वाल्टर निग*** *इसका उल्लेख करते हैं : सब से पहले प्राय: अंगुष्ठ प्रपीड़क (thumb-screw) का प्रयोग किया जाता था। उंगलियों को शिकंजे में रखा जाता था और पेच कसा जाता था, जब तक रक्त बहने लगे और हड्डियां टूटने लगें। प्रतिवादी को*

---

७८. **मतिल्दा जोसलिन गेज** : *'वोमन, चर्च ऐंड स्टेट'* (स्त्री, चर्च और राज्य), न्यू यार्क, १८९३, वाइस आफ़ इंडिया नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, १९९७, पृष्ठ २६७

यातना पहुंचाने वाली लोहे की कुर्सी पर बैठाने की भी एक प्रक्रिया थी, जिसमें बैठने के स्थान पर लोहे के तीखे कील लगे हुए थे, जिन्हें नीचे से गर्म करके लाल कर दिया जाता था। यातना पहुंचाने के तथाकथित बूट (boots) थे, जिनका पिण्डलियों के अगले भाग की हड्डियों (Shin-bones) को कुचल कर तोड़ने के लिए प्रयोग किया जाता था। यातना का एक और अधिक प्रयोग में आने वाला साधन था। नास्तिक को हाथ पांव बांध कर उत्पीड़क यंत्र या पहिए पर रख दिया जाता था, शरीर पर पत्थर बांध दिए जाते थे और पहिए को ऊपर नीचे घुमा कर अंग प्रत्यंग को जोड़ों से अलग कर दिया जाता था। पीड़ित व्यक्ति के चिल्लाने से यातना प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न न हो, इस प्रयोजन से उसके मुंह में कपड़ा ठोंस दिया जाता था। तीन चार घंटे तक यातना पहुंचाते रहने का काल असामान्य घटना नहीं थी। इस यातना प्रक्रिया में उत्पीड़क यंत्रों पर बार-बार पवित्र जल छिड़का जाता था।"[७९]

– जेम्स ए. हाट

लार्ड ऐक्टन स्वयं रोमन कैथोलिक थे, उन्होंने १८०० ईसवी के अन्त में कहा था :

"दमनकारी न्यायाधिकरण का सिद्धांत घातक था। पोप न केवल अत्यंत क्रूर हत्यारे थे वरन् उन्होंने हत्या को ईसाई चर्च (संस्था) का वैध आधार और मुक्ति पाने का उपाय बना दिया था।"[८०]

– लार्ड ऐक्टन

---

७९. **जेम्स ए. हाट :** *'होली हारर्स'* (पवित्र यातनाएं) प्रामीथियस बुक्स, न्यू यार्क, द्वारा प्रकाशित, १९९०, पृष्ठ ६१-६३

८०. उपरोक्त, पृष्ठ ६८

२. वेद : सब से प्रेम कीजिए

पवित्र वेदों का ज्ञान दिव्य वाणी के रूप में चार ऋषियों के हृदयों में प्रकाशित हुआ। वे ऋषि थे **अग्नि, वायु, आदित्य** और **अंगिरा।** सृष्टि के निर्माता ने स्वयं प्रत्यक्ष उन्हें ज्ञान दिया था। जर्मनी के विख्यात विद्वान **शोपेनआवर** सच्चे हृदय से स्वीकार करते हैं :

> *"इससे इस लोक प्रिय विश्वास की पुष्टि हो जाती है कि वेद शाश्वत हैं और किसी मानवीय माध्यम के प्रति उत्तरदायी नहीं हैं और वे स्वयं सृष्टि के स्रष्टा ब्रह्म से उद्भूत हुए हैं।"*
>
> **– शोपेनआवर**

पवित्र वेद मनुष्य के भ्रातृभाव और ईश्वर के पितृभाव में विश्वास करते हैं। वेद दर्शन के अनुसार विश्व के सभी मानव एक दूसरे के भाई हैं और ईश्वर सब का दयालु पिता है। ईश्वर की दृष्टि में कोई उत्कृष्ट और कोई निकृष्ट नहीं है। ईश्वर सब के प्रति समान व्यवहार करता है, सब को परमानन्द और दिव्य आशीश प्रदान करता है, और जाति, रंग और पंथ के आधार पर भेद भाव नहीं करता। वैदिक धर्म सार्वभौमिक भ्रातृभाव पर आधारित है। वेद विश्व के सभी लोगों के बीच भ्रातृभाव और समानता पर बल देता है। धरती पर सभी मनुष्य समान अधिकार रखते हैं। सभी का प्रकृति से सम्बंध है और प्रकृति सभी से सम्बंधित है। यदि प्रकृति सब के प्रति दयालु है, तो मनुष्य समप्रदाय के विभेद के नाम पर एक दूसरे से घृणा क्यों करें ? इस लिए पवित्र वेद बलपूर्वक विश्व के सभी मनुष्यों से अनुरोध करते हैं कि वे हृदय से एक दूसरे से प्रेम करें।

अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ।

– अथर्ववेद ३/३०/१

एक दूसरे से प्रेम करो
जिस प्रकार गाय अपने नवजात बछड़े से प्रेम करती है।

– अथर्ववेद ३/३०/१

वर्ष १८६९ में एक फ्रांसीसी **लोइस जैकोलियट** ने, जो चंद्रनगर (भूत पूर्व फ्रांसीसी भारत) में मुख्य न्यायाधिपति थे, "ला बाइबिल डैन्स इंडे" नामक पुस्तक फ्रांसीसी भाषा में लिखी थी, जिसका अगले वर्ष अंग्रेज़ी में अनुवाद किया गया। **लोइस जैकोलियट** ने उसमें कहा :

"भारत की प्रचीन भूमि !
मानवता का पालना, तेरा अभिनंदन !
अभिवादन, ऐ पूजनीय मातृ भूमि,
जिस पर शताब्दियों से क्रूर आक्रमण हुए
फिर भी विस्मृति की राख के नीचे,
तुम दबी नहीं;
प्रेम, कविता, विज्ञान
और धर्म की पितृ भूमि, तेरा अभिनंदन !
हम अपने पश्चिम के भविष्य में
तुम्हारे गौरवशाली अतीत के पुर्नोदय का अभिनंदन करें।" [८१]

– लोइस जैकोलियट

"यह हमारा कर्तव्य है कि हम हृदय की सब भावनाओं, अपना समस्त धन और यहां तक कि अपना जीवन भी अपने देश के लिए अर्पित कर दें, जो हमारी जन्मभूमि है, और जो भूमि हमारा पोषण करती है और भविष्य में भी हमें अनुप्राणित करती रहेगी।"

– स्वामी दयानंद सरस्वती

---

८१. (एक) **भागवद दत्ता :** वेस्टर्न इंडालाजिस्टस–ए स्टडी इन मोटिव्ज़ (पश्चिमी भारती शास्त्री–मन्तव्यों का अध्ययन), पृष्ठ ६

(दो) **ब्रह्म दत्त भारती :** 'मैक्समूलर–ए लाइफ़ लांग मस्करेड' (मैक्समूलर–जीवन भर का स्वांग), १९९२, पृष्ठ १९८

अध्याय १०

बाइबिल अत्याचार-पूर्ण असहिष्णुता का प्रचार करता है, वेद भ्रातृभाव का प्रचार करता है

१. बाइबिल अत्याचार-पूर्ण असहिष्णुता का प्रचार करता है

(एक) अपने भाई और पुत्र का वध कर दो, यदि वे तुम्हें दूसरे देवताओं की पूजा के लिए बहकाते हैं

पवित्र बाइबिल आदेश देता है कि यदि तुम्हारा भाई, पुत्र, बेटी, पत्नी तुम्हें दूसरे देवताओं की पूजा के लिए बहकाएं तो उनका वध कर दो। इस सम्बंध में बाइबिल के पांच पद उद्धृत किए जाते हैं :

१२५. "७. यदि तुम्हारा भाई तुम्हारी माँ का पुत्र या तुम्हारा पुत्र या तुम्हारी पुत्री या तुम्हारी

प्रिय पत्नी या तुम्हारे अन्तरंग मित्र यह कहते हुए तुम्हें अकेले में बहकाये, 'चलो, हम पराये देवताओं की पूजा करें'-ऐसे देवताओं की, जिन्हें न तुम जानते थे और न तुम्हारे पूर्वज;"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, १३/७

१२६. "८. उन देवताओं की, जो तुम्हारे निकट या पृथ्वी पर कहीं भी अवस्थित राष्ट्रों के हैं,"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, १३/८

१२७. "९. तो तुम उस से सहमत नहीं होंगे और उसकी बात नहीं सुनोगे। तुम उस पर दया नहीं करोगे, उसकी रक्षा नहीं करोगे और उसका पाप नहीं छिपाओगे;"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, १३/९

१२८. "१०. बल्कि तुम उसका वध अवश्य करोगे; उसका वध करने के लिए सब से पहले तुम्हारा ही हाथ उठे और इसके बाद सारे समुदाय का हाथ।"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, १३/१०

१२९. "११. उसे पत्थरों से मार-मार कर मृत्युदण्ड दिया जाये; क्योंकि उसने मिस्र से, दासता के घर से, तुम को छुड़ाने वाले ईश्वर के मार्ग से तुम्हें बहकाने का प्रयत्न किया।"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, १३/११

उपरोक्त पदों से यह पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है कि पवित्र बाइबिल विचार स्वातंत्र्य और पूजा स्वातंत्र्य की अनुमति नहीं देता। यह आश्चर्य और पीड़ा की बात है कि पवित्र बाइबिल अपने पुत्र, बेटी और पत्नी का,

पंथ के अन्तर के कारण वध का आदेश देता है। **एच जी वैल्स**, विख्यात अंग्रेज़ी उपन्यासकार, जो आधुनिक वैज्ञानिक उपन्यासों का जनक था, अपना मत स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करता है :

> *"अब तुम अपने घर में किसी निष्ठावान कैथोलिक पर इतना भी विश्वास नहीं कर सकते जितना तुम किसी नाज़ी गुप्तचर के साथ खुल कर बात करने और सम्बंध बनाने का संकट मोल ले सकते हो।"*[८२]
>
> **– एच.जी. वैल्स**

थामस पेन, एक महान चिंतक और अमरीका का धर्म एवं राजनीति का सुधारक, यह मत व्यक्त करता है :

> *"जितनी भी प्रकार की धर्म पद्धतियों की स्थापना की गई, उन में से कोई भी, इस तथाकथित ईसाई मत की तुलना में, सर्वशक्तिमान के प्रति अधिक अपमानजनक, मानव के लिए अधिक अवनतिकारक, विवेक के लिए अधिक अरुचिकर और अपने में अधिक परस्पर विरोधी नहीं है।"*[८३]
>
> **– थामस पेन**

रोम का सम्राट कान्स्टैन्टीन ऐसा व्यक्ति था जिसने अपने पुत्र का वध करवा दिया और अपनी पत्नी को जीवित उबाल कर मार डाला।[८४]

---

८२. **पीटर केम्प :** *'एच.जी. वैल्स ऐंड दी कल्मीनेटिंग एप'* (एच.जी. वैल्स और चरमावस्था को पहुंचता वानर), लंदन, १९९६, पृष्ठ १५६

८३. **थामस पेन :** *'दी एज आफ़ रीज़न'* (तर्क का युग), व्हाट्स ऐंड कं. लंदन द्वारा प्रकाशित, १७९६, पृष्ठ ८७

८४. (एक) **रिएन आइसलर :** *'दी चालिस ऐंड दी ब्लेड'* (मदिरा का प्याला और तलवार की धार), हार्पर ऐंड रो, सैन फ्रैंसिस्को, १९८७, पृष्ठ १३१

(दो) **हेलिन एलर्बी :** *'दी डार्क साइड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष), अमरीका, अगस्त, १९९८, पृष्ठ १७

उसका यह दृष्टिकोण था कि ईसाई मत ऐसा व्यावहारिक उपाय था जिसके द्वारा वह अपनी सैनिक शक्ति को सशक्त बना सका और संकट में पड़े रोम के विशाल साम्राज्य को एकता के सूत्र में बांध सका।[८५]

ऐसे व्यक्ति की दुष्टता की बात पर, जिसने घोर अत्याचार किए और उसे ईश्वर का आदेश बताया, भला कौन होगा जो कांप नहीं उठेगा ? अपवित्र कार्यों के द्वारा ईश्वर के पवित्र नाम को कलंकित करना मात्र ईश्वर की निंदा नहीं है ? **थामस पेन** इस बात की पुष्टि इन शब्दों में करते हैं :

> *"सामान्यतया लोग नहीं जानते कि यह पुस्तक जिसे ईश्वर द्वारा रचित मान लिया गया है, कितनी दुष्टता से भरी पड़ी है। यह पुस्तक ईश्वर निंदा, दुष्टता और झूठ का पुलिंदा है, क्योंकि सर्वशक्तिमान भगवान के आदेशों के साथ मनुष्य के घोर कुकर्म को सम्बंधित करने से अधिक ईश्वर निंदा का उद्धरण और क्या हो सकता है ?"*[८६]
>
> **– थामस पेन**

(दो) अपने नगर के सब नास्तिकों को मार डालो

पवित्र बाइबिल का कथन है, "यदि कोई पुरुष या स्त्री तुम्हारे नगर में पराए देवताओं जैसे सूर्य, चांद आदि की पूजा करता है, जिसके लिए ईश्वर ने आदेश नहीं दिया है तो तुम उन्हें पत्थरों से मार डालो।" बाइबिल

---

८५. (एक) **रिएन आइसलर :** *'दी चालिस ऐंड दी ब्लेड'* (मदिरा का प्याला और तलवार की धार), हार्पर ऐंड रो, सैन फ्रैंसिस्को, १९८७, पृष्ठ १३१

(दो) **हेलिन एलर्बी :** *'दी डार्क साइड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष), अमरीका, अगस्त, १९९८, पृष्ठ १७

८६. **थामस पेन :** *'दी एज आफ़ रीज़न'* (तर्क का युग), व्हाट्स ऐंड कं. लंदन द्वारा प्रकाशित, १७९६, पृष्ठ ४२-४३

के निम्न चार पदों में इस सम्बंध में कथन है :

१३०. "२. यदि तुम्हारे किसी नगर में, जो प्रभु, तुम्हारा ईश्वर तुम्हें देने वाला है, कोई ऐसा पुरुष या ऐसी स्त्री हो, जो तुम्हारे ईश्वर के विधान का उल्लंघन करते हुए ऐसा कोई काम करे, जो प्रभु को अप्रिय है,"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, १७/२

१३१. "३. जो पराये देवताओं की पूजा करता है या सूर्य, चन्द्र और आकाश के किसी अन्य नक्षत्र को दण्डवत् करता है,"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, १७/३

१३२. "४. और जब यह बात तुम्हें मालूम हो जाये, तो इस बात की ठीक-ठीक जाँच करोगे। तब यदि यह सत्य प्रमाणित हो जाये कि ऐसा कुकर्म इस्राएल में किया गया है,"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, १७/४

१३३. "५. तो उस कुकर्मी पुरुष या स्त्री को फाटक के बाहर ले जाओगे और उस पुरुष या स्त्री को पत्थरों से मार डालोगे।"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, १७/५

क्लेयरवाक्स के **संत बर्नार्ड** ने दूसरा धर्म युद्ध आरम्भ करते समय यह घोषणा की थी :

"ईसाई, काफ़िर को मारने पर गौरव अनुभव करता है, क्योंकि इस से ईसा मसीह स्वयं गौवान्वित होता है।"[८७]

– संत बर्नार्ड

---

८७. **जेम्स ए. हाट :** *'होली हारर्स'* (पवित्र यातनाएं), प्रामीथियस बुक्स, न्यू यार्क, द्वारा प्रकाशित, १९९०, पृष्ठ २६

(तीन) दुधमुहें शिशुओं का वध और गर्भवती स्त्रियों का पेट चीर डालना

बाइबिल के ***'होशेआ'*** अध्याय में कथन है कि समारिया के दुधमुहें शिशू चट्टान पर पटक कर मार डाले जाएंगे और गर्भवती स्त्रियों के पेट चीर दिए जाएंगे।

१३४. "१. समारिया को अपने पाप का फल भोगना पड़ेगा, उसने तो ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया है। वे तलवार के घाट उतार दिये जायेंगे, उनके शिशु पटक-पटक कर मारे जायेंगे और गर्भवती स्त्रियों के पेट चीर डाले जायेंगे।"

– होशेआ का ग्रन्थ, १४/१

(चार) दुधमुहें शिशुओं को पत्थरों पर पटक कर मार डालना

क्या दुधमुहें शिशुओं को पत्थर पर पटक कर मार डालना चाहिए; भले ही वे शत्रू के घर पैदा हुए हों ? सर्वथा नहीं, परन्तु पवित्र बाइबिल के निम्न पद में इसका उल्लेख मिलता है :

१३५. "९. धन्य है वह मनुष्य, जो तेरे दुधमुँहे बच्चों को उठा कर चट्टान पर पटक देगा !"

– स्तोत्र-ग्रन्थ, १३७/९

टिप्पन : यहां 'तेरे' शब्द का प्रयोग बैबीलान की बेटी के लिए हुआ है।

(पांच) लइश के शांतिपूर्ण नागरिकों का नरसंहार

पवित्र बाइबिल में कहा गया है कि दानवंशियों ने लइश पर आक्रमण किया और वहां शांति पूर्ण नागरिकों का नरसंहार कर, नगर को जला डाला :

१३६. "२७. दानवंशी मीका के बनवाये हुए सामान और उसके पुजारी को ले कर लइश पर आक्रमण करने गये, जहाँ लोग अपने को सुरक्षित समझकर शान्ति से निवास करते थे। दानवंशियों ने लइश के निवासियों को तलवार के घाट उतारा और उनका नगर जला दिया।"

– न्यायकर्ताओं का ग्रन्थ, १८/२७

(छः) हर किसी को जो सांस लेता है मार डालो

पवित्र बाइबिल अपने अनुयाइयों को आदेश देता है कि वे जिन नगरों पर अधिकार प्राप्त करें वहां किसी को जीवित न रहने दें। हर कोई जो सांस लेता है उसे मार डालना चाहिए।

१३७. "१६. परन्तु उन राष्ट्रों के नगरों में, जिन्हें प्रभु, तुम्हारा ईश्वर तुम्हें दायभाग के रूप में दे रहा है, किसी भी प्राणी को जीवित नहीं छोड़ोगे।"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, २०/१६

२. वेदों में भ्रातृभाव का प्रचार किया गया है

पवित्र वेद द्वारा इस धरती के सभी मनुष्यों में भ्रातृभाव और समानता का प्रचार किया गया है। जब प्रकृति सब के साथ समान व्यवहार करती है तो मनुष्य क्यों परस्पर भेद भाव करें और आपस में लड़ें ?

यदि आक्सीजन और हाइड्रोजन को उचित अनुपात में मिला दिया जाए तो उससे निश्चित रूप में जल उत्पन्न होगा, भले ही आक्सीजन और हाइड्रोजन को मिलाने वाला व्यक्ति हिंदू हो या मुस्लिम हो या ईसाई। जब एक व्यक्ति भूखा होता है तो क्या यह भूख हिंदू होती है, या मुस्लिम भूख अथवा ईसाई भूख ? यह मानव की भूख है। आपको भूख को संतुष्ट

करने के लिए प्रयत्न करने पड़ते हैं। जब साम्प्रदायिक दंगे में किसी व्यक्ति का वध किया जाता है, उस का रक्त धरती पर बहता है तो क्या आप पहचान सकते हैं कि वह रक्त हिन्दू रक्त है या मुस्लिम रक्त है या ईसाई रक्त ? वह मानव रक्त है। जब साम्प्रदायिक दंगों में मारे गये माता पिता से वंचित बच्चा आंसू बहाता है तो क्या आप उन्हें हिन्दू आंसू का नाम देंगे, या मुस्लिम आंसू का अथवा ईसाई आंसू का ? ये आंसू मानव के बच्चे के आंसू हैं।

सूर्य सब जगहों को, चाहे झोपड़ी हो या महल, हिन्दू का निवास हो या मुस्लिम का, अथवा ईसाई का, प्रकाशमय कर देता है। गुलाब का फूल सब को समान रूप से सुगंध देता है, चाहे वह हिन्दू हो या मुस्लिम, ईसाई हो या यहूदी। यदि प्रकृति सब के प्रति समान व्यवहार करती है तो मनुष्य क्यों भेद भाव करता है ? विलियम वर्ड्सवर्थ, अंग्रेज़ी साहित्य का विख्यात कवि, इसी विचार को दुख भरे शब्दों मे व्यक्त करता है :

यदि स्वर्ग से यह विश्वास भेजा जाए
यदि प्रकृति की यही पवित्र योजना हो
तो क्या मेरे लिए इस पर दुख व्यक्त करने का कारण नहीं
कि मनुष्य ने मनुष्य के साथ क्या अत्याचार किया है ?

– विलियम वर्ड्सवर्थ

यदि पक्षी झुंड बना कर इकट्ठे उड़ते हैं, भेड़ें एक साथ गल्ले में चलती हैं, गाएं इकट्ठी चरने जाती हैं, तो मानव क्यों इकट्ठे नहीं रह सकते ?

इस ब्रह्माण्ड के स्रष्टा ने इस सुन्दर धरती का निर्माण किया है और साथ ही प्रकृति की सुन्दर दृश्यावली प्रस्तुत की है और मानव के उपभोग के लिए सुंदर उपहार दिए हैं। परन्तु इस आकर्षक धरती पर अपने समस्त जीवन का आनन्दोपभोग न करते हुए मनुष्यों ने पूजा की भिन्न-भिन्न पद्धतियों के तुच्छ बहाने के आधार पर सर्वत्र अव्यवस्था, संघर्ष, विवाद, विपत्ति और संकट उत्पन्न कर दिए हैं। वे नहीं जानते कि पूजा का अर्थ क्या है। पूजा कर्मकाण्ड नहीं है, न ही किसी सम्प्रदाय द्वारा निर्धारित

शब्दावली का उच्चारण मात्र है। हिन्दू दर्शन के अनुसार पूजा का अर्थ है प्रेम और वह प्रेम केवल मनुष्यों के लिए नहीं वरन् पशू और पक्षियों के प्रति भी। **सैमुएल कालरिज** इसी भाव को अपनी कविता 'ऐंशियंट मैरीनर' में इस प्रकार व्यक्त करते हैं :

वही अच्छी पूजा करता है, जो अच्छा प्रेम करता है
दोनों से, मनुष्य, पक्षी और पशू से भी
वह सब से अच्छी पूजा करता है, जो सब से अच्छा प्रेम करता है,
सभी प्राणियों से, चाहे वे बड़े हैं या छोटे
क्योंकि प्यारा ईश्वर जो हम से प्रेम करता है,
उसने सभी का सृजन किया
और वह सभी से समान प्रेम करता है।

– सैमुएल कालरिज

वेद इस बात पर बल देते हैं कि सभी मनुष्यों, पक्षियों, पशुओं और कीड़े मकौड़ों की आत्माओं को समान रूप से दैवी आभा प्राप्त है। कोई भी ईश्वरीय दिव्यता, भव्यता और महानता से वंचित नहीं है। **सभी प्राणी सर्वोच्च परमात्मा से उत्पन्न होते हैं, जो इन सब बच्चों का पिता है। यदि ऐसा है तो एक दूसरे से घृणा क्यों ? ईश्वर सब प्राणियों में व्याप्त और विद्यमान है, चाहे वे उच्च हैं या नीच, भिखारी हैं या राजकुमार, पापी है या पुण्यात्मा।**

सऽओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु।

– यजुर्वेद ३२/८

सर्वव्यापक ईश्वर,
सब प्राणियों में विद्यमान है
अन्दर भी और बाहर भी।

– यजुर्वेद ३२/८

जो व्यक्ति सर्वशक्तिमान प्रभु की सर्वव्यापकता के उपरोक्त स्वर्णिम सिद्धांत को समझता है और धरती पर विद्यमान सभी प्राणियों में ईश्वर की झलक को देखता है, अनुभव करता है, वह किसी प्राणी से कभी घृणा

नहीं करता। जिसकी दृष्टि सभी लोगों को समान भाई के रूप में देखती है, जिनमें वही दिव्य स्फुलिंग है, जिसे वह अपने अन्दर अनुभव करता है, वह द्वेष, घृणा और धर्मांधता से मुक्त है। यजुर्वेद का निम्नलिखित मन्त्र इस भाव को स्पष्ट करता है :

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न वि चिकित्सति।।

– यजुर्वेद ४०/६

जो सभी प्राणियों को
अपने अन्दर देखता है
और सभी प्राणियों में
अपना ही प्रतिबिम्ब देखता है
वह किसी से कभी घृणा नहीं करता।

– यजुर्वेद ४०/६

इस प्रकार हिन्दू दर्शन (वैदिक दर्शन) समानता और भ्रातृभाव के सिद्धांतों पर आधारित है। इसका आधार है सार्वभौम भ्रातृभाव–केवल हिन्दुओं का भ्रातृभाव नहीं वरन् धरती पर सभी मानवों के प्रति भ्रातृभाव क्योंकि सब के हृदयों में सर्वशक्तिमान ईश्वर का निवास है :

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।

– गीता १८/६१

ए अर्जुन
परमेश्वर का निवास
सभी प्राणियों के हृदय में है

– गीता १८/६१

प्रोफ़ेसर हीरेन, पश्चिम का महान विद्वान, लिखता है :

"वेद अकेले ही अपनी एकाकी भव्यता के साथ,
मानवता को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर करने के
लिए दिव्य आभा से प्रकाशित प्रकाश स्तम्भ के

रूप से सेवारत है।"

– प्रोफ़ेसर हीरेन

लार्ड मार्ले स्पष्ट शब्दों में यह स्वीकार करते हैं :

"जो वेदों में उपलब्ध है वह अन्यत्र कहीं नहीं।"

– लार्ड मार्ले

"राष्ट्र की आत्मा धर्म में निहित है, यदि धर्म नष्ट हो जाए तो राष्ट्र का अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है। जो व्यक्ति धर्म त्याग देता है, वह राष्ट्र के प्रति विश्वासघात करता है। धर्म सर्वोपरि है, इसी लिए हमारे राज्य का आदर्श धर्म राज्य है।...मनुष्यों का कल्याण किस बात में है, इसका निर्णय केवल धर्म कर सकता है। इस लिए लोकतंत्रात्मक राज्य अर्थात् जन राज्य का आधार भी धर्म अर्थात् धर्म राज्य होना चाहिए।

पश्चिम में पंथ के नाम पर लोगों पर अत्याचार ढाए गए, घोर संघर्ष हुए और युद्ध लड़े गए। इन सब कुकर्मों को धर्म की नकारात्मक सूची में सम्मिलित किया गया। हम जानते हैं कि धर्म के नाम पर भी युद्ध लड़े गए थे। परन्तु पंथ के युद्ध और धर्म के युद्ध दोनों एक दूसरे से पृथक हैं। पंथ का अर्थ सम्प्रदाय है, इसका अर्थ धर्म नहीं है। धर्म की धारणा व्यापक है। इसका सम्बंध जीवन के सभी पक्षों से है। इसके द्वारा समाज का पोषण होता है। इतना ही नहीं यह समस्त विश्व को सहारा देता है। जो सहारा दे, वही धर्म है।"

– पंडित दीन दयाल उपाध्याय

अध्याय ११

बाइबिल का ईश्वर पशुओं की बलि मांगता है, वेद का ईश्वर गूंगे पशुओं की रक्षा करता है

१. बाइबिल का ईश्वर पशू बलि मांगता है

(एक) बाइबिल का ईश्वर मूसा के द्वारा इस्राईल के बच्चों से पशुओं की बलि मांगता है

१३८. "१. प्रभु ने मूसा को बुलाया और दर्शन-कक्ष से उस से यह कहा, 'इस्राएलियों से यह कहो:"

– लेवी ग्रन्थ, १/१

१३९. "२. जब तुम में कोई प्रभु को चढ़ावा अर्पित करना चाहे, तो वह ढोरों या भेड़-बकरियों के झुण्डों से कोई पशु ले

आ सकता है।"

– *लेवी ग्रन्थ, १/२*

(दो) बैल का रक्त वेदी पर छिड़काना

१४०. "५. तब वह प्रभु के सामने बछड़े का वध करे और याजक, हारून के पुत्र उसका रक्त चढ़ायें। वे उसका रक्त दर्शन-कक्ष के द्वार पर वेदी के चारों ओर छिड़कें।"

– *लेवी ग्रन्थ, १/५*

२. वेद का ईश्वर गूंगे पशुओं की रक्षा करता है

पवित्र वेद यह शिक्षा देते हैं कि सभी मनुष्य, पक्षी, पशू और कीड़े मकौड़े एक ही ईश्वरीय आभा से सम्पन्न हैं। कोई भी उस दिव्य ज्योति से वंचित नहीं है। सभी मनुष्य, पक्षी, पशू उसी एक परमात्मा से उत्पन्न होते हैं, जो सब बच्चों का पिता है। यदि ऐसा है, तो क्यों गूंगे पशुओं का वध किया जाए जो मनुष्यों के भाई बहन हैं ?

मनुष्य इतना दुर्बल और क्षीण प्राणी है कि वह किसी को जीवन प्रदान नहीं कर सकता। जो किसी को जीवन दे नहीं सकता, उसे जीवन लेने का अधिकार नहीं। अवरुद्ध जिह्वा वाले गूंगे पशू, जो मनुष्य के हर सुख दुःख में सदा साथ देने वाले मित्र और विश्वसनीय साथी हैं, उनके प्रति विश्वासघाती और कृतघ्न, मांस भक्षी लोग केवल अपनी उदर पूर्ति के लिए और बलि के प्रति अंधविश्वास रखने वाले, ईश्वर की वेदी पर बलि चढ़ाने के लिए, उनका वध कर देते हैं। ईश्वर जो सभी प्राणियों का पिता है, वह कैसे अपने बच्चों की बलि और हत्या चाहेगा ? वह जो पशू बलि चाहता है सच्चा ईश्वर नहीं हो सकता।

वेद का ईश्वर धरती के सब मनुष्यों को उपदेश देता है कि वे न केवल मनुष्यों से प्रेम करें वरन् पक्षियों और पशुओं से भी प्रेम करें। निर्दोष गूंगे पशुओं का वध करना अत्यंत घोर पाप है, जिसे किसी भी

परिस्थिति में क्षमा नहीं किया जा सकता।

अनागोहत्या वै भीमा।

– अथर्ववेद १०/१/२९

यह घोरतम पाप है
कि निर्दोष पशुओं का वध किया जाए।

– अथर्ववेद १०/१/२९

"गाय भारत की अर्थव्यवस्था का आधार स्तम्भ है।"

– पंडित दीन दयाल उपाध्याय

"गाय की सुरक्षा के बिना, स्वराज (अपना शासन) मेरे लिए अर्थहीन है।"

– मोहनदास कर्मचंद गांधी

"स्वतंत्रता का मूल्य शून्य है, यदि राष्ट्र का प्रत्येक क्षेत्र अध्यात्म और हिंदुत्व के आदर्शों के स्फुरण से वंचित हो।"

– डा. केशवराव बलीराम हेडगेवार

अध्याय १२

वेदों में शाकाहार सिद्धांत
बाइबिल में मांसाहार

१. वेदों में शाकाहार सिद्धांत

शाकाहार सिद्धांत वह केन्द्र बिंदु है जिस पर वैदिक दर्शन आधारित है। वेदों के अनुसार मांसाहार पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया है। यह न केवल अप्राकृतिक भोजन है वरन् शरीर और आत्मा के लिए हानिकर भी है।

मनुष्य अपनी प्रकृति से ही शाकाहारी है। वह शाकाहारी और तृणभोजी है, मांसाहारी नहीं। मांसाहार उसकी प्रकृति और शरीर के लिए उपयुक्त नहीं है। वे जीव जो मांसाहारी हैं, जैसे शेर, भेड़िया आदि, उन्हें प्रकृति ने तीखे दांत और नाखुन दिए हैं ताकि वे तीखे नाखुनों से मांस को तोड़ सकें और तीखे दांतों से उसे काट सकें। परन्तु मनुष्य के दांत तीखे नहीं हैं जो फल, अनाज और सब्ज़ियां खाने के लिए उपयुक्त हैं। मानव की अन्तड़ियां मांसाहारी पशुओं की अंतड़ियों से भिन्न प्रकार की

हैं। मनुष्य की अंतड़ियां पशु के मांस को अच्छी प्रकार पचा नहीं सकतीं। उन लोगों की अंतड़ियां जो मांसाहारी हैं प्रायः दुर्बल होती हैं। जिन लोगों को मांस खाने की लत पड़ चुकी है, वे प्रायः कैंसर, गैस से उत्पन्न व्रण (नासूर), पक्षाघात (लकवा), उच्च रक्त चाप, अपाचन, गैस रोग, हृदय रोग, गुर्दे का रोग आदि से पीड़ित रहते हैं। मांसाहारियों की आयु लम्बी नहीं होती। वध किए गए पशुओं के शरीर से लगे जीवाणुओं को मांसाहारी अपने शरीर में ग्रहण कर लेते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप वे उन रोगों से पीड़ित हो जाते हैं जो रोग वध किए गए पशुओं को होते हैं। पशुओं में और विशेष रूप से घरेलू पशुओं में क्षय रोग सामान्यतया बहुत अधिक पाया जाता है। इसके अतिरिक्त पशु के शरीर में से न निकला हुआ मल होता है जो मांस के आहार में मिल जाता है। जब पशु को वध किया जाता है तो सड़ते हुए कोषाणु और आंशिक रूप से मोरचा युक्त मल जो सामान्यतया रक्त और मांस पेशियों के तंतुओं में विद्यमान रहता है, वह मांस में बचा रहता है। इसके अतिरिक्त वध किए गए पशु में मलोत्सादन और रक्त संचार अकस्मात रुक जाते हैं, तो मांस पेशियों के तंतु जो बाद में भी कई घंटे जीवित रहते हैं, पशु के शरीर में विष उत्पन्न करते रहते हैं और क्योंकि उसे बाहर निकालने के लिए रक्त संचार नहीं होता, विष, मांस में व्याप्त हो जाता है जिसे मनुष्य खाता है। इस प्रकार मनुष्य मांस खाने से रोगों को आमंत्रित करता है।

आहार का मनुष्य के स्वभाव पर बहुत प्रभाव पड़ता है। मांसाहार मनुष्य को कामुक, प्रतिशोधी, क्रोधी, क्रूर, क्रोधोन्मत्त, भयंकर, कठोर हृदय, असभ्य, निर्दय और बर्बर बना देता है, जबकि शाकाहारी भोजन उसे दयालु, शांत, सहानुभूतिशील, आत्म संतुष्ट, कोमल, गंभीर, शिष्टाचारी और धीर बना देता है। मांसाहारी का हृदय पत्थर की तरह कठोर होता है, जबकि शाकाहारी का हृदय मख़मल जैसा कोमल होता है। मांसाहारी का मस्तिष्क आग की लपटों भरी भट्ठी के समान होता है। शाकाहारी का मस्तिष्क ऐसे झरने के समान है, जिसमें से ठंडे जल की फुआर पड़ती है। मांसाहारी हिंसा, विनाश और विध्वंस में विश्वास रखता है, जबकि शाकाहारी अहिंसा, निर्माण और सृजन में विश्वास रखता है। उसके हृदय

में अपने साथी सभी प्राणियों के प्रति निस्वार्थ एवं उत्कट प्रेम की मधुरता होती है।

जो उन अवरुद्ध जिह्वा और अवरुद्ध वाणी वाले पशुओं का वध करता है, जो सुख और दु:ख दोनों परिस्थितियों में मनुष्यों के विश्वसनीय मित्र रहते हैं, केवल इसलिए कि उनके मांस से अपने उदर की पूर्ति करता है, वह अत्यंत घोर पाप करता है।

अनागोहत्या वै भीमा कृत्ये मा नो गामश्वं पुरुषं वधीः।

– अथर्ववेद १०/१/२९

ओ हिंसक मानव
निर्दोष प्राणियों को मारना
अत्यंत घोर पाप कर्म है
हमारी गायों,
हमारे घोड़ों और पशुओं को मत मार।

– अथर्ववेद १०/१/२९

२. बाइबिल में मांसाहार

पवित्र बाइबिल मांसाहार पर प्रतिबंध नहीं लगाता। बाइबिल के अनुसार मनुष्य उन पशुओं का मांस खा सकता है, जिनके पैर फटे हुए (छेद या दरार वाले) हैं और जो जुगाली करते हैं।

१४१. "३. जो पशु फटे खुर वाले और पागुर करने वाले हैं, उन्हें तुम खा सकते हो।"

– लेवी ग्रन्थ, ११/३

सुअर के पांव फटे हुए हैं, परन्तु वह जुगाली नहीं करता, इस लिए उसके मांस खाने पर प्रतिबंध है।

१४२. "७. तुम सूअर को अशुद्ध मानोगे : उसके खुर तो फटे होते, परन्तु वह पागुर नहीं करता।"

– लेवी ग्रन्थ, ११/७

जल में रहने वाले पशुओं में से जो पशु पंख और शल्क (छिलके) रखता है, उसका मांस खाया जा सकता है :

१४३. "९. सब जल-जन्तुओं में तुम इन को खा सकते हो : तुम उन सब को खा सकते हो, जो पंख और शल्क वाले हैं-चाहे वे समुद्र में रहते हों, चाहे नदियों में।"

– लेवी ग्रन्थ, ११/९

पक्षियों और रेंगने वाले पशुओं में से उन पक्षियों और चार पांव सहित रेंगने वाले पशुओं को खाया जा सकता है जो अपनी टांगों और पैरों से धरती पर उछल सकते हैं :

१४४. "२१. परन्तु तुम उन पंख और चार पाँव वाले कीड़ों को खा सकते हो, जिनके पृथ्वी पर कूदने के पैर होते हैं।"

– लेवी ग्रन्थ, ११/२१

"जो लोग पशुओं का वध करते हैं, उन्हें समस्त मानव जाति के शत्रु समझना चाहिए।"

– स्वामी दयानंद सरस्वती

"संस्कृति की प्रकृति मूलतः सामाजिक है। संस्कृति के द्वारा ही समाज की आत्मा अपने आपको अभिव्यक्त करती है। धर्म माध्यम है जिसके द्वारा संस्कृति कार्यशील होती है।"

– पंडित दीन दयाल उपाध्याय

अध्याय १३

बाइबिल में मनुष्य की बलि
वेदों में अहिंसा

१. बाइबिल में मनुष्य की बलि

(एक) एक बार बलि हेतु भेंट किए गए मनुष्यों आदि का निश्चय ही वध किया जाएगा

बाइबिल का ईश्वर मनुष्य की बलि हेतु भेंट के सम्बंध में पवित्र बाइबिल में इन शब्दों में स्पष्ट विधान प्रस्तुत करता है, अर्थात् ईश्वर को जो कुछ भी भेंट किया जाए चाहे वह मनुष्य हो या पशू या भूमि, उसे न तो बेचा जा सकता है, न छुड़ाया जा सकता है और न ही वापस लिया जा सकता है। वह तो ईश्वर का हो गया। यदि कोई मनुष्य ईश्वर को भेंट चढ़ाया जाता है तो जो व्यक्ति बलि के लिए समर्पित किया गया उसे न वापस मांगा जा सकता है, न लौटाया जा सकता है, न धन दे कर छुड़ाया जा सकता है, न अन्यथा। उसे निश्चित रूप से वेदी पर बलि चढ़ा दिया जाएगा, दूसरे शब्दों में उसे निश्चित रूप में ईश्वर के प्रति भेंट के रूप

में मार दिया जाएगा। निम्नलिखित दो पद पठनीय हैं :

१४५. "२८. परन्तु जो कुछ प्रभु को पूर्ण-समर्पित किया जाता है, वह न तो बेचा और न छुड़ाया जा सकता है-चाहे वह मनुष्य हो, चाहे पशु या पैतृक खेत हो। जो कुछ प्रभु को पूर्ण रूप से समर्पित है, वह परमपवित्र है और प्रभु का है।" *– लेवी ग्रन्थ, २७/२८*

१४६. "२९. जो मनुष्य पूर्ण-समर्पित है, वह नहीं छुड़ाया जा सकता। उसका वध करना है।"
– लेवी ग्रन्थ, २७/२९

बाइबिल में उल्लिखित रक्त बलि से, **जार्ज बर्नार्ड शा** जो विख्यात नाटककार, आलोचक और निबंधकार थे, तथा जिन्हें १९२५ में साहित्य के लिए नोबल पुरुस्कार दिया गया था, इतना क्रुद्ध हो गये कि उन्होंने निधड़क घोषणा कर दी कि बाइबिल को धरती में गाड़ देना चाहिए और प्रार्थना पुस्तक को जला देना चाहिए, क्योंकि यह रक्त बलि के उल्लेख से इस तरह भरी पड़ी है कि उसका संशोधन सर्वथा असंभव है। वे कहते हैं :

"उन्नीसवीं शताब्दी का अंत समीप ही था जब ***स्टयूअर्ट हेडलाम,*** *जो एक पादरी थे, चर्च के अपने वरिष्ठ अधिकारियों के हाथों संकट में फंस गये, क्योंकि उन्होंने यह कह दिया कि चर्च (ईसाई संस्था) के लिए आवश्यक तो यह है कि वह बाइबिल को सौ वर्ष के लिए धरती में गाड़ दे और फिर यह खोज की जाय कि वास्तव में उसमें क्या लिखा है। मैं इससे सहमत नहीं कि केवल बाइबिल को गाड़ दिया जाए, हमें प्रार्थना पुस्तक को भी जला देना चाहिए। यह रक्त बलि के उल्लेख से*

इतना अधिक भरी पड़ी है कि इसका संशोधन सर्वथा असंभव है, और इस में बार-बार यह उल्लेख अर्थात् 'ईसा मसीह हमारे प्रभु की ओर से' सर्वथा असत्य कथन है, इसलिए अधिकाधिक असहणीय हो जाता है।"[८८]

– जार्ज बर्नार्ड शा

विश्व के शिक्षित ईसाइयों से मेरी सच्चे हृदय से यह प्रार्थना है कि वे ऊपर लिखित मनुष्य बलि से सम्बंधित दैवी विधान पर गंभीरता पूर्वक विचार करें और अन्तर्मन से अपना स्पष्ट मत व्यक्त करें कि क्या बाइबिल में वर्णित ये पद उन्हें धार्मिक बनाते हैं या अधार्मिक। **जार्ज बर्नार्ड शा** ने इस सम्बंध में स्पष्ट भाव से अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया है :

"बाइबिल में वर्णित विधान पक्ष हमारे लिए सहायक नहीं है, यह बाधाकारक है और हमें संकटकारी रूप में धर्महीन बनाता है।"[८९]

– जार्ज बर्नार्ड शा

(दो) सभी पहलौठे शिशुओं की अग्नि में आहुति देना

पवित्र बाइबिल के निम्न पद में पहलौठे शिशुओं की अग्नि में आहुति का उल्लेख है :

१४७. "२६. मैंने उन को स्वयं उनके द्वारा प्रदत्त बलियों, अपने पहलौठों की अग्नि में आहुति द्वारा दूषित कर दिया, जिससे वे

---

८८. **जार्ज बर्नार्ड शा :** *'एवरीबाडीज़ पोलिटिकल व्हाट इज़ व्हाट ?'* (हर किसी के लिए राजनैतिक दृष्टिकोण), अध्याय ४३ 'रिलिजस समरी' (धार्मिक सारांश), लंदन, १९५०, पृष्ठ ३५८

८९. पूर्वोक्त

आतंकित हो कर यह समझें कि मैं ही प्रभु हूँ। *– एज़ेकिएल का ग्रन्थ, २०/२६*

यह पढ़ कर तो हृदय में कंपकंपी उत्पन्न हो जाती है कि पहलौठों को बाइबिल के ईश्वर को भेंट चढ़ाने के लिए अग्नि में फैंक दिया था।

(तीन) बछड़ों और मनुष्य के पहलौठों की बलि

पवित्र बाइबिल के निम्नलिखित दो पदों में एक वर्ष के बछड़ों, हज़ारों मेढ़ों और मनुष्य के पहलौठों की, "आत्मा के पाप" के प्रायश्चित हेतु अग्नि दाह द्वारा बलि का उल्लेख मिलता है :

१४८. **"६. मैं क्या ले कर प्रभु के सामने आऊँगा और सर्वोच्च ईश्वर को दण्डवत् करूँगा? क्या मैं होम ले कर उसके सामने आऊँगा? अथवा एक वर्ष के बछड़ों को?"** *– मीकाह का ग्रन्थ, ६/६*

१४९. **"७. क्या ईश्वर हज़ारों मेढ़ों से प्रसन्न होगा? अथवा तेल की कोटि-कोटि धाराओं से? क्या मैं अपने अपराध के प्रायश्चित्तस्वरूप अपने पहलौठे को, अपने पाप के बदले में अपने शरीर के फल को अर्पित करूँगा?"** *– मीकाह का ग्रन्थ, ६/७*

(चार) यिफ़्तह ने अपनी इकलौती बेटी को जला कर ईश्वर को भेंट चढ़ा दिया

युद्ध के विजयता **यिफ़्तह** ने बाइबिल के ईश्वर के विधान का पालन करते हुए अपनी बेटी को जला दिया। जब यिफ़्तह अपने घर मिज़्पेह में वापिस आया, उसकी बेटी डफ़ली बजाती और नाचती हुई, उसका स्वागत करने बाहर आई। वह उसकी इकलौती सन्तान थी। जब

यिफ़्तह ने उसे देखा तो घोर व्यथा में अपने कपड़े फाड़ डाले और उससे कहा, "हाय ! बेटी ! तुम ने मुझे संकट में डाल दिया है। मैं ने प्रभु को वचन दिया है, मैं उसे वापस नहीं ले सकता।" बेटी ने अपने पिता को उत्तर दिया, "यदि आप प्रभु को वचन दे चुके हैं तो मेरे साथ वही कीजिए जो आपने ईश्वर को वचन दिया है। अर्थात् अपने ईश्वर को मेरी भेंट चढ़ाने के अपने वचन को पूरा कीजिए।" इस सम्बंध में यहां दो पद प्रस्तुत हैं :

१५०. "३५. यिफ़्तह ने उसे देखते ही अपने वस्त्र फाड़ कर कहा, 'हाय ! बेटी ! तुमने मुझे मारा है ! तुमने मुझे महान संकट में डाल दिया है। मैं प्रभु को वचन दे चुका हूँ। मैं उसे वापस नहीं ले सकता।' "

– न्यायकर्ताओं का ग्रन्थ, ११/३५

१५१. "३६. उसने उत्तर दिया, 'पिता जी ! आप प्रभु को वचन दे चुके हैं। आप मेरे विषय में अपनी मन्नत पूरी कीजिए,' "

– न्यायकर्ताओं का ग्रन्थ, ११/३६

फ़्रेडरिक नीत्शे, जर्मन के दार्शनिक, उपरोक्त पदों में ईसाई मत की अभिव्यक्ति के सम्बंध में अपना मत इस प्रकार व्यक्त करते हैं :

"या तो हम अपने धर्म के कारण मर जाएंगें या फिर हमारे कारण हमारा धर्म मर जाएगा।"[९०]

– फ़्रेडरिक नीत्शे

(पांच) दाऊद ने अकाल को रोक़ने के लिए साऊल के सात बेटों को बलि चढ़ा दिया

दाऊद के राज्यकाल में लगातार तीन वर्ष तक अकाल पड़ा। दाऊद ने प्रभु से अकाल का कारण पूछा। प्रभु ने उत्तर दिया कि साऊल के

---

९०. **विलियम हब्बेन :** *'फ़ोर प्राफ़ेटस अफ़ अवर डेस्टिनी'* (हमारे भाग्य के चार पैग़म्बर), दी मैकमिलन कं., न्यू यार्क, १९५४, पृष्ठ १०४

अतिरिक्त और कोई इस अकाल के लिए उत्तरदायी नहीं है, क्योंकि उसी ने गिबओनवासियों का वध किया था। राजा दाऊद ने साऊल के सात बच्चे गिबओनवासियों के हाथ सौंप दिए और उन्होंने प्रभु के सामने पहाड़ी पर उन्हें लटका दिया...उसके पश्चात् ईश्वर ने अकाल को रोक दिया और उस देश को सुख एवं कल्याण प्रदान किया। इस सम्बंध में पाठकों से प्रार्थना है कि वे **समूएल** के दूसरे ग्रन्थ के अध्याय २१ के सारे १४ पद पढ़ें। मैं यहां केवल तीन पद प्रस्तुत कर रहा हूँ :

१५२. "१. दाऊद के राज्यकाल में लगातार तीन साल तक अकाल पड़ा। दाऊद ने प्रभु से परामर्श किया। प्रभु ने कहा, 'साऊल और उसके रक्तपिपासी कुटुम्ब के कारण यह अकाल पड़ा, क्योंकि उसने गिबओनवासियों का वध किया है।' "

– समूएल का दूसरा ग्रन्थ, २१/१

१५३. "६. हमें उस आदमी के वंशजों में सात व्यक्ति दिये जायें, जिससे हम उन्हें साऊल के गिबआ में, प्रभु की पहाड़ी पर, प्रभु के सामने बल्ला गाड कर लटका सकें।' राजा ने उत्तर दिया, 'मैं उन्हें तुम को दूँगा।' "

– समूएल का दूसरा ग्रन्थ, २१/६

१५४. "९. गिबओनवासियों को दे दिया और उन्होंने प्रभु के सामने पहाड़ी पर उन्हें बल्ले पर लटका दिया। इस प्रकार वे सातों एक साथ मर गये। फ़सल के प्रारम्भिक दिनों में, जब जौ की फ़सल प्रारम्भ हुई थी, वे मार डाले गये।"

– समूएल का दूसरा ग्रन्थ, २१/९

यहाँ एक प्रश्न उत्पन्न होता है : उन सात निर्दोष बच्चों ने क्या

अपराध किया था, कि उन्हें मार कर लटका दिया गया ? क्या अकाल रोकने के लिए उन्हें मार डालना न्यायोचित था ?

(छः) बाइबिल के ईश्वर ने इब्राहीम को आदेश दिया कि वह अपने इकलौते बेटे को बलि चढ़ा दे

बाइबिल के ईश्वर ने **इब्राहीम** को आदेश दिया कि वह अपने इकलौते बेटे **इसहाक** को बलि चढ़ा दे और इब्राहीम चाकू ले कर अपने बेटे का वध करने के लिए तैयार हो गया। वह आदेश वापस ले लिया गया। परन्तु उसके पश्चात् पवित्र बाइबिल के पाठ से प्रेरित होकर सैंकड़ों भोलेभाले लोगों ने अपने निर्दोष बच्चों का वध किया है। मैं यहां तीन प्रकरण संगत पद प्रस्तुत करता हूँ :

१५५. "२. ईश्वर ने कहा, 'अपने पुत्र को, अपने एकलौते को, परमप्रिय इसहाक को साथ ले जा कर मोरिया देश जाओ। वहाँ, जिस पहाड़ पर मैं तुम्हें बताऊँगा, उसे बलि चढ़ा देना।' " *– उत्पत्ति ग्रन्थ, २२/२*

१५६. "१०. तब इब्राहीम ने अपने पुत्र को बलि चढ़ाने के लिए हाथ बढ़ा कर छुरा उठा लिया।" *– उत्पत्ति ग्रन्थ, २२/१०*

१५७. "१३. इब्राहीम ने आँखें ऊपर उठायीं और सींगों से झाड़ी में फँसे हुए एक मेढ़े को देखा। इब्राहीम ने जा कर मेढ़े को पकड़ लिया और उसे अपने पुत्र के बदले बलि चढ़ा दिया।" *– उत्पत्ति ग्रन्थ, २२/१३*

क्या निर्दोष गूंगे मेढ़े की वेदी पर बलि चढ़ाने से ईश्वर, जो न केवल मनुष्यों वरन् पशुओं के भी दयालु पिता हैं, प्रसन्न हो जाएंगे ?

२. वेदों में अहिंसा

वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) की आधारभूत धुरी अहिंसा है। 'अहिंसा परमो धर्मः' वैदिक दर्शन का आदर्श वचन है। पवित्र वेद हिंसा का अनुमोदन नहीं करते। वेदी पर अथवा अग्नि में मनुष्य या पशू की बलि चढ़ाना, वैदिक धर्म में घिनौना और घृणास्पद माना जाता है। वैदिक दर्शन करुणा, दया, सेवा और सहानुभूति पर आधारित है। वैदिक भक्त के हृदय की हर धड़कन में अपने समस्त सहचर प्राणियों के लिए निस्वार्थ प्रेम की मधुर धारा बहती है। वह कभी स्वप्न में भी नहीं सोच सकता कि वह किसी भी प्राणी को चाहे वह मनुष्य हो या पशू, ईश्वर की वेदी पर भेंट चढ़ाने के लिए वध करे। वैदिक ईश्वर इतना दयालु है कि वह मनुष्य अथवा पशु की बलि स्वीकार नहीं कर सकता। सच्ची प्रार्थना अपने सभी सहचर प्राणियों, चाहे वे मनुष्य हों, पक्षी हों अथवा पशु, के प्रति प्रेम भाव में है। वह व्यक्ति, जो अपने संगी प्राणियों से प्रेम और उनकी सेवा करता है, वही ईश्वर की सेवा करता है क्योंकि ईश्वर सभी के हृदय में वास करता है। किसी का भी, जो इस धरती पर सांस लेता हो, वध कर देना परमेश्वर का वध करने के समान है, यद्यपि वह अनश्वर और अपराजेय है।

जीवन जीने का अर्थ है कुछ देना...क्या देना ? प्रेम। जीना प्रेम करने का ही दूसरा नाम है। मनुष्य से प्रेम करना, ईश्वर से प्रेम करना है। जहां प्रेम और करुणा है वहीं ईश्वर का वास है। यदि आप ईश्वर से दया और प्रेम की आशा करते हैं तो उसके समस्त मानवों से, चाहे वे आस्तिक हों या नास्तिक, काले हों या भूरे, धनी हों या दरिद्र, प्रेम करो। रहस्यवादी कवि **विलियम ब्लेक** अपनी कविता "दी डिवाईन इमेज' (ईश्वरीय प्रतिमूर्ति) में इसी भाव को इस प्रकार व्यक्त करते हैं :

"और सभी को मानव से प्रेम करना चाहिए
चाहे वह मूर्ति पूजक हो, तुर्क हो या यहूदी
जहां दया, प्रेम और करुणा का वास है
वहीं ईश्वर का भी वास है।"

– विलियम ब्लेक

वैदिक (हिन्दू) दर्शन के अनुसार हिंसा और युद्ध नहीं, मानव कल्याण ही धर्म का अन्तिम लक्ष्य है। यही कारण है कि हिन्दू परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे धरती के समस्त मनुष्यों ही नहीं वरन् समस्त प्राणियों का कल्याण करें।

स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः।

– अथर्ववेद १/३१/४

सभी मनुष्यों, पशुओं और पक्षियों को
शांति और समृद्धि का वरदान प्राप्त हो।

– अथर्ववेद १/३१/४

वैदिक धर्म में मनुष्यों और पशुओं के वध पर पूर्ण प्रतिबंध है। इसे अत्यंत घृणित और अक्षम्य अपराध माना जाता है। इसी लिए अथर्ववेद में गायों, पशुओं और मनुष्यों के बधिक को कठोर चेतावनी दी गई है।

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा॥

– अथर्ववेद, १/१६/४

यदि तुम वध करते हो
हमारी गायों, घोड़ों और मनुष्यों का
तो हम सीसे की गोली से
तुम्हारा वध करेंगे
ताकि तुम हमारे
वीरों का वध न करो।

– अथर्ववेद, १/१६/४

"सारी राजनीति का हिन्दूकरण कर दो, और हिन्दुत्व का सैनिकीकरण कर दो।"

– वीर सावरकर

अध्याय १४

बाइबिल में नरमांस-भक्षण की प्रवृत्ति वेद में पवित्रता

१. बाइबिल में नरमांस-भक्षण

नरमांस-भक्षण से अभिप्राय है मनुष्य का मांस खाने की प्रथा। हम पवित्र बाइबिल में नरमांस-भक्षण की प्रवृत्ति पाते हैं। निम्नलिखित सात पद ध्यान पूर्वक पढ़िए :

१५८. "९. मैं उन्हें उनके पुत्र-पुत्रियों का मांस खिलाऊँगा। उनके शत्रु और उनके प्राणों के गाहक उन्हें घेर कर इतना पीड़ित करेंगे कि वे एक-दूसरे को फाड़ खायेंगे।

– यिरमियाह का ग्रन्थ, १९/९

१५९. "१०. करुणामयी नारियों ने अपने ही हाथ से अपने बच्चों को उबाला। हमारे देश की

पुत्री के विनाश के समय वे उनका आहार बन गये।"

– शोकगीत, ४/१०

१६०. "२८. फिर राजा ने उस से पूछा, 'तुम क्या चाहती हो ?' उसने उत्तर दिया, 'एक स्त्री ने मुझ से कहा कि तुम अपना पुत्र दो, जिससे हम आज उसे खायें और कल मेरे पुत्र को खायेंगे।' "

– राजाओं का दूसरा ग्रन्थ, ६/२८

१६१. "२९. इसलिए हम दोनों ने मेरे पुत्र को पकाया और खाया। दूसरे दिन मैंने उससे कहा कि अब तुम अपना पुत्र दो, उसे हम खायें, तो उसने अपने पुत्र को छिपा लिया।"

– राजाओं का दूसरा ग्रन्थ, ६/२९

१६२. "५३. इसलिए ईसा ने उन से कहा, 'मैं तुम लोगों से यह कहता हूँ-यदि तुम मानव पुत्र का मांस नहीं खाओगे और उसका रक्त नहीं पियोगे, तो तुम्हें जीवन प्राप्त नहीं होगा।' "

– सन्त योहन, ६/५३

१६३. "५३. अपने शत्रुओं द्वारा डाले हुए घेरे से तंग हो कर तुम प्रभु की दी हुई अपनी सन्तति, अर्थात् अपने ही पुत्र-पुत्रियों का मांस खाओगे।"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, २८/५३

१६४. "२९. तब तुम अपने पुत्रों और अपनी पुत्रियों का मांस खाओगे।

– लेवी ग्रन्थ, २६/२९

२. वेद में पवित्रता

"प्रकृति की ओर लौटो" वेदों का आदर्श वाक्य है। वेद हमें शिक्षा देते हैं कि प्राकृतिक भोजन करो, प्राकृतिक विचार रखो, और प्राकृतिक कृत्य करो। अप्राकृतिक भोजन से अप्राकृतिक विचार उत्पन्न होते हैं। अप्राकृतिक विचारों से अप्राकृतिक कृत्यों की प्रवृत्ति होती है। अतः पवित्र वेद हमें प्राकृतिक जीवन बिताने के लिए शिक्षा देते हैं।

सभी घृणित कार्य, कुत्सित और घिनौने कृत्य और जघन्य अपराध कुत्सित और पाप पूर्ण विचारों का परिणाम हैं, जिनकी उत्पत्ति मन से होती है। मन तो एक घोड़े के समान है जिस पर सवार मनुष्य को उसे लगाम की सहायता से नियंत्रण करना होता है। यदि वह ऐसा नहीं करता तो घोड़ा नियंत्रण से बाहर चला जायगा और सवार को कुमार्ग पर ले जायगा। इसी लिए वेद के अनुयाई ऋग्वेद के निम्न मन्त्र में सर्वशक्तिमान भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वह उनके मन को श्रेष्ठ मार्ग पर ले जाए :

भद्रं नो अपि वातय मनः।

– ऋग्वेद, १०/२०/१

ऐ सर्वशक्तिमान ईश्वर
हमारे मन को सन्मार्ग की ओर ले जाओ।

– ऋग्वेद, १०/२०/१

मनुष्य का इसी बात में हित है कि उसे अपने मन पर नियंत्रण करना चाहिए। मन बहुत शक्तिशाली है, यदि मनुष्य ने उस पर विजय प्राप्त न की तो मन उसे पराजित कर देगा। परिणाम यह होगा कि मन निरंकुश हो जाएगा और अपने दुष्ट विचारों के द्वारा घोर विनाश करेगा और इस प्रकार मनुष्य का सारा जीवन नष्ट हो जाएगा। इसी लिए वेद के अनुयाई परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह उनके मन को पवित्र विचार प्रदान करे :

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।

दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।।

– यजुर्वेद, ३४/१

यह मेरा मन
जो दूर दूर चला जाता है
जो ज्योतियों में प्रमुख ज्योति है
जो दूर दूर स्थानों पर भटकता रहता है
चाहे मैं जाग रहा हूँ या सोया हुआ हूँ
वह ऐसा कार्य करने का संकल्प करे
जो कल्याणकारी और पवित्र हो ।

– यजुर्वेद, ३४/१

पवित्रता और धार्मिकता के बिना आत्मा की मुक्ति संभव नहीं। इस लिए पवित्र वेद हमें प्राकृतिक भोजन, प्राकृतिक विचार और प्राकृतिक कृत्यों के द्वारा पवित्र और धार्मिक जीवन जीने की शिक्षा देते हैं।

"दुर्जन और सज्जन के साथ एक सा ही व्यवहार नहीं करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति के साथ यथायोग्य व्यवहार ही उचित है। पापी को दंड देना और निःस्वार्थ साधु-पुरुष की सेवा करना ही योग्य है। दुर्बल ही शांति की लालसा करते हैं और कायर ही समझौतों के आतुर होते हैं।"

– स्वामी दयानन्द सरस्वती

"राजनीति तो अन्ततोगत्वा राष्ट्र की सेवा के हेतु है। यदि हम राष्ट्र के मूल स्वरूप, इतिहास, संस्कृति और परम्पराओं को त्याग देते हैं, तो उस राजनीति का क्या लाभ ?"

– पंडित दीन दयाल उपाध्याय

अध्याय १५

बाइबिल में अशोभनीय भाषा
वेद में मधुर भाषा

१. बाइबिल में अशोभनीय भाषा

(एक) नास्तिक के लिए 'हरामी' (bastard)शब्द का प्रयोग

पवित्र बाइबिल के अनुसार जो लोग जीवन की कठिनाइयों को यह कह कर स्वीकार नहीं करते कि वे ईश्वर द्वारा दिया गया दण्ड हैं, वे अपने पिता के पुत्र नहीं, वे हरामी हैं। दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) में कहा गया है कि, "जो कोई भी कष्ट और कठिनाइयां आपको सहनी पड़ें, उन्हें पिता द्वारा दिया गया दण्ड स्वीकार करें। ऐसा कौन बेटा है, जिसे उसका पिता उसे सुधारने के लिए दण्ड नहीं देता ? यदि तुम्हें दण्ड नहीं दिया जाता तो तुम 'हरामी' हो, अपने पिता के पुत्र नहीं हो।" इसका यह अर्थ है कि जो लोग ईसा मसीह को अपना पिता मानते हैं और अपनी कठिनाइयों को पिता द्वारा उनमें सुधार के लिए दिए गए दण्ड के रूप में स्वीकार करते हैं, पिता के वास्तविक पुत्र हैं और अन्य 'हरामी' हैं।

१६५. "७. आप जो कष्ट सहते हैं, उसे पिता का दण्ड समझें; क्योंकि वह इसका प्रमाण है, कि ईश्वर आप को पुत्र समझ कर आपके साथ व्यवहार करता है। और कौन पुत्र ऐसा है, जिसे पिता दण्ड नहीं देता ?"

– इब्रानियों के नाम, १२/७

१६६. "८. यदि आप को दूसरे पुत्रों की तरह दण्ड नहीं दिया जाता, तो आप औरस पुत्र नहीं, बल्कि जारज सन्तान हैं।"

– इब्रानियों के नाम, १२/८

(दो) मनुष्यों के लिए 'कुत्ते' शब्द का प्रयोग

दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) में कहा गया है कि **सन्त पाल** अपने एक पत्र में फ़िलीपीन के लोगों को लिखते हैं, "कुत्तों और पाप कर्मियों से बच कर रहो..." क्या यह शोभनीय भाषा है ? क्या एक सन्त के लिए उचित है कि वह उस व्यक्ति के लिए 'कुत्ता' शब्द का प्रयोग करे जो उससे भिन्न विचारधारा का अनुयाई है ? उस पैरा को उसी रूप में पढ़िए :

१६७. "२. आप कुत्तों से सावधान रहें, दुष्ट कार्यकर्त्ताओं से सावधान रहें, अंगच्छेद करने वालों से सावधान रहें।"

– फिलिप्पियों के नाम ३/२

सन्त पाल जो प्रारम्भ के दिनों में ईसाई मत का प्रमुख प्रचारक था, यहूदियों द्वारा कोड़ों और बेंतों से पीटा गया था क्योंकि उसने उपरोक्त अश्लील शब्द बोले थे। उसने न्यू टेस्टामेंट में इस बात को इन शब्दों में स्वीकार किया है :

१६८. "२४. यहूदियों ने मुझे पाँच बार एक कम चालीस कोड़े लगाये।"

– कुरिन्थियों के नाम दूसरा पत्र, ११/२४

१६९. "२५. मैं तीन बार बेंतों से पीटा और एक बार पत्थरों से मारा गया...।"

– कुरिन्थियों के नाम दूसरा पत्र, ११/२५

२. वेदों में जिह्वा की मधुरता

पवित्र वेद में वाणी की पवित्रता और जिह्वा की मधुरता का उपदेश दिया गया है। प्रेम तथा अनुराग करने वाला हृदय सर्वत्र अपनी जिह्वा से मधुरता की वर्षा करता है। मधुर वाणी से मनुष्य हज़ारों हृदयों को जीत सकता है। इस प्रकार छोटी सी जिह्वा से महान लाभ प्राप्त हो सकते हैं। जब जिह्वा मधुर शब्दों का प्रयोग करती है तो मनुष्य को सम्मानित पद पर पहुंचा देती है। जब यह घृणित शब्दों में फूट पड़ती है तो मनुष्य को लज्जा जनक और नीचतापूर्ण निम्नतम स्तर तक गिरा देती है। वेद प्रेम, शांति और मधुरता का संदेश देते हैं। जिह्वा की मधुरता की तुलना सुधा से अथवा पीड़ा दूर करने वाली मरहम से की जा सकती है। यह घावों को रोग मुक्त कर सकती है। कटु शब्दों की तुलना विष से की जा सकती है जो मार डालता है या आग से की जा सकती है जो जला देती है। जिह्वा की मधुरता पर कुछ भी ख़र्च नहीं होता परन्तु उससे बहुत कुछ ख़रीदा जा सकता है। कुछ भी व्यय न करते हुए यह सैकड़ों हृदयों को ख़रीद लेती है और मित्र बना लेती है। यह शत्रु को मित्र बनाती है और निराशावादी को आशावादी। यह आश्चर्य जनक कार्य करती है और चमत्कार करती है। इस वैदिक प्रार्थना में इसी बात को स्पष्ट किया गया है :

जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम् ।
ममेदह क्रतावसो मम चित्तमुपायसि ।।

– अथर्ववेद १/३४/२

मेरी जिह्वा का अग्र भाग
मधु समान मधुर हो
मेरी जिह्वा का मूल

मधु समान मधुर हो
ऐ मधुर विश्व के स्वामी परम परमेश्वर
मेरे सारे कृत्य
मधुरता से भर जाएं
मेरा मन
मधुरता से भर जाए।

– अथर्ववेद १/३४/२

"इस सक्रिय विजयिष्णु भावना के अभाव में किसी श्रेष्ठ कार्य के लिये किया जाने वाला समर्पण भी कोई विशेष उपयोग का नहीं होगा। इस कठोर समरांगण में जहाँ नित्य प्रति दुष्ट शक्तियों से सामना होता रहता है, भोली सज्जनता और निरीह सच्चरित्रता को, जिसे सत्वभाव का निष्क्रिय रूप कहना चाहिए, एक क्षण भी संघर्ष में टिक पाना कठिन है। इसलिये हम देखते हैं कि सम्पूर्ण धार्मिक निष्ठा, भलाई और ईश्वर-भक्ति होते हुए भी पिछले सहस्र वर्षों से हम उन विदेशी आक्रान्ताओं के पैरों तले कुचले जा रहे हैं जो भलाई तथा उत्तम गुणों से नितान्त अपरिचित हैं परन्तु जिनमें पराक्रमी कार्यों के लिये जोश तथा संगठित प्रयत्न हैं अर्थात् जो रजोगुण से पूर्ण हैं। हमारा इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि जब भी हमारे समाज में विजयिष्णु भावना का समावेश हुआ और वह सतोगुण के सक्रिय स्वरूप से निविष्ट हुआ तो राक्षसी शत्रुओं के सभी साम्राज्य चकनाचूर होते दिखाई दिये।"

– गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर

अध्याय १६

बाइबिल की अवैज्ञानिक शिक्षा
वेदों में वैज्ञानिक सत्य

१. बाइबिल की अवैज्ञानिक शिक्षा

(एक) आकाश में फाटक लगे हैं

आकाश तो मात्र शून्य है। इसमें खिड़कियां अथवा फाटक नहीं हैं। पवित्र बाइबिल में कहा गया है कि आकाश में फाटक लगे हैं :

> १७०. "११. नूह की छह सौ वर्ष की अवस्था में, दूसरे महीने के ठीक सत्रहवें दिन, अगाध गर्त्त के सब स्रोत फूट पड़े और आकाश के फाटक खुल गये।"
>
> *– उत्पत्ति ग्रन्थ, ७/११*

कोई भी वैज्ञानिक उपरोक्त पाठ से सहमत नहीं होगा।

(दो) पृथ्वी की नींव, खम्भे और चार कोने हैं

बाइबिल के भूगोल (सामाजिक विज्ञान) के अनुसार पृथ्वी की नींव, खम्भे और चार कोने हैं। निम्न तीन पद पठनीय हैं :

पृथ्वी की नींव है :

१७१. "५. तूने पृथ्वी को उसकी नींव पर स्थापित किया; वह सदा-सर्वदा के लिए स्थिर है।"

– स्तोत्र-ग्रन्थ, १०४/५

पृथ्वी के खम्भे हैं :

१७२. "८....क्योंकि पृथ्वी के खम्भे प्रभु के हैं, उसने उन पर जगत् को रखा है।"

– समूएल का पहला ग्रन्थ, २/८

पृथ्वी के चार कोने हैं :

१७३. "१. इसके बाद मैंने पृथ्वी के चार कोनों पर चार स्वर्गदूतों को खड़ा देखा। वे चारों पवनों को रोक रहे थे, जिसके फलस्वरूप कोई भी पवन न पृथ्वी पर बहता था न समुद्र पर और न किसी वृक्ष पर।"

– प्रकाशना-ग्रन्थ, ७/१

(तीन) पृथ्वी नहीं, सूर्य परिक्रमा करता है

योशुआ ने सूर्य को स्थिर रहने का आदेश दिया, पृथ्वी को नहीं। यह है बाइबिल का विज्ञान ! निम्न पद में बताया गया है कि **योशुआ** ने सूर्य और चांद को परिक्रमा करने से रोक दिया।

१७४. "१३. जब तक राष्ट्र ने अपने शत्रुओं से बदला नहीं लिया, तब तक सूर्य ठहरा और चन्द्रमा रुका रहा, जैसा कि याशर के ग्रन्थ में लिखा है। सूर्य आकाश के मध्य में

ठहर गया और लगभग एक पूरे दिन तक अस्त नहीं हुआ।"
– योशुआ का ग्रन्थ, १०/१३

आज विश्व के सभी शिक्षित लोग जानते हैं कि सूर्य कभी नहीं घूमता। पृथ्वी ही घूमती है। जब **कोपरनिकस** ने पहली बार इस वैज्ञानिक सत्य की घोषणा की तो पादरियों ने विद्वान वैज्ञानिक के विरुद्ध कोलाहल मचा दिया, और उसे नास्तिक कह दिया, क्योंकि उसने बाइबिल के कथन का खण्डन किया था। इसके परिणाम स्वरूप उसे उत्पीड़ित और अपमानित किया गया। **मार्टिन लूथर** ने, जो जर्मन धर्म सुधारक और ईसाई मत सुधार हेतु **प्रोटेस्टंट मत** का संस्थापक था, कोपरनिकस के सिद्धांत पर निम्नलिखित विचार व्यक्त किया था :

> *"मूर्ख कोपरनिकस सारे खगोल विज्ञान को बदल देना चाहता है। परन्तु पवित्र धर्म शास्त्र हमें बताता है कि योशुआ ने सूर्य को आदेश दिया कि वह रुक जाए और पृथ्वी को नहीं।"*
>
> **– मार्टिन लूथर**

पंडित जवाहर लाल नेहरू अपनी पुस्तक 'गिलिम्पसिज़ आफ़ वर्ल्ड हिस्टरी' (विश्व इतिहास की झलकियां) में लिखते हैं :

> *"एक इटली वासी **ग्योर्डेनो ब्रूनो** को १६०० ईसवी में रोम के चर्च (ईसाई संस्था) ने इस कारण जला दिया कि वे इस बात पर जोर दे रहे थे कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है।"*[९१]
>
> **– पंडित जवाहर लाल नेहरू**

जेम्स ए. हाट अपनी पुस्तक 'होली हारर्स' (पवित्र यातनाऐं) में लिखते हैं :

> *"सिकन्दरिया में ४१५ ईसवी में सिकन्दरिया के*

---

९१. **पंडित जवाहर लाल नेहरू :** *'गिलिम्पसिज़ आफ़ वर्ल्ड हिस्टरी'* (विश्व इतिहास की झलकियां), पृष्ठ २७९

पुस्तकालय की अध्यक्षा और महान महिला वैज्ञानिक ***हाइपाटिया*** *को, पादरियों और* ***सन्त साइरिल*** *के अनुयाइयों ने पीट पीट कर मार डाला, क्योंकि उसके विज्ञान सम्बंधी विचारों पर उन्हें वही आपत्ति थी जो बाद में चर्च ने* ***गलीलियो*** *के विचारों पर व्यक्त की थी।"*[९२]

–जेम्स ए. हाट

बाइबिल के विज्ञान पर अपने विचार व्यक्त करते हुए विख्यात नाटककार, आलोचक और निबंधकार **जार्ज बर्नार्ड शा**, जिन्हें १९२५ में साहित्य के लिए नोबल पुरुस्कार मिला था, यह मत व्यक्त करते हैं :

"बाइबिल निराशा जनक रूप में सभ्यता के विकास से पूर्व का ग्रंथ है। जीवन के प्रारम्भ और नैतिकता के नियमों के सम्बंध में इसमें जो वर्णन मिलता है, वे स्पष्टतया काल्पनिक गाथाएं हैं। इसका खगोल विज्ञान धरती केन्द्रित है, नक्षत्रों के ब्रह्माण्ड के सम्बंध में इस की धारणाएं बचकाना हैं। इसका इतिहास चरित्र गाथाएं और पौरानिक कहानियां हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि जो लोग इन विभागों में बाइबिल के द्वारा शिक्षा प्राप्त करते हैं, उन्हें इतनी निरर्थक जानकारी दी जाती है कि वे सार्वजनिक क्षेत्र में नौकरी प्राप्त करने, माता पिता के नाते अपना दायित्व निभाने और अपने नागरिकता के अधिकारों, यहां तक कि सार्वजनिक चुनाव में मताधिकार का निर्वाह करने में भी सर्वथा अयोग्य सिद्ध हो जाते हैं।"[९३]

– जार्ज बर्नार्ड शा

---

९२. **जेम्स ए. हाट :** *'होली हारर्स'* (पवित्र यातनाएं), प्रामीथियस बुक्स, न्यू यार्क द्वारा प्रकाशित, १९९०, पृष्ठ ५३

९३. **जार्ज बर्नार्ड शा :** *'दी कम्पलीट प्रीफ़ेसिज़ आफ़ जार्ज बर्नार्ड शा'* (जार्ज बर्नार्ड शा की सम्पूर्ण प्रस्तावनाएं), लंदन, १९६५, का अध्याय शीर्षक, "ईश्वर की खोज में काली लड़की के साहिसिक कार्य सम्बंधी प्रस्तावना", पृष्ठ ६४९

आधुनिक वैज्ञानिक युग में, ईसाई प्रचारक, पवित्र बाइबिल के उपरोक्त पद को प्रचारित करते हुए लज्जा अनुभव करते हैं।

यद्यपि यह सत्य है कि पवित्र बाइबिल ऐसे असत्य और अवैज्ञानिक कथनों से भरा पड़ा है, फिर भी ईसाई अधिकार पूर्वक कहते हैं कि पवित्र बाइबिल इस पृथ्वी पर हर किसी विषय पर प्रामाणिक ग्रन्थ है और इस के द्वारा सभी कुछ प्रमाणित किया जा सकता है। इस सम्बंध में अमरीकी क्रांति के महान चिंतक **थामस पेन** कहते हैं :

> *"यह प्राय: कहा गया है कि बाइबिल से कुछ भी प्रमाणित किया जा सकता है, परन्तु इससे पहले कि यह स्वीकार किया जा सके कि कोई बात बाइबिल द्वारा प्रमाणित की गई है, स्वयं बाइबिल की सत्यता प्रमाणित करना आवश्यक है, क्योंकि यदि बाइबिल सत्य नहीं अथवा उसकी सत्यता पर संदेह है तो इसकी प्रमाणिकता समाप्त हो जाती है और इसे किसी बात का प्रमाण स्वीकार नहीं किया जा सकता।"*[९४]
>
> **– थामस पेन**

अंटोनियो फ़ोगाज़ारो, इटली के विख्यात उपन्यासकार, कहते हैं :

> *"कैथोलिक चर्च (कैथोलिक ईसाई संस्था) जो अपने आप को सत्य का स्रोत मानती है, आज सत्य के शोध का विरोध करती है, जबकि उनकी पवित्र पुस्तकें, सिद्धांत सूत्र और उनके अंधविश्वास जो उस मत की आधारशिला हैं और साथ ही उनकी यह भ्रामक दृष्टि कि वे कभी भूल कर ही नहीं सकते हमारे लिए शोध का विषय बन गई हैं। इससे*

---

९४. **थामस पेन :** *'दी एज आफ़ रीज़न'* (तर्क का युग), वाटस ऐंड कं. लंदन द्वारा प्रकाशित, १७९६, पृष्ठ ३५

यह स्पष्ट हो जाता है कि चर्च का स्वयं अपने में कोई विश्वास नहीं रहा।"[९५]

– अंटोनियो फ़ोगाज़ारो

जार्ज बर्नार्ड शा के अनुसार रूढ़िवादी कट्टर पंथी पादरी, ईसाई मत के सब से अधिक शत्रू हैं और यद्यपि पवित्र बाइबिल अनेक विद्वान लेखकों और अनुवादकों द्वारा रचित ग्रंथ है, फिर भी असभ्यतापूर्ण अंधविश्वासों का पुलिंदा है :

"हमें अपने रूढ़िवादियों को यह बता देने का समय आ गया है कि वे आज ईसाई मत के अत्यंत घोर शत्रू हैं, योहोवा ईश्वर नहीं है, वरन् एक असभ्य जनजाति का नेता है। अंग्रेज़ी में लिखित बाइबिल के पठनीय अंश कलात्मक साहित्यिक रचना हैं, और कई महान विद्वानों और अनुवादकों के द्वारा लिखे जाने पर भी अंधविश्वासों और ब्रह्माण्ड विज्ञान के अप्रचलित सिद्धांतों का पुलिंदा है, इसमें ऐसा धर्मशास्त्र है जो इतना असंतुलित और एक पक्षीय है कि पहले ईसाई कैथोलिक चर्च (ईसाई संस्था) ने जन साधारण लोगों पर यह रोक लगा दी थी कि वे बिना पूर्व अनुमति के इसे नहीं पढ़ सकते।"[९६]

– जार्ज बर्नार्ड शा

जार्ज बर्नार्ड शा के अनुसार जिस व्यक्ति ने बाइबिल की शिक्षा प्राप्त की है वह अज्ञानी है। उसका मत है :

---

९५. **एन एस राजाराम :** *'दी डेड सी स्क्रालस ऐंड दी क्राइसिस आफ़ क्रिस्चैनिटी'* (निर्जीव सागर की पोथी और ईसाई मत का संकट) लंदन, १९९७, पृष्ठ १७४

९६. **जार्ज बर्नार्ड शा :** *'एवरी बाडीज़ पोलिटिकल व्हाट इज़ व्हाट'* (हर व्यक्ति का राजनैतिक ज्ञान) अध्याय ४३, 'रिलीजस समरी' (धार्मिक संक्षेप), लंदन, १९५०, पृष्ठ ३५७

"अब वह व्यक्ति जिसने बाइबिल की शिक्षा प्राप्त की है, अज्ञानी है। यदि आपको संदेह है तो कोई नौकरी प्राप्त करने के लिए किसी परीक्षा में, परीक्षकों के प्रश्नों के उत्तर बाइबिल के आधार पर दे कर, पास होने का प्रयत्न करो। यदि तुम्हें केवल अनुत्तीर्ण घोषित किया जाए और पागलपन का प्रमाण पत्र न दिया जाए, तो तुम बहुत भाग्यशाली होंगे।" [९७]

– जार्ज बर्नार्ड शा

(चार) क्या रोग, शैतान (अशुद्ध आत्मा) के द्वारा उत्पन्न किया जाता है ?

ईसा मसीह के अनुसार रोग शैतान (अशुद्ध आत्मा) के द्वारा उत्पन्न किया जाता है। यदि शैतान को रोगी के शरीर से निकाल दिया जाए, तो वह स्वस्थ हो जाएगा। पवित्र बाइबिल का न्यू टेस्टामेंट बताता है कि ईसा मसीह ने सभागृह में एक व्यक्ति के शरीर से शैतान (अशुद्ध आत्मा) को निकाल दिया था :

१७५. "३३. सभागृह में एक मनुष्य था, जो अशुद्ध आत्मा के वश में था। वह ऊँचे स्वर से चिल्ला उठा,"

– सन्त लूकस, ४/३३

१७६. "३५. ईसा ने यह कहते हुए उसे डाँटा, 'चुप रह, इस मनुष्य से बाहर निकल जा।' अपदूत ने सब के देखते-देखते उस मनुष्य को भूमि पर पटक दिया और उसकी कोई

---

९७. **जार्ज बर्नार्ड शा :** *'दी कम्पलीट पिरीफ़ेसिज़ आफ़ जार्ज बर्नार्ड शा'* (जार्ज बर्नार्ड शा की सम्पूर्ण प्रस्तावनाएं), अध्याय शीर्षक, "काली लड़की द्वारा ईश्वर की खोज में साहिसिक कार्य की प्रस्तावना", लंदन, १९६५, पृष्ठ ६५०

हानि किये बिना वह उस से बाहर निकल गया।"

– सन्त लूकस, ४/३५

यहां एक और पद में बताया गया है कि रोग शैतान (अपद्रूत) के द्वारा उत्पन्न किया जाता है, और ईसा मसीह ने कई रोगियों के शरीर से शैतान को निकाल कर उन्हें स्वस्थ बना दिया :

१७७. "३४. ईसा ने नाना प्रकार की बीमारियों से पीड़ित बहुत-से रोगियों को चंगा किया और बहुत-से अपदूतों को निकाला। वे अपदूतों को बोलने से रोकते थे, क्योंकि वे जानते थे कि वह कौन हैं।"

– सन्त मारकुस, १/३४

थामस जैफ़रसन, अमरीका के तीसरे राष्ट्रपति, कहते हैं :

"ईसा मसीह द्वारा दिए गए धार्मिक उपदेश का इतिहास घोर अज्ञान पर आधारित है, जिसमें असंभव बातों, अंधविश्वासों, मतांधता और मन गढ़त तथ्यों का समावेश है।"[९८]

– थामस जैफ़रसन

(पांच) रोगी का उपचार डाक्टर कर सकता है या पादरी ?

यदि तुम में से कोई रोगी हो, तुम्हें डाक्टर को बुलाने की आवश्यकता नहीं। एक सच्चा ईसाई गिरजा घर के वरिष्ठ पादरियों को बुलाता है, क्योंकि पवित्र बाइबिल के अनुसार चर्च के वरिष्ठ पादरी (डाक्टर नहीं) रोगी को स्वस्थ कर सकेंगे। दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) में इस सम्बंध में यह उपेदश दिया गया है :

१७८. "१४. कोई अस्वस्थ हो, तो कलीसिया के

---

९८. **टी.जे. रेंडाल्फ़ :** *'मेमायर, कोर. एंड मिस'*, (स्मृतियां, पत्राचार और विविध) खण्ड ४, पृष्ठ ३२५

अध्यक्षों को बुलायँ और वे प्रभु के नाम पर उस पर तेल का विलेपन करने के बाद उसके लिए प्रार्थना करें।"

– सन्त याकूब का पत्र, ५/१४

यदि चर्च के वरिष्ठ पादरी रोगी को तेल का विलेपन करके स्वस्थ कर सकते हैं तो सभी अस्पताल बंद कर देने चाहिएं और सभी योग्यता प्राप्त डाक्टरों को अपना व्यवसाय त्याग कर पादरी बनने की शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। दुख की बात है कि इस अवैज्ञानिक शिक्षा के कारण, अशिक्षित और भोले भाले लोगों के परिवारों में अनेक लोगों की मृत्यु हो चुकी है।

आज शिक्षित लोग भली प्रकार जानते हैं कि रोग को शैतान उत्पन्न नहीं करता और इसका उपचार केवल डाक्टर कर सकता है, चर्च के पादरी नहीं। यदि चर्च के पादरियों द्वारा रोगी का उपचार हो जाता तो ईसाई प्रचारकों ने योग्यता प्राप्त डाक्टरों को नियुक्त कर के अपने अस्पतालों की स्थापना न की होती। उनका इस प्रकार अस्पताल स्थापित करने का कार्य पवित्र बाइबिल के उपदेश का खण्डन करता है।

२. वेद में वैज्ञानिक सत्य

(एक) सूर्य नहीं, पृथ्वी परिक्रमा करती है

यद्यपि पवित्र वेद प्राचीनतम धार्मिक ग्रन्थ हैं, फिर भी उनका आधुनिक विज्ञान के साथ पूर्ण सामंजस्य है। पश्चिम के विद्वान **ब्राऊन** का मत है :

"वेद वैज्ञानिक धर्म का चित्र प्रस्तुत करते हैं, जिन में धर्म और विज्ञान का सामंजस्य हो गया है। वेद, धर्म, विज्ञान और दर्शन पर आधारित हैं।"

– ब्राऊन

जहां तक पृथ्वी की परिक्रमा (सूर्य की नहीं, जैसा बाइबिल में बताया गया है) का सम्बंध हैं, हमें यजुर्वेद में वैज्ञानिक सत्य का उल्लेख मिलता है :

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः।
पितरं च प्रयन्त्स्वः॥

– यजुर्वेद ३/६

पृथ्वी अपने सागरों सहित
सूर्य के चहुं ओर घूमती है
अथवा
पृथ्वी घूमती है
अपनी माता जल के साथ
अपनी कक्षा में
पृथ्वी घूमती है
अपने पिता सूर्य के चहुं ओर।

– यजुर्वेद ३/६

श्रीमती व्हीलर विलैक्स, विख्यात अमरीकी लेखिका, कहती हैं :

"हम सब ने भारत के प्राचीन धर्म के सम्बन्ध में सुना और पढ़ा है। यह महान वेदों की भूमि है, जो अत्यंत उल्लेखनीय रचनाएं हैं, जिन में न केवल परिपूर्ण जीवन के लिए धार्मिक आदर्श प्रस्तुत किए गए हैं वरन् विज्ञान के वे सभी तथ्य भी प्रस्तुत किए गए हैं जो प्रमाणित हो चुके हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जिन ऋषियों ने वेदों का प्रकाश प्राप्त किया, उन्हें विद्युत, रेडियम, इलेक्ट्रानिकस, विमानों का ज्ञान था।"

– श्रीमती व्हीलर विलैक्स

(दो) रोग का उपचार औषधियों के द्वारा होता है न कि पादरी द्वारा

पवित्र वेद इस अवैज्ञानिक कथन का अनुमोदन नहीं करते कि रोग शैतान के द्वारा उत्पन्न किया जाता है। केवल अशिक्षित और अंधविश्वासी

लोग ऐसी अवैज्ञानिक शिक्षा में विश्वास करते हैं। रोग, संक्रमण (सूक्ष्म जीवाणु के विषाक्त द्रव्य) से उत्पन्न होते हैं, या अस्वास्थ्यकारी भोजन, वायू प्रदूषण और जल प्रदूषण आदि कारणों से उत्पन्न होते हैं।

प्राचीन काल में, विश्व के सभ्य राष्ट्र भी रोग के उपचार की कला के सम्बंध में हिंदुओं से परामर्ष लेते थे, जिन्हें उन दिनों **आर्य** कहा जाता था। पश्चिम के चिकित्सकों ने यह अनुभव करना आरम्भ कर दिया है कि ऐलोपैथी से हानिकारक प्रभाव उत्पन्न होते हैं। उन्होंने पवित्र वेदों में वर्णित प्राकृतिक चिकित्सा और आयुर्वेदिक औषधियों की प्रशंसा आरम्भ कर दी है।

(तीन) प्राकृतिक चिकित्सा

सभी रोगों का उपचार, चाहे वे शारीरिक हों, मानसिक हों, नैतिक हों या आध्यात्मिक, प्रकृति में विद्यमान है। प्रकृति से पृथक होने का परिणाम है क्षय और मृत्यु, परन्तु उसके साथ समन्वय से सामंजस्य और उल्लास उत्पन्न होता है। "प्रकृति की ओर लौटो" या "प्रकृति का ज्ञान प्राप्त करो" ऐसे सिद्धांत हैं जो वैदिक दर्शन की आधारशिला हैं। अप्राकृतिक औषधियों से अनेक हानियां उत्पन्न होती हैं। अतः वैदिक धर्म प्राकृतिक चिकित्सा पर बल देता है। प्रकृति के तत्वों में अत्यंत असाध्य रोगों का उपचार करने की महान शक्तियां हैं। धरती के धरातल पर या जल के नीचे सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने अत्यंत लाभकारी जड़ी बूटियां उत्पन्न की हैं, जो अनेक प्रकार के रोगों के लिए अचूक औषधि हैं। मानव दुर्बल प्राणी है और उसका ज्ञान सीमित है, अतः वह प्रकृति के तत्वों के मूल्यवान प्रयोगों को नहीं जानता। रोगों का उपचार जल, मिट्टी, वायु, अग्नि और सूर्य ताप से किया जा सकता है। ये प्रकृति के मुख्य तत्व हैं। वेद मानव को प्रोत्साहन और प्रेरणा देते हैं कि वह प्रकृति द्वारा उपचार के ज्ञान का शोध करे और उसे प्राप्त करे।

अप्स्व१न्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तये ।
देवा भवत वाजिनः ।।

– ऋग्वेद १/२३/१९

ऐ विद्वान मनुष्यो
प्राकृतिक चिकित्सा का ज्ञान प्राप्त करो
जलाषयों के नीचे तरल पदार्थ हैं
जो सभी घातक रोगों का उपचार करते हैं
जल में शक्ति है
जिससे सब रोगों का उपचार हो सकता है
इस ज्ञान और शक्ति को प्राप्त करो
ताकि ओजस्विता और शुद्धता का जीवन जी सको।

– ऋग्वेद १/२३/१९

साम वेद का निम्न मन्त्र सूर्य की किरणों के लाभ की इस प्रकार व्याख्या करता है :

अपामीवामप स्रिधमप सेधत दुर्मतिम्।
आदित्यासो युयोतना नो अहसः॥

– सामवेद ३९७

सूर्य की किरणें रोगों को भगा देती हैं
हानिकर विचारों को दूर कर देती हैं
और हमें पापों से परे रखती हैं।

– सामवेद ३९७

(चार) आयुर्वेदिक औषधियां

आयुर्वेद **आर्यावर्त** के प्राचीन चिकित्सा विज्ञान की आधार शिला है। इसे कुछ विद्वान **उपवेद** के रूप में स्वीकार करते हैं, जिसमें अनुपूरक मन्त्रों के द्वारा औषधियों और जड़ी बूटियों के निश्चित गुणों और उपयोगों का वर्णन किया गया है। औषधि के रूप में, उपयोग में आने वाली जड़ी बूटियों और उनके मूल्यवान प्रयोगों का सर्वप्रथम वर्णन ऋग्वेद में मिलता है, जो विश्व का प्राचीनतम धर्म ग्रन्थ है।

भारत औषधीय पौधों और जड़ी बूटियों का भण्डार है। ब्रिटिश औषध कोष में वर्णित लगभग पचहत्तर प्रति शत औषधियां भारत में

प्राकृतिक रूप में उत्पन्न होती हैं। लंदन के औषधि निर्माण महाविद्यालय के **प्रोफ़ेसर ग्रीनिश** ने ठीक ही कहा है, "भारत में जल वायू, समुद्र तल से ऊंचाई और मिट्टी की जो उल्लेखनीय विविधताएं मिलती हैं, उनके कारण भारत सफलता पूर्वक हर प्रकार की जड़ी बूटियां उत्पन्न कर सकता है, जिनकी यूरोप को आवश्यकता पड़ती है।"

पश्चिम के औषधि निर्माता और चिकित्सिक अब यह अनुभव करने लगे हैं कि भारत की देसी जड़ी बूटियां रोग की जड़ तक प्रवेश करती हैं और रोगी का स्थायी उपचार करती हैं। वैदिक युग में भारत के प्राचीन चिकित्सिकों ने विश्वास के साथ यह घोषणा की थी। ऋग्वेद का निम्न मन्त्र इसका प्रमाण है :

यस्यौषधीः प्रसर्पथाङ्गमङ्ग परुष्परुः।
ततो यक्षमं वि बाधध्व उग्रो मध्यमशीरिव ।।

– ऋग्वेद १०/९७/१२

औषधीय जड़ी बूटियां
रोगी के अंग प्रत्यंग और संधि स्थलों में
प्रवेश कर व्याप्त हो जाती हैं
और तीखे एवं सशक्त संचालक के रूप में
उसके रोग को नष्ट कर देतीं हैं।

– ऋग्वेद १०/९७/१२

पश्चिम के विख्यात लेखक **जैकोलियट** स्पष्ट शब्दों में अपना मत व्यक्त करते हैं :

"यह आश्चर्यजनक तथ्य है कि हिन्दू ईश्वरीय ज्ञान (वेद) सभी प्रकार के दैवी ज्ञान में से एक ही ऐसा ज्ञान है, जिसमें प्रस्तुत विचार आधुनिक विज्ञान के साथ पूर्ण सामंजस्य रखते हैं।"

– जैकोलियट

"विश्व की समस्याओं का समाधान हिन्दुत्व में है, समाजवाद में नहीं।" – पंडित दीन दयाल उपाध्याय

अध्याय १७

बाइबिल असत्य का उपदेश देता है वेद सत्य का उपदेश देते हैं

१. बाइबिल असत्य का उपदेश देता है

सन्त पाल, जो ईसा मसीह के प्रमुख दूत थे, अपने झूठ (असत्य) को न्यू टेस्टामेंट में न्याय संगत ठहराते हैं और कहते हैं कि यदि उनका झूठ (असत्य) ईश्वर की महिमा और उसकी सत्यप्रियता में वृद्धि करता है तो उसे असत्य का आश्रय लेना चाहिए और इसके लिए उसे पापी नहीं ठहराना चाहिए। निम्नलिखित पद पढ़िए :

> १७९. **"७. यदि मेरी असत्यवादिता ईश्वर की सत्यप्रियता और उसकी महिमा को बढ़ावा देती है, तो पापी की तरह मेरा न्याय क्यों किया जाता है ?"** *– रोमियों के नाम, ३/७*

विख्यात लेखक और दार्शनिक **रूपर्ट ह्यूज़** उपरोक्त पद की

व्याख्या करते हुए यह मत व्यक्त करते हैं :

> *"मैं ईश्वर की महिमा के लिए असत्य बोलने में विश्वास नहीं रखता। बाइबिल स्वयं ईश्वर के सर्वशक्तिमान होने के अधिकार भाव को नष्ट कर देता है।"*[९९]
>
> **– रूपर्ट ह्यूज़**

असत्य को प्रोत्साहन देने का एक और उदाहरण है। बाइबिल के ईश्वर ने एक देवदूत को, नबियों (पैग़म्बरों) के मुख में झूठ बोलने वाली आत्मा बनने के लिए कहा ताकि वे **अहाब को** गिलआद के रामोत जाने के लिए अनुरोध करें। मीकायाह ने कहा, "ईश्वर की वाणी सुनो। मैं ने ईश्वर को उसके सिंहासन पर विराजमान देखा। स्वर्ग के सब गण उसके दाहिने और बाएं खड़े थे। ईश्वर ने कहा, "अहाब को कौन बहकाएगा जिससे वह गिलआद के रामोत तक जाए और वहां मारा जाए ? किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ कहा। इस बीच में प्रभु के सामने एक आत्मा आ कर खड़ी हो गई और बोली, "मैं अहाब को बहकाऊंगी।" ईश्वर ने उससे पूछा, "तुम यह काम कैसे करोगी ?" आत्मा ने उत्तर दिया, "मैं वहां जा कर, उसके सब नबियों (पैग़म्बरों) के मुंह में झूठ बोलने वाली आत्मा बनूंगी। ईश्वर ने कहा, "तुम अहाब को बहका पाओगी। इस लिए तुम जाओ और यह काम करो।" इस प्रकार ईश्वर ने देवदूत को झूठ बोलने वाली आत्मा बनने की अनुमति दी। दूसरे शब्दों में बाइबिल के ईश्वर ने देवदूत को झूठ बोलने की अनुमति दी। बाइबिल का पाठ इस प्रकार है :

१८०. "१९. मीकायाह ने कहा, 'अब प्रभु की यह वाणी सुनिए : मैंने प्रभु को उसके

---

९९. (एक) **रूपर्ट ह्यूज़ :** *'व्हाइ आइ कुइट गोइंग टु चर्च'* (मैं ने चर्च जाना क्यों छोड़ दिया ?)

(दो) **ब्रह्म दत्त भारती :** *'मैक्स मूलर – ए लाइफ़लांग मस्करेड'* (मैक्समूलर– जीवन भर का स्वांग), १९९२, पृष्ठ २१७

सिंहासन पर विराजमान देखा। स्वर्ग के समस्त गण उसके दाहिने और बायें खड़े थे।"

– राजाओं का पहला ग्रन्थ, २२/१९

१८१. "२०. तब प्रभु ने कहा, 'अहाब को कौन बहकायेगा, जिससे वह गिलआद के रामोत तक जाये और वहाँ मार डाला जाये ?' किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ।"

– राजाओं का पहला ग्रन्थ, २२/२०

१८२. "२१. तब प्रभु के सामने एक आत्मा आया और बोला कि मैं ही उसे बहकाऊँगा। प्रभु ने उस से पूछा, 'कैसे ?' "

– राजाओं का पहला ग्रन्थ, २२/२१

१८३. "२२. उसने उत्तर दिया, 'मैं जा कर उसके सब नबियों के मुँह में झूठ बोलने वाला आत्मा बनूँगा।' प्रभु ने कहा, 'तुम उसे बहका पाओगे, तुम्हें सफलता प्राप्त होगी। जा कर ऐसा ही करो।' "

– राजाओं का पहला ग्रन्थ, २२/२२

जी.डब्ल्यू. फ़ूट और जे. एम. व्हीलर अपनी पुस्तक 'क्राईम्ज़ आफ क्रिस्चैनिटी' (ईसाई मत के अपराध) में लिखते हैं :

"कई शताब्दियों तक, निस्संदेह एक हज़ार वर्ष से अधिक तक ईसाई प्रचार संस्था (चर्च) बिना लज्जा और पश्चाताप के ईश्वर की महिमा के लिए झूठ बोलती रही है। जिस बात से भी इसकी ख्याति और शक्ति को बल मिलता था उसे आवश्यक सम्मान योग्य माना जाता था। धोखा धड़ी करना यदि वह धार्मिक कार्य के लिए था तो प्रशंसनीय था और

मोशीम के शब्दों में जो सच्चे ईसाई के रूप में सर्वाधिक प्रमुख रूप से चमकना चाहते थे, धर्म का समर्थन करने के लिए धोखा धड़ी और प्रपंच करना धार्मिक कार्य समझते थे।"[१००]

– जी.डब्ल्यू फूट और जे.एम. व्हीलर

पश्चिम के विख्यात लेखक और दार्शनिक **रूपर्ट ह्यूज़** का कथन है :

"मैं ने गिरजा घर जाना छोड़ दिया क्योंकि मुझे विश्वास हो गया था कि गिरजा घरों में जो उपदेश दिया जाता है वह मुख्यतया असत्य, महत्वहीन ऊबा देने वाला, वास्तविक प्रगति के प्रतिकूल और सामान्य रूप से लाभ हीन है।"[१०१]

– रूपर्ट ह्यूज़

२. वेद सत्य का उपदेश देते हैं

पवित्र वेद केवल सत्य का ही उपदेश देते हैं, जिसे प्रकृति का सार्वभौमिक नियम, अथवा अन्तरात्मा की वाणी, या देव वाणी कहा गया है।

ऋतस्य पथा प्रेत ।

– यजुर्वेद ७/४५

---

१००. (एक) **एक्लेज़ियस्टिकल हिस्ट्री :** (ईसाई प्रचारक संस्था का इतिहास) खण्ड १, पृष्ठ २४७

(दो) **जी.डब्ल्यू. फूट और जे.एम. व्हीलर :** *'क्राईम्ज़ आफ़ क्रिस्चैनिटी'* (ईसाई मत के अपराध), आर्योदय साप्ताहिक द्वारा पुनर्मुद्रित, नई दिल्ली, १९६४, पृष्ठ ९

१०१. (एक) **रूपर्ट ह्यूज़ :** *'व्हाइ आइ कुइट गोइंग टु चर्च'* (मैं ने चर्च जाना क्यों छोड़ दिया ?)

(दो) **ब्रह्म दत्त भारती :** *'दी वेदाज़ ऐंड दी बाइबिल'* (वेद और बाइबिल), नई दिल्ली, १९६७, पृष्ठ ४५

सत्य मार्ग पर चल

– यजुर्वेद ७/४५

सत्य मार्ग को अपनाना शांति और समृद्धि, हर्ष और उल्लास, आनन्द और परमानंद, गौरव और वैभव सुनिश्चित करता है। सत्य मार्ग का अनुसरण करने वालों को असत्य मार्गियों पर प्रभुत्व प्राप्त करने का सामर्थ्य प्राप्त हो जाता है, क्योंकि अन्ततोगत्वा सत्य असत्य पर विजय प्राप्त करता है।

ऋतस्य गोपा न दभाय सुक्रतुः।

– ऋग्वेद ९/७३/८

श्रेष्ठ आत्मा
जो सत्य के मार्ग का अनुसरण करती है
कभी पराजित नहीं होती।

– ऋग्वेद ९/७३/८

सत्य का मार्ग भय और त्रास से मुक्त, त्रुटिहीन एवं संदेह तथा अविश्वास से परे है। कोई भी किसी समय इसकी परीक्षा कर सकता है। सत्य का मार्ग हर प्रकार से और हर ओर से परीक्षण और छान बीन की चुनौति का सामना कर सकता है। इसी लिए वेदों में लोगों को परामर्श और उपदेश दिया गया है कि वे सत्य के मार्ग की खोज करें, जिसे प्रबुद्ध विद्वानों ने अपनाया है।

ऋतस्य पन्थामनु पश्य साध्वङ्गिरसः सुकृतो येन यन्ति।

– अथर्ववेद १८/४/३

ध्यान पूर्वक सत्य के मार्ग का अनुसरण करो
प्रबुद्ध ऋषियों के चरण जिस पर अग्रसर हुए हैं।

– अथर्ववेद १८/४/३

"समाज को सत्य के अनुरूप ढालना चाहिए, न कि सत्य को समाज के अनुरूप।" – स्वामी विवेकानंद

अध्याय १८

बाइबिल ज्ञान, बुद्धिमत्ता और दर्शन की निंदा करता है वेद उनका संवर्धन करते हैं

१. बाइबिल ज्ञान, बुद्धिमत्ता और दर्शन की निंदा करता है

(एक) बाइबिल ज्ञान की निंदा करता है

१८४. "१७. किन्तु भले-बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल नहीं खाना; क्योंकि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे, तुम अवश्य मर जाओगे।"

– उत्पत्ति ग्रन्थ, २/१७

(दो) बाइबिल बुद्धिमत्ता की निंदा करता है

१८५. "१९. क्योंकि इस संसार का ज्ञान ईश्वर की दृष्टि में 'मूर्खता' है।"

– कुरिन्थियों के नाम पहला पत्र, ३/१९

(तीन) बाइबिल दर्शन की निंदा करता है

१८६. "८. सावधान रहें। कहीं ऐसा न हो कि कोई आप लोगों को ऐसे खोखले और भ्रामक दर्शन-शास्त्र द्वारा बहकाये,..."

– कलोसियों के नाम, २/८

यह सर्वस्वीकृत तथ्य है कि ज्ञान और दर्शन तथा ज्ञान से प्राप्त होने वाली बुद्धिमत्ता मनुष्य को तर्क शक्ति प्रदान करती है, जिससे शुद्ध और अशुद्ध, श्रेष्ठ और निकृष्ट तथा सत्य और असत्य में विभेद करने का सामर्थ्य उत्पन्न होता है, परन्तु पवित्र बाइबिल के अनुयाई तर्क शक्ति की निंदा करते हैं। **मार्टिन लूथर** कहते हैं :

"'सभी ईसाइयों में तर्क शक्ति को नष्ट कर देता चाहिए।"

– मार्टिन लूथर

पोप ग्रेगरी पहला, ग्रेगरी महान, ने व्याकरण के अध्ययन का विरोध किया था। उन्होंने पादरियों को छोड़ कर सभी को शिक्षा प्रदान करने की निंदा करते हुए इसे मूर्खता और दुष्टता का नाम दिया था। उन्होंने जन साधारण द्वारा बाइबिल पढ़ना भी वर्जित कर दिया था। उन्होंने **पैलेटीन अपालो** के पुस्तकालय को जलवा दिया था, क्योंकि 'उसके पंथ निरपेक्ष साहित्य के कारण यह आशंका थी कि निष्ठावान ईसाइयों का ध्यान स्वर्ग के चिंतन से विमुख हो जाएगा।" [१०२]

---

१०२. (एक) **बरबरा जी. वाकर :** *'दी वोमनस इनसाइक्लोपेडिया आफ़ मिथ्स ऐंड सीक्रेटस'* (पोराणिक एवं गुप्त कथाओं का नारियों का ज्ञान कोष), हार्पर ऐंड रो, सैन फ्रैंसिसको, १९८३, पृष्ठ २०८

(दो) **हेलिन एलर्बी :** *'दी डार्क साइड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष), अमरीका, अगस्त, १९९८, पृष्ठ ४८

बर्ट्रेण्ड रसेल ने, जो विख्यात दार्शनिक थे और जिन्हें १९५० में साहित्य के लिए नोबल पुरुस्कार प्रदान किया गया था, अपने निम्न मत के द्वारा उपरोक्त कथन की पुष्टि की है :

> *"पोप ग्रेगरी महान ने एक बिशप को अपने पत्र के प्रारम्भ में लिखा था, 'हमें एक प्रतिवेदन मिला है, जिसका उल्लेख करते हुए हमें लज्जा से सिर झुकाना पड़ता है। उसमें कहा गया है कि तुम ने कुछ मित्रों को व्याकरण सिखाया है।' पादरियों के प्रमुख अधिकारी ने बिशप को आदेश दिया कि वह ऐसा घिनौना श्रम कभी न करे और जब तक पुनर्जागरण (Renaissance) नहीं हुआ, लैटिन भाषा का व्याकरण इस प्रतिबंध से मुक्त नहीं हुआ।"*[१०३]
>
> **– बर्ट्रेण्ड रसेल**

यह आश्चर्य की बात है कि कैथोलिक ईसाई संस्था (चर्च) ने लैटिन से अंग्रेज़ी में बाइबिल के अनुवाद का भी घोर विरोध किया था। **विलियम टिंडेल** ने गुप्त रीति से न्यू टेस्टामेंट का लैटिन से अंग्रेज़ी में अनुवाद कर दिया था। उसे इस अपराध के लिए गला घोंट कर मार डाला गया और जला दिया गया। **जेम्स ए. हाट** इस सम्बंध में कहते हैं :

> *"कैथोलिक चर्च ने निर्णय दिया कि बाइबिल केवल लैटिन भाषा में मुद्रित हो सकता है और इसका अध्ययन केवल पादरी और विद्वान कर सकते हैं। इसे सामान्य भाषा में सामान्य लोगों के लिए मुद्रित करना, मृत्यु दण्ड द्वारा दण्डनीय अपराध था। इंगलैंड में १५२० ईसवी में **विलियम टिंडेल** ने न्यू टेस्टामेंट का अंग्रेज़ी में अनुवाद करने की अनुमति मांगी*

---

१०३. **बर्ट्रेण्ड रसेल :** *'व्हाइ आइ ऐम नाट ऐ क्रिस्चैन ऐंड अदर एस्सेज़ आन रिलीजन'* (मैं ईसाई क्यों नहीं और धर्म सम्बंधी अन्य निबंध) सातवां संस्करण, १९९६, लंदन, पृष्ठ २८

ताकि हर साधारण व्यक्ति इसे पढ़ सके। इस प्रार्थना ने उसके जीवन के लिए संकट उपस्थित कर दिया और वह भाग कर जर्मनी में लूथर के क्षेत्र में चला गया। उसने अनुवाद पूरा करने के उपरांत उसकी प्रतियां गुप्त रीति से वापस इंगलैंड भेज दीं। वहां वे पकड़ी गईं और उन्हें कैथोलिक बिशपों के द्वारा जला दिया गया। कैथोलिक प्राधिकारियों ने अन्ततोगत्वा टिंडेल को अन्तवर्प में पकड़ लिया और उसके नास्तिक होने के अपराध पर अभियोग चलाने के उपरांत उसका गला घोंट कर मरवा दिया और आग में जलवा दिया।"[१०४]

– जेम्स ए. हाट

२. वेद ज्ञान का संवर्धन करते हैं

वेद का आदर्श वाक्य है "ज्ञान के द्वारा परम सुख"। पवित्र वेद ज्ञानार्जन पर बल देते हैं। ज्ञान प्राप्ति के लिए कोई आयु सीमा नहीं। सारा विश्व एक विशाल पाठशाला है, जहां मनुष्य पालने से ले कर मृत्यु तक ज्ञान का अर्जन करता है। जो लोग ज्ञानार्जन का प्रयत्न नहीं करते वे प्रवाहहीन जल के समान हैं, जिसमें दुर्गन्ध उत्पन्न हो जाती है। जो व्यक्ति ज्ञान विहीन है, वह न केवल अपने जीवन को कटु बनाता है, वरन् दूसरों के जीवन को भी कटु बना देता है। जो ज्ञान प्राप्ति के लिए कार्यशील है, उसे परमानंद की प्राप्ति होती है। वह ज्ञान के फल का, जो अमृत के समान मधुर है, न केवल स्वयं उपभोग करता है वरन् औरों को उसका आनंद प्रदान करता है। इसी लिए वेद ज्ञान के द्वारा परम सुख प्राप्त करने की शिक्षा देते हैं।

विद्ययामृतमश्नुते ।

– यजुर्वेद ४०/१४

---

१०४. **जेम्स ए. हाट :** *'होली हारर्स'* (पवित्र यातनाएं), प्रामीथियस बुक्स, न्यू यार्क द्वारा प्रकाशित, १९९०, पृष्ठ १००-१०१

ज्ञान के द्वारा
अनन्त एवं परम सुख की प्राप्ति होती है।

– यजुर्वेद ४०/१४

पवित्र वेद ज्ञान द्वारा आत्म शुद्धि पर बल देते हैं। वेद प्रगतिशील विचारों का उपदेश देते हैं। वे उस ज्ञान पर बल देते हैं जो मानव को उन्नत और श्रेष्ठ बनाता है, अंधकार मुक्त और प्रकाशयुक्त करता है। ज्ञान प्राप्ति का उद्देश्य और प्रयोजन अन्तर को मल और मैल से मुक्त कर मन को शुद्ध करना है। जिस प्रकार स्वर्ण की अशुद्धता को अग्नि में जला दिया जाता है, तो वह चमकने लगता है, उसी प्रकार सच्चा ज्ञान मनुष्य की त्रुटियों और दोषों को, और मूर्खता और मूढ़ता को जला कर उसे प्रकाशमय बना देता है। इसी लिए वेद मनुष्य से अनुरोध करते हैं कि वह उस ज्ञान को प्राप्त करे जिसके द्वारा दोष दूर हों और शुद्धता तथा पवित्रता का सृजन हो।

पावका नः सरस्वती।

– ऋग्वेद १/३/१०

सत्य का ज्ञान
हमें शुद्ध करता है।

– ऋग्वेद १/३/१०

पवित्र वेद सदा वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और आविष्कार कर्ताओं को प्रेरणा और प्रोत्साहन देते रहे हैं। वे मनुष्य को प्रेरणा देते हैं कि वह ज्ञान, बुद्धिमत्ता, दर्शन, शक्ति और सौंदर्य की खोज में, समुद्र तल पर नौवहन के द्वारा नये प्रदेशों का अन्वेषण करे, समुद्र की अतल गहराई में ग़ोता लगा कर हीरों और जवाहरों तक पहुंचे, अन्तरिक्ष में उड़ाने भरे और नये क्षितिज की खोज करे। पवित्र वेदों ने ही मनुष्य को अन्तरिक्ष और समुद्र तल में खोज का परामर्श दिया है।

समुद्रं गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा।

– यजुर्वेद ६/२१

समुद्र तल में खोज करो
अन्तरिक्ष का अन्वेषण करो
और ईश की आशीश प्राप्त करो।

– यजुर्वेद ६/२१

"केवल उसे स्वीकार करो जो बुद्धि को स्वीकार्य हो। कोई भी बात केवल इस लिए स्वीकार न करो कि उसे किसी महान नेता ने कहा है। अपने विवेक बुद्धि की कसौटी पर उसके सत्य की परीक्षा करो।"

– डा. केशव राव बलीराम हेडगेवार

"मेरी बात पर ध्यान दो ! तुम तब और केवल तभी हिन्दू कहला सकते हो, जब हिन्दू का नाम मात्र तुम्हारे हृदय में विद्युत शक्ति का संचार कर देता है। तुम तब और तभी हिन्दू कहला सकते हो, जब हर व्यक्ति जिसका नाम हिन्दू है, चाहे वह किसी भी देश से हो, हमारी भाषा अथवा कोई अन्य भाषा बोलता हो, तत्काल तुम्हारे लिए घनिष्ठतम और प्रियतम बन जाता है। तुम तब और तभी हिन्दू कहला सकते हो जब हिन्दू की पीढ़ा तुम्हारे हृदय को छूती है और तुम्हें यह अनुभव होता है कि तुम्हारा अपना पुत्र पीड़ा में है।"

– स्वामी विवेकानंद

अध्याय १९

बाइबिल का नरक दण्ड का सिद्धांत वेदों का मुक्ति का सिद्धांत

१. बाइबिल का ग़ैर-ईसाइयों के लिए नरक दण्ड का सिद्धांत

(एक) नास्तिक (ग़ैर-ईसाई) आग में जला देने के योग्य हैं

ईसा मसीह न्यू टेस्टामेंट में कहते हैं, "जो मुझ में आश्रय ग्रहण नहीं करता वह आग में झोंक देने योग्य वृक्ष की सूखी डाली की तरह फैंक दिया जाएगा।"

> १८७. "६. यदि कोई मुझ में नहीं रहता, तो वह सूखी डाली की तरह फेंक दिया जाता है। लोग ऐसी डालियाँ बटोर लेते हैं और आग में झोंक कर जला देते हैं।"
>
> *– सन्त योहन, १५/६*

क्या पूजा की स्वतंत्रता मनुष्य का मूल अधिकार नहीं है ? यदि ऐसा है तो जो व्यक्ति ईसा की शरण ग्रहण नहीं करता उसे आग में जला देने का आदेश क्यों ? क्या मानव अधिकार आयोग के ईसाई सदस्य ईसा मसीह की उपरोक्त घोषणा से सहमत होंगे ?

जेम्स मैडीसन, अमरीका के चौथे राष्ट्रपति, इस सम्बंध में स्पष्ट शब्दों में अपना मत व्यक्त करते हैं :

> *"ईसाई मत से प्राप्त होने वाले फल क्या हैं ?*
> *अंध-विश्वास, हठधर्मिता और उत्पीड़न।"*[१०५]
>
> **– जेम्स मैडीसन**

(दो) नास्तिकों (ग़ैर-ईसाई) के लिए ईसा मसीह का नरक दण्ड का सिद्धांत

क्या केवल ईसाइयों में ही धार्मिक लोग हैं ? क्या ग़ैर-ईसाइयों में धार्मिक लोग नहीं हैं ? क्या यह कहना उचित है कि केवल ईसाई मोक्ष प्राप्ति के पात्र हैं, जबकि अन्य जो ईसाई सिद्धांतों में विश्वास नहीं करते वे नरक के पात्र हैं ? न्यू टेस्टामेंट में ईसा मसीह ने यह घोषणा की है :

१८८. "१६. जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा ग्रहण करेगा, उसे मुक्ति मिलेगी। जो विश्वास नहीं करेगा, वह दोषी ठहराया जायेगा।"

– सन्त मारकुस, १६/१६

१८९. "३३. साँपों ! करैतों के बच्चो ! तुम लोग नरक के दण्ड से कैसे बचोगे ?"

– सन्त मत्ती, २३/३३

---

१०५. **एन.एस. राजाराम** : *'क्रिसचैनिटीज़ स्क्रैम्बल फ़ार इंडिया ऐंड दी फ़ेल्यूअर आफ़ दी सिक्यूलरिस्ट एलिट'* (ईसाई मत द्वारा भारत पर अधिकार के लिए संघर्ष और पंथ-निरपेक्ष सम्भ्रांत लोगों की विफलता), नई दिल्ली, १९९९, पृष्ठ ६२

इस प्रकार ईसा मसीह ग़ैर-ईसाइयों के लिए नरक दण्ड निर्धारित करता है। क्या यह उन लोगों के विरुद्ध प्रतिशोध का क्रोधावेश नहीं है, जो उनका उपदेश नहीं सुनते थे ? विख्यात दार्शनिक बर्ट्रेण्ड रसेल, जिन्हें १९५० में साहित्य के लिए नोबल पुरुस्कार प्रदान किया गया था, यह मत व्यक्त करते हैं :

> *"मेरे मत के अनुसार ईसा मसीह के नैतिक चरित्र में एक गंभीर त्रुटि है, कि वे नरक में विश्वास रखते थे। मैं स्वयं यह अनुभव नहीं करता कि जो व्यक्ति वास्तव में पूर्णतया मानवीय प्रकृति का व्यक्ति है इस बात पर विश्वास कर सकता है कि शाश्वत दण्ड की व्यवस्था भी हो सकती है। ईसा मसीह निश्चय ही, जैसा कि उनके उपदेशों में लक्षित होता है, अनन्त दण्ड में विश्वास रखते थे और वे निरंतर उन लोगों के विरुद्ध प्रतिशोध की भावना से क्रोध से भर जाते, जो उनका उपदेश नहीं सुनना चाहते थे।"*[१०६]
>
> **– बर्ट्रेण्ड रसेल**

बर्ट्रेण्ड रसेल तो यहां तक कह देते हैं कि ईसा मसीह का अस्तित्व भी संदिग्ध लगता है। वे लिखते हैं :

> *"ऐतिहासिक दृष्टि से यह पूर्णतया संदिग्ध है कि ईसा मसीह का कभी कोई अस्तित्व था अथवा नहीं और यदि उनका अस्तित्व था तो हम उनके सम्बंध में कुछ नहीं जानते।"*[१०७]
>
> **– बर्ट्रेण्ड रसेल**

---

१०६. **बर्ट्रेण्ड रसेल :** *'व्हाइ आइ ऐम नाट ऐ क्रिस्चैन ऐंड अदर एस्सेज़ आन रिलीजन'* (मैं ईसाई क्यों नहीं और धर्म सम्बंधी अन्य निबंध) सातवां संस्करण, १९९६, लंदन, पृष्ठ २२

१०७. पूर्वोक्त, पृष्ठ २१

सभी समुदायों में अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के लोग होते हैं। क्या दुष्ट और दुराचारी लोग भी, जो ईसाई मत के सिद्धांतों में विश्वास रखते हैं, मोक्ष को प्राप्त होंगे ? क्या पुण्यात्मा तथा सदाचारी लोग, जो ईसाई मत के सिद्धांतों में विश्वास नहीं रखते, सदा के लिए नरक का दण्ड भोगेंगे ? आप, **मार्टिन लूथर (१४८३-१५४६)**, जो जर्मन धर्म सुधारक थे और जिन्होंने प्रोटेस्टन्ट नामक सुधारवादी मत की स्थापना की थी, के एक बात चीत में प्रस्तुत कथन पढ़ कर आश्चर्य चकित रह जाएंगे। वे कहते हैं :

> *"जो व्यक्ति यह कहता है कि ईसा के उपदेश के अनुसार मोक्ष पाने के लिए कार्य करने की आवश्यकता है, उसके सम्बंध में मैं स्पष्ट दो टूक शब्दों में यह कहता हूँ कि वह झूठ बोलता है। यदि मनुष्य केवल ईसा में पर्याप्त विश्वास रखें तो वे प्रति दिन हज़ारों हत्याएं और व्यभिचार कर सकते हैं और फिर भी उनके मोक्ष प्राप्त करने में कोई संकट उपस्थित नहीं होगा।"*[१०८]
>
> **– मार्टिन लूथर**

यह अत्यंत आश्चर्य और पीड़ा का विषय है कि उपरोक्त उद्धरण होते हुए भी, ईसाई प्रचारक इस बात पर विश्वास नहीं करते कि "सभी धर्म सत्य पर आधारित हैं, या सभी धर्म एक ही लक्ष्य की ओर ले जाते हैं।" उनका विश्वास है कि केवल उनका मत ही सत्य पर आधारित है, परन्तु अन्य धर्म झूठे हैं।

(तीन) मोक्ष केवल ईसा मसीह के माध्यम से संभव है

ऐसा लगता है कि पवित्र बाइबिल ने मुक्ति पर एकाधिकार प्राप्त कर लिया है। ईसा मसीह न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) में घोषणा करते हैं

---

१०८. **चार्ल्स स्मिथ :** *"दी बाइबिल इन दी बैलंस"* (तुला में बाइबिल), हिन्दू लेखक मंच नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, पृष्ठ ३

कि, "अन्य कोई नहीं, केवल मैं ही वह द्वार हूँ जिसके द्वारा ईश्वर के राज्य में प्रवेश किया जा सकता है।" वे तो यहां तक कह देते हैं कि, "मुझ से पहले जो ईश दूत आए वे चोर और डाकू थे।" इस सम्बंध में निम्नलिखित सात पद पठनीय हैं :

१९१. "८. जो मुझ से पहले आये, वे सब चोर और डाकू हैं; किन्तु भेड़ों ने उनकी नहीं सुनी।"

– सन्त योहन, १०/८

१९२. "९. मैं ही द्वार हूँ। यदि कोई मुझ से हो कर प्रवेश करेगा, तो उसे मुक्ति प्राप्त होगी। वह भीतर-बाहर आया-जाया करेगा और उसे चरागाह मिलेगा।"

– सन्त योहन, १०/९

१९३. "६. ईसा ने उस से कहा, 'मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूँ। मुझ से हो कर गये बिना कोई पिता के पास नहीं आ सकता।' "

– सन्त योहन, १४/६

१९४. "२५. ईसा ने कहा, 'पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ। जो मुझ में विश्वास करता है, वह मरने पर भी जीवित रहेगा।' "

– सन्त योहन, ११/२५

१९५. "२६. और जो मुझ में विश्वास करते हुए जीता है, वह कभी नहीं मरेगा। क्या तुम इस बात पर विश्वास करती हो ?"

– सन्त योहन, ११/२६

१९६. "३०. जो मेरे साथ नहीं है, वह मेरा विरोधी है...।"

– सन्त मत्ती, १२/३०

पवित्र बाइबिल के उपरोक्त पदों की तुलना में श्रीमद्भगवद् गीता

में कहा गया है :

येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः।
तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम् ।।

– गीता ९/२३

जो भक्ति भाव से
अन्य देवताओं की पूजा करते हैं
वे मेरी ही पूजा करते हैं।

– गीता ९/२३

(चार) धनी लोगों के लिए मुक्ति नहीं

दी न्यू टेस्टामेंट के अनुसार धनी व्यक्ति ईश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। ईसा मसीह इस सम्बंध में स्पष्टतया निम्नलिखित घोषणा करते हैं :

१९७. "२३. तब ईसा ने अपने शिष्यों से कहा, 'मैं तुम लोगों से यह कहता हूँ-धनी के लिए स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन होगा।' "

– सन्त मत्ती, १९/२३

१९८. "२४. मैं यह भी कहता हूँ कि सूई के नाके से हो कर ऊँट का निकलना अधिक सहज है, किन्तु धनी का ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना कठिन है।"

– सन्त मत्ती, १९/२४

उपरोक्त दो पद स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि धनी लोगों के लिए मुक्ति प्राप्त करने की कोई आशा नहीं। क्या यूरोप और अमरीका के धनी लोग उपरोक्त दो पदों पर विश्वास करते हैं ? यदि ऐसा है तो वे अवश्य ही नरक जाएंगे। या तो वे दरिद्र बनने का प्रयत्न करें या किसी और धर्म की खोज करें, क्योंकि ईसाई मत ने उनके लिए स्वर्ग के द्वार बंद कर दिए हैं।

२. सब पुण्यात्मा लोगों के लिए, वेदों में मुक्ति का सिद्धांत

वेद कभी यह नहीं कहते कि केवल हिन्दू ही मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। विश्व के प्रारम्भ में जब पवित्र वेद अर्थात् **ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद और सामवेद** के ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश, **अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा** नामक चार ऋषियों को हुआ तो उस समय धरती पर हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई या यहूदी कोई भी नहीं था। धरती के मानवों को ये नाम बहुत समय के पश्चात् दिए गए। इस लिए वेदों के अनुसार मुक्ति किसी एक समुदाय की बपौती नहीं है। यद्यपि वेदों के ज्ञान का प्रकाश उपरोक्त ऋषियों के हृदयों में आर्यवर्त (भारत) की सिंधु (इंडस) नदी के तट पर हुआ था, वे किसी एक देश या समुदाय के नहीं हैं। पवित्र वेद समस्त मानव जाति का असाधारण एवं अनश्वर उत्तराधिकार हैं और सारे विश्व की बपौती हैं। वैदिक धर्म मानवता का धर्म है।

वेदों में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि वे लोग मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं जो वेदों में बताए गए सत्य के शाश्वत और दोष विहीन सिद्धांतों के अनुसार निस्वार्थ भाव से पुण्य कार्य करते हैं और अपने कार्यों के लिए फल या पुरुस्कार की आशा नहीं रखते। अतः **वैदिक धर्म कर्म के सिद्धांत पर आधारित है।** जिसके कर्म पवित्र और धार्मिक हैं, वह चाहे किसी जाति, मत, रंग, समुदाय या देश का हो, मुक्ति का पात्र है। यजुर्वेद का निम्नलिखित मन्त्र इस कथन का प्रमाण है :

अक्रन् कर्म कर्मकृतः सह वाचा मयोभुवा।
देवेभ्यः कर्म कृत्वास्तं प्रेत सचाभुवः॥

– यजुर्वेद ३/४७

जो परस्पर सहयोग के वातावरण में
निस्वार्थ भाव से कार्य करता है
और जिसके शब्द मंगलकारी,
सत्य, हर्ष और मधुरता से भरे हुए हैं

वह ही लक्ष्य (मुक्ति) प्राप्त करता है।

– यजुर्वेद ३/४७

यही उपदेश श्रीमद्भगवद गीता में दिया गया है :

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः।।

– गीता ३/१९

"इसलिये तू निरन्तर आसक्ति से रहित होकर
सदा कर्तव्यकर्मको भलीभाँति करता रह
क्योंकि आसक्ति से रहित होकर
कर्म करता हुआ मनुष्य
परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।"

– गीता ३/१९

"ईसाई प्रचारकों से मेरा विवाद यही है कि वे सोचते हैं कि ईसाई मत के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म सच्चा धर्म नहीं है।"

– मोहनदास कर्मचंद गांधी

"हमारा लक्ष्य होना चाहिए राष्ट्र का सैन्यीकरण करना और सेना का आधुनिकीकरण करना। आक्रांताओं को भारत की भूमि से निकाल फैंकना होगा।"

– पंडित दीन दयाल उपाध्याय

अध्याय २०

वेदों और बाइबिल दोनों में "भले बनो, भला करो" का सिद्धांत

१. वेदों में "भले बनो, भला करो" का सिद्धांत

वेदों का दर्शन मात्र आदर्शवाद के लम्बे पाठों और लम्बे उपदेशों पर आधारित नहीं है। यह व्यावहारिक जीवन के लिए अनुरोध करता है। वेद मनुष्य को यह शिक्षा देते हैं कि वह पवित्र एवं धर्मपरायण जीवन जिए जिसमें परोपकार, धर्मोपकार, पर पीड़ानुभूति और दयाशीलता की भावनाएं भरी हुई हों। मुक्ति का यही एक मार्ग है अर्थात् "भले बनो, भला करो", यही वैदिक दर्शन का सार तत्व है। जो व्यक्ति वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करता है, धार्मिक कर्मकाण्ड का अनुसरण करता है, परन्तु स्वयं पवित्र जीवन नहीं जीता, न ही अन्य के प्रति भलाई करता है, वह उस व्यक्ति के समान है जो खेत में हल चलाता है परन्तु उसमें बीज नहीं बोता। जो मनुष्य धार्मिक विचारों और सिद्धांतों का उच्चारण भी करता है और दैनिक जीवन के व्यवहार में भी लाता है, वह उस व्यक्ति के समान

है जो न केवल खेत में हल चलाता है और बीज बोता है वरन् फ़सल भी काटता है। कार्य का एक अणु, ढेर सारे उपदेशों से अधिक श्रेष्ठ है।

वेद मानवता के लिए व्यावहारिक जीवन के पथ प्रदर्शक हैं, इस लिए वे अच्छे जीवन और अच्छे कृत्यो पर बल देते हैं :

शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः।

– ऋग्वेद १०/१८/२

ऐ पूजा करने वालो
पवित्र और धर्मपरायण बनो।

– ऋग्वेद १०/१८/२

"भले बनो, भला करो" का सिद्धांत सत्य के सिद्धांत पर आधारित है। आज के तर्क और हेतुवाद (rationalism) के आधुनिक युग में अनेक लोग इस बात पर वाद-विवाद करते हैं कि भला क्या है और बुरा क्या है। उनकी समस्या है कि भले ओर बुरे, सत्य और असत्य, तथा उचित और अनुचित में विभेद कैसे किया जाए। भले और बुरे, सत्य और असत्य, उचित तथा अनुचित के स्वरूप के सम्बंध में निर्णय करने का सब से अच्छा उपाय यह है कि उस सिद्धांत को स्वयं अपने ऊपर घटित कर के देखा जाए। दूसरों के साथ वैसा ही करो, जैसा तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारे साथ करें। यदि तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारा जीवन तुम से न छीनें, तो तुम्हें भी अन्य किसी प्राणी का जीवन नहीं छीनना चाहिए। क्या यह घोर विडम्बना का विषय नहीं है कि तुम चाहते हो कि ईश्वर तुम्हारे प्रति दया करे, और दूसरी ओर तुम उसी ईश्वर के प्राणियों के प्रति दया नहीं दिखाते ? ईश्वर ने हर मनुष्य को सर्वोत्तम परामर्शदाता प्रदान किया है, वह है विवेक अथवा अन्तरात्मा। जब मनुष्य नीच कर्म करता है तो उसकी अन्तरात्मा उसे कचोटती है, भले ही यह सच है कि उसके अन्दर के शैतानी तत्व अन्तरात्मा की आवाज़ को दबाने का भरसक प्रयत्न करते हैं। अन्तरात्मा की आवाज़ सत्य की आवाज़ है, यही धर्म का दूसरा नाम है। जो धर्म सत्य पर आधारित नहीं वह धर्म नहीं कहला सकता। **महाभारत** का निम्न उद्धरण स्पष्ट शब्दों मं उक्त कथन की पुष्टि करता है :

धर्मः स नो यत्र न सत्यमस्ति।

– महाभारत

वह धर्म जो सत्य से विहीन है
कदापि धर्म नहीं है।

– महाभारत

वैदिक धर्म सत्य के सिवा अन्य किसी बात का उपदेश या आदेश नहीं देता। उस में सत्य की व्याख्या की गई है अर्थात् : प्रकृति का सार्वभौमिक नियम, या अन्तरात्मा की आवाज़ या ईश्वरीय वाणी।

ऋतस्य पथा प्रेत।

– यजुर्वेद ७/४५

सत्य के मार्ग पर चलो।

– यजुर्वेद ७/४५

२. बाइबिल में "भले बनो, भला करो" का सिद्धांत

(एक) दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो, जैसा तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारे साथ करें

१९९. "१२. दूसरों से अपने प्रति जैसा व्यवहार चाहते हो, तुम भी उनके प्रति वैसा ही किया करो। यही संहिता और नबियों की शिक्षा है।"

– सन्त मत्ती, ७/१२

यह कितना उत्तम उपदेश है! मैं इसे सर्वाधिक पसंद करता हूँ। परन्तु मनुष्यों की पहचान उससे होती है जो वे करते हैं, न कि उस से जो वे कहते हैं। गोआ में ४०० वर्ष तक आतंक और अत्याचार के शासन में ईसाई शासकों ने हिन्दू महिलाओं को उनके घरों से पकड़ा, उनके साथ

बलात्कार किया और उन्हें जीवित जला दिया। उनके बच्चों को दासों के रूप में बेच दिया। हिन्दू मंदिरों को नष्ट कर दिया और उनके स्थान पर गिरजा घर बना दिए। यदि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हिन्दू उनके साथ वैसा ही व्यवहार करें तो क्या वे पसंद करेंगे ? हिन्दू, जो आर्य (सर्व श्रेष्ठ) हैं, कभी ऐसे क्रूर कार्य नहीं करेंगे। क्या यह बात लज्जा जनक नहीं है कि जो फ्रैंसिस ज़ेवियर गोआ में 'पवित्र न्यायाधिकरण' (Holy Inquisition) स्थापित करने के लिए उत्तरदायी था, जिस के अन्तर्गत हिन्दू महिलाओं को बलात्कार करने के पश्चात् जला दिया गया और हिन्दू मंदिर नष्ट कर दिए गए, उसे सन्त की उपाधि दी गई और उसके नाम से भारत में स्कूल और कॉलिज स्थापित किए गए ?

पंडित जवाहरलाल नेहरू अपनी पुस्तक "ग्लिम्प्स्ज़ आफ़ वर्ल्ड हिस्ट्री' (विश्व इतिहास की झलकियां) में 'न्यायाधिकरण' को रोमन चर्च के भयानक हथियार के रूप में इस प्रकार वर्णित करते हैं :

> *"प्राय: इसी समय स्पेन में 'न्यायाधिकरण (Inquisition) की स्थापना की गई, जो ईसाई मत को न स्वीकार करने वाले लोगों को कुचल देने के लिए रोमन कैथोलिक चर्च का भयानक हथियार था। सैरासेन्स के शासन में यहूदी समृद्ध हो गये थे, अब उन्हें धर्म परिवर्तन के लिए विवश किया गया, अनेकों को जला दिया गया। उनकी महिलाओं और बच्चों पर भी अत्याचार ढाए गए।"* [१०९]

पंडित नेहरू यह भी कहते हैं :

> *"चर्च (ईसाई संस्था) ने, १२३३ में औपचारिक एवं सरकारी रीति से 'न्यायाधिकरण' की स्थापना कर के, धर्म के नाम पर हिंसा का शासन आरम्भ*

---

१०९. **पंडित जवाहरलाल नेहरू :** *'ग्लिम्प्स्ज़ आफ़ वर्ल्ड हिस्ट्री'* (विश्व इतिहास की झलकियां), पृष्ठ १९१

कर दिया था। न्यायाधिकरण (Inquisition) एक प्रकार का न्यायालय था जो लोगों की धर्मपरायणता के सम्बंध में पूछताछ करता था और यदि वे उनके मापदंड पर ठीक नहीं उतरते थे तो उन्हें जला कर मार डालने का दण्ड दिया जाता था। नियमित रूप से काफ़िरों (नास्तिकों) की खोज की जाती थी, और उन्हें खूंटे पर लटका कर जला दिया जाता था। जला देने से भी अधिक घृणित यह था कि उन्हें धर्म परिवर्तन करने के लिए विवश करने हेतु उन पर घोर अत्याचार किए जाते थे। अनेक दरिद्र महिलाओं पर आरोप लगाया जाता था कि वे डायन (witches) हैं, और उन्हें जला दिया जाता था।[११०]

सारे देश में 'न्यायाधिकरण' अत्याधिक गतिशील रहा और तथा कथित काफ़िरों पर अत्याचार ढाए जाते रहे। समय समय पर उत्सव मनाए जाते थे, जहां इन काफ़िर पुरुषों और महिलाओं के समूह के समूह को, राजा तथा राज परिवार, राजदूतों और अन्य हज़ारों लोगों की उपस्थिति में जीवित जला दिया जाता था। ये सार्वजनिक अग्नि दाह जो अत्यंत भयंकर और कुत्सित कार्य थे उन्हें धार्मिक कार्यों का नाम दिया गया। इस काल का यूरोप का समस्त इतिहास ऐसी घोर हिंसा, हृदय को दहला देने वाली भयंकर घटनाओं, पाश्विक क्रूरता और धर्मांधता से भरा पड़ा है, जिन पर विश्वास करना कठिन प्रतीत होता है।"[१११]

– पंडित जवाहरलाल नेहरू

---

११०. **पंडित जवाहरलाल नेहरू :** *'ग्लिम्प्स्ज़ आफ़ वर्ल्ड हिस्ट्री'* (विश्व इतिहास की झलकियां), पृष्ठ २३०

१११. पूर्वोक्त, पृष्ठ २८९-२९०

न्यायाधिकरण द्वारा दण्डित पीड़ितों में **गलीलियो** है, जिसे जीवन भर के लिए कारावास का दण्ड दिया गया था, और **ग्योरडेनो ब्रूनो** है, जिसे खूँटे पर लटका कर जला दिया गया था। यहां यह जान लेना भी अपेक्षित है कि **सुश्री टेरेसा** ने गलीलियो को न्यायाधिकरण द्वारा दिया गया दण्ड उचित ठहराया था।

सीता राम गोयल ने सुश्री मतिल्दा जोसलिन की पुस्तक 'वोमन, चर्च ऐंड स्टेट' के प्रथम भारतीय संस्करण की भूमिका में कर्नल जेम्स टाड का उद्धरण प्रस्तुत करते हुए कहा है : १५३२ और १५४९ में पुर्तगालियों द्वारा, सौराष्ट्र के समुद्र तटीय क्षेत्र में रहने वाले हिन्दुओं पर किए गए घोर अत्याचारों, नरसंहार, अनेकानेक गाँवों को जला देना, युवा पुरुषों और महिलाओं को पकड़ कर दासों के रूप में बेच देना और सम्पत्ति लूट लेना आदि ऐसी घटनाएं हैं, जिन के सम्बंध में **कर्नल जेम्स टाड** ने ये विचार व्यक्त किए हैं :

> *"संभवत: ईसाई मत के लिए यह सौभाग्य की बात होगी कि भारत की इतिहास की देवी मौन रही, जैसा कि अनेक लोगों ने उसे ऐसा प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है, क्योंकि ऐसे अत्याचार इस बात के लिए पर्याप्त थे कि वे ईसाई मत से सम्बंध रखने से घबराते रहे हैं।"*[११२]
>
> **– कर्नल जेम्स टाड**

"विश्व शक्तिहीन के दर्शन को, चाहे वह कितना ही महान हो, सुनने के लिए तैयार नहीं होता।"

– गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर

११२.(एक) **मतिल्दा जोसलिन गेज** : *'वोमन, चर्च ऐंड स्टेट'* (स्त्री, चर्च और राज्य), न्यू यार्क, १८९३, वाइस आफ़ इंडिया नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, १९९७, प्रस्तावना, पृष्ठ ५

(दो) **कर्नल जेम्स टाड** : *'ट्रैवेल्ज़ इन वेस्टर्न इंडिया'* (पश्चिमी भारत में यात्राएं), लंदन, १८३९, नई दिल्ली में पुनर्मुद्रित, १९९७, पृष्ठ २६०

अध्याय २१

वेदों और बाइबिल दोनों में क्षमा दान और अहिंसा के उपदेश

१. वेदों में क्षमा दान और अहिंसा

पवित्र वेद 'क्षमा दान और अहिंसा' के श्रेष्ठ पाठ की शिक्षा देते हैं। वेद का अनुयायी सर्वशक्तिमान परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वह उसके शत्रु को भी जो उससे घृणा करता है, जीवन प्रदान करे। वह ईश्वर से न केवल अपने कल्याण के लिए वरन् अपने शत्रु की समृद्धि के लिए भी प्रार्थना करता है।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तस्य त्वं प्राणेनाऽप्यायस्व ।
आ वयं प्याशिषीमहि गोभिरश्वैः प्रजया पशुभिर्गृहैर्धनेन ।।

– अथर्ववेद ७/८१/५

ऐ दयालु ईश्वर
उसे जीवन प्रदान कर
जो दुर्भावना और द्वेष रखता है

हमारे प्रति
और जिसके विरुद्ध
हम घृणा करते हैं;
वह उन्नति करे
हम भी उन्नति करें;
हमें वरदान प्राप्त हो
पशु धन, घोड़ों, पुत्रों और प्रपौत्रों का
घर, स्वास्थ्य और धन का
सभी फलें फूलें
हम भी फलें फूलें !

– अथर्ववेद ७/८१/५

वैदिक सभ्यता अत्यंत उत्तम और भव्य है। यह अपनी परिधि में विश्व के समस्त मनुष्यों का समावेश करती है। यह एक समुदाय या एक देश के लिए नहीं है। यह समस्त मानव जाति के लिए है। यह अद्वितीय और सार्वभौमिक सभ्यता है। इसी लिए इस में समस्त मानवता के लिए कल्याण की कामना की गई है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत् ।।

ऐ ईश्वर, सभी सुखी हों
सभी स्वस्थ हों
सब का कल्याण हो
कोई दुखी न हो
विपदाओं और विपत्तियों से !

वेदों के अनुसार सभी आत्माओं में पूर्व जन्म से ही पारस्परिक समन्वय, प्राकृतिक सम्बंध और दैवी सामंजस्य है। इस लिए वेद, लोगों को यह शिक्षा देते हैं कि एक दूसरे से घृणा न करो। जो दूसरे से घृणा करता है, वह अपने से ही घृणा करता है, क्योंकि वह अनुभव करता है कि दोनों में ईश्वरीय आभा का प्रकाश है, जो दोनों के बीच सम्बंध

स्थापित करने वाली सामूहिक कड़ी है। इस लिए वेद लोगों को शिक्षा देते हैं कि वे द्वेष और घृणा को त्याग दें।

वि द्वेषांसीनुहि ।

– ऋग्वेद ६/१०/७

घृणा त्याग दो ।

– ऋग्वेद ६/१०/७

अथर्ववेद में दी गई प्रार्थना में भी इसी भाव को प्रकट किया गया है :

मा नो द्विक्षत कश्चन।

– अथर्ववेद १२/१/२४

हम किसी से भी घृणा न करें ।

– अथर्ववेद १२/१/२४

वैदिक धर्म में हिंसा घृणित एवं घृणास्पद है। वेद हमें शिक्षा देते हैं कि, "इस धरती पर जो भी प्राणी सांस लेता है, उसकी हत्या मत करो। निर्दोष का वध करना घोर पाप है।"

अनागोहत्या वै भीमा ।

– अथर्ववेद १०/१/२९

निर्दोष की हत्या करना
अत्यंत घोर पाप है ।

– अथर्ववेद १०/१/२९

वे आंखें धन्य हैं जो अन्य सब को प्रेम और प्यार की दृष्टि से देखती हैं। अभिशप्त और निंदनीय हैं वे आंखें जो त्यौरी चढ़ा कर, क्षुब्ध दृष्टि से दूसरों को देखती हैं। वेद शिक्षा देते हैं कि सभी मित्र हैं, कोई शत्रु नहीं। प्रेम से प्रेम उत्पन्न होता है और घृणा से विष का बीज उत्पन्न होता है। यदि आप मित्र भाव से दूसरों को देखोगे तो उनकी दृष्टि भी आप के लिए प्रेम भरी होगी। अतः यह हमारा परम कर्तव्य हो जाता है कि हम परस्पर मित्रता और सहानुभूति, प्रेम और अनुराग, सहयोग और

सहकार, तथा समानता एवं भ्रातृभाव की भावना का वातावरण उत्पन्न करें। यजुर्वेद की इस प्रार्थना में इसी भाव को प्रदर्शित किया गया है :

दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे ।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।।

– यजुर्वेद ३६/१८

ऐ अविचल एवं कृत संकल्प ईश्वर
मुझे अविचल बनाओ
मुझे सभी
मित्रता की दृष्टि से देखें
मैं भी सब की ओर
मित्र भाव से देखूं
सभी एक दूसरे की ओर
मित्र भाव से देखें ।

– यजुर्वेद ३६/१८

२. बाइबिल में क्षमा दान और अहिंसा

(एक) यदि कोई आपके दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तो बाहिना गाल भी उसकी ओर कर दो

ईसा मसीह कहते हैं :

२००. "३९. परन्तु मैं तुम से कहता हूँ-दुष्ट का सामना नहीं करो। यदि कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, तो दूसरा भी उसके सामने कर दो।"

– सन्त मत्ती, ५/३९

पवित्र बाइबिल का यह अंश ईसाइयों के लिए सर्वोत्तम है। मैं सच्चे हृदय से यह इच्छा करता हूँ कि समस्त विश्व के ईसाई, ईसा मसीह के

इस उपदेश का अनुसरण और आचरण करें। यदि वे ऐसा करें तो विश्व स्वर्ग में परिवर्तित हो जाए। परन्तु इतिहास प्रमाण प्रस्तुत करता है कि गोआ के ईसाई शासकों ने इस उपदेश के सर्वथा प्रतिकूल अनुसरण और आचरण किया था। "गोआ के पवित्र न्यायाधिकरण" ने जो **डॉ. एम.बी. नियोगी** के शब्दों में अपवित्र और दुराचारी संस्था थी, ईसाइयों और ग़ैर-ईसाइयों दोनों पर असंख्य अत्याचार किए थे। यह न्यायाधिकरण सभी कहीं स्थापित ऐसी संस्थाओं में से निकृष्टतम संस्था थी।

श्रीमद्भगवद् गीता हिन्दुओं को सचेत करती है कि वे दुष्ट और दुराचारी का वध करें (निर्दोष का नहीं), जबकि बाइबिल ईसाइयों को उक्त पद में आदेश देता है कि दोषी का विरोध न करें, और जो व्यक्ति तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसके सामने बायां गाल कर दो। यदि हिन्दुओं और ईसाइयों ने अपनी अपनी पवित्र पुस्तकों (गीता और बाइबिल) के उपरोक्त उपदेशों का अनुसरण किया होता तो विश्व का मानचित्र परिवर्तित हो गया होता। अभिप्राय यह कि न अंग्रेज़ों द्वारा भारत को पराजित किया जाता, न उस पर अधिकार जमाया जाता और न उसे अत्याचार पूर्ण दासता के बंधन में बांधा जाता, वरन् विश्व के अधिकांश देशों में हिन्दू राज्य (राम राज्य) की स्थापना हो गई होती। परन्तु दुख की बात है कि हिन्दुओं ने गीता के उपदेश की उपेक्षा की और बाइबिल के उपरोक्त उपदेश का अनुसरण किया। इसके विपरीत ईसाइयों ने बाइबिल के उक्त उपदेश की उपेक्षा की और गीता के उपरोक्त श्लोक का नकारात्मक रूप में अनुसरण किया अर्थात् उन्होंने दुष्टों के विरुद्ध तलवार नहीं उठाई (जैसा गीता में आदेश है), वरन् पुण्यात्माओं (गीता के अनुयाइयों) के विरुद्ध तलवार उठाई। यह घोर दुख, पीड़ा और क्षोभ की बात है कि गीता के अनुयाई (हिन्दू) बाइबिल के अनुयाई बन गए, और बाइबिल के अनुयाई गीता के अनुयाई बन गए। दूसरे शब्दों में मैं यह कहना चाहता हूँ कि जब हिन्दुओं ने वीरता और शौर्य त्याग दिया तो विदेशी आक्रांताओं ने उन्हें अपने पांव तले कुचल डाला। गुरुजी मा.स. गोलवलकर का इस सम्बंध में कथन उल्लेखनीय है :

"इस सक्रिय विजयिष्णु भावना के अभाव में किसी

श्रेष्ठ कार्य के लिये किया जाने वाला समर्पण भी कोई विशेष उपयोग का नहीं होगा। इस कठोर समरांगण में जहाँ नित्य प्रति दुष्ट शक्तियों से सामना होता रहता है, भोली सज्जनता और निरीह सच्चरित्रता को, जिसे सत्वभाव का निष्क्रिय रूप कहना चाहिए, एक क्षण भी संघर्ष में टिक पाना कठिन है। इसलिये हम देखते हैं कि सम्पूर्ण धार्मिक निष्ठा, भलाई और ईश्वर-भक्ति होते हुए भी पिछले सहस्र वर्षों से हम उन विदेशी आक्रान्ताओं के पैरों तले कुचले जा रहे हैं जो भलाई तथा उत्तम गुणों से नितान्त अपरिचित हैं परन्तु जिनमें पराक्रमी कार्यों के लिये जोश तथा संगठित प्रयत्न हैं अर्थात् जो रजोगुण से पूर्ण हैं। हमारा इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि जब भी हमारे समाज में विजयिष्णु भावना का समावेश हुआ और वह सतोगुण के सक्रिय स्वरूप से निविष्ट हुआ तो राक्षसी शत्रुओं के सभी साम्राज्य चकनाचूर होते दिखाई दिये।"[११४]

– मा.स. गोलवलकर

स्वातंत्र्य **वीर सावरकर** के निम्न दो उद्धरण विस्मयजनक और आंखें खोल देने वाले हैं :

"जब तक सारा विश्व अन्यायपूर्ण है, तब तक हमें अन्यायी रहना चाहिए, जब तक सारा विश्व आक्रांता है, हमें आक्रांता रहना चाहिए।"

– वीर सावरकर

"आक्रमण और नृशंस शक्ति को केवल प्रचंड आक्रमण और घोरतम नृशंस शक्ति के द्वारा पराजित किया जा सकता है।"

– वीर सावरकर

---

११४. **मा.स. गोलवलकर :** *'बंच आफ़ थाट्स'* (विचार नवनीत), तृतीय संस्करण, १९९६, पृष्ठ ९२

जहां तक ईसा मसीह का उपरोक्त उद्धरण है, मैं इसकी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता, परन्तु उसी ईसा मसीह ने न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) में अपने अनुयाइयों को परामर्श दिया था कि "अपने वस्त्र बेच दो और तलवार ख़रीद लो।"

२०१. "३६. ...और जिसके पास नहीं है, वह अपना कपड़ा बेच कर तलवार ख़रीद ले।"

– सन्त लूकस, २२/३६

ईसा मसीह ने न्यू टेस्टामेंट (सन्त मत्ती १०/३४) में घोषणा की थी कि वह शांति के लिए नहीं आया वरन् तलवार उठाने के लिए आया है। वे न्यू टेस्टामेंट के एक और अध्याय (योहन १५/६) में कहते हैं कि, "जो मुझ में आश्रय ग्रहण नहीं करता, उसे वृक्ष की सूखी डाली की तरह फैंक दिया जाएगा, जो आग में झौंक देने के उपयुक्त होगी।" इस लिए मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि, "जो दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसके सामने बायां गाल कर दो" कथन अपने धर्म भाइयों के प्रति आचरण के लिए ईसाइयों को आदेश है। यह कथन ग़ैर-ईसाइयों के प्रति व्यवहार के लिए नहीं है। जब ईसाई ग़ैर-ईसाइयों के साथ व्यवहार करते हैं तो इसे प्रयोग में नहीं लाया जाता। उपरोक्त दो उद्धरणों को अधिकांशतः ग़ैर-ईसाइयों के साथ व्यवहार में प्रयोग किया जाता है। मेरा यह निष्कर्ष, ईसा मसीह की इस सिद्धांतोक्ति से पुष्ट हो जाता है कि जो लोग ईसाई मत के सिद्धांतों को स्वीकार नहीं करते, वे नरक जाएंगे। ईसा मसीह न्यू टेस्टामेंट (मारकुस १६/१६) में स्पष्ट कहते हैं कि जो ईसाई मत में विश्वास करता है और जिसने बपतिस्मा लिया है, उसी की रक्षा होगी और जो (ईसा और ईसाई मत) में विश्वास नहीं करता वह नरक भेजा जायगा। ओल्ड टेस्टामेंट (पुराना विधान) में तथाकथित काफ़िरों के अभिषाप, वध और विनाश की अनेक घटनाएं भरी पड़ी हैं।

पवित्र बाइबिल के दो भाग हैं। पहला भाग ओल्ड टेस्टामेंट (पुराना विधान) कहलाता है। इसमें उन निर्दोष लोगों की केवल इस कारण हत्या और नरसंहार की घटनाएं भरी पड़ी हैं, कि उनकी पूजा पद्धति भिन्न थी !

दूसरे भाग का नाम न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) है। अधिकांश ईसाई अपने मत (ईसाई मत) का आधार न्यू टेस्टामेंट में दी गई शिक्षा को मानते हैं, और बाइबिल के यहूदी अंश (ओल्ड टेस्टामेंट) को अस्वीकार कर दिया है। यदि वे पवित्र बाइबिल के यहूदी भाग (ओल्ड टेस्टामेंट) को वस्तुतः स्वीकार नहीं करते, तो वे इसे बाइबिल के पाठ से निकाल क्यों नहीं देते ? (राजा जेम्स) द्वारा पवित्र बाइबिल का प्राधिकृत संस्करण जो अमरीका में १९७९ में मुद्रित किया गया, उसमें दोनों भाग विद्यमान हैं। पवित्र बाइबिल के सारे संस्करणों में दोनों भाग हैं। ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट में गहरा सम्बंध है, और दोनों को मिला कर सम्पूर्ण बाइबिल बनता है। **सन्त आगस्टीन** इस बात की पुष्टि करते हैं। उनका कथन है :

> *"न्यू टेस्टामेंट ओल्ड टेस्टामेंट में निहित है, और ओल्ड टेस्टामेंट की अभिव्यक्ति न्यू के द्वारा होती है।"*
>
> **– सन्त आगस्टीन**

अतः ईसाई प्रचारक ओल्ड टेस्टामेंट (पुराना विधान) को अस्वीकार नहीं कर सकते। इसके अतिरिक्त ईसा मसीह ने स्वयं ओल्ड टेस्टामेंट को स्वीकार किया है, और यह कह कर इसमें दिए गए पाठ की पुष्टि की है कि वे इस धरती पर अपने पूर्वाधिकारियों द्वारा बनाए गए नियमों और संहिता को नष्ट करने के लिए नहीं आए, वरन् उन नियमों को पूरा करने के लिए आए हैं :

> **२०२. "१७. यह न समझो कि मैं (ईसा) मूसा-संहिता अथवा नबियों के लेखों को रद्द करने आया हूँ। उन्हें रद्द करने नहीं, बल्कि पूरा करने आया हूँ।"**
>
> ***– सन्त मत्ती, ५/१७***

(दो) जो आपका उत्पीड़न करें, तुम उनके लिए प्रार्थना करो

एक निष्पक्ष लेखक के नाते मैं स्वीकार करता हूँ कि पवित्र

बाइबिल में अच्छे उद्धरण भी हैं। यहां मैं ईसा मसीह का एक अच्छा उद्धरण प्रस्तुत करता हूँ। इसमें ईसा मसीह उपदेश देते हैं कि जो तुम्हें अभिषाप देता है, तुम उन्हें शुभाशीश दो, जो आप से घृणा करते हैं, तुम उन के प्रति भलाई करो, जो तुम्हें उत्पीड़ित करते हैं, तुम उनके लिए प्रार्थना करो। वे कहते हैं :

२०३. "४४. परन्तु मैं तुम से कहता हूँ-अपने शत्रुओं से प्रेम करो और जो तुम पर अत्याचार करते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो।"

– सन्त मत्ती, ५/४४

यह कितना उत्तम उपदेश है। मैं चाहता हूँ कि सभी ईसाई प्रचारक, सभी ईसाई देश और सभी ईसाई शासक एवं राजनीतिज्ञ, ईसा मसीह के उपरोक्त उपदेश के अनुसार आचरण करें। एक विचार श्रेष्ठ तभी होता है जब उसे कार्यान्वित किया जाता है, क्योंकि जीवन कृत्यों से निर्मित होता है, न कि केवल आकांक्षाओं से। यदि किसी मत के अनुयाइयों के कार्य उनके उपदेशों के प्रतिकूल हों तो उनके उपदेश का क्या लाभ ?

ऐसा प्रतीत होता है कि ईसाई प्रचारकों ने ईसा मसीह के उपरोक्त सकारात्मक उपदेश की उपेक्षा कर दी है, और उनके नकारात्मक उपदेश को अपनाया है और उसे ही कार्यान्वित किया है। यहां ईसा मसीह का एक और नकारात्मक और विनाशकारी कथन है, जो उपरोक्त उपदेश का निराकरण कर देता है। वे कहते हैं :

२०४. "२७. और मेरे बैरियों को, जो यह नहीं चाहते थे कि मैं उन पर राज्य करूँ, इधर ला कर मेरे सामने मार डालो।"

– सन्त लूकस, १९/२७

यह आश्चर्य की बात है कि एक स्थान पर (सन्त मत्ती ५/४४) ईसा मसीह आदेश देते हैं कि अपने शत्रुओं से प्रेम करो और उन्हें शुभाशीश दो, और उनके लिए प्रार्थना करो, और दूसरे स्थान पर वे

अनुयाइयों को आदेश देते हैं कि वे उन शत्रुओं को, जो नहीं चाहते कि ईसा मसीह उन पर शासन करें, उधर उनके सामने लाएं, और उनका वध कर दें। कितने परस्पर विरोधी कथन हैं !

यदि विश्व के समस्त ईसाई, वरन् इस धरती के सभी मानव ईसा के प्रेम, दया और क्षमा दान के सकारात्मक उपदेशों को स्वीकार कर लें और कार्यान्वित करें तो यह धरती स्वर्ग में परिवर्तित हो जाएगी। जब सब पुरुष और महिलाएं एक ही पिता के पुत्र और पुत्रियां हैं तो वे एक दूसरे से घृणा क्यों करें और एक दूसरे को नष्ट क्यों करें ? क्यों न इस धरती पर सांस लेने वाले हर प्राणी से प्रेम किया जाए ? प्रेम ईश्वर है और ईश्वर प्रेम है।

२०५. "८. जो प्यार करता है, वह ईश्वर की सन्तान है और ईश्वर को जानता है। जो प्यार नहीं करता, वह ईश्वर को नहीं जानता; क्योंकि ईश्वर प्रेम है।"

– सन्त योहन का पहला पत्र, ४/८

ईश्वर अपने सब बच्चों से समान रूप से प्रेम करता है, भले ही वे अच्छे हों या बुरे। ईश्वर की दया की वर्षा सभी लोगों पर, चाहे वे किसी जाति, रंग, मत या समुदाय के हों, समान रूप से बरसती है। वह सूर्य का प्रकाश सभी को समान रूप से प्रदान करता है, चाहे वे भले हों या बुरे। वह सब पर समान रूप से वर्षा बरसाता है, चाहे वे धर्मी हैं या अधर्मी।

२०६. "४५. ...वह भले और बुरे, दोनों पर अपना सूर्य उगाता तथा धर्मी और अधर्मी दोनों पर पानी बरसाता है।"

– सन्त मत्ती, ५/४५

(तीन) यदि तुम ईश्वर से क्षमा दान की अपेक्षा करते हो तो अपने साथियों को क्षमा कर दो

२०७. "१४. यदि तुम दूसरों के अपराध क्षमा

करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गिक पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।" *– सन्त मत्ती, ६/१४*

२०८. "१५. परन्तु यदि तुम दूसरों को क्षमा नहीं करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा नहीं करेगा।" *– सन्त मत्ती, ६/१५*

उपरोक्त दो पद अत्युत्तम हैं, परन्तु ईसा मसीह ने स्वयं उनका निराकरण कर दिया है, जब वे न्यू टेस्टामेंट (सन्त मत्ती १०/३५) में कहते हैं कि वे पिता और पुत्र के बीच, माता और बेटी के बीच, सास और पुत्र वधू के बीच अन्तर्द्वेष उत्पन्न करने के लिए इस पृथ्वी पर आए हैं। ओल्ड टेस्टामेंट, जिसे ईसा मसीह ने स्वीकार किया है और जिसकी पुष्टि भी की है, एक पग आगे बढ़ जाता है और आदेश देता है, "अपने भाई, अपने पुत्र, अपनी बेटी और अपनी पत्नी का वध कर दो, यदि वे तुम्हें दूसरे देवताओं की पूजा करने के लिए फुसलाते हैं।" (विधि-विवरण ग्रन्थ १३/६-१०)

(चार) एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के विरुद्ध तलवार नहीं उठाएगा

पवित्र बाइबिल का यह बहुत ही उत्तम उद्धरण है, जो राष्ट्रों से अनुरोध करता है कि वे एक दूसरे के विरुद्ध तलवार न उठाएं, वरन् अपनी तलवारों को कूट पीट कर हल के फाल बना दें, और अपने भालों को हंसिया बना दें :

२०९. "४. ...वे अपनी तलवार को पीट-पीट कर फाल और अपने भाले को हँसिया बनायेंगे। राष्ट्र एक दूसरे पर तलवार नहीं चलायेंगे और युद्ध-विद्या की शिक्षा समाप्त हो जायेगी।" *– इसायाह का ग्रन्थ, २/४*

अहिंसा के उपरोक्त अत्युत्तम उपदेश का ईसा मसीह ने स्वयं

निराकरण कर दिया, जब उन्होंने अपने अनुयाइयों को न्यू टेस्टामेंट में यह परामर्श दिया कि यदि उनके पास पैसा नहीं तो वे अपने वस्त्र बेच कर भी तलवार ख़रीद लें (सन्त लूकस २२/३६)। इस प्रकार पवित्र बाइबिल में ऐसी परस्पर विरोधी बातें भरी पड़ी हैं, जो निश्चय ही अनुयाइयों के हृदयों में भ्रम उत्पन्न करती हैं, जिन्हें यह समझ नहीं आता कि किस पर विश्वास करें और किस पर विश्वास न करें।

"केवल वे जो इतने शक्तिशाली हैं कि न केवल अपनी रक्षा कर सकते हैं, वरन् शत्रुओं के हृदय में भय उत्पन्न कर सकते हैं, शान्ति, अनाक्रमण और अहिंसा की बात कर सकते हैं।"

– वीर सावरकर

"शान्ति और प्रेम केवल समान लोगों में ही संभव हैं। शान्ति के वास्तविक शत्रु वे दुर्बल लोग ही हैं, जो अपनी दुर्बलता से आक्रान्ताओं को निमंत्रण देते हैं। यदि हम शक्तिहीन हैं, तो हम विश्व-शांति को भंग करने के अपराधी हैं। हमारे पतन का मूल कारण हमारी मानसिक दुर्बलता ही है।"

– डा. केशवराव बलीराम हेडगेवार

"जो राष्ट्र अतीत की सफलताओं पर गर्व करने और उन से प्रेरणा लेने में विफल होता है वह कभी भी न वर्तमान का निर्माण कर सकता है न भविष्य की योजना बना सकता है।"

– डा. श्यामा प्रसाद मुकर्जी

अध्याय २२

बाइबिल में जादू टोना, वेदों में दैवी मार्ग

१. बाइबिल में जादू टोना

(एक) यूरोप में तीन लाख लोगों को जादू टोना करने का अपराधी ठहराया गया और उन्हें मार डाला गया

जोन आफ़ आर्क का इस कथित आधार पर वध किया गया कि वह जादू टोना करती थीं। **जार्ज बर्नार्ड शा** ने, जो विख्यात नाटककार, आलोचक और निबंधकार थे, और जिन्हें १९२५ में साहित्य के लिए नोबल पुरुस्कार दिया गया था, 'सन्त जोन' नामक एक नाटक लिखा। इस नाटक ने समस्त यूरोप को हिला दिया। **जार्ज बर्नार्ड शा** स्वयं एक विद्यालय के छात्र पर इस नाटक के प्रभाव का इस प्रकार वर्णन करते हैं :

> *"एक विद्यालय के छात्र ने जिसने मेरे नाटक 'जोन आफ़ आर्क' का अभिनय देखा था, अपने अध्यापक से कहा कि वह ईसा मसीह को पसंद नहीं करता और उसकी प्रार्थना नहीं कर सकता वरन् वह जोन की प्रार्थना कर सकता है।"*[११५]
>
> – **जार्ज बर्नार्ड शा**

---

११५. **जार्ज बर्नार्ड शा :** *'एवरी बाडीज़ पोलिटिकल व्हाट इज़ व्हाट'* (हर व्यक्ति का राजनैतिक ज्ञान), अध्याय ४३, 'रिलीजस समरी' (धार्मिक संक्षेप), लंदन, १९५०, पृष्ठ ३६३

कुछ समय पश्चात् विवश हो कर चर्च को **जोन आफ़ आर्क** को सन्तों की सूची में रखना पड़ा। यह अत्यंत आश्चर्य और पीड़ा का विषय है कि चर्च (ईसाई संस्था) ने पहले तो जोन आफ़ आर्क का वध कर दिया और फिर उसे सन्तों की सूची मे सम्मिलित कर दिया। **चार्ल्स स्मिथ** के अनुसार, जो 'ट्रुथ सीकर' (सत्य अन्वेषक) के सम्पादक थे, यूरोप में तीन लाख लोगों को निम्नलिखित पद के आधार पर जादू टोना करने का अपराधी ठहराया गया अैर मार डाला गया :

२१०. "१७. तुम जादूगरनी को जीवित नहीं रहने दोगे।"

– निर्गमन ग्रन्थ, २२/१७

उपरोक्त पद के कारण यूरोप की धरती निर्दोष रक्त से रंजित हुई है। उपरोक्त पद ने, तीन शताब्दियों तक यूरोप के हर नगर में तथाकथित जादूगरनियों का अग्नि दाह किया है। **टोलूस** में एक ही दिन में चार सौ लोगों को जला दिया गया था। **सुश्री मतिल्दा जोसलिन गेज** लिखती हैं :

> *"टोलूस की संसद ने एक ही समय पर ४०० जादूगरनियों को जीवित जला दिया। ४०० महिलाओं को एक घंटे में, नगर के सार्वजनिक चौक में, उस अपराध के लिए अग्नि दाह द्वारा भयानक रीति से मौत के घाट उतार दिया गया, जिसका कोई अस्तित्व था ही नहीं। वह अपराध तो उन उत्पीड़कों की कल्पना की उपज था। यह कल्पना इस कारण उत्पन्न हुई थी कि उनके मन में यह असत्य धारणा थी कि असाधारणत: नारी दुराचारणी है, क्योंकि वही पाप का मूल स्रोत है।"*[११६]
>
> **– सुश्री मतिल्दा जोसलिन गेज**

---

११६. **मतिल्दा जोसलिन गेज** : *'वोमन, चर्च ऐंड स्टेट'* (स्त्री, चर्च और राज्य), न्यू यार्क, १८९३, वाइस आफ़ इंडिया नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, १९९७, पृष्ठ २२८

पंडित जवाहरलाल नेहरू अपनी "ग्लिम्पसिज़ आफ़ वर्ल्ड हिस्ट्री" (विश्व इतिहास की झलकियां) नामक पुस्तक में लिखते हैं :

> *"अधिकांशतः प्यूरिटन (एक ईसाई पंथ) ने लाखों स्त्रियों को यूरोप में कथित अग्नि दाह के द्वारा जीवित जला दिया था।"*[११७]
>
> **–पंडित जवाहरलाल नेहरू**

पवित्र बाइबिल के निम्न उद्धरणों में जादू टोने पर विश्वास का समर्थन किया गया है :

२११. "११. मैं तुझ से किया जा रहा जादू-टोना समाप्त कर दूँगा और शकुन विचारना बन्द कर दूँगा;" *– मीकाह का ग्रन्थ, ५/११*

२१२. "४. यही हुआ उस वेश्या की करनी का फल। उस सुन्दर वेश्या, उस कपटी जादूगरनी ने, राष्ट्रों को लुभा कर फँसा दिया था और अनेक जातियों पर मोहनी डाली थी।"

– नहूम का ग्रन्थ, ३/४

२१३. "२७. जो पुरुष और स्त्रियाँ भूत-प्रेत की साधना करते हैं या जादू-टोना करते हैं, उन्हें मार डाला जाये। वे पत्थरों से मारे जायेंगे - उनका रक्त उनके सिर पड़ेगा।"

– लेवी ग्रन्थ, २०/२७

पोप जॉन बाइसवें ने १३२० ईसवी में जादूगरनियों के उत्पीड़न को औपचारिक रूप दे दिया था, जब उन्होंने धार्मिक न्यायाधिकरण

---

११७. **पंडित जवाहरलाल नेहरू :** *'ग्लिम्पसिज़ आफ़ वर्ल्ड हिस्ट्री'* (विश्व इतिहास की झलकियां), पृष्ठ ३३७

(Inquisition) को अधिकार दे दिया था कि वह पूछताछ करने के बाद जादूगरनियों का उत्पीड़न कर सकता है।[११८]

बर्ट्रेण्ड रसेल, जो विख्यात दार्शनिक थे और जिन्हें १९५० में साहित्य के लिए नोबल पुरुस्कार दिया गया था, कहते हैं :

> *"न्यायाधिकरण का काम था घोर अत्याचार करना. ...उसने लाखों भाग्यहीन स्त्रियों को जादूगरनियां कह कर आग में झोंक दिया, और धर्म के नाम पर अनेक प्रकार के लोगों पर कई तरह के अत्याचार किए।"*[११९]
>
> **– बर्ट्रेण्ड रसेल**

१४८४ में **पोप निर्दोष आठवें** ने चर्च को आदेश दिया कि जादूगरनियों के साथ धरेलू बिल्लियों को जला दिया जाए। जादूगरनियों को बिल्लियों के साथ मारने की यह प्रथा शताब्दियों तक चलती रही।[१२०]

एच.जी. वैल्स, जो विख्यात अंग्रेज़ी उपन्यासकार और वैज्ञानिक उपन्यास के जन्मदाता थे, निर्भीकता पूर्वक अपना मत व्यक्त करते हैं :

> *"आज समस्त विश्व में सब से बड़ी बुराई रोमन*

---

११८. (एक) **जेफ़री बर्टन रसेल** : *'ए हिस्ट्री आफ़ मेडीवल क्रिस्चैनिटी'* (मध्य युगीन ईसाई मत का इतिहास), थामस वाई. क्रामवैल, न्यू यार्क, १९६८, पृष्ठ १७३

(दो) **हेलिन एलर्बी** : *'दी डार्क साईड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष), अमरीका, अगस्त, १९९८, पृष्ठ १२१

११९. **बर्ट्रेण्ड रसेल** : *'व्हाई आई ऐम नाट ऐ क्रिस्चैन ऐंड अदर एस्सेज़ आन रिलीजन'* (मैं ईसाई क्यों नहीं और धर्म सम्बंधी अन्य निबंध) सातवां संस्करण, १९९६, लंदन, पृष्ठ २४

१२०. **लियूइस रीजेनस्टीन** : *'रिप्लीनिश दी अर्थ'* (धरती की पुनर्पूर्ति करो) क्रास रोड, न्यू यार्क, १९९१, पृष्ठ ७३

कैथोलिक चर्च (रोम की कैथोलिक ईसाई संस्था) है।"[१२१]

– एच.जी. वैल्स

एच. जी. वैल्स की पुस्तक 'क्रक्स अनसाटा' के प्रथम अध्याय का शीर्षक है, "हम रोम पर बम क्यों नहीं गिराते ?"[१२२]

मार्टिन लूथर, जो जर्मन धर्म सुधारक और ईसाई मत प्रोटेस्टंट सुधारवाद के संस्थापक थे, बाइबिल के उपरोक्त पदों से प्रभावित हो कर क्रोधावेश में घोषणा करते हैं :

"मेरे हृदय में जादूगरनी के लिए कोई सहानुभूति नहीं है। मैं उन सब को जला दूंगा।"[१२३]

– मार्टिन लूथर

कुछ विद्वान लोग जो हृदय से बाइबिल के हर शब्द पर विश्वास करते थे, जादू टोने सम्बंधी उल्लेख को अस्वीकार नहीं करते। सर **विलियम ब्लैकस्टोन**, जो उन में से एक थे, कहते हैं :

"जादू टोने की बात को अस्वीकार करना, पुराने और नये दोनों टेस्टामेंट में ईश्वर द्वारा प्रकट शब्दों को नकारना होगा।"

– सर विलियम ब्लैकस्टोन

जॉन वेस्ली, अठारहवीं शताब्दी में मेथडिज़्म (नियमों के दृढ़ता पूर्वक पालन पर बल देने वाला ईसाई सम्प्रदाय) के प्रवर्तक, यहां तक कहते हैं :

---

१२१. **पीटर केम्प :** *'एच.जी. वैल्स ऐंड दी कल्मीनेटिंग एप'* (एच. जी. वैल्स और चरमावस्था तक पहुंचता बंदर), लंदन, १९९६, पृष्ठ १५६

१२२. पूर्वोक्त

१२३ **मतिल्दा जोसलिन गेज :** *'वोमन, चर्च ऐंड स्टेट'* (स्त्री, चर्च और राज्य), न्यू यार्क, १८९३, वाइस आफ़ इंडिया नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, १९९७, पृष्ठ २६१

"जादूगरी में विश्वास त्याग देने का अभिप्राय है, बाइबिल को त्याग देना।"[१२४]

– **जॉन वेस्ली**

कैलविन और **नाक्स** दोनों का यह विश्वास था कि जादू टोना की बात को अस्वीकार करना बाइबिल के प्राधिकार को अस्वीकार करना है।[१२५]

हेलिन एलर्बी अपनी पुस्तक 'दी डार्क साईड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष) में लिखती हैं :

"जादूगरनियों को ढूंढ ढूंढ कर मारने की घटनाएं अनन्त हैं। चर्च जिन लोगों का उत्पीड़न करता था, उनके बच्चों के प्रति भी सहानुभूति नहीं रखता था, और जादूगरनियों के बच्चों के प्रति तो उनका व्यवहार और भी अधिक क्रूरता पूर्ण होता था। बच्चों पर जादू टोने के लिए अभियोग चल सकता था और अत्याचार हो सकते थे, लड़कियों पर साढ़े नौ वर्ष की आयु हो जाने पर और लड़कों पर जब उनकी आयु साढ़े दस वर्ष हो जाए।[१२६] *छोटे बच्चों*

---

१२४. (एक) **बरबरा जी वाकर :** *'दी वोमनस इन्साईक्लोपेडिया आफ़ मिथ्स ऐंड सीक्रेटस'* (पौराणिक एवं गोपनीय गाथाओं का महिला ज्ञान कोष), हार्पर ऐंड रो, सैन फ्रैंसिसको, १९८३, पृष्ठ १०८८

(दो) **हेलिन एलर्बी :** *'दी डार्क साईड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष), अमरीका, अगस्त, १९९८, पृष्ठ १२२

१२५. पूर्वोक्त

१२६. (एक) **बरबरा जी वाकर :** *'दी वोमनस इन्साईक्लोपेडिया आफ़ मिथ्स ऐंड सीक्रेटस'* (पौराणिक एवं गोपनीय गाथाओं का महिला ज्ञान कोष), हार्पर ऐंड रो, सैन फ्रैंसिसको, १९८३, पृष्ठ ४४५

(दो) **हेलिन एलर्बी :** *'दी डार्क साईड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष), अमरीका, अगस्त, १९९८, पृष्ठ १२४

को इस लिए यातना पहुंचाई जाती थी कि उनसे उनके माता पिता के विरुद्ध प्रमाण प्राप्त किए जा सकें, और उनके विरुद्ध प्रयोग किए जा सकें।[१२७] *जादूगरनियों के अभियोगों में ढाई वर्ष के बच्चे का साक्ष्य भी प्रयोग में लाने की अनुमति थी, यद्यपि अन्य प्रकार के अभियोगों में इस प्रकार के साक्ष्य की अनुमति नहीं थी।*[१२८] *एक फ़्रांसीसी दण्डाधिकारी इस बात के लिए विख्यात हुआ था कि उसने इस पर खेद प्रकट किया था कि उसने जादूगरनियों के अपराधी छोटे बच्चों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की थी और उन्हें जलाया नहीं था। उसने उन्हें केवल कोड़े मारने का दण्ड दिया था, जबकि बच्चों की आंखों के सामने उनके माता पिता को जला दिया गया था।"*[१२९]

– हेलिन एलर्बी

यूरोप में शताब्दियों तक जादूगरनियों को जलाया गया। इस में कितने हज़ारों मूल्यवान जीवन नष्ट हो गए ? इसका उत्तर **हेलिन एलर्बी** देती हैं :

"जादूगरनियों को मारने की शताब्दियों में कितने

---

१२७. (एक) **बरबरा जी वाकर :** *'दी वोमनस इन्साईक्लोपेडिया आफ़ मिथ्स ऐंड सीक्रेटस'* (पौराणिक एवं गोपनीय गाथाओं का महिला ज्ञान कोष), हार्पर ऐंड रो, सैन फ्रैंसिसको, १९८३, पृष्ठ १००४

(दो) **हेलिन एलर्बी :** *'दी डार्क साईड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष), अमरीका, अगस्त, १९९८, पृष्ठ १२४

१२८. **राबिन्स :** *'दी इन्साईक्लोपेडिया आफ़ विचक्राफ़्ट ऐंड डेमनालाजी'* (जादू टोना और प्रेत विद्या का कोष), पृष्ठ २२९

१२९. **हेलिन एलर्बी :** *'दी डार्क साईड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष), अमरीका, अगस्त, १९९८, पृष्ठ १२४

मूल्यवान जीवन नष्ट हो गए, इसका कभी पता नहीं लगेगा। चर्च के कुछ अधिकारियों ने गर्व के साथ बताया कि उन्होंने कितनों को दण्ड दिया। वर्टज़बर्ग के बिशप ने बताया कि उसने ५ वर्ष में १९०० जीवन नष्ट किए, लूथर के सम्प्रदाय के धर्माध्यक्ष बेनीडिक्ट कारपज़ोव का कथन था कि उन्होंने २०,००० जादूगरिनयों को दण्ड दिया।[१३०] *परन्तु बहुत बड़ी संख्या में अभिलेख नष्ट हो गए हैं, और इस सम्बंध में संदेह है कि न्यायालय से बाहर ही जिन लोगों को दण्ड दिए गए उनका इन अभिलेखों में वर्णन था या नहीं।"*[१३१]

– हेलिन एलर्बी

अमरीकन लेखिका **सुश्री मतिल्दा जोसलिन गेज** लिखती हैं :

"इतिहास के अभिलेखों के आधार पर यह गणना की गई है कि १४८४ के पश्चात् अथवा तीन सौ वर्षों की कालावधि में ९० लाख व्यक्तियों को जादू टोने के कथित अपराध के लिए मौत के घाट उतार दिया था। इस अनुमान में उन लोगों की एक बड़ी संख्या सम्मिलित नहीं है, जिनकी इसी अपराध के लिए इस से पूर्व की शताब्दियों में बलि चढ़ाई जा चुकी थी। इतनी बड़ी संख्या में, जिस पर विश्वास

---

१३०. (एक) **बरबरा जी वाकर :** *'दी वोमनस इन्साईक्लोपेडिया आफ़ मिथ्स ऐंड सीक्रेटस'* (पौराणिक एवं गोपनीय गाथाओं का महिला ज्ञान कोष), हार्पर ऐंड रो, सैन फ्रैंसिसको, १९८३, पृष्ठ ४४४

(दो) **हेलिन एलर्बी :** *'दी डार्क साईड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष), अमरीका, अगस्त, १९९८, पृष्ठ १३६

१३१. **हेलिन एलर्बी :** *'दी डार्क साईड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष), अमरीका, अगस्त, १९९८, पृष्ठ १३६

करना कठिन है, अधिकांशत: महिलाएं थीं।"[१३२]

– **मतिल्दा जोसलिन गेज**

सुश्री मतिल्दा जोसलिन आगे कहती हैं :

"मैसाचूसेटस एक अकेली बसती नहीं थी, जहां जादू टोने को अपराध समझा जाता था। मैरीलैंड, न्यू जर्सी और वर्जीनिया में इसी प्रकार के विधान की व्यवस्था थी। पेनसिलवेनिया और न्यू यार्क के दोनों राज्यों के विधान के अनुसार जादू टोने के अपराध को मृत्यु दण्ड द्वारा दण्डनीय अपराध माना जाता था। दोनों बस्तियों में सेलम त्रासदी से कुछ ही समय पहले तक इसी विधान के अनुसार अभियोग चलाए जाते थे। पेनसिलवेनिया, न्यू जर्सी, मैसाचूसेटस और न्यू यार्क में अर्थात् तेरह बस्तियों में से आठ में जादू टोना को मृत्यु दण्ड द्वारा दण्डनीय अपराध माना जाता था।"[१३३]

– **मतिल्दा जोसलिन गेज**

(दो) आधुनिक यूरोप में जादू टोना के आधार पर उत्पीड़न

यह दुख और पीड़ा की बात है कि आधुनिक वैज्ञानिक युग में भी जादू टोना के संदेह के आधार पर यूरोप में निर्दोष महिलाओं और पुरुषों का नर संहार किया जा रहा है। **हेलिन एलर्बी** लिखती हैं :

"यूं तो १४५० से १७५० तक जादू टोना के आधार पर बड़ी संख्या में लोगों का उत्पीड़न होता रहा, परन्तु आधुनिक काल में अभी तक जादू टोना के

---

१३२. **मतिल्दा जोसलिन गेज** : *'वोमन, चर्च ऐंड स्टेट'* (स्त्री, चर्च और राज्य), न्यू यार्क, १८९३, वाइस आफ़ इंडिया नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, १९९७, पृष्ठ २४७

१३३. पूर्वोक्त, पृष्ठ २८९-९०

संदेह के आधार पर महिलाओं का वध किया जा रहा है। १९२८ में हंगरी के एक किसान परिवार ने एक बूढ़ी महिला को पीट पीट कर मार डाला और वे यह कहने पर अपराध मुक्त कर दिए गये कि वह महिला जादूगरनी थी। न्यायालय ने अपने निर्णय का यह आधार बताया कि उस परिवार ने यह कार्य ऐसी विवशता में किया जिसे रोका नहीं जा सकता था।[१३४] १९७६ में एक दरिद्र बुढ़िया पर यह संदेह किया गया कि वह जादूगरनी थी और वह अपने परिचितों और शैतान के कार्यकर्ताओं को कुत्तों के रूप में अपने पास रखती थी। उस के छोटे से जर्मन गांव में, उसके पड़ोसियों ने उसे समाज से निष्कासित कर दिया और उस पर पत्थर फैंके। उन्होंने यह धमकी भी दी कि उसके घर को आग लगा देंगे, उसे बुरी तरह जला देंगे, उसके पशुओं को मार डालेंगे और तत्पश्चात उसे पीट पीट कर उसकी जान ले लेंगे।[१३५] उसके एक वर्ष बाद फ्रांस में एक व्यक्ति को जादू टोना करने के अपराध पर जान से मार दिया गया।[१३६] १९८१ में मैक्सिको में एक स्त्री को इस कारण पत्थर मार कर मार डाला गया कि वह खुल कर जादू टोना करती थी। उनका यह भी विश्वास था कि उसी ने पोप जॉन पाल द्वितीय पर प्रहार करने के

---

१३४. **बरबरा जी वाकर :** *'दी वोमनस इन्साईक्लोपेडिया आफ़ मिथ्स ऐंड सीक्रेटस'* (पौराणिक एवं गोपनीय गाथाओं का महिला ज्ञान कोष), हार्पर ऐंड रो, सैन फ्रैंसिसको, १९८३, पृष्ठ १०८७

१३५. **लेवैक :** *'दी विच-हंट इन अर्ली माडर्न यूरोप'* (आधुनिक यूरोप के प्रारम्भिक काल में जादूगरनियों की मार धाड), पृष्ठ २२९

१३६. पूर्वोक्त

लिए प्रेतात्मा को उत्तेजित किया था।[१३७] "[१३८]

– मतिल्दा जोसलिन गेज

१७८५ में **थामस जैफ़रसन** ने, जो अमरीका के तृतीय राष्ट्रपति थे, लिखा था :

> *"ईसाई मत के प्रारम्भ से लाखों निर्दोष पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को जलाया गया, यातनाएं दी गईं, अर्थ दण्ड दिया गया, कारावास भेजा गया और फिर भी ईसाई मत में एकरूपता लाने के उद्देश्य की ओर हम एक इंच भी आगे नहीं बढ़े। अत्याचार और बल प्रयोग का क्या परिणाम निकला ? यही कि विश्व के आधे लोगों को मूर्ख बनाया गया और आधों को पाखण्डी। सारे संसार में दोष और दुष्टता को समर्थन दिया गया।"*[१३९]
>
> **– थामस जैफ़रसन**

(तीन) ईसाई सभा द्वारा दो भारतीय लड़कियों को जादूगरनी कह कर जला दिया जाना

अरूणाचल प्रदेश में एक ईसाई सभा ने भारतीय जन जातियों की दो लड़कियों कोमई सिमई और खोदांग तिखक को टांगसा बैप्टिस्ट ईसाई

---

१३७. **लेवैक :** *'दी विच-हंट इन अर्ली माडर्न यूरोप'* (आधुनिक यूरोप के प्रारम्भिक काल में जादूगरनियों की मार धाड), पृष्ठ २२९

१३८. **हेलिन एलर्बी :** *'दी डार्क साईड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष), अमरीका, अगस्त, १९९८, पृष्ठ १३७

१३९. (एक) **फ़ारेस्ट जी. वुड :** *'दी ऐरोगंस आफ़ फ़ेथ'* (धर्म की धृष्टता), अल्फ़्रेड ए नाफ़, न्यू यार्क, १९९०, पृष्ठ २७

(दो) **हेलिन एलर्बी :** *'दी डार्क साईड आफ़ क्रिस्चैन हिस्ट्री'* (ईसाई इतिहास का अंधकारमय पक्ष), अमरीका, अगस्त, १९९८, पृष्ठ १८५-१८६

(तीन) **जेम्स ए. हाट :** *'होली हारर्स'* (पवित्र यातनाएं) प्रामीथियस बुक्स, न्यू यार्क द्वारा प्रकाशित, १९९० पृष्ठ १२

संस्था के पादरी के आदेश पर, एक खम्भे से बाँध कर जला दिया गया। उन लड़कियों पर यह आरोप लगाया गया था कि वे जादू टोना करती हैं।[१४०]

(चार) अन्य किसी सम्प्रदाय की तुलना में ईसाई मत ने अधिक रक्त बहाया है

जी. डब्ल्यू. फूट और **जे.एम. व्हीलर** ने अपनी विख्यात पुस्तक 'क्राईम्स आफ़ क्रिस्चैनिटी' (ईसाई मत के अपराध) में इस प्रकार लिखा है :

> *"यद्यपि बाइबिल कहता है कि 'ईश्वर प्रेम है', परन्तु ईसाई मत ने संसार के अन्य किसी भी सम्प्रदाय की तुलना में अधिक रक्त बहाया है और क्रूरता पूर्ण कृत्य किए हैं।"*[१४१]
>
> **– जी.डब्ल्यू. फूट और जे.एम. व्हीलर**

२. वेदों का दैवी मार्ग

सन्त टाल्सटाय, रूसी विचारक और दार्शनिक, कहते हैं :

> *"वैदिक धर्म न केवल प्राचीनतम धर्म है, वरन् सर्वाधिक पूर्ण धर्म भी है। यह विश्व के धर्मों में सर्व प्रथम और सर्वोच्च स्थान पर है।"*
>
> **– सन्त टाल्सटाय**

---

१४०. (एक) **दी इंडियन एक्सप्रेस,** अंग्रेज़ी दैनिक, नई दिल्ली, अगस्त ८, १९९६
(दो) **मतिल्दा जोसलिन गेज :** *'वोमन, चर्च ऐंड स्टेट'* (स्त्री, चर्च और राज्य), न्यू यार्क, १८९३, वाइस आफ़ इंडिया नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, १९९७, सीता राम गोयल की प्रस्तावना, पृष्ठ १८

१४१. **जी. डब्ल्यू. फूट और जे. एम. व्हीलर :** *'क्राईम्स आफ़ क्रिस्चैनिटी'* (ईसाई मत के अपराध) आर्योदय साप्ताहिक, नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, १९६४, पृष्ठ ९

पवित्र वेद लोगों को प्रेरणा देते हैं कि वे शैतानी कार्यों से बचें और दैवी मार्ग को अपनाएं। जो दूसरों को जलाता और हानि पहुंचाता है, वह शैतान हे। जो दूसरों का भला करता है वह देवदूत है। जो दूसरों का विनाश कर जीवन बिताता है, वह राक्षस का जीवन बिताता है। जो दूसरों के लिए जीता है वह देवता है। शैतान या राक्षस जीवन को नष्ट करता है, जबकि देवदूत या देवता जीवन की रक्षा करता है। जब तक इस धरती पर राक्षस या शैतान के हृदय रखने वाले लोग रहते हैं, हत्याएं और रक्त पात होता रहेगा। यह धरती जो हज़ारों लोगों के रक्त से रंगी हुई है, स्वर्ग में परिवर्तित हो जाएगी जैसे ही यहां रहने वाले लोग दैवी मार्ग पर चलेंगे, धार्मिक जीवन जिएंगे और देवदूतों के गुणों को अपनाएंगे। वेद मनुष्यों को उपदेश देते हैं कि वे शैतान और राक्षसों के मार्ग को त्याग दें और दैवी मार्ग को अपना कर देवदूत का जीवन जिएं।

आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्नवाम तदनु प्रवोळहुम् ।

– ऋग्वेद १०/२/३

आओ
हम दैवी मार्ग पर चलें
हमें शक्ति प्राप्त हो
ताकि दैवी आदर्शों को अपना सकें ।

– ऋग्वेद १०/२/३

यूरोप के लोग अविश्वास और संदेहों, भ्रम और भ्रांतियों, मिथ्या धारणाओं और दुर्भावनाओं में भटक रहे थे और जल रहे थे। वे अपने अन्दर और बाहर भी द्वेष, प्रतिशोध और प्रतिकार के अग्नि स्फुलिंगों में धधक रहे थे। वे उस दैवी प्रकाश को नहीं देख सके जो सब के हृदयों में दैदीप्यमान और जाज्वल्यमान है। यही कारण है कि उन्होंने अपने भाइयों और बहनों पर निर्दय अत्याचार कर के इस पवित्र धरती को कलुषित कर दिया। वेदों में ऐसे लोगों के लिए सुंदर प्रार्थना और उपदेश है :

गूहता गुह्यं तमो वि यात विश्वमत्रिणम ।
ज्योतिष्कर्ता यदुश्मसि ।।

– ऋग्वेद १/८६/१०

अपने अन्दर के भयावह अंधकार को निकाल दो
सभी दूषित विचार त्याग दो

और प्रकाश को प्रदीप्त कर दो
जिसकी हमें आकांक्षा है।

– ऋग्वेद १/८६/१०

लोगों में अध्यात्म के प्रकाश का अभाव है। वे अन्दर और बाहर की ज्वाला में जलते हैं। हर कोई प्रकाश की कामना करता है, क्योंकि प्रकाश जीवन है और अंधकार मृत्यु। प्रकाश आनंद है, अंधकार वेदना। जहां कहीं प्रकाश है, वहीं स्वर्ग है, जहां अंधकार है, वहीं नरक है। प्रकाश प्रगति की ओर ले जाता है, अंधकार अधः पतन का द्योतक है। प्रकाश अमृत है, अंधकार विष है। इसी लिए अथर्ववेद मनुष्यों को आदेश देता है कि अंधकार से निकल कर प्रकाश की ओर आओ।

आ रोह तमसो ज्योतिः।

– अथर्ववेद ८/१/८

अंधकार से ऊपर उठो
अध्यात्म की दीप्ति से प्रदीप्त प्रकाश की ओर बढ़ो।

– अथर्ववेद ८/१/८

जो दूसरों को प्रकाश और जीवन प्रदान करते हैं, देवता कहलाते हैं। जो दूसरों का जीवन छीन लेते हैं, वे शैतान (पापात्मा) हैं। पापात्मा शैतान की सन्तान हैं, जबकि देवता ईश्वर की सन्तान हैं। यजुर्वेद के निम्न मन्त्र में यही दर्शाया गया है।

ते हि पुत्रासोऽअदितेः प्र जीवसे मर्त्याय।
ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम्॥

– यजुर्वेद ३/३३

वे परम पिता परमेश्वर के सुयोग्य पुत्र हैं
जो नश्वर प्राणियों को निरंतर
प्रकाश और जीवन प्रदान करते हैं।

– यजुर्वेद ३/३३

"सारी राजनीति का हिन्दूकरण कर दो, और हिन्दुत्व का सैनिकीकरण कर दो।" – वीर सावरकर

अध्याय २३

बाइबिल दासता की स्थापना करता है वेद समानता और स्वतंत्रता का उपदेश देते हैं

१. बाइबिल दासता की स्थापना करता है

(एक) दास स्थायी सम्पत्ति हैं जो भावी सन्तान को उत्तराधिकार के रूप में मिलते हैं

पवित्र बाइबिल दासता को न केवल न्यायोचित ठहराता है, वरन् उसे स्थापित करता है। बाइबिल का ईश्वर अपने अनुयाइयों को आदेश देता है, और प्राधिकार देता है कि वे काफ़िरों में से, जो उन के आस पास रहते हैं, दासों और दासियों को ख़रीदें। बाइबिल का ईश्वर एक पग और बढ़ कर, अपने अनुयाइयों को उत्तेजित करता है, जब वह कहता है कि दास और दासियां उनके अधिकार में रहेंगी और उनकी सम्पत्ति हैं, जो उनकी भावी सन्तान को उत्तराधिकार में मिलेगी। निम्न तीन पद पठनीय हैं :

२१४. "४४. यदि तुम्हें दास-दासियों की आवश्यकता हो, तो तुम उन्हें आसपास के काफ़िरों (गै़र-ईसाइयों) में से ख़रीदोगे।"

– लेवी ग्रन्थ, २५/४४

२१५. "४५. अथवा तुम अपने साथ रहने वाले प्रवासियों को या उनके घर में पैदा हुए बच्चों को ख़रीदोगे। वे तुम्हारे दास बन सकते हैं।"

– लेवी ग्रन्थ, २५/४५

२१६. "४६. और तुम उन्हें विरासत के रूप में अपने पुत्रों को दे सकते हो। तुम उन्हें आजीवन दास बना सकते हो,...."

– लेवी ग्रन्थ, २५/४६

उपरोक्त तीन पदों से यह स्पष्ट हो जाता है कि बाइबिल के अनुयायी, ईसाई मत में विश्वास न रखने वालों (काफ़िरों) को अपने समान भाई के रूप में स्वीकार नहीं करते वरन् उन्हें निकृष्ट पुरुष और स्त्रियां मानते हैं, जिन्हें स्थायी रूप से दास बनाया जा सकता है, उन्हें ख़रीदा जा सकता है, और वे भावी सन्तान को उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त हो सकते हैं। क्या मानव अधिकार आयोग जैसे संगठन के ईसाई सदस्य पवित्र बाइबिल के उपरोक्त पदों का अनुमोदन करेंगे ? यदि नहीं, तो वे पवित्र बाइबिल में वर्णित दासता के औचित्य और इस प्रथा की स्थापना तथा बंधुआ श्रमिकों की प्रथा के विरुद्ध आवाज़ क्यों नहीं उठाते ?

बर्ट्रेण्ड रसेल, जो विख्यात दार्शनिक थे, और जिन्हें १९५० में साहित्य के लिए नोबल पुरुस्कार दिया गया था, कहते हैं :

"ईसाई संस्थाओं (चर्च) ने जहां तक वे साहस कर सके लम्बे काल तक दासता को समाप्त करने का विरोध किया, और कुछ एक अपवादों के अतिरिक्त

जिनका अत्यधिक प्रचार किया गया, वे आज तक आर्थिक न्याय के हर आंदोलन का विरोध करते हैं। पोप ने अपने संस्थागत अधिकार के आधार पर समाजवाद की निंदा की है।"[१४२]

– बर्ट्रेण्ड रसेल

(दो) दासों के सम्बंध में बाइबिल द्वारा दिए गए निर्णय

पवित्र बाइबिल ने दासों के सम्बंध में कुछ निर्णय दिए हैं। इन निर्णयों के अनुसार एक यहूदी (इब्रानी) दास छः वर्ष तक स्वामी की सेवा करने के पश्चात्, मुक्त किया जा सकता है। परन्तु उन छः वर्ष की कालावधि में उसके स्वामी ने उसे कोई पत्नी दी है और उसने पुत्र या पुत्रियों को जन्म दिया है, तो वह पत्नी अपने बच्चों सहित स्वामी की सम्पत्ति होगी और वह अकेला छोड़ कर जाएगा :

२१७. "१. तुम लोगों के सामने ये आदेश रखोगे।"

– निर्गमन ग्रन्थ, २१/१

२१८. "२. यदि तुम किसी इब्रानी दास को मोल लो, तो वह छः वर्ष तक तुम्हारी सेवा करेगा; परन्तु सातवें वर्ष वह कुछ दिये बिना छोड़ दिया जायेगा।"

– निर्गमन ग्रन्थ, २१/२

२१९. "३. यदि वह अकेला ख़रीदा गया हो, तो वह अकेला ही छोड़ दिया जाये और यदि वह विवाहित आया हो, तो उसकी पत्नी भी उसके साथ जाये।"

– निर्गमन ग्रन्थ, २१/३

---

१४२. **बर्ट्रेण्ड रसेल :** *'व्हाइ आइ ऐम नाट ए क्रिस्चैन ऐंड अदर एस्सेज़ आन रिलीजन'* (मैं ईसाई क्यों नहीं और धर्म सम्बंधी अन्य निबंध) सातवां संस्करण, १९९६, लंदन, पृष्ठ २८

२२०. "४. यदि उसका स्वामी उसे कोई पत्नी दे और उस से उसके पुत्र या पुत्रियाँ पैदा हों, तो वह स्त्री अपने बच्चों-सहित अपने स्वामी की होगी और वह अकेला छोड़ दिया जाये।"

– निर्गमन ग्रन्थ, २१/४

२२१. "५. यदि वह दास स्पष्ट रूप से कहे कि मैं अपने स्वामी, अपनी पत्नी और अपने बच्चों को प्यार करता हूँ और मैं जाना नहीं चाहता,"

– निर्गमन ग्रन्थ, २१/५

२२२. "६. तो उसका स्वामी उसे न्यायाधीशों के पास ले जाये। वह उसे दरवाज़े या चौखट तक ले जाये। वहाँ उसका स्वामी सुए से उसका कान छेद दे। इसके बाद वह आजीवन उसका दास बना रहेगा।"

– निर्गमन ग्रन्थ, २१/६

(तीन) दी न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) भी दासता की अनुमति देता है

दी न्यू टेस्टामेंट के निम्न छः पद दास प्रथा का न केवल समर्थन करते हैं वरन् उसकी स्थापना भी करते हैं :

२२३. "१. जिन लोगों पर दासता का जूआ रखा हुआ है, वे अपने स्वामियों को सब प्रकार के आदर के योग्य समझें, जिससे ईश्वर के नाम और कलीसिया की शिक्षा की निन्दा न हो।"

– तिमथी के नाम पहला पत्र, ६/१

पाठक 'जूआ रखा हुआ' शब्दों पर ध्यान दें। ये शब्द सामान्यतः

पशुओं के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

२२४. "९. दासों को समझाओ कि वे सब बातों में अपने स्वामियों के अधीन रहें, आपत्ति किये बिना उनकी आज्ञाएँ मानें।"
– तीतुस के नाम, २/९

२२५. "१०. और चोरी नहीं करें, बल्कि पूर्ण रूप से ईमानदार बने रहें। यह सब करने से वे हमारे मुक्तिदाता ईश्वर की शिक्षा की प्रतिष्ठा बढ़ायेंगे।"
– तीतुस के नाम, २/१०

ध्यान दीजिए कि दास प्रथा 'मुक्ति दाता ईश्वर' के नाम पर स्थापित की गई है !

२२६. "५. दासों से मेरा अनुरोध है कि जो लोग इस पृथ्वी पर आपके स्वामी हैं, आप डरते-काँपते और निष्कपट हृदय से उनकी आज्ञा पूरी करें, मानो आप मसीह की सेवा कर रहे हों।" *– एफेसियों के नाम, ६/५*

२२७. "६. आप मनुष्यों को प्रसन्न करने के उद्देश्य से दिखावे मात्र के लिए नहीं, बल्कि मसीह के दासों की तरह ऐसा करें, जो सारे हृदय से ईश्वर की इच्छा पूरी करते हैं।"
– एफेसियों के नाम, ६/६

उपरोक्त पदों में दासों को आदेश दिया गया है कि वे अपने आप को ईसा मसीह का दास मानें और अपने स्वामी की डरते और कांपते हुए सेवा करें। इसके अतिरिक्त उपरोक्त पद में दासता को 'ईश्वर की इच्छा' के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

२२८. "१८. जो दास हैं, वे न केवल अच्छे और सहृदय स्वामियों की, बल्कि कठोर स्वामियों की भी अधीनता आदरपूर्वक स्वीकार करें।"

– सन्त पेत्रुस का पहला पत्र, २/१८

दी न्यू टेस्टामेंट के उपर्युक्त पद में आदेश है कि दास न केवल सहृदय और अच्छे स्वामियों की वरन् कठोर और भ्रष्ट स्वामियों की भी डरते हुए सेवा करें और यह आदेश मुक्तिदाता ईश्वर के नाम से दिया गया है। क्या यह सब होते हुए ईसाई प्रचारक गर्व से कह सकते हैं कि ईसाई मत लोगों की समानता में विश्वास रखता है ?

माननीय अलेग्ज़ेंडर कैम्पबेल स्पष्ट शब्दों में दास प्रथा और बंधुआ श्रम का समर्थन करते हैं और कहते हैं कि यह अनैतिक नहीं है, क्योंकि बाइबिल ने इसकी पुष्टि की है। उनका कथन है :

"बाइबिल में एक भी पद ऐसा नहीं जिसमें दास प्रथा पर रोक लगाई गई हो, परन्तु बहुत से पद इस प्रथा को नियमित बनाते हैं। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यह प्रथा अनैतिक नहीं है।" [१४३]

– अलेग्ज़ेंडर कैम्पबेल

थामस जैफ़रसन, अमरीका के तृतीय राष्ट्रपति, अपना मत व्यक्त करते हैं :

"हर देश और हर युग में पादरी स्वतंत्रता के विरोधी रहे हैं।" [१४४]

– थामस जैफ़रसन

फ्रांस के क्रांतिकारियों ने बाइबिल को अस्वीकार कर दिया था और अपने उपनिवेशों में दासता प्रथा को समाप्त कर दिया था, जबकि चर्च ने बाइबिल और दासता प्रथा को पुनः स्थापित कर दिया।

१४३. **चार्ल्स स्मिथ :** *"दी बाइबिल इन दी बैलंस"* (तुला में बाइबिल), हिन्दू लेखक मंच नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, पृष्ठ ११

१४४. पूर्वोक्त

कर्नल राबर्ट जी इंग्रसोल (१८३३-१८८९) अमरीका के विख्यात वक्ता और राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने मानवीय दर्शन और वैज्ञानिक तर्कवाद के आधार पर बाइबिल की आलोचना को लोक प्रिय बनाया। उनका स्पष्ट मत है :

> *"लोगों का वास्तविक उत्पीड़क, उन्हें दास बनाने वाला और भ्रष्ट करने वाला बाइबिल है।"* [१४५]
>
> **– कर्नल राबर्ट जी इंग्रसोल**

परम भक्त ईसाई राजा **जॉर्ज तृतीय,** दास प्रथा की समाप्ति से घोर घृणा करते थे। अमरीका में दास प्रथा के कट्टर समर्थक बाइबिल के नीति-उपदेशक थे। **अब्राहम लिंकन** ने 'दासता मुक्ति की घोषणा' कर के बाइबिल के ईश्वरीय विधान का खण्डन कर दिया था।

बाइबिल के उपरोक्त पदों के होते हुए जो न केवल दास प्रथा की अनुमति देते हैं वरन् उसकी पुष्टि एवं स्थापना करते हैं, ईसाई प्रचारक इस बात पर गर्व करते हैं कि पश्चिम में आधुनिक सभ्यता के विकास में ईसाई मत का योगदान सर्वाधिक महत्त्व का है। **सुश्री मतिल्दा जोसलिन गेज**, जो अमरीका की विख्यात इतिहासकारों में से एक हैं, ईसाई प्रचारकों की अधिकारोक्ति का इन शब्दों में खण्डन करती हैं :

> *"इतिहास का कुशल अध्ययेता इस निष्कर्ष पर पहुंचेगा कि सभ्यता के विकास में ईसाई मत का योगदान बहुत ही कम महत्त्व का है, परन्तु सभ्यता के पतन के लिए उसने बहुत काम किया है।"* [१४६]
>
> **– मतिल्दा जोसलिन गेज**

---

१४५. (एक) **कर्नल राबर्ट जी इंग्रसोल :** *'इंग्रसोलस लेक्चरस ऐंड एस्सेज़'*, (इंग्रसोल के भाषण और निबंध), वाटस ऐंड कं. लंदन द्वारा प्रकाशित

(दो) **चार्ल्स स्मिथ :** *"दी बाइबिल इन दी बैलंस"* (तुला में बाइबिल), हिन्दू लेखक मंच नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, आवरण पृष्ठ संख्या २

१४६. **मतिल्दा जोसलिन गेज :** *'वोमन, चर्च ऐंड स्टेट'* (स्त्री, चर्च और राज्य), न्यू यार्क, १८९३, वाइस आफ़ इंडिया नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, १९९७, पृष्ठ ५३९

सुश्री मतिल्दा जोसलिन गेज अपने कथन के समर्थन में **वेंडेल फ़िलिप्स** का उद्धरण देती हैं। **वेंडेल फ़िलिप्स** यह मत व्यक्त करते हैं :

> *"आज की सभ्यता और स्वतंत्रता के अधिकार वे बचे खुचे अंश हैं, जिन्हें मानवाधिकार छीनने वाले शक्तिशाली हाथों से उनके फांसी के मचान और खूंटों ने छीन लिया था।"*[१४७]
>
> **– वेंडेल फ़िलिप्स**

२. वेद समानता और स्वतंत्रता का उपदेश देते हैं

(एक) सब मनुष्य समान हैं

वेदों का दर्शन भ्रातृभाव और समानता पर आधारित है। कोई दूसरे से ऊंचा नहीं है। कोई स्वामी नहीं है, कोई दास नहीं है। पृथ्वी पर सभी मनुष्यों के समान अधिकार हैं। प्रकृति सब से समान व्यवहार करती है, चाहे वे भूरे हों या काले, उच्च हों या नीच, राज कुमार हों या भिखारी। भगवान ने धरती पर सभी मनुष्यों के लिए जन्म और मृत्यु की एक ही प्रक्रिया निर्धारित की है। सभी आत्माएं एक समान हैं :

समाना हृदयानि वः।

– ऋग्वेद १०/१९१/४

हमारे हृदयों में
एकता और समानता हो।

– ऋग्वेद १०/१९१/४

(दो) जिओ और जीने दो

वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) 'जिओ और जीने दो' के स्वर्णिम सिद्धांत

---

१४७. **मतिल्दा जोसलिन गेज** : *'वोमन, चर्च ऐंड स्टेट'* (स्त्री, चर्च और राज्य), न्यू यार्क, १८९३, वाइस आफ़ इंडिया नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, १९९७, पृष्ठ ५३९

पर आधारित है। वैदिक धर्म में किसी भी प्रकार के शोषण पर कठोर प्रतिबंध है। परमात्मा सभी मनुष्यों के हृदयों में विराजमान है। अतः अपने ही साथी मनुष्यों को दास क्यों बनाया जाए, जिसे प्रतिष्ठा और स्वतंत्रता के साथ जीने का समान अधिकार है ? पवित्र वेद हमें आदेश देते हैं कि 'जिओ और जीने दो' :

जीवा स्थ जीव्यासं ।

– अथर्ववेद १९/६९/१

जिओ और जीने दो ।

– अथर्ववेद १९/६९/१

प्रोफ़ेसर मैक्स मूलर इन शब्दों में वेदों की प्रशंसा और सराहना करते हैं :

"जब तक पृथ्वी पर समुद्र और पर्वत विद्यमान हैं,
तब तक वेदों की प्रशंसा और सराहना होती रहेगी।"

– प्रोफ़ेसर मैक्स मूलर

(तीन) दासता पीड़ा है और स्वतंत्रता प्रसन्नता

पृथ्वी पर दासता के अतिरिक्त कोई अन्य पीड़ा इतनी अधिक दुखदायी नहीं है। अन्य सभी कष्ट और क्लेष, यातनाएं और वेदनाएं दासता की पीड़ाओं की तुलना में महत्वहीन प्रतीत होती हैं। विश्व में स्वतंत्रता से अधिक बड़ा आनंद नहीं है। यह वास्तविक आनन्द का मूल है और मौलिक आह्लाद का स्रोत है। जो स्वतंत्रता से वंचित है, वह पृथ्वी पर अत्यंत निकृष्ट प्राणी है। स्वतंत्रता वरदान है, और दासता अभिषाप। स्वतंत्रता जीवन है और दासता मृत्यु। स्वतंत्रता में उल्लास है तो दासता में त्रास।

विश्व के प्रथम विधि निर्माता **श्री मनु** कहते हैं :

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम् ।
एतद् विद्यात् समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः ।।

– मनु

दासता पीड़ा है
स्वतंत्रता प्रसन्नता है
संक्षेप में दुःख और सुख
की यही परिभाषा है।

– मनु

(चार) जो हमें दास बनाए उसे कुचल दो

पवित्र वेद सार्वभौमिक भ्रातृभाव का उपदेश करते हैं। पृथ्वी पर सभी मानव भाई हैं क्योंकि उनका एक ही पिता है सर्वशक्तिमान ईश्वर, जो सब के साथ समान व्यवहार करता है। इस लिए सब समान अधिकार और विशेषाधिकार प्राप्त करने के अधिकारी हैं। परन्तु जो लोग अपने स्वार्थ लाभ के लिए और द्वेषभाव की मानसिकता के कारण दूसरों की स्वतंत्रता छीनने का प्रयत्न करते हैं, उनके प्रति भाइयों जैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए। उनके साथ वही व्यवहार करना चाहिए जो आक्रांता और अतिक्रमणकर्ता के साथ किया जाता है। वेद हमें अधिकार देते हैं कि उस व्यक्ति को कुचल दो जो हमें अधीन करना चाहता है, क्योंकि ऐसी स्थिति में अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करना अपरिहार्य आवश्यकता बन जाती है।

यो नो अग्नेऽभिदासत्यन्ति दूरे पदीष्ट सः।
अस्माकमिद्धे भव ।।

– ऋग्वेद १/७९/११

ऐ दैदीप्यमान देव
जो हमें दास बनाए
उसे पांव तले कुचल दिया जाए
चाहे वह निकट हो या दूर
हमारी प्रगति और समृद्धि के लिए
आप हमारे साथ रहें।

– ऋग्वेद १/७९/११

पवित्र वेद हमें आदेश देते हैं कि जो व्यक्ति हमारे स्वतंत्रता के मूल अधिकार को छीनता है, चाहे वह पराया हो या सगा सम्बंधी हो, उसे

अपनी शक्ति का प्रयोग न करने दिया जाए।

यो न इन्द्राभिदासति सनाभिर्यश्च निष्टयः।
अव तस्य बलं तिर महीव द्यौरध त्मना
नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ।।

– ऋग्वेद १०/१३३/५

ऐ दैदीप्यमान देव
उस मनुष्य की शक्ति को नष्ट कर दो
जो हमें दास बनाना चाहता है
चाहे वह पराया है या सगा सम्बंधी
चाहे उसकी शक्ति
इतनी विशाल हो
जितना आकाश
उसके धनुषों पर बांधी गई
डोरी को तोड़ डालो।

– ऋग्वेद १०/१३३/५

"अहिंसा की भ्रान्त व्याख्या ने ही राष्ट्रीय चिन्तन को विवेक की शक्ति से वंचित किया है। हमने शक्ति को ही 'हिंसा' मानना प्रारंभ किया है और अपनी 'दुर्बलता' को हम गौरवान्वित करने लगे हैं।... विश्व दुर्बलों के जीवन-दर्शन को, चाहे वह कितना भी उदात्त क्यों न हो, सुनने को तैयार नहीं है।"

– गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर

"स्वतंत्रता का मूल्य शून्य है, यदि राष्ट्रीय जीवन का हर क्षेत्र आध्यात्मिकता के स्पंदन और हिन्दुत्व के आदर्शों से विहीन है।"

– डॉ. केशवराव बलीराम हेडगेवार

अध्याय २४

बाइबिल जातिवाद का उपदेश देता है वेद समान अधिकारों का उपदेश देते हैं

१. बाइबिल जातिवाद का उपदेश देता है

पवित्र बाइबिल जातिवाद का उपदेश और प्रचार करता है। जातिवाद इस विश्वास में निहित है कि एक विशेष जाति अन्य जातियों से अधिक श्रेष्ठ है। सामान्यतया इसका अर्थ होता है कि उस जाति को अन्य जातियों पर शासन करने का अधिकार है। पवित्र बाइबिल का निम्नलिखित परिच्छेद यह बताता है कि इसके अनुयाई ईश्वर के दरबार में 'पवित्र लोग', 'विशेष लोग', 'चुने हुए लोग', 'अधिक श्रेष्ठ लोग' हैं :

> २२९. "६. तुम लोग अपने प्रभु-ईश्वर की पवित्र प्रजा हो। हमारे प्रभु-ईश्वर ने पृथ्वी भर के सब राष्ट्रों में से तुम्हें अपनी निजी प्रजा चुना है।"
>
> *– विधि-विवरण ग्रन्थ, ७/६*

बाइबिल के उपरोक्त परिच्छेद ने अंग्रेज़ शासकों को भारत के लोगों के साथ भेदभाव पूर्ण व्यवहार करने के लिए उत्तेजित किया था। ईसाई प्रचारक इस का उत्तर दें : "क्या बाइबिल विश्व के सब लोगों की समानता में विश्वास करता है ?"

२. वेद समान अधिकारों का उपदेश देते हैं

वैदिक धर्म अन्य जातियों की तुलना में किसी एक जाति की अधिक श्रेष्ठता का अनुमोदन नहीं करता। कोई भी अधिक श्रेष्ठ या निकृष्ट नहीं है। सभी एक पिता के बच्चे हैं और समान हैं।

शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः

सभी लोग परम पिता के प्रिय पुत्र हैं।

पवित्र वेद पृथ्वी के सभी लोगों की समानता और किसी भी जाति, रंग, सम्प्रदाय और देश का होते हुए सब के समान अधिकारों का उपदेश देते हैं।

समानो अध्वा प्रवतामनुष्यदे ।

– ऋग्वेद २/१३/२

सभी पथिक
जो पथ के पथगामी हैं
पथ पर
समान अधिकार रखते हैं।

– ऋग्वेद २/१३/२

"भारत एक राष्ट्र है, जिसकी एक ही संस्कृति है। संस्कृति भारत की आत्मा है। केवल हमारी ही संस्कृति भारत की रक्षा और विकास कर सकती है।"

– पंडित दीन दयाल उपाध्याय

अध्याय २५

बाइबिल का ईश्वर मूर्तियों को तोड़ता और जलाता है, वैदिक ईश्वर परमानंद प्रदान करता है

१. बाइबिल का ईश्वर मूर्तियों को तोड़ता और जलाता है

बाइबिल का ईश्वर अपने अनुयाइयों को आदेश देता है कि, "शत्रुओं की वेदियों को नष्ट कर दो, उनकी देव मूर्तियां तोड़ दो, उनके कुंज काट दो और उनकी गढ़ी हुई मूर्तियों को आग में झोंक दो।"

२३०. "५. तुम उन राष्ट्रों के साथ यह व्यवहार करोगे-उनकी वेदियों को गिरा दोगे, उनके पवित्र स्मारकों को तोड़ डालोगे, उनके पूजा के स्तम्भों को काट दोगे और उनकी देवमूर्तियों को आग में जला दोगे।"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, ७/५

यही कारण है कि गोआ में पुर्तगालियों के अत्याचार पूर्ण शासन के दिनों में फ्रैंसिस ज़ेवियर ने 'गोआ के पवित्र न्यायाधिकरण (Holy Inquisition of Goa) की स्थापना करवाई, जिसके अधीन हिन्दू मंदिर नष्ट कर दिए गए और हिन्दू देवताओं की मूर्तियां या तो तोड़ दी गईं या उन्हें आग में जला दिया गया। एक बार फ्रैंसिस ज़ेवियर ने घोषणा की थी :

"मैं आदेश देता हूँ, सब स्थानों पर मंदिर गिरा दिए जाएं और मूर्तियां तोड़ दी जाएं। मंदिरों के गिराए जाने और मूर्तियों के तोड़े जाने का दृश्य देख कर मुझे जिस आनन्द की अनुभूति होती है, उसका वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।"

– फ्रैंसिस ज़ेवियर

२. वैदिक ईश्वर परमानंद प्रदान करता है

वैदिक ईश्वर धरती के सभी लोगों को, चाहे वे किसी रंग या सम्प्रदाय के हों, शुभाशीष, स्नेह, प्रकाश और परमानंद प्रदान करता है। इसके विपरीत बाइबिल का ईश्वर अभिषाप देता है, नरक भेजता है, तोड़ता और जलाता है। वैदिक ईश्वर सभी प्राणियों को प्रेम की आशीष देता है। वह सब को आदेश देता है कि वे साथ साथ रहें और सब से प्रेम करें।

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ।।१।।

– अथर्ववेद ३/३०/१

मैं तुम्हें आशीष देता हूँ कि तुम द्वेष से मुक्त रहो
सदभाव तथा एक्य भाव से रहो
एक दूसरे से ऐसे प्यार करो
जैसे गाय अपने नव जात बछड़े से
प्यार करती है।

– अथर्ववेद ३/३०/१

यहां एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उत्पन्न होता है : क्या ईश्वर एक है या दो ? विश्व के सभी विद्वान एक ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं। यदि ऐसा है तो हम कैसे बाइबिल के ईश्वर और वैदिक ईश्वर का वर्णन करते हैं, जिनकी ऊपर लिखित विशेषताएं एक दूसरे से भिन्न हैं ? बाइबिल में जिस ईश्वर का वर्णन मिलता है वह वैसा नहीं है, जैसा वेद में वर्णित है। इसी प्रकार वेदों में वर्णित ईश्वर वैसा नहीं है, जैसा बाइबिल में वर्णित है, क्योंकि एक ईश्वर परस्पर प्रतिकूल और परस्पर विरोधी उपदेश नहीं दे सकता। यदि ईश्वर एक है तो वह बाइबिल में कैसे पशुओं और मनुष्यों की बलि मांग सकता है, जबकि वह वेदों में अहिंसा का उपदेश देता है ? ये दोनों कार्य परस्पर विरोधी हैं। यदि ईश्वर एक है तो वह कैसे बाइबिल में सभी पहलौठों को (पहले उत्पन्न हुए बच्चों को) मार डालने का आदेश देता है, जबकि वह वेदों में अहिंसा परमो धर्मः का पवित्र उपदेश देता है ? यदि ईश्वर एक है तो वह कैसे बाइबिल में कहता है, "मैं पिता और पुत्र में, मां और बेटी, इत्यादि में विद्वेष उत्पन्न करने के लिए आया हूँ", जबकि वेदों में वह परिवार में सामंजस्य और समन्वय उत्पन्न करने की शिक्षा देता है ? दोनों कार्य एक दूसरे के सर्वथा विरुद्ध हैं। यदि ईश्वर एक है तो वह कैसे बाइबिल में काफ़िरों के नवजात शिशुओं का संहार करने और गर्भवती महिलाओं को चीर फाड़ने का आदेश देता है और वेदों में वही ईश्वर सब मनुष्यों में भ्रातृ भाव और समानता का उपदेश देता है ? दोनों बातें परस्पर विरोधी एवं प्रतिकूल हैं। इस पुस्तक के सभी पाठक इस बात पर एकमत एवं सहमत होंगे कि ईश्वर एक है और वह परस्पर विरोधी एवं प्रतिकूल आदेश नहीं देता। शेष पाठकों के सामान्य ज्ञान और बुद्धिमत्ता पर छोड़ दिया जाता है कि वे स्वयं तर्क संगत निष्कर्ष पर पहुंच जाएं।

"आक्रमण और नृशंस शक्ति को केवल प्रचंड आक्रमण और घोरतम नृशंस शक्ति के द्वारा पराजित किया जा सकता है।"

– वीर सावरकर

अध्याय २६

बाइबिल का ईश्वर ईर्ष्यालु और प्रतिशोधी है, वेदों का ईश्वर दयालु पिता है

१. बाइबिल का ईश्वर ईर्ष्यालु और प्रतिशोधी है

(एक) बाइबिल का ईश्वर ईर्ष्यालु है

बाइबिल का ईश्वर स्वयं कहता है कि वह ईर्ष्यालु ईश्वर है। निम्नलिखित परिच्छेद पढ़िए :

> २३१. "५. उन मूर्तियों को दण्डवत् कर उनकी पूजा मत करो; क्योंकि मैं प्रभु, तुम्हारा ईश्वर, ऐसी बातें सहन नहीं करता। जो मुझ से बैर करते हैं, मैं तीसरी और चौथी पीढ़ी तक उनकी सन्तति को उनके अपराधों का दण्ड देता हूँ।"
>
> — *निर्गमन ग्रन्थ, २०/५*

क्या यह न्याय संगत है कि तीसरी और चौथी पीढ़ी के बच्चे जो अभी उत्पन्न नहीं हुए, उनके किसी अपराध के बिना, उन्हें दण्ड दिया जाएगा ? इसके अतिरिक्त ये नश्वर प्राणियों के सांसारिक विचार हैं, अनश्वर सर्वशक्तिमान प्रभु के नहीं। यह मनुष्य का स्वभाव है कि वह उनके प्रति जो उस से घृणा करते हैं प्रतिशोध के भाव से प्रेरित होता है। ईश्वर जो सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक और सर्वज्ञ है, वह उनके प्रति जो उससे घृणा करते हैं कैसे ईर्ष्यालु और प्रतिशोधी हो सकता है ?

(दो) बाइबिल का ईश्वर प्रतिशोधी है

पवित्र बाइबिल कहता है कि बाइबिल का ईश्वर बदला लेता है और वह ईर्ष्यालु है। शत्रुओं के लिए वह अपने हृदय में क्रोध रखता है :

२३२. "२. प्रभु-ईश्वर ईर्ष्यालु और प्रतिशोधी है, प्रभु-ईश्वर बदला लेता और बात-बात में क्रुद्ध हो जाता है। प्रभु-ईश्वर अपने शत्रुओं के विरुद्ध प्रतिशोध करता है। और बैरियों से आगबबूला हो उठता है।"

– नहूम का ग्रन्थ, १/२

ईश्वर, जो परम दयावान, अत्यंत कृपालु और सब के परम परोपकारी पिता हैं, भला उसके शत्रु कैसे हो सकते हैं ? वह शत्रुओं के लिए हृदय में क्रोध कैसे संजोकर रख सकता है ?

२. वैदिक ईश्वर दयावान पिता है

विश्व के सब विद्वान इस बात पर सर्वसम्मत हैं कि ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम धर्म ग्रन्थ है। माननीय **मारिस फ़िलिप** दृढ़ विश्वास के साथ यह निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं :

"इतिहास और ओल्ड टेस्टामेंट की पुस्तकों के कालक्रम के आधुनिकतम शोध के पश्चात् हम निःसन्देह यह कह सकते हैं कि ऋग्वेद न केवल

आर्यों की वरन् समस्त विश्व की सब से प्राचीन पुस्तक है।"

– मारिस फ़िलिप

ऋग्वेद कहता है कि परमेश्वर ब्रह्माण्ड के सभी प्राणियों का दयावान पिता है। वह सभी प्राणियों की देखभाल करता है, चाहे वे पुण्यात्मा हैं या पापात्मा। वह समस्त ब्रह्माण्ड का पोषक है, इस लिए वह घोर पापी को भी भोजन देता है, वस्त्र देता है, और स्वास्थ्य प्रदान करता है। विश्व के सभी प्राणी, चाहे वे किसी भी रंग, जाति या सम्प्रदाय के हों, उसकी असीम अनुकम्पा और शक्ति से आनन्द प्राप्त करते हैं।

अभ्यूर्णोति यन्नग्नं भिषक्ति विश्वं यत्तुरम् ।
प्रेमन्धः ख्यन्निः श्रोणो भूत् ।।

– ऋग्वेद ८/७९/२

वह उन्हें ढक देता है जो नंगे हैं
सभी क्षत विक्षत प्राणियों को स्वस्थ करता है
उसी की कृपा से अंधे को दृष्टि मिलती है
और लंगड़ा चल सकता है ।

– ऋग्वेद ८/७९/२

"किसी भी आंदोलन में सामान्य लोग कार्यकर्ता के कार्यों की तुलना में उसके व्यक्तिगत चरित्र का सूक्ष्म अध्ययन करते हैं। अतः हमारे जीवन की चादर इतनी स्वच्छ होनी चाहिए कि सूक्ष्म निरीक्षण के पश्चात भी किसी को उस पर कोई धब्बा न मिले। हमें लोगों में यह विश्वास जगाना चाहिए कि हमारा प्रत्येक कार्य निस्वार्थ भाव से किया गया है। हमारा चरित्र इतना स्वच्छ होना चाहिए कि लोग हमारे प्रति आकर्षित भी हों और आसक्त भी।"

– डा. केशवराव बलीराम हेडगेवार

अध्याय २७

बाइबिल के ईश्वर की अत्याचार पूर्ण वाणी, वेद के ईश्वर की परम सुखदायी प्रवृत्ति

१. बाइबिल के ईश्वर की अत्याचार पूर्ण वाणी

(एक) क्या बाइबिल का ईश्वर प्रेम का ईश्वर है ?

निम्नलिखित परिछेद में बाइबिल के ईश्वर की अत्याचार पूर्ण वाणी है :

> २३३. "२५. मैं विधानभंग के कारण तुम्हारे पास तलवार भेजूँगा। यदि तुम नगरों में शरण लोगे, तो मैं वहाँ तुम्हारे बीच महामारी भेजूँगा और तुम अपने शत्रुओं के हवाले कर दिये जाओगे।" *– लेवी ग्रन्थ, २६/२५*

पाठकों को उपरोक्त परिछेद ध्यान पूर्वक पढ़ना चाहिए और स्वयं निर्णय करना चाहिए कि क्या बाइबिल का ईश्वर प्रेम और करुणा का ईश्वर है।

जोनाथान स्विफ़्ट, जो आयरलैंड का विख्यात लेखक था, और जिसने **गुलिवर ट्रैवेल्स** (गुलिवर की यात्राएं) नामक पुस्तक लिखी थी, उन्होंने चर्च द्वारा शताब्दियों के रक्तपात पर दृष्टि डालते हुए, यह वक्तव्य दिया था :

> *"हमारे पास घृणा करने के लिए पर्याप्त धर्म है। परन्तु वह इतना पर्याप्त नहीं कि एक दूसरे से प्यार कर सकें।"* [१४८]
>
> **– जोनाथान स्विफ़्ट**

(दो) बाहर के लिए तलवार और अन्दर के लिए आतंक

बाइबिल के ईश्वर की यह क्रोधावेश से भरी वाणी पढ़िए, जिसमें उन लोगों के लिए आतंक और अतयाचार भरा पड़ा है, जो उसके उपदेश में विश्वास नहीं रखते :

> **२३४. "२५. तलवार सड़कों पर उसकी सन्तति मिटा देगी। उनके घरों में आतंक बना रहेगा। नवयुवकों और नवयुवतियों का वध किया जायेगा। पके बाल वाले बूढ़े और दूधमुँहे बच्चे समान रूप से मारे जायेंगे।"**
>
> ***– विधि-विवरण ग्रन्थ, ३२/२५***

दुध-मुंहें शिशू क्या अपराध करते हैं कि उन्हें मार डाला जाएगा ? क्या यह इस बात का पर्याप्त प्रमाण नहीं है कि ईसाई प्रचारक "बाहर तलवार से और तथाकथित काफ़िरों के घरों के अन्दर आतंक से" अपने मत का प्रसार करते हैं ?

---

१४८. **जेम्स ए. हाट :** *'होली हारर्स'* (पवित्र यातनाएं), प्रामीथियस बुक्स, न्यू यार्क द्वारा प्रकाशित, १९९०, पृष्ठ १२

जर्मन दार्शनिक **नीत्शे** का निष्पक्ष विचार यहां पठनीय है। वे कहते हैं :

> *"मैं ईसाई मत को घोर अभिषाप कहता हूँ, जो एक बृहत आन्तरिक कलुष है, और प्रतिशोध की प्रबल प्रवृत्ति है, जिसके लिए अपनाए गए उपाय इतने घोर विषैले, इतने कपट पूर्ण, इतने गोपनीय और नीचतापूर्ण हैं कि उनकी तुलना में कोई नहीं ठहर सकता। मैं इसे मानवता के लिए स्थायी कलंक कहता हूँ।"*[१४९]
>
> **– नीत्शे**

वोल्टेयर ने, जो विख्यात फ़्रांसीसी नाटककार और व्यंग्यकार थे और जिन्हें विश्व की प्रबुद्ध प्रतिभा माना जाता था, फ़्रेडरिक दी ग्रेट से स्पष्ट शब्दों में यह कहा था कि :

> *"विश्व भर को विषाक्त करने वाले पंथ सम्प्रदायों में से ईसाई मत सर्वाधिक हास्यास्पद, सर्वाधिक निरर्थक और रक्त पिपासू है।"*[१५०]
>
> **– वोल्टेयर**

(तीन) जानवरों के दांतों और सर्पों के विष के द्वारा वध

पवित्र बाइबिल का ईश्वर घोषणा करता है कि वह जानवरों के दांतों और सर्पों के विष के द्वारा काफ़िरों को नष्ट कर देगा :

२३५. "२४. जब वे भुखमरी से दुर्बल हो गये होंगे, महामारी से अशक्त और ताऊन से

---

१४९. **एन.एस. राजाराम :** *'क्रिस्चैनिटीज़ कोलैप्सिंग इम्पायर ऐंड इटस डीज़ाइनस इन इंडिया'* (ईसाई मत की ध्वस्त होती शक्ति और भारत में इसके मंतव्य), नई दिल्ली, १९९९, पृष्ठ १२

१५०. **जेम्स ए. हाट :** *'होली हारर्स'* (पवित्र यातनाएं) प्रामीथियस बुक्स, न्यू यार्क, द्वारा प्रकाशित, १९९०, पृष्ठ १३१

आक्रान्त, तो मैं उनके विरुद्ध जंगली जानवरों के दाँत और पृथ्वी पर रेंगने वाले सर्पों का विष भेजूँगा।"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, ३२/२४

(चार) पिताओं के तथा कथित कुकर्मों के कारण शिशुओं का नरसंहार

२३६. "२१. उनके पूर्वजों के कुकर्मों के कारण पुत्रों का भी वध किया जायेगा।"

– इसायाह का ग्रन्थ, १४/२१

२. वैदिक ईश्वर की परम सुखदायी प्रवृत्ति

वैदिक ईश्वर (अर्थात् जिस ईश्वर का वेदों में वर्णन हुआ है) दयालु, सुखदायी और कृपाशील है। वह विश्व के सभी प्राणियों को अपनी कृपा पूर्ण आशीश प्रदान करता है। वह शक्ति, ऊर्जा और आन्तरिक क्षमता का मुख्य स्रोत है। वही अपने भक्तों को शारीरिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करता है। सभी प्रकार की ऊर्जा और शक्ति उसी से प्रस्फुटित होती है। उसकी इच्छा के बिना वृक्ष का एक पत्ता भी अपने स्थान से नहीं हिलता। जो लोग सत्य मार्ग पर चलने वाले, ज्ञानवान और जिन्हें दिव्य दृष्टि प्राप्त है, वे स्वीकार करते हैं कि समस्त विश्व पर उसी परमेश्वर का हितकारी शासन है और वे उत्साह के साथ उसकी भक्ति करते हैं। जो उसकी प्रार्थना करते हैं, और उससे दया पूर्ण संरक्षण मांगते हैं, वे मुक्ति को प्राप्त होते हैं। जो उसका आह्वान करते हैं और उससे अनुनय निवेदन करते हैं, उन्हें वह अपनी आशीश और अपना ज्ञान प्रदान करता है। जिन्हें दिव्य आशीश प्राप्त होती है, वे परम श्रद्धा भाव से उसकी भक्ति करते हैं।

यऽआत्मदा बलदा यस्य विश्वऽउपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य च्छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

– यजुर्वेद २५/१३

हम दयावान परमेश्वर की
भक्ति भाव से पूजा करते हैं
जो हमारे मन, शरीर और आत्मा को
ऊर्जा और शक्ति प्रदान करता है
जिसके परामर्श की
सब प्रबुद्ध ऋषि कामना करते हैं
जिसकी कृपा दृष्टि
नश्वर और अनश्वर सब को
छाया प्रदान करती है।

– यजुर्वेद २५/१३

"स्वतंत्रता का मूल्य शून्य है, यदि राष्ट्र का प्रत्येक क्षेत्र अध्यात्म और हिंदुत्व के आदर्शों के स्फुरण से वंचित हो।" – डा. केशवराव बलीराम हेडगेवार

"हमारे पतन का मूल कारण हमारी मानसिक दुर्बलता है। हमारे समक्ष सर्वप्रथम कार्य यही है कि अपनी मानसिक दुर्बलता को समाप्त कर दें।"

– डा. केशव राव बलिराम हेडगेवार

"मैं यह देखूंगा कि मेरा एक योद्धा लाख शत्रुओं को परास्त करेगा, तभी मैं अपने आपको गोबिंद सिंह कहलाऊंगा।"

– गुरु गोबिंद सिंह

"मां और मातृभूमि स्वर्ग से भी अधिक प्रिय हैं। देवता, गाय, ब्रह्मण और धर्म की रक्षा अपेक्षित है। जब धर्म की क्षय हो जाए तो मृत्यु जीवन से श्रेष्ठतर हो जाएगी।"

– छत्रपति शिवाजी महाराज

अध्याय २८

बाइबिल के ईश्वर के लोगों द्वारा हत्याएं, वैदिक ऋषियों द्वारा दयाशीलता

१. बाइबिल के ईश्वर के लोगों द्वारा हत्याएं

(एक) दाऊद द्वारा नर संहार

(क) दाऊद ने लोगों को आरों के नीचे रख दिया

दाऊद बाइबिल के लोगों में से एक प्रमुख व्यक्ति था। उसने अम्मोनिया के नगरों पर आक्रमण किया और लोगों को आरों, लोहे के हेंगों और कुल्हाड़ों के नीचे रखा और उन्हें ईंटों के भट्टे में से गुज़रने के लिए विवश किया।

> २३७. "३१. वह नगर के निवासियों को ले गया और उन्हें लोहे के आरों, गेंतियों और कुल्हाड़ियों के नीचे रखा तथा उन्हें ईंट

के भट्ठों में से गुज़ारा। उसने अम्मोनियों के अन्य सभी नगरों के साथ यही किया। इसके बाद दाऊद अपनी सारी सेना के साथ येरूसालेम लौट आया।"

– समूएल का दूसरा ग्रन्थ, १२/३१

जोसेफ़ लूइस, जो 'फ़्री थिंकर्स आफ़ अमरीका' (अमरीका के स्वतंत्र चिंतकों) के प्रधान थे और 'एज आफ़ रीज़न' (तर्क का युग) के सम्पादक थे, कहते हैं :

"हत्याओं और वध का वर्णन करने में मनोव्यथा का इतना अभाव व्यक्त हुआ है कि बाइबिल को निरन्तर पढ़ने से मनुष्य जीवन मूल्यों के प्रति सर्वथा भाव शून्य हुए बिना नहीं रह सकता। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि ईसाई देश युद्ध काल में बाइबिल को राष्ट्रीय धर्म का आधार बनाते हैं, और युद्धरत हर सैनिक को एक एक बाइबिल की प्रति देते हैं।"[१५१]

– जोसेफ़ लूइस

बाइबिल के ईश्वर के लोगों द्वारा हत्याओं ने कट्टर ईसाइयों को काफ़िरों की हत्याओं के लिए उत्तेजित किया था। **जेम्स ए. हाट** अपनी पुस्तक 'होली हारर्स' में कट्टर ईसाइयों द्वारा तथा कथित काफ़िरों की हृदय दहला देने वाली हत्याओं का वर्णन इन शब्दों में करते हैं :

"बारहवीं शताब्दी में काफ़िरों को समाप्त करने के लिए यूरोप में एक तूफ़ान खड़ा हो गया था। सब से पहले जो लोग इसके शिकार हुए, वे थे आलबीजीन्स या काथारी जो आल्बी, फ़्रांस के आस पास केन्द्रित

---

१५१. **ब्रह्म दत्त भारती :** *'दी वेदाज़ ऐंड दी बाइबिल'* (वेद और बाइबिल), नई दिल्ली, १९६७, पृष्ठ ४६

हो गए थे। वे सृष्टि के निर्माण के सम्बंध में बाइबिल के कथन पर संदेह करते थे और ईसा मसीह को प्रभु न मानते हुए केवल एक देवदूत ही मानते थे। उन्होंने तत्व परिवर्तन के सिद्धांत को अस्वीकार कर दिया था और वे कठोरता से ब्रह्मचर्य का पालन करने पर बल देते थे। १२०८ ईसवी में पोप निर्दोष तृतीय ने आलबीजीन्स को नष्ट कर देने के लिए धर्म युद्ध की घोषणा कर दी थी। उस घोषणा के उत्तर में प्राय: २०,००० योद्धा और किसान एकत्र हुए और एक सेना बनाई, जिसने दक्षिण फ्रांस में उत्पात मचा दिया और उन नगरों को नष्ट भ्रष्ट कर दिया, जहां लोगों में उपरोक्त विश्वास अधिक सुदृढ़ था। जब घिरा हुआ बेज़ियर नगर पराजित हो गया, तो सैनिकों ने, पोपदूत आर्नल्ड अमलरिक (अथवा आर्नाड अमारी) से पूछा कि वे पकड़े गए लोगों में से कैसे पता लगाएं कि कौन लोग काफ़िर हैं और कौन ईसाई मत के अनुयाई। उसने आदेश दिया, "सब को मार डालो। ईश्वर अपनों को पहचान लेगा।" हज़ारों का वध कर दिया गया, बहुत लोगों को पहले अंधा कर दिया गया, अंग भंग कर दिया गया, घोड़ों के पीछे घसीटा गया और अपना निशाना साधने के लिए प्रयोग किया गया। पोपदूत ने यह सारा वृत्तांत पोप को दिया, "ईश्वर का क्रोध आश्चर्यजनक रूप में नगर के विरुद्ध भड़क उठा है।"[१५२]

– जेम्स ए. हाट

---

१५२. **जेम्स ए. हाट :** *'होली हारर्स'* (पवित्र यातनाएं) प्रामीथियस बुक्स, न्यू यार्क, द्वारा प्रकाशित, १९९०, पृष्ठ ५४-५६

(ख) दाऊद ने २०० लोगों का वध कर दिया

२३८. "२७. अभी समय पूरा भी नहीं हो पाया था कि दाऊद अपने साथियों को ले कर गया और दो सौ फ़िलिस्तियों को मार डाला।" *– समूएल का पहला ग्रन्थ, १८/२७*

(दो) येहू, राजा और पैग़म्बर, द्वारा हत्याकाण्ड

(क) येहू, राजा और पैग़म्बर, ने सब को मार डाला और किसी को जीवित नहीं रहने दिया :

२३९. "११. इसके बाद येहू ने अहाब के घराने के जो लोग यिज़्एल में बच गये थे-उनके सब बड़े अधिकारियों, उसके घनिष्ठ मित्रों और उसके याजकों को-सब को मरवा डाला। उसने एक को भी जीवित नहीं छोड़ा।"
– राजाओं का दूसरा ग्रन्थ, १०/११

(तीन) योशुआ द्वारा हत्या काण्ड

(क) मूसा के उत्तराधिकारी योशुआ ने उन सभी को मार डाला जो सांस लेते थे

किसी एक को भी जीवित नहीं रहने दिया, सभी को मौत के घाट उतार दिया गया, एक स्थान पर नहीं वरन् अनेक स्थानों पर। निम्नलिखित पांच पद पठनीय हैं :

२४०. "३०. प्रभु ने उसके राजा-सहित उसे भी इस्राएलियों के हाथ दे दिया। उसने उसे और उस में रहने वाले सब प्राणियों को तलवार के घाट उतारा। उस में एक को भी नहीं छोड़ा।"
– योशुआ का ग्रन्थ, १०/३०

२४१. "३२. प्रभु ने लाकीश को इस्राएलियों के हाथ दे दिया। योशुआ ने दूसरे दिन उस पर अपना अधिकार कर लिया तथा उसमें रहने वाले सब प्राणियों को उसी प्रकार तलवार के घाट उतारा, जैसा उसने लिबना के साथ किया था।"

– योशुआ का ग्रन्थ, १०/३२

२४२. "३६. इसके बाद योशुआ और उसके साथ सारे इस्राएलियों ने एगलोन से हेब्रोन की ओर बढ़ कर उस पर आक्रमण किया।"

– योशुआ का ग्रन्थ, १०/३६

२४३. "३७. उन्होंने उसे अधिकार में कर लिया और उसके राजा, उसके सब गाँवों और उसके सब प्राणियों को तलवार के घाट उतारा। उसने एक को भी जीवित नहीं छोड़ा। उन्होंने उसका और उसके सब निवासियों का संहार किया, जैसा उन्होंने एगलोन में किया था।"

– योशुआ का ग्रन्थ, १०/३७

२४४. "४०. इस प्रकार योशुआ ने पूरा देश अधिकार में कर लिया-पहाड़ी प्रदेश, नेगेब, निचला प्रदेश और पहाड़ की ढलानें। उसने सब राजाओं का वध किया। उसने एक को भी जीवित नहीं छोड़ा। इस्राएल के प्रभु-ईश्वर ने जैसी आज्ञा दी थी, उसने वैसे ही सब प्राणियों का संहार किया।"

– योशुआ का ग्रन्थ, १०/४०

(चार) एलियाह पैग़म्बर द्वारा हत्याएं

(क) एलियाह पैग़म्बर ने ४५० पुजारियों को मार डाला, किसी को नहीं छोड़ा

एलियाह पैग़म्बर ने ४५० पुजारियों को मार डालने का आदेश दिया केवल इस कारण कि उनके धार्मिक विश्वास एलियाह के विश्वासों से भिन्न थे। यह पद पठनीय है :

२४५. "४०. एलियाह ने उन से कहा, 'बाल के पुजारियों को पकड़ो, उन में से एक भी न भागने पाये', वे पकड़ लिये गये। एलियाह के कहने पर लोग उन्हें कीशोन नाले तक घसीट कर ले गये और उन्होंने वहाँ उनका वध किया।"

– राजाओं का पहला ग्रन्थ, १८/४०

(पांच) समूएल पैग़म्बर द्वारा हत्याएं

(क) पैग़म्बर समूएल ने अगाग के टुकड़े कर दिए

२४६. "३३. ...इसके बाद समूएल ने गिलगाल में प्रभु के सामने अगाग का वध किया।"

– समूएल का पहला ग्रन्थ, १५/३३

(छः) मूसा द्वारा हत्याएं

(क) मूसा ने निर्दोष शिशुओं की भी हत्याएं कर दी

बाइबिल के महानतम व्यक्तियों में से प्रमुख, **मूसा** ने सब नगरों के पुरुषों और महिलाओं को ही नहीं वरन् निर्दोष शिशुओं की भी हत्या कर दी, क्योंकि, हेशबोन के राजा सीहोन ने उसे अपने प्रदेश से निकलने की अनुमति नहीं दी। पद इस प्रकार है :

२४७. "३४. हमने उस समय उसके सब नगरों पर अधिकार कर लिया और उनके निवासियों का–पुरुषों, स्त्रियों, बच्चों सब का सर्वनाश किया।"

– विधि-विवरण ग्रन्थ, २/३४

(सात) पैग़म्बर एलीशा द्वारा हत्याएं

(क) पैग़म्बर एलीशा ने ४२ छोटे बच्चों की हत्या कर दी

पैग़म्बर एलीशा ने रीछों को आदेश दिया कि वे उन ४२ छोटे बच्चों को चीर फाड़ें जो उसके गंजे सिर पर हंसे थे।

२४८. "२३. वहाँ से वह बेतेल गया। वह रास्ते की चढ़ाई चढ़ रहा था। उसी समय नगर से कुछ लड़के निकले और उसे चिढ़ाते हुए कहने लगे, 'अरे गंजे, ऊपर चढ़! अरे गंजे, ऊपर चढ़!'"

– राजाओं का दूसरा ग्रन्थ, २/२३

२४९. "२४. उसने उनकी ओर मुड़ कर उन्हें प्रभु के नाम पर अभिशाप दिया। तब वन से दो रीछनियाँ निकलीं और उन्होंने उन में बयालीस लड़कों को चीर डाला।"

– राजाओं का दूसरा ग्रन्थ, २/२४

चार्ल्स स्मिथ का स्पष्ट मत है :

"बाइबिल इतिहास का सबसे बड़ा धोखा है। आज ओल्ड टेस्टामेंट (पुराना विधान) के प्रमुख पात्र प्रायश्चित कक्ष में पड़े होंगे और न्यू टेस्टामेंट (नया विधान) के पात्र मानसिक रोगों के चिकित्सालयों में निरीक्षणाधीन पड़े होंगे।"[१५३]

– चार्ल्स स्मिथ

डीन फ़रार विख्यात दार्शनिक और धर्मशास्त्री थे, और कैंटरबरी के डीन थे।

उन्होंने निर्भीक स्वर में कहा था :

---

१५३. चार्ल्स स्मिथ : *"दी बाइबिल इन दी बैलंस"* (तुला में बाइबिल), पश्चिम में प्रकाशित, हिन्दू लेखक मंच नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, पृष्ठ २०

"बाइबिल बर्बर पुस्तक है, जो बर्बर युग में बर्बर लोगों के लिए लिखी गई थी।"[१५४]

– डीन फ़रार

२. वैदिक ऋषियों द्वारा दयाशीलता

विश्व चार वैदिक ऋषियों के प्रति अत्यधिक ऋणी है, क्योंकि उन्होंने पृथ्वी के समस्त लोगों के लिए पवित्र वेदों का दैवी ज्ञान का प्रसार कर अपनी दयाशीलता प्रदर्शित की है। सिंधु नदी के तट पर **अग्नि, वायु, आदित्य** और **अंगिरा** नामक चार ऋषियों को वेदों के दैवी ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हुआ और उन्होंने यह ज्ञान **ब्रह्मा** को दिया। शब्द ज्ञान के आधार पर वेद का अर्थ है दिव्य ज्ञान, जो सामान्य ज्ञान नहीं, जिसमें त्रुटि और संशोधन अपेक्षित हो सकता है। यह त्रुटि हीन, अनश्वर, अनादि, अनन्त, असीम और अगाध ज्ञान है।

प्रोफ़ेसर मैक्स मूलर 'साइंस ऐंड रिलीजन' नामक पुस्तक की प्रस्तावना में इस प्रकार लिखते हैं :

"वेद शाश्वत हैं और इस कारण पूर्ण और दोष विहीन हैं।"

– प्रोफ़ेसर मैक्स मूलर

पवित्र वेद, जहां घृणा हो वहां प्रेम का उपदेश देते हैं, जहां असत्य हो वहां सत्य का प्रचार करते हैं, जहां प्रतिशोध और प्रतिकार की भावना हो वहां समझौते और समन्वय का वातावरण उत्पन्न करते हैं, जहां निराशा हो वहां आशा उत्पन्न करते हैं, जहां हतोत्साह हो वहां उत्साह की प्रेरणा देते हैं, जहां संदेह और शंकाएं हों वहां श्रद्धा और निष्ठा उत्पन्न करते हैं, जहां अंधकार हो वहां प्रकाश फैलाते हैं, और जहां दुख और पीड़ाएं हों वहां हर्ष और उल्लास का प्रसार करते हैं।

विश्व की समस्त मानव जाति अधिकार पूर्वक वेदों को अपना कह

---

१५४. **चार्ल्स स्मिथ :** *"दी बाइबिल इन दी बैलंस"* (तुला में बाइबिल), पश्चिम में प्रकाशित्, हिन्दू लेखक मंच नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रित, पृष्ठ २०

सकती है। वैदिक धर्म एक ईश्वर (ओ३म्), एक धर्म (वैदिक), एक जाति (आर्य), एक धर्म ग्रन्थ (वेद), पूजा की एक पद्धति (संध्या), एक भाषा (संस्कृत), एक संस्कृति (वैदिक संस्कृति), एक लक्ष्य (मनुष्य को पुण्यात्मा, प्रबुद्ध, उन्नत और उदात बनाना) का उपदेश दे कर विश्व के सभी लोगों को एकता के सूत्र में बांधता है।

कृण्वंतो विश्वमार्यम् ।

– ऋग्वेद ९/६३/५

आइये, विश्व के
सब लोगों को आर्य बनाएं ।

– ऋग्वेद ९/६३/५

वैदिक धर्म रचनात्मक है, विनाशात्मक नहीं। यह उच्च विचारों का प्रचार और प्रसार करता है :

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः ।

– यजुर्वेद २५/१४

सभी दिशाओं से,
हमें शुभ विचार प्राप्त हों ।

– यजुर्वेद २५/१४

वेद के अनुयाई ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे उनकी कलुषित प्रवृत्तियों को दूर कर दें और उन्हें शुभ विचार प्रदान करें :

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ।
यद्भद्रं तन्नऽआ सुव ।।
– यजुर्वेद ३०/३

ऐ विश्व के महान सृजनकर्ता !
हमारी कलुषित प्रवृत्तियों को दूर कर दे
हमें सभी शुभ विचार प्राप्त हों ।
– यजुर्वेद ३०/३

"विश्व की समस्याओं का समाधान हिन्दुत्व में है।"

– पंडित दीन दयाल उपाध्याय

ग्रन्थ-सूची

पुस्तकें

1. Armstrong : The Gospel According to Woman
2. -- : Atharva Veda
3. Ball W.P. : The Bible Handbook
4. Barbara G. Walkar : The Woman's Encyclopaedia of Myths and Secrets
5. Bertrand Russell : Why I Am Not a Christian
6. Bhagavad Datta : Western Indologists – A Study in Motives
7. Brahmachari Vishwanath : A Survey of Christian Missionary Activities in Andhra Pradesh
8. Brahm Datt Bharti : Max Muller – A Lifelong Masquerade
9. Brahm Datt Bharti : The Vedas and the Bible
10. Brown W.D. : Superiority of the Vedic Religion
11. Charles Coleman : Theophany of the Hindus
12. Charles Duryea Smith : The Hundred Percent Challenge
13. Charles Smith : The Bible in the Balance
14. Colin Maine : The Bible – What It Says
15. Colonel James Todd : Travels in Western India
16. Deendayal Upadhyaya : Integral Humanism
17. Deshpande B.V. : Dr. Hedgewar, The Epoch-Maker
18. Dhananjay Keer : Veer Savarkar
19. Dr. Durga Das Basu : Introduction To The Constitution of India
20. Foote G.W. : The Bible Handbook
21. Foote G.W. : Crimes of Christianity
22. Gandhi M.K. : Autobiography or My Experiments with Truth
23. Gandhi M.K. : Collected Works of Mahatma Gandhi
24 Geffrey Burton Russell : A History of Medieval Christianity

25. Geoffrey Ashe : The Virgin Mary's Cult and the Re-emergence of the Goddess
26. George Bernard Shaw : Everybody's Political What's What ?
27. George Bernard Shaw : Preface To The Adventures Of The Black Girl In Her Search For God
28. Gibbs M.E. Miss : History Of The Anglican Church In India
29. Golwalkar M.S. Guruji : Bunch of Thoughts
30. Helen Ellerbe : The Dark Side Of Christian History
31. Helen Gardner : Men, Women and Gods
32. Henry James Coleridge : The Life and Letters of St. Francis Xavier
33. Ingersoll Col. Robert G. : Lectures and Essays
34. James A. Haught : Holy Horrors
35. Jawaharlal Nehru : Glimpses of World History
36. Jawaharlal Nehru : Discovery of India
37. John Bond : In The Pillory – The Tale Of The Borgia Pope
38. Kanayalal M. Talreja : Philosophy of Vedas
39. Kanayalal M. Talreja : Pseudo-Secularism in India
40. Kanayalal M. Talreja : Secessionism in India
41. Kanayalal M. Talreja : Historic Quotes Of Guruji M.S. Golwalkar
42. Leo Tolstoy : Essays and Letters
43. Leo Tolstoy : What is Religion ?
44. Lewis Regenstein : Replenish The Earth
45. Levack : The Witch-Hunt In Early Modern Europe
46. Lord Krishna : Shrimad Bhagavad Gita
47. Manu : Manu Smriti
48. Matilda Joslyn Gage : Church, Woman And State
49. Niyogi M.B. Dr. Justice : Report Of The Christian Missionary Activities Enquiry Committee, Madhya Pradesh, 1956

50. Pagels : The Gnostic Gospels
51. Peter Kemp : H.G. Wells And the Culminating Ape
52. Pope John Paul II : Ecclesia In Asia
53. Priolkar A.K. : The Goa Inquisition : The Terrible Tribunal For the East
54. Rajaram N.S. : The Dead Sea Scrolls And Crisis Of Christianity
55. Rajaram N.S. : Christianity's Scramble For India And the Failure of the Secularist Elite
56. Rajaram N.S. : Christianity's Collapsing Empire And Its Designs In India
57. Ram Swarup : Hindu View Of Christianity And Islam
58. Randolph T.J. : Memoir Cor. And Misc.
59. Richard Temple : Oriental Experience
60. — : Rig Veda
61. Riane Eisler : The Chalice And The Blade
62. Robbins : The Encyclopaedia Of Witchcraft And Demonology
63. Rupert Hughes : Why I Quit Going To Church
64. Samuel Coleridge : Ancient Mariner
65. — : Sam Veda
66. Savarkar V.D. Veer : Hindutva
67. Savarkar V.D. Veer : Historical Statements
68. Seshadri H.V. : Christian Missions In Bharat
69. Sita Ram Goel : History of Hindu-Christian Encounters
70. Swami Dayanand Saraswati : Satyarth Prakash
71. Swami Vivekananda : The Complete Works Of Swami Vivekananda
72. Tama Starr : The Natural Inferiority Of Women
73. Thomas Paine : The Age of Reason
74. Thomas P. Dr. : Christian And Christianity In India And Pakistan
75. Victor Shklovsky : Lev Tolstoy
76. Ved Vyas : Mahabharat
77. Wheeler J.M. : Crimes of Christianity

78. William Blake : The Divine Image
79. William Hubben : Four Prophets Of Our Destiny
80. William Wordsworth : Poetry of William Wordsworth
81. — : Yajur Veda

समाचार-पत्र, पत्र-पत्रिकायें, एवं विश्व-कोष

82. Anglo India
83. Awake And Arise, Edited By K.M. Talreja
84. Encyclopaedia Britannica
85. Harijan, English Weekly, Founded By M.K. Gandhi, Poona
86. The Hindustan Times, English Daily, New Delhi
87. Masurashram Patrika, English Monthly, Bombay
88. The Annual London Report Of The Missionary Society
89. The Indian Express, English Daily, New Delhi
90. The Truth-Seeker, Edited By Charles Smith
91. The Webster's Third New International Dictionary
92. World Book Dictionary
93. Young India, English Weekly, Edited By M.K. Gandhi, Ahmedabad

"हिन्दू शब्द हमारे साथ विशेष रूप से हमारे इतिहास के गत एक सहस्र वर्षों के संकटपूर्ण काल से जुड़ा रहा है। पृथ्वीराज के दिनों से लेकर हमारे समस्त राष्ट्र-निर्माताओं, राज्य-वेत्ताओं, कवियों और इतिहासकारों ने 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग हमारे जन-समाज और धर्म को अभिहित करने के लिए किया है। गुरु गोविन्द सिंह, विद्यारण्य और शिवाजी जैसे समस्त पराक्रमी स्वतंत्रता-सेनानियों का स्वप्न 'हिन्दू-स्वराज्य' की ही स्थापना करना था। 'हिन्दू' शब्द अपने साथ इन समस्त महान जीवनों, उनके कार्यों और आकांक्षाओं की मधुर गंध समेटे हुए है।"

– गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर

अनुक्रमणिका

अ

अगाग, २७४

अथर्ववेद, ५१, ५२, ७१, ७२, ७५, ७६, १०९, ११०, १३६, १३७, १३९, १४४, १५९, १६२, १७२, १७९, १८०, १९८, २१८, २१९, २२१, २४४, २५३, २५९

अग्नि, ५३, १४४, २११, २७६

अंगिरा, १४४, २११, २७६

अंटोनियो फ़ोगाज़ारो, १८५, १८६

अन्तवर्प, २०२

अब्राम, ११९, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६

अब्राहम लिंकन, २५१

अबिमेलेक, १२४, १२६

अरविंद घोष, २६८

अलेग्ज़ेंडर कैम्पबेल, २५०

अस्सूर, ११७

अहाब, १९५, १९६

अहिंसा, १७१, २१९, २२१, २२२, २२९

आ

आगस्टीन सन्त, २२६

आदित्य, १४४, २११, २७६

आमोस, ११७

आयुर्वेद, १९२, १९३

आर्नल्ड अमलरिक, २७१

आर्मस्ट्रांग, ९६

आर्यवर्त, २११

इ

इतिहास ग्रन्थ पहला, ८५

इथियोपिया, ११७

इनक्वीज़ीशन, आफ़ गोआ, ४५, १४२, १४३, २१६, २१७, २२३, २३४, २५९

इंगरसोल राबर्ट जी कर्नल, ११५, २५१

इंडियन एक्सप्रेस, २४२

इन्द्र, ५३

इब्रानियों के नाम, १७८

इब्राहीम, १२६, १७०

इसहाक, १७०

इसायाह, ११७

इसायाह का ग्रन्थ, ११७, ११८, २२९, २६७

इस्माईल, १२३, १२४

ई

ईसा मसीह, २३-२५, २८, ३६, ५०, ६१, ६२, ६४, ६५, ६८,

६९, ७०, ९१, ९७, ११८, १८७, १८८, २०५-२१०, २२२, २२५-२३१, २४९, २७१

उ

उत्पत्ति ग्रन्थ, ९५, ११२-११७, १२१, १२४-१२७, १७०, १८१, १९९

ऋ

ऋग्वेद, ५२-५४, ७२, ७६, ७७, ७९, ८१, ८२, ९३, ११०, १३५, १३७-१३९, १७५, १९१-१९३, १९८, २०३, २१४, २२१, २४३, २४४, २५२, २५४, २५५, २५७, २६३, २७७

ए

एकेश्वरवाद, ५१, ५७, ६३

एक्लेज़िया इन एशिया, २१-२५, २७, ३०

एज़ेकिएल का ग्रन्थ, १६७

एज्रा, १२८

एनसाइक्लोपेडिया ब्रटनिका, ११९

एफेसियों के नाम, ९८, २४९

एमर्सन प्रोफ़ेसर, १३७

एलिज़बेथ कैडी स्टेंटन, ९९

एलियाह, २७३, २७४

एलीक्सो डायस फ़ाल्कओ, ४५

एलीशा, २७४, २७५

ऐ

ऐक्टन लार्ड, १४३

ओ

ओ३म्, ५३, २७७

ओनान, ११४

ओरीजन, ११९

औ

औरंगज़ेब, ५६

क

कनान, ११३, १२३

क्लेमेंट, ९१, ९२, ९६

कलोसियों के नाम, ९९, २००

क्लारा क्लीमेन्स, १३०

क्लेयरवाक्स, १५०

कान्स्टैन्टीन, १४८

कीशोन, २७४

कुरिन्थियों के नाम, ६२, ९७, ९८, १०१-१०३, १७९, २००

कूश, ११७

कैलविन, २३६

कोपरनिकस, १८३

कोल ब्रूक, ५५

कोलिन मेन, ८२, १३०

ग

गणना ग्रन्थ, ८३, ८४, ८७, १०३, १०४, १२९

गलीलियो, १८४
ग्योर्डेनो ब्रूनो, १८३, २१८
गांधी एम.के., ३८-४२, ४४, १५९, २१२
गाय, १५९
गिबओनवासी, १६९
गिब्स एम.ई., ३३
गिलआद, १९५, १९६
गिलगाल, २७४
गीता, १५५, २१०,२१२, २२३
ग्रीनिश प्रोफ़ेसर, १९३
गेरार, १२६
गोबिंद सिंह गुरु, २६८
गोलवलकर मा.स. गुरुजी, ४५, ६४, ८५, १११, १८०, २२३, २२४, २५५

च

चार्ल्स कोलमैन ५५, ५६
चार्ल्स डयूरी स्मिथ, ४६
चार्ल्स डिकेन्स, ४२
चार्ल्स स्मिथ, ५८, ६६-६८, १०७, १०८, १३०, १३१, १४१, २०८, २३२, २५०, २५१, २७५, २७६

ज

ज्योफ़्री ऐश, ९२
जादू टोना, २३१-२४४
जान बांड, १०१
जार्ज तृतीय राजा, २५१
जार्ज बर्नार्ड शा, १६५, १६६, १८४, १८६, १८७, २३१
जॉन वेस्ली, २३५, २३६
जूरिक, ६३
जेफ़री बर्टन रसेल, २३४
जेम्स ए. हाट, ५८, ५९, १४२, १४३, १५०, १८३, १८४, २०१, २०२, २४१, २६५, २६६, २७०, २७१
जेम्स ऐन्थनी फ़ाउड, ८३
जेम्स किंग, ५७
जेम्स टाड कर्नल, २१८
जेम्स मैडीसन, २०६
जेहोवा, १०७
जैकोलियट, १९३
जोन आफ़ आर्क, २३१, २३२
जोनाथान स्विफ़्ट, २६५
जोसेफ़ लूइस, १२७, १४१, २७०

ट

टामा स्टार, ९६
टाल्सटाय लियो, काऊंट, ५९, ६७, ११८, १२४, २४२
टेरेसा, २१८

टोलूस, २३२

ड

डीन फ़रार, २७५, २७६

डेट्रायट, ३७

डैविड, ६४, १२८

त

तलाक १०५, १०६

त्यागी ओम प्रकाश, ३२, ६०

तामार, ११४, ११६

तिमथी-१, ९८, २४८

तिमना, ११५, ११६

तीतुस के नाम, २४९

त्रिमूर्ति सिद्धांत, ५१, ५७, ५८

थ

थामस जैफ़रसन, ५८, ६७, १४१, १८८, २४१, २५०

थामस पी. डा., ३८

थामस पेन, ६६-६८, ७०, १२१, १२२, १३०, १३४, १३५, १४८, १४९, १८५

द

दयानंद सरस्वती स्वामी, १३९, १४५, १६३, १७६

दाऊद, ६५, ६६, १२८, १६८, १६९, २६९, २७२

दानवंशी, १५१

दांते, १००

दारा शिकोह, ५६, ५७

दीन दयाल उपाध्याय पंडित, ४९, ७९, ९३, १५६, १५९, १६३, १७६, १९३, २१२, २५७

ध

धर्म, १५६, २११, २१४, २१५, २७७

धर्म राज्य, १५६

धर्म परिवर्तन, २४-२६, २९, ३०, ३३, ३६-३८, ४०, ४३-४५, ४९, ६०

न

नरमांस-भक्षण, १७३-१७६

नहूम का ग्रन्थ, २३३, २६२

न्यायकर्ताओं का ग्रन्थ, १५२, १६८

न्यूज़ीलैंड, २०

नाक्स, २३६,

नागालैंड, ३१, ४३

नाज़ी, १४८

नियोगी भवानी शंकर डा., ३१, ३३, ३४, ३९, ४०, ४२-४४, २२३

निर्गमन ग्रन्थ, ८२, ८७, ८९, १३१, २३२, २४७, २४८, २६१

नीत्शे फ़्रेडरिक, १६८, २६६

नूह, ११२
नेहरू जवाहर लाल, ३४, १८३, २१६, २१७, २३३

प

पवित्र आत्मा, ६०, ६५-६७
पाल थेमा प्रोफ़ेसर, १३७
पाल सन्त, १७०
पाल सौंडर्स, २०, २१
पीटर केम्प, १४८, २३५
पेजल्स, ९२
पेत्रुस सन्त-१, २५०
पैलेटीन अपालो, २००
पोप इन्नोसेंट चौथा, १४२
पोप ग्रेगरी पहला, २००, २०१
पोप जॉन पाल द्वितीय, २१-३०
पोप जॉन बाइसवां, २३३
पोप निर्दोष आठवां, २३४
पोप निर्दोष तृतीय, २७१
पोप पाल छटा, ९७
पोप लियो तेरहवां, ९२
प्रकाशना ग्रन्थ, ७९, १४०, १४१, १८२
प्रिसिलियन, ५८
प्राकृतिक चिकित्सा, १९१, १९२
प्राकृतिक भोजन, १७५, १७६
प्राकृतिक विधान, ७१
प्रोटेस्टंट मत, १८३, २०८, २३५

फ़

फ़ारेस्ट जी. वुड, २४१
फ़िलाडेल्फ़िया, १०५
फ़िराउन, १२६
फ़िलिप्पियों के नाम, ६२, १७८
फूट जी. डब्ल्यू, ५८, १०७, ११९, १९६, १९७, २४२
फ्रेंसिस ज़ेवियर, २०, २१६, २५९

ब

बरबरा जी. वाकर, २००, २३६-२३८, २४०
बर्ट्रेण्ड रसेल, ९५, ९६, १३४, २०१, २०७, २३४, २४६, २४७
बर्नार्ड सन्त, १५०
बारेटो मिरंडा जे.सी., ४६, ४७
बाल, २७४
बाल डब्ल्यू. पी., ५८, ११९
ब्योन्स्टर्यर्न काऊंट, ५५, ६४
बूथ जनरल, ४०
बेनामी, ११९, १२०
बैबीलान, १५१
ब्रह्मचारी विश्वनाथ, १९, २०, ३३
ब्रह्म दत्त भारती, ६७, ११५, ११८, १२४, १२७, १४१, १४५, १९५, १९७, २७०
ब्रह्मा, ५३, २७६
ब्राऊन, १८९

ब्राऊन डब्ल्यू. डी., ६४

भ

भागवद दत्ता, १४५

म

मतिल्दा जोसलिन गेज, ८९, ९९-१०२, १०४-१०७, १३२, १४२, २१८, २३२, २३५, २३८-२४२, २५१, २५२

मत्ती सन्त, ५९, ६६, ६८-७०, ७४, ९१, ११९-१२१, १२४, २०६, २०९, २१०, २१५, २२२, २२५-२२९

मनीला, २४

मनु, १११, १३८, २५३, २५४

मसूर आश्रम पत्रिका, २०

महा भारत, २१५

महेश, ५३

मारकुस सन्त, ६१, १८८, २०६, २२५

मारिस फ़िलिप, २६२, २६३

मार्क टुवेन, १२९, १३०

मार्टिन लूथर, १८३, २००, २०८, २३५

मार्ले लार्ड, १५६

मिज़ोरम, ३१, ३२, ४३

मित्र, ५३

मिस्र, ११७, १२५

मीकाह का ग्रन्थ, १६७, २३३

मुकर्जी श्यामा प्रसाद डा., २३०

मूसा, ९१, १२८, १३०, २७२, २७४

मेकन, १०४

मेघालय, ३१, ३२, ४३

मैक्स मूलर एफ़, ८०, २५३, २७६

मैरी सन्त, ३०, ६५, ६६, ६८-७०

मोआब, ११९, १२०

मोरिया, १७०

य

यजुर्वेद, ४७, ४८, ५४, ५५, १३६, १५४, १५५, १७६, १९०, १९७, १९८, २०२-२०४, २१२, २१५, २२२, २४४, २६७, २६८, २७७

यंग इंडिया पत्रीका, ४२

यम, ५३

यहूदी, ८३, ८४, २१६, २२६, २४७

याकूब सन्त का ग्रन्थ, १८९

याफेत, ११२, ११३

यिफ़्तह, १६७

यिरमियाह का ग्रन्थ, १७३

यूदा, ११४-११६

यूसुफ़, ६५-७०

येरूसालेम, १२८

येहू, २७२

योशुआ, २७२, २७३

योशुआ का ग्रन्थ, १८३, २७२, २७३

योहन सन्त, २५, ५७, ६१, ६२, १७४, २०५, २०९, २२५, २२८
योहोवा, १८६

र

राजाओं का ग्रन्थ पहला, १९६, २७४
राजाओं का ग्रन्थ दूसरा, १७४, २७२, २७५
राजाराम एन. एस., ४७, ५९, ८३, १८६, २०६, २६६
राजा राम मोहन राय, ६३
राबिन्स, २३७
रिएन आइसलर, ९७, ९९, १४८, १४९
रिचर्ड टैम्पल, १९, २०
रूपर्ट ह्यूज़, १९४, १९५, १९७
रूबेन, ११३
रे ए. एन. ६०
रेडियो वरीतास एशिया, २९
रेंडाल्फ़ टी.जी., ६७, ६८, १८८
रोनाल्ड रीगन, १२२
रोम, १४८
रोमियों के नाम, १९४

ल

लइश, १५१
लियूइस रीजेन्स्टीन, २३४
लियोनार्ड जे.पी., १९
लिवी, ५६
लूकस सन्त, ६९, ७०, १८७, १८८, २२५, २२७, २३०
लेलियस सोसिनस, ६२, ६३
लेवी ग्रन्थ, ८४, ८६, ९०, ९१, १५७, १५८, १६२, १६३, १६५, १७४, २३३, २४६, २६४
लेवैक, २४० २४१
लोइस जैकोलियट, १४५
लोट, ११९-१२२

व

वरुण, ५३
वायु, १४४, २११, २७६
विक्टोरिया महारानी, ९५
विक्टर श्कलोवस्की, ११८
विधि-विवरण ग्रन्थ, ८८-९०, १०६, १३२-१३४, १४७, १५०, १५२, १७४, २२९, २५६, २५८, २६५-२६७, २७४
विलियम ऐडम, ६३, ६४
विलियम टिंडेल, २०१, २०२
विलियम ब्लैक्स्टोन, २३५
विलियम ब्लेक, १७१
विलियम वर्ड्स्वर्थ, १५३
विलियम हब्बेन, १६८
विवेकानंद स्वामी, ३६, ३७, ४४, ४५, १८८, २०४
विष्णु, ५३

व्हीलर विलैक्स, १९०
व्हीलर जे.एम., १९६, १९७, २४२
वेंडेल फ़िलिप्स, २५२
वैल्स एच. जी., १४८, २३४, २३५
वोल्टेयर, २६६

श

शंकर, ५३
शाहजहां, ५६
शिव, ५३
शिवाजी महाराज छत्रपति, २६८
शेषाद्रि एच. वी., २१
शोकगीत, १७४
शोपेनआवर, १४४

स

संविधान भारतीय, ३२-३५, ६०
सॅबथ, ८७
समारिया, १५१
समूएल, २७४
समूएल का पहला ग्रन्थ, ८५, १८२, २७२, २७४
समूएल का दूसरा ग्रन्थ, १२८, १६९, २७०
स्तोत्र ग्रन्थ, १५१, १८२
स्ट्यूअर्ट हेडलाम, १६५
साइरिल सन्त, ९९, १८४
साऊल, १६८, १६९
सामवेद, ५३, १९२
सारय, १२३-१२७
सावरकर वीर, ४०, १७२, २२४, २३०, २४४, २६०
सिंधु, २११
सिम्पसन, ९५
सीता राम गोयल, ४२, २१८
सेम, ११२, ११३
सैमुएल कालरिज, १५४
सैरासेन्स, २१६

ह

हरिजन पत्रिका, ३८, ४४
हाइपाटिया, ९९, १८४
हागार, १२३, १२४
हाम, ११२, ११३
हीरेन प्रोफ़ेसर, १५५, १५६
हेडगेवार के.ब.डा., ७२, १५९, २०४, २३०, २५५, २६३, २६८
हेलिन एलर्बी, ९२, ९६, ९७, ९९, १४८, १४९, २००, २३४, २३६, २३७-२३९, २४१
हेलिन गार्डनर, १०७, १०८
हेवा, ९४
होशेआ का ग्रन्थ, १५१